



वैदिक धर्म

विषयसूची

संपादक
पं. श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

वार्षिक मूल्य
म. ऑ. से ५) रु.; वी. पी. से ५।=) रु.
विदेशके लिये १५ शिलिंग।
इस अंकका मू. ॥) रु.

श्रावण सं. २००४
अगस्त १९४७

क्रमांक ३३२

वेद की संहिताएं

दैवतसंहिता

प्रथम भाग तैयार है और द्वितीय तथा, तृतीय भाग छप रहा है।

आज वेद की जो संहिताएँ उपलब्ध हैं, उन में प्रत्येक देवता के मन्त्र इधरउधर बिखरे हुए पाये जाते हैं। एक ही जगह उन मंत्रों को इकट्ठा करके यह दैवत-संहिता बनवायी गयी है।

दैवत-संहिता-प्रथम भाग।

१ अग्निदेवता	मंत्र	२४४३	पृष्ठसंख्या	३४६
२ इंद्रदेवता		३३६३	,,	३७६
३ सोमदेवता		११६१	,,	१५०
४ मरुद्देवता		४६४	,,	७२

दैवत-संहिता-द्वितीय भाग।

५ अश्विनौ	मंत्र	६८९	पृष्ठसंख्या	११२
६ आयुर्वेद-प्रकरण		२३४५	,,	२७२
७ रुद्र		२२७	,,	६४
८ उषा		१९४	,,	४०
९ अदिति-आदित्य		११३७	,,	१५६
१० विश्वे देवाः		२३२०	,,	२२६

इन में प्रत्येक देवताके मूल मन्त्र, पुनरुक्त-मंत्रसूची, उपमासूची, विशेषणसूची तथा अकारानुक्रम से मंत्रोंकी अनुक्रमणिका का समावेश तो है, परंतु कभी कभी उत्तरपदसूची या निपातदेवतासूची इस भाँति अन्यभी सूचीयाँ दी गयी हैं। इन सभी सूचीयों से स्वाध्यायशील पाठकों की बडी भारी सुविधा होगी।

संपूर्ण दैवतसंहिताके इसी भाँति तीन विभाग होनेवाले हैं और प्रत्येक विभाग का मूल्य ६) रु. तथा डा. व्य. १॥) है। पाठक ऐसे दुर्लभ ग्रन्थ का संग्रह अवश्य करें।

चार वेद

१ ऋग्वेद (द्वितीय संस्करण) ६) डा० व्य० १॥)
२ यजुर्वेद (समाप्त)
३ सामवेद (समाप्त)
४ अथर्ववेद (,,)

इन ४ वेदोंकी संहिताओंमेंसे ३ समाप्त होनेसे उनके नये संस्करण छप रहे हैं।

यजुर्वेदकी संहिताएँ।

५ काण्व संहिता ४) डा. व्य.॥)
६ मैत्रायणी संहिता ६) ,, १)
७ काठक संहिता ६) डा. व्य. १)
८ तैत्तिरीय संहिता (कृष्ण यजुर्वेद) ६) ,, १)

वेदकी इन चारों संहिताओंका मूल्य २२) है, डा.व्य.३॥) है अर्थात् २५॥) डा.व्य. समेत है। परंतु जो ग्राहक पेशगी मूल्य भेजकर ग्राहक बनेंगे, उनको ये चारों संहिताएं २२) रु० में दी जायंगीं। डाकव्यय माफ होगा।

९ यजुर्वेद- सर्वानुक्रम मू. १॥) डा. व्य.।=)
१० यजुर्वेद- पादसूची १॥) डा. व्य.।=)
११ ऋग्वेद परिशिष्ट (मंत्रसूची, सर्वानुक्रम इ.) २॥) ,, ॥)

मंत्री, स्वाध्याय-मण्डल, औंध, (जि० सातारा)

वैदिकधर्म

क्रमांक ३३१

वर्ष २८ | आषाढ, विक्रम-संवत् २००४, जोलाई १९४७ | अङ्क ७



मधुर भाषण

यद् वदामि, मधुमत् तद् वदामि, यदीक्षे, तद् वनन्ति मा।
त्विषीमानास्मि, जूतिमानवान्यान् हन्मि दोघतः॥ (अथर्व. १२।१।५८)

"हमारी मात्रभूमिके विषयमें [यद् वदामि] जो मैं बोलूंगा, वह [मधुमद् वदामि] मीठा भाषणही होगा; (हमारी मात्रभूमिके अन्दर) जो कुछ भी मैं [यत् ईक्षे] देखूंगा, वह सब [मा वनन्ति] मुझे प्रियही होगा अर्थात् वह सब मुझपर प्रेम करेगा; [त्विषमान् अस्मि] मैं तेजस्वी हूँ, मैं (जनताके) [जूतिमान्] उत्साहका संवर्धन करता हूँ (तथा) जो [अन्यान्] परकीय (शत्रु हमारी मात्रभूमिके भोग्य पदार्थोंका) [दोघतः] अपहरण करते हैं, उनका मैं [हन्मि] नाश करूंगा।"

अपनी मात्रभूमिके संबंधमें जब कभी बोलनेका प्रसंग मुझे प्राप्त होगा, तब मैं मात्रभूमिके संबंधमें मीठा शुभ भाषणही करूंगा। कभी कटु और अशुभ भाषण नहीं करूंगा। जब कभी मातृभूमिकी परिस्थितिका निरीक्षण करनेका अवसर मुझे मिलेगा, तब मैं ऐसा निराक्षण करूंगा कि जिससे सब लोग परस्पर प्रेमभरा व्यवहार करते जायँगे और परस्पर विद्वेष कभी न बढायेंगे और सब जनताका उत्तम संगठनसे सिद्ध होगा। ऐसा व्यवहार करना चाहिये कि जिससे अपनी तेजस्विता बढती जायगी। उत्साहहीन, उदास, निस्तेज, सत्त्वविहीन कभी नहीं होना चाहिये। स्वयं तेजस्वी बनकर दूसरोंको भी तेजस्वी बनाना चाहिये। जनताके उत्साहकी वृद्धि सतत करनी चाहिये। जनतामें उदासीनताके विचार कदापि नहीं फैलाने चाहिये। सब लोग उत्साहमय, पुरुषार्थी, शूर, धीर वीर, गम्भीर, प्राक्रमी, वर्चस्वी, ओजस्वी, तेजस्वी बनें, ऐसाही सदा आचार आचारना चाहिये। जो परकीय विदेशीय या विधर्मी लोग हमारे सांथ शत्रुवत् व्यवहार करते रहेंगे, हमारी मात्रभूमिके उपभोगके पदार्थोंका अपहरण करके हमें ठगानेका यत्न करेंगे, तथा हमें भूखे रखकर स्वयं भोग भोगनेका यत्न करेंगे, उनका नाश हम करेंगे। मात्रभूमिके भक्तोंका यही परम श्रेष्ठ कर्तव्य है।

"हम सीमा-प्रान्त नहीं छोडेंगें।"

भारतके उत्तर-पश्चिमी भागमें अल्पसंख्यक समाजपर जो भीषण अत्याचार हुए हैं, उनकी कहानियां आज सारे भारतमें फैली हुई हैं। इन अत्याचारोंका प्रभाव सीमाप्रान्त (N. W. F. P.) के हिन्दू-समाज (जिसमें सिक्ख आदि भी सम्मिलित हैं) पर इतना घातक हुआ है कि आज हिन्दू अपनी स्त्रियों, लडकियों, बहनों तथा बच्चोंकी भी रक्षा करनेमें असमर्थ हो रहे हैं। अत्याचारियोंने जिस निर्दयतासे हमारी माताओं, बहनों तथा बेटियोंका अपमान किया है और हिन्दुओंकी धन-सम्पत्तिको जिस तरह लूटा है तथा घरों और दुकानोंको जिस राक्षसी मनोवृत्तिसे जलाकर विध्वंस किया है, उसका उदाहरण संसारके इतिहासमें मिलना असम्भव है। इतनाही नहीं निर्दोष तथा निरपराध लोगोंका जिस प्रकार पशुओंकी तरह वध किया गया है और उनके धर्म, संस्कृति और सभ्यताको मिटानेका जो घोर प्रयत्न अन्यायी लोगों द्वारा हुआ है, उसकी कहानीको लिखते हुए कलम कांपती है।

सीमाप्रान्तकी हिन्दू-जनता इन अत्याचारोंसे भयभीत होकर और घबरा कर भारतके कोने-कोनेमें अपने त्रस्त बाल बच्चोंको लिये हुए खाना बदोशोंकी तरह दर दर भटक रही है। इस महान् आपत्तिके समयमें कुछ साहसी व्यक्तिही अपनी प्राचीन संस्कृति तथा अपने धर्म-स्थानोंकी रक्षाके निमित्त कमर बांधकर दृढ निश्चयके साथ डटे रह गये हैं। न केवल इन लोगोंका यह दृढ संकल्पही है कि हम किसी भी अवस्थामें अपने पवित्र स्थानोंको नहीं छोडेंगे बल्कि अपने इधर उधर भटके तथा डरे हुए भाइयोंको पुनः वापिस भी लायेंगे। इस संकल्पको पूरा करनेका अर्थ हजारों निराश्रित और आपत्तिग्रस्त परिवारोंको पुनः अपने घरोंमें लाना है। कार्य बडा है और कठिन भी है। इसमें भारतवर्षके सारे हिन्दू-समाजकी सहायताकी आवश्यकता है। यह सहायता इस समय विशेषतया धनके रूपमें चाहिये। हमें विश्वास है कि पर्याप्त सहयोग मिलनेपर हम हिन्दू जनताको फिरसे अपने अपने स्थानोंपर ठीक प्रकारसे बसा सकते हैं।

निवेदक—

प्रधान— श्री रा० सा० दीवान चिरञ्जीत लालजी, एडवोकेट पेशावर सदर

मन्त्री— लाला पिशोरीलाल सेठी, पेशावर सदर

कोषाध्यक्ष— लाला सूर्यप्रकाश मालिक खैबर साइकल स्टोअर्स, पेशावर सदर

सीमाप्रांतीय हिन्दु-रक्षा-समिति, २, दुमेली रोड, पेशावर छावनी

सूचना—

दाता सज्जन द्रव्यकी सहायता मंत्रीजीके नाम सत्वर भेज देनेकी कृपा करें— "संपादक"

वैदिक राष्ट्रियता

(लेखक— श्री. स्वामी ब्रह्ममुनि)

यद्यपि कई शताब्दियोंसे विदेशियोंकी दासतामें रहकर हम लोग राष्ट्रियतासे गिर चुके हैं। और राष्ट्रिय विषयपर कुछ कहने-सुननेकी अनधिकारीसे बन गये, तथापि अपनी राष्ट्रियताका संस्मरण कर हमारे अन्दर अपने कियेपर पछतावा हो जावे तो स्यात् हमारे उत्थानकी कोई रूपरेखा बन जाए-अत एव इस विषयपर विचार किया जाता है। राष्ट्रियताके तीन पात्र हैं- राजा या राष्ट्रपति, प्रजा और राष्ट्र। अराजकता बडी हानिकर है, अत एव राजा तीनोंमें प्रधान पात्र है। राजाओंका सर्वप्रथम जब प्रादुर्भाव हुआ तो वह दो प्रकारके राजाओंका, एक आर्य राजा बने दूसरे दस्यु राजा। आर्य और दस्युके नामसेही मनुष्य जातिके दो वर्ग थे- " वि जानीह्यार्यान् ये च दस्यवः। " (ऋ० १।५१।८) श्रेष्ठ उदार सहृदय परमार्थी हित बुद्धिको आर्य और निकृष्ट अनुदार निर्हृदय स्वार्थी हिंसकबुद्धिको दस्यु कहते हैं। आर्योंमें आर्यराजा और दस्युओंमें दस्युराजा बने और दोनों प्रकारके राजाओंका प्रादुर्भाव भी एक दूसरेके विपरीत ढंगसे हुआ। आर्यजनोंके सम्मुख व्यावहारिक (बर्ताव सम्बन्धी), व्यापारिक (लेनदेन सम्बन्धी), पारस्परिक (रिश्ते नाते सम्बन्धी), सामाजिक (वर्णाश्रम सम्बन्धी), नागरिक (नगरकी सुव्यवस्था सुरक्षा सम्बन्धी) बातोंकी पञ्चप्रश्नी खडी हुई। उक्त पञ्चप्रश्नीको पूरा करने एवं सुलझानेके लिये उन्होंने अपनेमें जिसे बलवान्, जनवान्, ज्ञानवान्, गुणवान्, आचारवान् और धर्मवान् (नित्यनियम, न्याय, दया, धैर्य, पुण्यकर्मोंसे युक्त) षट् सम्पत्तिवाला पाया उसे अपना राजा बनाया " त्वां विशो वृणतां राज्याय। " (अथर्व० ३।४।२) ' तुझे प्रजाजन राज्यके लिये वरें, अपनावें ' ऐसा प्रजाद्वारा राजाके वरने बनानेका वेदमें वर्णन आया है। एवं जन किसी एक नगरका राजा बना दिया गया तो फिर प्रजाजनोंमेंसेही राजसभा (Parliament) का निर्वाचन भी हो गया +। साथमें उस नगरके चारों ओर प्राकार (परकोटा) या दुर्ग भी रक्षार्थ आवश्यकतानुसार बना दिया गया। पुनः उस नगरसे बाहिरके आसपासवाले जिन ग्रामों (ग्रामवालों) का आना जाना वहां होता था, उन्होंने जब उस नगरमें सुव्यवस्था देखी तो अपनी सुव्यवस्थाके लिये उस नगरसे मिल गये, उस नगरके राजाको अपना लिया। इस प्रकार नगरराज्यके साथ कुछ ग्राम मिल गये। छोटे नगरराज्यके साथ थोडे और बडे नगरराज्यके साथ बहुत ग्रामोंका सहयोग हो गया। काठियावाड प्रान्तमें यह उदाहरण स्पष्ट मिलता है। अनेक ऐसे छोटे छोटे नगरराज्य हैं जो एक नगरराज्यका दूसरे नगरराज्यसे अन्तर पांच पांच दश दश मिल मात्रतकका होता है।

इस प्रकार नगरराजाओंका प्रादुर्भाव हुआ। प्रत्येक नगरराज्यका निर्वाचित प्रमुख जन समानरूपसे राजा कहलाया चाहे वह नगरराज्य छोटा हो या बडा। कारण कि वेदमें राजा शब्द है महाराजा नहीं, अत एव सबका राजपद समान है। हाँ, सम्राट् शब्द वेदमें अवश्य आया है। आर्यवर्तके देशके समस्त राजा आर्यराजा कहलाये, आर्यवर्तीय आर्य राजाओंने आर्यवर्तसे भिन्न देशोंके दस्यु राजाओंके आक्रमणसे बचने तथा समस्त आर्यवर्त देशकी समृद्धिके हेतु संगठित हो मध्यस्थ नगर (देहली) में अपना एक सम्राट् बनाया, वहां विशेष सैनिक शक्तिको स्थापित किया। उक्त नगर इन्द्रप्रस्थ नामसे प्रसिद्ध हुआ, कारण कि इन्द्र राजाको कहते हैं और प्रस्थ प्रस्थानका नगर, आर्यवर्तपर बाहिरी दस्युराजाओंके आक्रमणकाल तथा अन्य विशेष समारोहके अवसरपर आर्यवर्तीय समस्त राजा वहां प्रस्थान करते थे, अत एव उसका इन्द्रप्रस्थ नाम हुआ।

आर्यवर्तसे बाहिरके राजा दस्युराजा कहलाये। दस्यु राजाओंका प्रादुर्भाव आर्यराजाओंसे सर्वथा विपरित ढंगपर हुआ। नगरमें जो मनुष्य सबसे अधिक बलवान् और जनवान् हुआ उसने नगरनिवासियोंको लूटना सताना शुरू किया, प्रतिदिन लूटमारसे बचनेके लिये उनपर मासिक एवं वार्षिक कर (Tax) लगा उन्हें अपने स्वाधीन किया, एवं उस नगरको स्वाधीन कर अपने लुटेरे दलको बढा, पश्चात् आसपासके

+ एषामहं समासीनानां वर्चो विज्ञानमा ददे। अस्याः सर्वस्याः संसदो मामिन्द्र भगिनं कृणु॥ " हे परमात्मन्! इस सारी सभाका मुझे तू प्यारा बना दे, मैं इन सब विराजमान सभासदोंके बल और ज्ञातव्य मतको ग्रहण करता हूं " यह राजाकी अभ्यर्थना है। (अथर्व० ७।१२।१)

ग्रामोंमें भी लूटमार कर कर उन्हें भी स्वाधीन बनाया। लूट-मार करनेवाले दस्युराजा अभी भी सीमा प्रदेशमें पाये जाते हैं। पुनः दस्युराजाओंकी वह लूटमारकी प्रवृत्ति उनके देशमें जब पूरी हो चुकी तो आर्यवर्त देशमें लूटमार करनेका दौरदौरा आरम्भ हुआ और इसपर आक्रमण कर लूटा सो, आज-तक बाहिरी दस्युराजा इसे लूट रहे हैं, स्वाधीन रख रहे हैं। ऋषि दयानन्दकी यह हार्दिक इच्छा थी कि आर्यवर्त देशको दस्युराजाओंसे छुडाया जाये और आर्यराजाओंके अन्दर भी इनके संसर्गसे आई हुई दस्युताको मिटाया जाये। अत एव वे रजवाडोंमें गए और वहां उन्होंने राजाओंको संगठित होने उनके द्वारा आर्यवर्तको उन्नत करनेका आर्य, राजधर्मका उपदेश दे सच्चे आर्यराजा बनाना आरम्भ कर दिया था। × यह कार्य उनके जीवनका अंतिम था, पर खेद उनका देहान्त हो जानेसे यह कार्य रहही गया।

आज यद्यपि वर्तमानके दस्युराज (अंग्रेजी राज) से आर्यवर्त देशकी मुक्ति हो रही है किन्तु मुक्तिके उपरान्त अनेक अवाञ्छनीय विपत्तियोंके आनेकी सम्भावना है। इसलिये अब आर्यराजाओंको विशेष रूपसे संगठित होनेकी आवश्यकता है। संगठित होकर अपने कार्यक्रमपर विचार करना दस्युराजाओंके संसर्गसे आई हुई दस्युताको अपने अन्दरसे हटाना और अपनेको विशुद्ध आर्यराजा बनाना, फिरसे वैदिक राष्ट्रियताको लाना है। ऋषि दयानन्दने आर्यवर्तमें दस्युराजको देख कितने दुःखके साथ लिखा है— " सृष्टिसे लेकर महभारतपर्यन्त चकवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुलमें हुए थे, अब इनके सन्तोनोंका अभाग्योदय होनेसे राज्यभ्रष्ट होकर विदेशियोंके पादाक्रान्त हो रहे हैं। जब रघुगण राजा थे तब रावण भी यहांके आधीन था। महाराजा युधिष्ठिरजीके राजसूय यज्ञ और महाभारतपर्यन्त यहांके राज्याधीन सब राज्य थे। ऐसे शिरोमणि देशको महाभारतके युद्धने ऐसा धक्का दिया कि अबतक भी अपनी पूर्व दशामें नहीं आया, क्योंकि जब भाईको भाई मारने लगे तो नाश होनेमें क्या संदेह ? "

(सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास)

" अब अभाग्योदयसे और आर्योंके आलस्य प्रमाद... परस्परके विरोधसे अन्य देशोंके राज्य करनेकी तो कथा-ही क्या कहनी किंतु आर्यवर्तमें भी आर्योंका अखण्ड स्वतंत्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियोंके पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोडे राजा स्वतंत्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियोंको अनेक प्रकारके दुःख भोगना पडता है। कोई कितनाही कहे परंतु जो स्वदेशीय राजा होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तरके आग्रहसे रहित अपने और परायेका पक्षपातशून्य प्रजापर पितामाताके समान कृपा, न्याय और दयाके विदेशियोंका राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है " (सत्यार्थप्रकाश, अष्टम समुल्लास) " विदेशि-योंके आर्यवर्तमें राज्य होनेका कारण आपसकी फूट मतभेद है। जब आपसमें भाई भाई लडते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारतकी बातें जो पांच सहस्र वर्ष पूर्व हुई थी उनको भी भूल गये ? आपसकी फूटसे कौरव-पाण्डव और यादवोंका सत्यानाश हो गया सो तो हो गया, परन्तु अबतक भी वही रोग पीछे लगा है ! न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्योंको सब सुखोंसे छुडाकर दुःख-सागरमें डुबा मारेगा ! उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्रहत्यारे स्वदेशविनाशक नीचके 'फूट' दुष्टमार्गमें आर्य लोग अबतक भी चलकर दुःख बढा रहे हैं परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्योंमेंसे नष्ट हो जावे " (सत्यार्थप्रकाश दशम समुल्लास)

यह है दयानन्दका करुण-क्रन्दन, यह है उसका आर्त-विलाप, यह ऋषिका दुःख-भरा रोना। महाभारतकालकी फूटसे चक्रवर्ती सार्वभौम सत्ता आर्योंके हाथ चली गई, मध्यकालीन आर्य राजाओंकी फूटसे आर्यवर्त देशकी स्वतं-त्रता नष्ट हो गई। इतने दीर्घकालीन फूटरोगके दुष्परिणामोंको

× ऋषि दयानन्दके एक पत्रसे भी यह आशय स्पष्ट है जो कि उन्होंने रावराजा तेजसिंहजी जोधपुरको लिखा था कि " श्रीमान् महाशय महोदय जोधपुराधीशों श्रीमान् महाराजे श्री प्रतापसिंहजी तथा आपको अनेक धन्यवाद देता हूं कि जिन आप लोगोंने मेरे वहां जोधपुरमें आनेके लिये प्रीति प्रकाश की। अब मुझको दृढ निश्चय इस बातसे हुआ कि अब आर्यवर्तकी उन्नति होनेका समय आया है... सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरसे मैं प्रार्थना करता हूं... स्वदेशोन्नतिमें आप सबको दृढोत्साही करके आप लोगोंके द्वारा सब आर्यवर्त देशकी बढती कराके इस महापुण्यकीर्तिके भागी आप लोगोंको करे " (ऋषि दयानन्दके पत्रविज्ञापन। पत्र सं० ३५५ पण्डित भगवंदत्तकृत)

भोग कर अब तो आर्यवर्तके आर्यराजाओंको संगठित होना चाहिये ※ और राष्ट्रोदयकी ओर पूर्ण शक्ति लगाना चाहिये। अब यह प्रश्न केवल आर्यराजाओंकाही नहीं रहा किन्तु आर्य जनसाधारणके सम्मुख भी है और जब कि आज भयंकर काण्डोंके दृश्य सामने आ चुके हैं तब तो इसपर गम्भीर विचार करनेकी आवश्यकता है। अत एव आज आर्य-समाजमें राजार्यसभा बनानेका प्रश्न उठ रहा है। ऋषि दयानन्दने तो पहिलेहीसे धर्मार्यसभा, विद्यार्यसभा, और राजार्यसभा नामसे तीन सभाओंके बनानेका आदेश दिया था, परंतु आर्यसमाजी तो दयानन्दके बतलाए हुए आर्य-समाज क्षेत्रको छोडकर अन्य क्षेत्रोंमें भटकने लगे। दयानन्द-ने तो दूरदर्शितासे उक्त महत्त्वपूर्ण आदेश दिया था, यही नहीं उसने तो अनेक ऐसे राष्ट्रिय आदेश दिये हैं जिन्हें लोग अब नहीं तो भविष्यमें समझें सकेंगे, जैसे कि "एक-को स्वतन्त्र राज्यका अधिकार न देना चाहिये, किन्तु राजा जो सभापति तदाधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजाके आधीन और प्रजा राजसभाके आधीन रहे। जो प्रजासे स्वतन्त्र राजवर्ग रहे तो राज्यमें प्रवेश करके प्रजाका नाश किया करे" (सत्यार्थप्रकाश, षष्ठ समुल्लास)

क्या इससे बढकर राजा, राजसभा और प्रजाके सम्बन्ध-में कोई व्यवस्था हो सकती है? यहां राजाको सभापति कहा गया है, इतनाही नहीं किन्तु सभापति राजा कौन हो इसके लिये भी लिखा है कि "जो सबमें सर्वोत्तम गुणकर्म-स्वभावयुक्त महान् पुरुष हो उसको राजसभाका पतिरूपमें मानके सब प्रकारसे उन्नति किया करे" (सत्यार्थप्रकाश, षष्ठ समुल्लास) आज राष्ट्रके नेता इस सिद्धान्ततक पहुंच रहे हैं। राजा और प्रजा दोनोंकी सम्मतिसे राज्यका कार्य होनेका आदेश ऋषि दयानन्दने श्रीयुत महाराणा उदयपुर-को भी दिया था- "राज्यका कार्य एकपर निर्भर न करें। किन्तु राजपुरुष और प्रजापुरुषकी अनुमतिके अनुकूल प्रचलित करें।" (ऋषि दयानन्दके पत्रविज्ञापन) ऋषि दयानन्दकी राजनीति तो बहुत उदात्त है, उन्होंने यहांतक लिखा है "(प्रश्न) जो राजा वा राणी अथवा न्यायाधीश वा उसकी स्त्री व्यभिचार आदि कुकर्म करे तो उसको कौन दण्ड देवे? (उत्तर) सभा, अर्थात् उनको तो प्रजापुरुषोंसे भी अधिक दण्ड देना चाहिये। (प्रश्न) राजादि उनसे दंड क्यों ग्रहण करेंगे? (उत्तर) राजा भी एक पुण्यात्मा भाग्यशाली मनुष्य है। जब उसीको दण्ड न दिया जावे और वह दण्ड ग्रहण न करे तो दूसरे मनुष्य दण्ड क्यों मानेंगे? और जब सब प्रजा और प्रधान राज्याधिकारी धार्मिकतासे दण्ड देना चाहें तो अकेला क्या कर सकता है? जो ऐसी व्यवस्था न हो तो राजा प्रधान और सब समर्थ पुरुष अन्यायमें डूबकर न्याय-धर्मको डुबा करके सब प्रजाका नाश कर आप भी नष्ट हो जावें" (सत्यार्थप्रकाश, षष्ठ समुल्लास)

निःसन्देह ऋषि दयानन्द यदि आज होते तो राजनीति-में बहुत विकास हो जाता, आर्य राजाओंको संगठित कर देते और आर्यवर्त देशके भाग्यका उदय भी कभी का हो जाता। और कहीं आर्यसमाजी भी ऋषि दयानन्दकी बतलाई हुई तीनों विद्यार्यसभा, धर्मार्यसभा और राजार्यसभाको प्रथमसे ही बना लेते तो आर्यजातिका महान् कल्याण हो जाता और राष्ट्रिय क्षेत्रमें आर्यसमाजका अग्रस्थान होता। अब आर्यसमाज यदि राजार्यसभा या आर्यराजसभाको बनाना चाहता है, तो उसको विद्यार्यसभा और धर्मार्यसभाको यथावत् एक सूत्रका रूप देना चाहिये अर्थात् संस्कृत और अंग्रेजीके योग्य आर्यविद्वानोंकी विद्यार्यसभा बनाकर अपने समस्त गुरुकुल तथा कालिज उक्त सभाके सुपुर्द कर देने होंगे और उच्च धार्मिक विद्वानों योग्य धर्मोपदेशकोंकी धर्मार्यसभा बनाकर समस्त धर्मतत्त्वोंके निर्णय और प्रचारके कामको इस सभाके अधीन कर देना चाहिये। पुनः प्राचीन और अर्वाचीन नय-नीतिके तत्त्वज्ञ श्रेष्ठ विद्वानोंको प्रमुख एवं अग्रसर बनाकर आर्यराजसभाका निर्माण करना हितकर होगा। उक्त सभाका काम वेद एवं आर्यसमाजके राजनैतिक दृष्टिकोणका प्रचार और केन्द्रिय विधानपरिषद् में भाग ले उसका व्यवहार कराना तथा उसके अधीन आर्यसेनाका बनाना जिसमें बाल, युवा, वृद्ध, छोटे, बडे, धनी, निर्धनको भाग लेना अनिवार्य हो, उन्हें सैनिकव्यूह व्यायाम सिख कर सन्नद्ध (ट्रेण्ड-तैयार) किया जावे। सेनानायकोंके आदेशको सर्वमुख्य समझना आवश्यक हो। स्त्रियोंमें सैनि-कता होनेका प्रबन्ध करे। अस्तु। शेष राष्ट्रोदयके वैदिक साधन "वैदिक राष्ट्रियता" पुस्तकमें देखे जो कि सार्व-देशिक आर्यप्रतिनिधिसभा देहलीकी ओरसे छप चुकी है। इति।

※ सबको केन्द्रिय विधानपरिषद्में भी आना चाहिये।

हिन्दू

(लेखक श्री. यतीन्द्र केशवजी)

'मेरी धारणा है कि हिन्दुस्थानने जिस सभ्यताको जन्म दिया था, विश्वकी कोई सभ्यता उसकी बराबरी नहीं कर सकती। हमारे पूर्व पुरुष, जो बीज बो गये हैं, उसकी समता करनेवाली संसारमें एक भी वस्तु नहीं है। रोमके धुर्रे उड गए, यूनानका नाम शेष रह गया, फिरौनका साम्राज्य रसातलको चला गया, जापान पच्छिमके चगुलमें फँस गया और चीनकी तो बात कुछ कहतेही नहीं बनती; परन्तु हिन्दुस्थानकी, पत्ते झड जानेपर भी, जड मजबूत है।'—विश्ववंद्य महात्मा गांधी।

संसारका इतिहास पुकार-पुकारकर उच्च स्वरसे कह रहा है कि इस चलती-फिरती दुनियामें बडी-बडी जातियाँ बनीं और बिगड गईं। ऊँची-ऊँची सभ्यताओंका उदय और अस्त भी हो गया। बडे-बडे राष्ट्र खडे हुए और लडखडा कर गिर पडे। दूर-दूरतक फैले हुए साम्राज्य स्थापित हुए और सर्वनाशको प्राप्त हो गये। जैसे कि सुविस्तृत पारस देशके वीरवर जमशेद और नौशेरवानके सुदूर पूजित सिंहासनके अधिकारी धर्मप्राण पारसी मुसलमानोंके आक्रमणों एवं अत्याचारोंके कारण अपने पूर्वजोंका धर्म-पालन करते हुए निज देशमें नहीं रहे, तथा सभ्य संसारमें अपना स्थान रखनेवाले मिश्र देशके निवासी, जो कि थिबेजके आश्चर्यप्रद मंदिरों तथा मीनारों (pyramids) के बनानेवालोंके वंशज हैं, मुसलमानोंके आक्रमणोंसे भयभीत हो गये और इतने भयभीत हुए कि उन्होंने आक्रमणकारियोंके धर्ममें दीक्षित हो अपने सभ्य और सुसंस्कृत एवं यशस्वी पूर्वजोंकी उज्ज्वल कीर्तिपर सदाके लिए कालिख पोत दी। और इसी प्रकार विश्व-विजयकी कामना रखनेवाले महान् सिकन्दरका जगत्-विख्यात्, यूनान भी, जो किसी समय एक छोरसे दूसरे छोरतक समस्त यूरोपपर बादलोंकी नाईं छाया हुआ था, खूंखार अरबोंके भयंकर आक्रमणोंके प्रबल वेगको न सह सकनेके कारण परास्त हुआ। और इतनाही नहीं, कई शताब्दियोंतक उनकी परतंत्रताकी कडी बेडियोंमें जकडा रहा; परंतु मनुष्यके सौभाग्यसे उस समय संसारमें एकही जाति ऐसी रही, जो विपत्तिकालमें पत्थरकी तरह कठोर और सुकालमें सहल और सरल थी और आज भी वह जाति कविकी निम्नलिखित वाणीमें विश्वका पथ-प्रदर्शन करनेके लिये उन दिव्य गुणोंसहित जीवित है—

सम्पत्सु महतां चित्तं, भवत्युत्पलकोमलम्।
आपत्सु च महाशैल-शिलासंघात-कर्कशम्॥

अर्थात्—समृद्धिके समयमें महापुरुषोंका चित्त कमलके समान कोमल हो जाता है; परंतु आपत्तिकालमें वही चित्त महान् पर्वत-शिलाके समान कठोरपन धारण कर लेता है।

इस शक्तिशाली जातिके केवल दर्शनमात्रसे उसके संयमी, नियमी और लोकोपकारी पूर्वजोंका सहजमें अनुमान किया जा सकता है, जिन्होंने देश, धर्म और जातिके लिये क्या नहीं किया? महलों और अट्टालिकाओंको छोडकर जंगलों, पर्वतों और गुफाओं में निवास किया, अतुल सम्पत्तिके स्वामी होनेपर भी उसका तृणवत् परित्याग कर तथा षड्रस भोजनसे मुँह मोडकर घासकी रोटियोंपर निर्वाह किया। सैकडों, हजारों मनुष्योंको नित्य भोजन करानेवाले उन वीर दानियोंने भूखके मारे अपने प्राणसे प्यारे बच्चोंको रोते बिलखते देखा, और इतनाही नहीं, बार-बार भाग्यको सराहते हुए उन्होंने अपने सुन्दर शरीरको घावोंके गहनोंसे बिभूषित किया। आरोंसे चिरवाकर इस क्षणभंगुर शरीरको सदाके लिये अमर किया। जल्लादोंकी तलवारोंको ललकारा, और सुगंधित जलके हौजोंमें सदैव स्नान करनेवाले उन महापुरुषोंने खोलते हुए तेलके कडाहमें कूदनेके समय कभी भी पीछे पग नहीं रखा। और इसी भाँति उन वीर पुरुषोंकी वीर-पत्नियोंने अपनी कंचन-सी कायाको अग्निमें जलाकर भस्म कर दिया; किंतु यह सहन नहीं किया, कि उनके देशको अपवित्र करनेवाले आक्रमणकारियोंकी उनके शरीरपर परछाईंतक भी पड सके और जब सिंहका बच्चा छोटा होनेपर भी मदोन्मत्त बलवान् हाथीके सिरपर प्रहार करता है, तो फिर क्या आश्चर्यकी बात है कि ऐसी तपस्विनी और तपस्वी माता-पिताकी संतानें अपने सुन्दर सुकुमार शरीरको दीवारोंमें चुनवानेमें समर्थ और सफल हो सकीं। यह सब क्यों? संसारकी दूसरी जातियाँ तुच्छ भूमिके लिये, अपनी पैतृक सम्पत्ति, पूर्वजोंके धर्म तथा व्यवहारोंको असभ्य विदेशियोंके सर्वनाशी कर-कुठारोंके समर्पित कर देती हैं; परन्तु उपर्युक्त वर्णित धर्मप्राण जाति अपने पूर्वजोंकी सम्पत्तिकी रक्षाके लिये भूमिही क्या अपना सर्वस्व समर्पित कर देती है; क्योंकि भूमि समय अनुकूल होनेपर पुनः प्राप्त की जा सकती है; परन्तु सभ्यताके सौन्दर्य, शताब्दियोंकी कठोर तपस्यासे प्राप्त पूर्वजोंके दिव्य भाव यदि एक बार नष्ट हो गये, तो फिर उनका प्राप्त होना असम्भव है।

निस्सन्देह आप पूछेंगे कि ऐसी वह महान् जाति कौन है ? जो जाति संसारकी सबसे पहली जाति है, वही जाति, उस सबसे पुराने देशकी निवासिनी है, जहाँ प्रकृति सदा फूली-फली है और जिस देशका उत्कर्ष सम्पूर्ण देशोंसे कहीं अधिक होनेके कारण आदि कालसे भूलोकका गौरव रहा है। यह वही जाति है, जिसे भगवान्को भव-भूतियोंका सर्वप्रथम भंडार मिलनेके कारण संसारको सर्वोत्तम शिक्षा दी है। परन्तु इस जातिने दूसरे धर्म-प्रचारकोंकी नाईं दम्भ, ढोंग, छल, पाखड, पाप, हत्या और अमानुषतासे कभी काम नहीं लिया, वरन् अपने जीवनके उदाहरणसे शक, हून, गुर्जर, तुर्क आदि नरहिंसक जातियोंके जीवनमें अद्भुत परिवर्तन कर उन्हें समुद्रकी नाईं अपनेमें सदाके लिये समा लेनेके कारण आधुनिक संसारकी अग्रगण्य जातियाँ जिस जातिके सामने किंचित् भी महत्त्व नहीं रखतीं और रख भी कैसे सकतीं हैं, जब कि उस वीर जातिने भय, लोभ और आलस्यसे कोसों दूर रहकर अपनी ज्वलन्त आत्म-कहानी निज खूनसे लिखनेके कारण एक-दोके कहनेसे नहीं; वरन् संसारके स्वीकार करनेसे जो विश्वकी महान् जाति कहलाई है, वही हिन्दू जाति है।

ओ पुरातन हिन्दुस्थानकी पवित्र भूमि ! ओ मानवताकी जन्मदात्री ! तेरी जय हो ! तेरी जय हो ! ओ पूज्य, वयोवृद्ध और योग्य भारत-माता ! तूने मानवताको पाला-पोषा और बडा किया है। तू निस्संदेह महान् है, जिसे शताब्दियोंके भयंकर आक्रमण भी गिरा नहीं सके हैं। ओ हिन्दुस्थान ! धर्म, प्रेम, कविता, कला-कौशलने तेरी पवित्र कोखसे जन्म लिया है, अतः तुझे हमारा बार-बार नमस्कार है और विश्वम्भरसे हार्दिक प्रार्थना है कि हमारे पश्चिमका भविष्यकाल हिन्दुस्थानके अतीत काल-सा रम्य और सुन्दर बन जाये।

इस महान् हिन्दू जातिका न केवल हिन्दुओंकोही गौरव है, जो कि प्रातःस्मरणीय स्वामी विवेकानंदद्वारा अमेरिका आदि विदेशोंमें दिये गये सारगर्भित भाषणोंसे स्पष्ट झलक रहा है—

" क्या हिन्दुस्थान मिट जायगा ? यदि ऐसा हुआ तो समझ लीजिये कि भूलोकसे आध्यात्मिकताका अंत हो जायगा, संसारमें सदाचार पूर्णचन्द्र की नाईं फिर कहीं भी दिखाई नहीं देगा, धर्मके लिये सच्ची सहानुभूति भी फिर सृष्टिसे उठ जायगी, आदर्श नामक वस्तु भी विश्वमें कोई नहीं रहेगी, और इनकी अनुपस्थितिमें दो चीजें-भोग और वासना-देव और देवीकी नाईं सर्वत्र पूजे जाने लगेंगे और इनके आगे मानव आत्माका बलिदान चढाया जायगा तथा छल, कपट, छीना, झपटी और पाशविक बल चारों दिशाओंमें नाचने-कूदने लगेंगे। क्या यह सब सत्य हो सकेगा ? जबतक हिन्दुस्थान जीवित है, ऐसी बुरी बात कभी भी नहीं हो सकती। कर्मसे त्याग कहीं ऊंचा है और इसी प्रकार घृणासे प्रेम कहीं अधिक बलवान् है। जो महानुभाव हिन्दू धर्मके वर्तमान पुनर्जीवनको राजनैतिक आन्दोलन समझ इसकी अवहेलना करते हैं वे भयंकर भूल कर रहे हैं। " वरन् जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं मनुष्यमात्र आज हिन्दू और हिन्दुस्थानका अत्यन्त आदरकी दृष्टिसे देख रहा है, कारण कि संसारमें जब अमानुषकता दिन दुगनी और रात चौगुनी बढ रही थी, तब इसी स्वातंत्र्यप्रेमी हिन्दू-जातिने मानवताकी रक्षा अपने जीवनकी बाजी लगा कर की है और आज भी जब हम यह देख सुन भयभीत हो रहे हैं।

" ईसवी संवत्को प्रारम्भ हुए दो हजार वर्ष हो चले हैं। इन दो हजार वर्षोंसेही जैसा कि आप कहते हैं, संसारने उन्नतिका मुख देखा है। परन्तु मैं तो यह कहूँगा कि यह उन्नति नहीं हो रही है, किन्तु मनुष्यके लिये सर्वत्र मौत नाच रही है, कारण कि इस आधुनिक उन्नतिसे केवल भोगोंकीही वृद्धि हुई है और सभ्यता अर्थात् सभ्य संसारका भविष्य विषय-वासनाओंकी तृप्तिमें नहीं आत्माकी शक्तिपर निर्भर है और यही सच्चा आदर्श है। " तब संसारका भला चाहनेवाले फ्रान्स देशके सुप्रसिद्ध व्यक्ति श्री पैरी लोटीकी नाईं असंख्य मानवगण निष्पक्ष भावसे हिन्दू जातिके पुनर्जीवनमें विश्व-कल्याणका एकमात्र सफल साधन स्वीकार करते हुए सहर्ष स्पष्ट कह रहे हैं—

" ओ प्राचीन हिन्दुस्थान ! मैं अब आश्चर्य-चकित तुझे सादर-विनम्र नमस्कार करता हूँ। कारण कि अध्ययनद्वारा मैंने यह जान लिया है कि तू सदासे कला-कौशल और तत्त्व-विचारका भंडार रहा है।...... जब हम तेरे आदि कालसे चले आये हुए आश्चर्यपद गूढ विचारोंपर दृष्टिपात करते हैं, तो हमें ऐसा प्रतीत होता है कि यह नीच, पतित नित्य अवनतिकी ओर जानेवाला राष्ट्र-घातक, देव-घातक और आत्म-घातक पश्चिम अब भी नाश और पतनकी ओर शीघ्रतासे बढा चला जा रहा है। ओ हिन्दुस्थान! तूने अब करवट बदली है। भगवान् करे तेरे इस जागरणसे पश्चिम चौंक पडे और अपना पथ बदल दे। "

हिंसा—अहिंसा पर व्यासदेव

(लेखक— श्री. पं० जयदेव शर्मा, विद्यालंकार, मीमांसातीर्थ, वनस्थलीविद्यापीठ, जयपुर स्टेट)

जब जब कोई समस्या या सामाजिक जटिल प्रश्न जनताके सामने आते हैं तब तब उनको सुलझानेका उपाय दार्शनिकोंने विचारकर निकाला है। अब भी जटिल समस्या आनेपर भारतीय जनता महा० गांधीके चरणोंमें दौडी आती है। स्वार्थवश जटिल समस्याएं सब जमानोंमें उठी हैं। महायुद्ध होते आये राज्यलोभसे लाखोंका संहार हुआ है।

युद्ध या शस्त्रबलसे छेदन-भेदन करनेको हम हिंसाके नामसे पुकारने लगते हैं और हिंसाको बुरा कहने लगते हैं, और यदि कोई भय मानकर निर्दयीसे पीठ कर ले और जान बचा ले, या हाथ पैर जोड ले तो यह अहिंसाका मार्ग नहीं है, यह भीरुता, कायरताका मार्ग है, लोग ऐसी अहिंसाकी भी निन्दा करते हैं क्योंकि ऐसी कायरताके चोलेमें छुपी अहिंसा हिंसककी हिंसाको और अधिक बिकट रूप देती है। और ऐसी अहिंसा हिंसाकी वृद्धि करती है। इसलिये यह अहिंसा नहीं प्रत्युत परिणामतः हिंसा है।

जिस कालसे भी दुष्टोंका दमन प्रारम्भ हुआ है उसका मूल सिद्धान्त यही रहा है कि वह हिंसा नहीं जो नीच कोटिकी हिंसाके दमन करनेके लिये है। ऐसी हिंसाका नाम दमन है, दण्ड है, शासन है। ग्रामको उजाडनेवाली नदीके प्रवाहको रोकनेके लिये जैसे प्रवाहसे अधिक प्रबल बन्ध बना दिया जाता है उसी प्रकार जनपद, राष्ट्र व प्रजाका नाश करनेवाले हिंसक आक्रमणको रोकनेके लिये जो हिंसा-रूप शासन दमन या प्रतिरोध किया जाता है वह हिंसा नहीं वह दमन या दुष्टको दण्ड देना कहाता है। चोरों, डाकुओं, ग्रामनगरमें अग्नि लगानेवालों, विष देनेवालों और छुपे उपायोंसे जनतापर कायर आघातकारी वार करनेवाले आततायोंयिका इसी कारण सर्वोपरि प्राणवधही उचित दण्ड समझा जाता है।

यदि देशव्यापी हिंसामयी अशान्ति या गुण्डा-कृत्यको हम दमन करना चाहते हैं तो जनताकी रक्षा और गुण्डोंको दमन करनेके लिये प्रत्येक सक्षम पुरुषको कटिबद्ध हो जाना चाहिये कि आततायियोंको पकडें, दण्ड दें और दिलावें। इस प्रकार वे राजसत्ताकी सहायता करें। और वे स्वयं भी दमनकारी भी शासनसत्ताका अंग बनें। तब वह उनका दमनकारी सशस्त्र व बलपूर्वक योग और प्रयोग किसी प्रकार भी हिंसा वा निन्दायोग्य कृत्य नहीं कहा जा सकता।

प्रसिद्ध महाकवि माघने कहा है—

चतुर्थोपायसाध्ये तु रिपौ सान्त्वं अपक्रिया॥

साम, दान, भेद और दण्ड इन चार उपायोंमेंसे जो चौथे (दण्ड) उपायसे माननेवाले हैं उनको साम (प्रिय मधुर वचन) से मनाने समझानेका उपाय करना उनका अपकार करना है, वह उनको और भी बिगाड देना है, वह अपने बुरे कामपर और दृढ हो जाते हैं। यही कारण है जबसे भी भारतमें गुण्डाशाहीके दंगे शुरू हुए हैं उनको दण्ड-उपायसे दमन करनेका यत्न नहीं किया और फलतः वह बिकटतर, बिकटतम रूपमें भडकता गया है। और अब मूल प्रवर्तकोंके वशका भी नहीं रहा है। अस्तु।

इस सम्बन्धमें उद्योगपर्वमें व्यासदेवने कुछ वचन बहुतही महत्त्वके कहे हैं। इन वचनोंसे प्राचीन इतिहासपर भी प्रकाश पडता है।

(१)— यदा गृद्ध्येत् परभूतौ नृशंसो
विधिप्रकोपाद् बलमाददानः।
ततो राज्ञाम् अभवद् युद्धमेतत्
तत्र जातं वर्म शस्त्रं धनुश्च॥

अर्थ— जब नृशंस, नर-हत्यारे आततायी निर्दय लोग दैवकोपसे अधिक प्रबल होकर दूसरेकी सम्पत्तिपर लोभ करता है, तब राजाओंका परस्पर युद्ध होता है और उस समय तलवार आदि शस्त्र, धनुष आदि अस्त्रही कवच अर्थात् रक्षाका साधन होते हैं।

(२)— इन्द्रेणैतद् दस्युवधाय कर्म
उत्पादितं वर्म शस्त्रं धनुश्च।

तत्र पुण्यं दस्युवधेन लभ्यते
सोऽयं दोषः कुरुभिस्तीव्ररूपः ॥

दस्युओंको नाश करनेके लियेही 'इन्द्र' ने कवच, शस्त्र और धनुष अर्थात् शस्त्रास्त्र आदिका कार्य जारी किया था। ऐसे कार्यमें दस्युके वधसे पुण्य प्राप्त होता है। वही दोष कौरवोंमें बडा तीव्र था।

इतने पर भी व्यासदेव सदा इसी सिद्धान्तको मानते थे कि यदि हो सके तो अहिंसामय उपाय करे, तो बडा उत्तम है। उद्योगपर्वमें कृष्णके मुखसे कहाया गया है—

(३)— ते चेदिमे कौरवाणामुपायम्
अवगच्छेयुरवधेनैव पार्थाः।
धर्मत्राणं पुण्यमेषां कृतं स्यात्
आर्ये वृत्ते भीमसेनं निगृह्य ॥

यदि पाण्डवलोग कौरवोंका वध किये विनाही कोई उपाय शांतिका ढूंढ लें, तो भीमसेनको आर्यआचार-मर्यादामें संयत करके वे अवश्य धर्मकी रक्षाका पुण्य कार्य करेंगे।

साथही व्यासदेव यह भी मानते थे कि पूर्वजोंके सत्कर्ममें यदि दैववश प्राण भी नष्ट हो जाँय तो अपने कर्तव्य-मार्गमें वह मरण भी सर्वोत्तम कल्याण है।

(४)— ते चेत् पित्र्ये कर्मणि वर्तमानाः
आपद्येरन् दिष्टवशेन मृत्युम्।
यथाशक्त्या पूरयन्तः स्वकर्म
तदप्येषां निधनं स्यात् प्रशस्तम् ॥

यदि वे पाण्डव अपने पितरोंके कार्यमें रहकर विधिवश मृत्युको प्राप्त कर लें, तब यथाशक्ति अपना काम पूरा करते हुए उनका मरण भी सर्वोत्तम प्रशंसनीय है। वस्तुतः भारतीय शूरवीरताका यही लक्षण है।

भारत-विभाजनके बाद क्या होगा ?

हिंदुओंका कर्तव्य

(लेखक—श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार, सम्पादक ' कल्याण ' गोरखपूर.)

भारतके जिस विभाजनको सर्वथा घृणित बतलाया जा रहा था, जिस पवित्र भारतमाताके शरीरके टुकडे करनेको महान् पाप कहा जा रहा था, जिसका हो जाना अपनी सारी तपस्या तथा साधनाका असफल होना माना जा रहा था, जिसके लिये हमारे उच्च नेताओंने बार-बार गर्जना करके कहा था कि 'धोखेसे भी पाकिस्तान नहीं मिलेगा', जिसके विरोधमें ये गीत गाये जाते थे कि 'जिन्ना चाहे दे दें जान, नहीं मिलेगा पाकिस्तान ' और अभी उस दिन विभाजन-योजनाकी घोषणाके दो-एक दिन पहलेही महात्मा गाँधीने इस आशयकी बात कही थी कि 'सारा भारत जलकर राख भलेही हो जाय, पर हिंसाके भयसे पाकिस्तान नहीं दिया जायगा। ' वही भारत-विभाजन, वही नापाक पाकिस्तान सहजही स्वीकार कर लिया गया ! 'लडकर लेंगे पाकिस्तान, मारके लेंगे पाकिस्तान' लीगके ये नारे सच्चे और सफल हो गये; और आश्चर्य तो यह कि विभाजन-योजनाकी स्वीकृति-को पागलपन बतलानेवाले स्वयं महात्माजीही उसको मान लेनेके लिये आदेश देने लगे ! महात्माजीकी परस्पर-विरोधी बातोंको समझना भी आज विकट पहेली हो गया है।

श्रीयुत भूदेव किंकरने 'कर्मवीर' में बहुत ठीक लिखा है कि ' परम्पराका जोड मिलाने चलिये तो विरोधाभास इतने मिलेंगे कि आप हैरान हो जायँगे । प्रतीत होगा कि मानो पिछले ३० वर्षोंका सीखा हुआ सबक भूलकर एक नया पाठ याद करनेको दिया जा रहा है । कलतक, विभा-जनको देशमाताके शरीरके टुकडे करने-जैसी घृणित चीज माननेवाले और उसका प्रचार करनेवाले नेताही आज विभाजन-योजनाको मक्खनकी टिकियाकी तरह निगलनेकी सिफा-रिश कर रहे हैं ! '

स्पष्ट स्वीकार न करना तो दूसरी बात है, पर है यह सर्वथा स्पष्टही कि लीगियोंके 'लडके लेंगे पाकिस्तान, मारके लेंगे पाकिस्तान ' की नीतिके सामने घुटने टेककरही-उनके आततायीपनके आगे आत्मसमर्पण करकेही आज हम लोगोंने यह विभाजन स्वीकार किया है । पण्डित नेहरूजी एवं सरदार पटेलके भाषणोंसे यह साफ है कि देशवासि-योंकी निर्मम हत्याओं और अत्याचारके काण्डोंसे ऊबकरही यह योजना स्वीकार की गयी है । इसका स्पष्ट अर्थ यह होता है कि मुस्लिम लीग और मुसलमान जनताके आत-तायीपनका सामना करके सफलता पानेकी, उनके आत-तायीपनको जडमूलसे मिटा देनेकी क्षमता हम अपनेमें नहीं देख रहे थे और इसीलिये अपनेको असहाय, दुर्बल और असमर्थ पाकरही हमने विभाजन-योजनाको स्वीकार करनेमेंही मङ्गल समझा !

यह साफ तौरपर कहा भी गया है कि निर्मम हत्या-ओंकी अपेक्षा देशका विभाजन स्वीकार करना कहीं अच्छा है । यह माना जा सकता है कि हमारे नेता देशका विभा-जन नहीं चाहते थे और यह भी ठीक हो सकता है कि उन्होंने बडे दुःखित हृदयसे इस विभाजनको स्वीकार किया है; पर साथही यह भी ज्वलन्त सत्य है कि उन्होंने स्वीकार किया है लीगियोंके भयंकर उत्पातको मिटानेमें अपनेको सर्वथा असमर्थ पाकरही ! इसीलिये देशवासियोंका नेता-ओंसे यह प्रश्न होता है कि जब ऐसीही असमर्थता और बलहीनता थी, तो दो-एक साल पहलेही पाकिस्तान स्वीकार क्यों नहीं कर लिया गया ? उस समय न इतनी कडी शर्तें होतीं, न इतनी माथापच्ची करनी पडती और न लीगियोंका इतना दिमागही बढता । और सबसे उत्तम बात तो यह होती कि हजारों निरीह नर-नारी, बच्चे बुरी तरहसे बेमौत न मरते, करोडों अरबोंकी सम्पत्तिका नाश नहीं होता, मुसलमानोंमें इतना हत्यारापन और इतनी पैशाचिकता न आती और गाँवोंतककी हिंदू-मुसलमान-जन-तामें आज जितना अविश्वास और वैर हो गया है, वह न

हो पाता ! पर जो कुछ हुआ सो हुआ । थोडी देरके लिये यह भी मान लेते हैं कि 'कांग्रेस यदि इस योजनाको स्वीकार न करती तो देशमें हत्याकाण्ड और उपद्रव बढते ही जाते, एवं अन्तमें सारेही भारतको पाकिस्तानके रूपमें स्वीकार करना पडता । अब इसको स्वीकार करनेसे तीन चौथाई भाग तो पाकिस्तान बननेसे बच गया । इसीको मजबूत बनाकर स्वतन्त्रताका उपभोग करनेके साथही सर्वविध उन्नति की जायगी । ' लेकिन क्या यह समझ लेना ठीक है कि इस विभाजनके बाद मुसलमानोंके आततायीपनकी क्रियाएँ बंद हो जायँगीं ? क्या वे अपने पाकिस्तानमें चुपचाप बैठकर या परस्पर सहयोग स्थापित करके सुखशान्तिसे रहेंगे और क्या हिंदुस्थानके लीगपरस्त मुसलमान अंदर-ही-अंदर आग सुलगाते न रहेंगे ?

कांग्रेसी प्रान्तोंके मुसलमान कैसी–कैसी तैयारियाँ कर रहे हैं। अभी कुछ दिन पहले बिहारके एक जिम्मेवार मित्रने मुझसे बतलाया था कि 'इधर बिहारमें मुसलमानोंके यहाँ बाहरसे लारियाँ भर-भरकर हथियार आ रहे हैं और हथियार बन भी रहे हैं । '

'लीडर' प्रयागके १ जुलाईके अङ्कमें उसके पटनास्थित संवाददाताका पत्र छपा है जिसमें कहा गया है कि— 'बिहारकी पुलिसने मुँगेर, भागलपुर और पटनाके गाँवोंमें मुसलमानोंके घरोंसे छिपाये हुए बहुत बडे परिमाणमें शस्त्रास्त्र तथा गोली-बारूद बरामद किये हैं, जिनमें देशी बमोंसे लेकर आधुनिकतम शस्त्र भी हैं । मुँगेरके एक गाँवमें १६ ब्रेन-गन् और टॉमी-गन् (आधुनिक छोटी तोपें) मिली हैं । '

धूमसे अग्निके अस्तित्वकी भाँति इससे सिद्ध होता है कि बिहारके मुसलमानोंने काफी हथियार इकट्ठे कर रक्खे हैं ।

काठियावाडके एक मुसलमान देशी राज्यके बंदरगाहपर बडी तादादमें विदेशोंसे शस्त्रास्त्र आनेकी बात आ चुकी है । कहा जाता है कि वहाँसे तमाम बंबई-प्रान्तमें हथियार फैलाये जा रहे हैं ।

युक्तप्रान्तमें तो बेकानूनी हथियार बहुत बडी संख्यामें आये हैं । यह बात जिम्मेदार सरकारी अधिकारी भी स्वीकार कर चुके हैं । कई जगह हथियार बनानेके कारखाने भी चलते सुने जाते हैं ।

मथुराकी सीमापर मेवाती मुसलमानोंने आधुनिक शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित होकर हमला कियाही था । अब भी उनके काम वैसेही चल रहे हैं । 'अमृतबाजारपत्रिका' २ जुलाईके अङ्कमें बुलंदशहरका एक पत्र छपा है, जिसमें लिखा है कि 'इस जिलेके दक्षिण-पश्चिम भागकी बुरी हालत है । गुडगाँवसे भागकर आये हुए मेवाती लोग चेहरोंपर नकाब डालकर या चेहरे रँगकर आते हैं और जहाँ-तहाँ आग लगा जाते हैं । कांग्रेसी एम्० एल्० ए० लोगोंका कहना है कि इनके पास पर्याप्त शस्त्र होते हैं । नेशनल गार्डवाले मोटरगाडियों एवं अन्यान्य साधनोंके द्वारा उनकी सहायता करते हैं और स्थानीय पुलिस पक्षपात करती है । '

युक्तप्रान्तकी पुलिसमें मुसलमानोंकी संख्या अत्यधिक है, यह सर्वविदित है । पर हमारी न्यायप्रिय उदार सरकार किसी प्रकार भी उनकी संख्या शीघ्र कम करनेका प्रयत्न नहीं करती ! शायद हिंदुओंपर उनके द्वारा अत्याचार होनेमेंही सरकार न्यायकी रक्षा समझती हो !

इस अवस्थामें कैसे समझा जाय कि भारत-विभाजनके बाद हिंदुस्थानके मुसलमान लीगियोंके षड्यन्त्रमें सहायता नहीं करेंगे ?

भविष्यके लिये यदि पूरा भरोसा हो जाता कि देशमें शान्ति रहेगी और कोई उपद्रव नहीं होगा, तो देशवासी लाचार होकर एक बार किसी तरह इस विभाजन-विषकी कडी घूँट भी पी लेना चाहते, मुसलमानोंकी बर्बरता और उद्दण्डताके सामने हमारे नेताओंके इस कायरतापूर्ण आत्मसमर्पणको सह लेनेके लिये अपने मनको समझाते; पर लक्षणोंको देखनेसे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि यदि राष्ट्रीयताके मोहमें पडे हुए हमारे नेताओंकी नीति यही बनी रही, यदि कांग्रेसने अपनी खुशामदी नीतिमें आमूल परिवर्तन करके पूरे बल तथा विवेकके साथ न्यायमार्गका ग्रहण नहीं किया तो, पता नहीं, आगे चलकर और कैसी-कैसी कठिनाइयोंका सामना करना पडेगा !

यह जो कहा जाता है कि 'हम अपनी सद्भावनासे मुसलमानोंका मन पलट देंगे और कुछ दिनों बाद पाकि-

*

स्तान फिर हिंदुस्थानमें मिल जायगा।' यह या तो जान-बूझकर मिथ्या सान्त्वनाके द्वारा अपनी दुर्बलताको छिपाना तथा लुब्ध हिन्दुओंके आँसू पोंछना है, अथवा अपने-आपको धोखा देना है। कांग्रेसकी दब्बू नीतिने अबतक जो कराया है, उसकी वह चाल बंद नहीं हुई है। सफलतापर मनुष्यकी कामनाएँ स्वाभाविकही बढती हैं। लाभसे लोभका बढना प्रसिद्ध है। आज मुसलमानोंकी यही लोभपूर्ण मनोवृत्ति है। उन्हें बडी बुरी लार लग गयी है और यदि उसपर शीघ्रही कोई सफल तथा सशक्त प्रतिबन्ध नहीं लगा और योंही उत्तरोत्तर सफलता मिलती गयी, तो सम्भव है, उनका बहुत पुराना 'पान-इस्लामिज्म्' का स्वप्न सहजही सत्यके बहुत समीप पहुँच जायगा और फिर पछतानेसे कोई भी लाभ न होगा। मुसलमानोंकी क्या रुख है और वे क्या करना चाहते हैं, इसका कुछ अनुमान नीचे दिये हुए थोडेसे विवरणसे हो सकेगा!

सरदार पटेलने उस दिन अपने भाषणमें केन्द्रीय सरकार सम्बन्धी अपने नौ महीनेका अनुभव बतलाते हुए कहा है कि 'सरकारी नौकरीमें काम करनेवाले मुसलमानोंमें बडे-से बडे अधिकारीसे लेकर छोटे-से-छोटे चपरासीतक एकाध अपवादको छोडकर शत-प्रतिशत मनुष्य लीगके भक्त और उसके प्रति वफादारी दिखानेवाले हैं।'

जो बात केन्द्रीय सरकारमें है, वही समस्त प्रान्तीय सरकारोंके सभी विभागोंमें है (चाहे प्रान्तीय सरकारोंके हिंदू मंत्री किसी कारणविशेषसे इस सत्यको छिपावें, अस्वीकार करें)—इसके उदाहरण प्रतिदिनही मिलते रहते हैं। साधारण मुस्लिम-जनतामें भी यही बात बहुत अंशमें आ गयी है।

उस दिन शिकारपुर (सिंध) की एक सभामें वहाँके रेवन्यू मिनिस्टर पीरजादा अब्दुस्सत्तारने फर्माया कि 'मुसलमान लोग अभी तो जो कुछ मिला है, उसीको स्वीकार कर लेंगे; परंतु फिर पाकिस्तानके अवशिष्ट भागोंको भी लेनेके लिये प्रयत्न करेंगे। वे इससे भी आगे बढ सकते हैं और मुगल-साम्राज्यकालके अन्तर्गत समस्त क्षेत्रको वापस पानेका दावा कर सकते हैं।'

एक दूसरे वक्ता मियाँ जफ्फार जमाल, एम्० एल्० ए० ने और भी स्पष्ट कह दिया। उन्होंने कहा—'जब कि हम मुसलमानोंने पाकिस्तान प्राप्त कर लिया है तो अब आगे बढकर हिंदुस्थानको भी हथियाकर सम्पूर्ण भारतपर शासन करेंगे।'

सरदार पटेलने भी उस दिन यही बात कही है कि 'लीग कौंसिलने अपनी गुप्त बैठकमें स्पष्टही १५ अगस्तके बाद समस्त भारतको हस्तगत करनेकी आकांक्षाको परिपुष्ट किया है।'

गत ता० १३ जूनके 'डॉन्' में अलीगढ विश्वविद्यालयके लेक्चरर मियाँ कमरुद्दीन खाँ साहेबने एक लेखमें लिखा है—

"यह नग्न सत्य है कि उन पाँच करोड मुसलमानोंको, जिन्हें हिंदू भारतमें बाध्य होकर रहना पड रहा है, अपनी स्वतंत्रताके लिये एक दूसरी लडाई लडनी पडेगी। यह कोई भी स्पष्ट देख सकता है कि उस युद्धके आरम्भ होनेपर हिंदुस्थानकी पूर्वीय और पश्चिमीय सीमाओंपर पाकिस्तानकी स्थिति हमारे लिये भौगोलिक एवं सैन्य-संचालनके लिये उपयुक्तताकी दृष्टिसे कितनी लाभदायक सिद्ध होगी।'

'कर्मवीर'में छपा है—कुछ दिन पहले 'सोवियट प्रतिनिधिमण्डल'के सदस्य श्रीजुकोवने लिखा था कि हैदराबादमें अंग्रेज अपना एक बहुत बडा फौजी अड्डा बना रहे हैं। कहा जाता है कि (१) कामरेड्डीमें तोपें बनानेका कारखाना खोला गया है। (२) हवाई जहाजोंका एक नया बेडा तैयार हो रहा है। (३) निजामकी एक लाख फौज ज्यों-की-त्यों है। (४) विजगापट्टम् और गोवाके बंदरगाहोंको निजामको सौंपनेकी बातचीत चल रही है।

'जनयुग' के ये प्रश्न थे। इनको भी निरर्थक कैसे माना जाय? (१) भारत-सरकारके फौजी-विभागके भूतपूर्व मन्त्री मि० मेसनने हालमें हैदराबादकी नौकरी की है। वे हजरत हैदराबादमें क्या कर रहे हैं? (२) 'ग्लोब' नामक अंग्रेज समाचार एजेन्सीने हालमें खबर छापी थी कि निजामने अंग्रेजी सरकारसे १०००० गोरे सिपाही माँगे हैं, ताकि जून १९४८ के बाद वे उसकी 'बादशाहत' की रक्षा कर सकें। यह खबर सत्य है या झूठ? (३) अमरीकी पूँजीपतियोंके मुखपत्र 'बिजिनेस-वीक' ने समाचार छापा है कि हैदराबादने ब्रेनगन् (छोटी तोपें) बनानेका कारखाना

भी अंग्रेजोंसे ले लिया है, जो लडाईके जमानेमें हैदराबादमें बनाया गया था और जो करीब ३० एकडके इलाकेमें फैला हुआ है। ये हैदराबादकी फौजी तैयारियाँ हैं या केवल साधारण उद्योगीकरण ?

अभी उस दिन पत्रोंमें छपा है कि ' हैदराबादकी फौजें बरारकी सीमापर पडी हुई हैं। ' यह अफवाह भी जोरोंसे फैल रही है कि, ' ब्रिटिश सरकारने सत्ता हस्तान्तरित करते हुए ' बरार ' निजामको सौंपनेका अन्तिम निर्णय कर लिया है और इसकी सूचना आन्तिम रूपसे वर्तमान इंटिरिम सरकारको दे दी गयी है। ' यदि यह बात सत्य निकली तो निजामराज्य बहुत बलशाली हो जायगा और वह अपनेको स्वतन्त्र घोषित करके अहिंसावादी इंडियन युनियनके सिरपर लटकती हुई तलवारके रूपमें खडा रहेगा !

खेद तो इस बातका है कि हमारे नेताओंके मतसे सीमाप्रान्त स्वतन्त्र ' पठानिस्तान ' अवश्य बन जाय, और हैदराबाद भी चाहे अपनेको स्वतन्त्र घोषित कर दे, परन्तु त्रावणकोर—चूँकि हिंदू राज्य है—कभी स्वतन्त्र नहीं हो सकता !

महात्माजीने पठानिस्तानका खुला समर्थन किया है। हैदराबादके बारेमें कोई कुछ बोलता नहीं, धमकाया जा रहा है केवल त्रावणकोरकोही !

उधर काश्मीरको पाकिस्तानमें मिलानेकी जी-तोड कोशिस चलही रही है। मियाँ जिना इसीलिये काश्मीर जा रहे हैं। शायद महात्मा गाँधीकी काश्मीर-यात्राका महान् उद्देश्य भी कुछ ऐसाही हो ! भगवान् जानें !

न्यूयार्कका तार है कि कम्युनिष्ट पत्र ' न्यूज वीक ' मेगजीन लिखता है कि भारतके कबीलोंके नेता ईपीके फकीर पर्वतकी गुफाओंमें गुप्त रूपसे बंदूकें बनवानेमें व्यस्त हैं।

उपर्युक्त थोडेसे विवरणसे अनुमान हो गया होगा कि मुसलमानोंकी मनोवृत्ति कैसी है ! लीगने जिस प्रस्तावमें मियाँ जिन्नाको योजना स्वीकार करनेका अधिकार दिया है, उसकी शब्द-योजना ध्यान देनेयोग्य है। उसमें कहा गया है कि ' पंजाब और बंगालके विभाजनके साथ हमारी सम्मति नहीं है। तथापि हम नयी योजनाके मूल सिद्धान्तको स्वीकार करते हैं और इस योजनाको एक समझौते (Compromise) के तौरपर स्वीकार करने और इसके सम्बन्धमें जो कुछ भी करना हो, उसे करनेका कुल अधिकार हम मि० जिन्नाको देते हैं। ' लीगके ४०८ सदस्योंमें ४०० के बहुमतसे प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है। इससे सिद्ध है ये चार सौ लीगी सज्जन बंगाल और पंजाबके विभाजनके विरोधी हैं और एक समझौतेके तौरपर, न कि आखिरी स्वीकृतिके रूपमें योजना स्वीकार करनेका अधिकार मि० जिन्नाको देते हैं। इसको योजनाका स्वीकार समझा जाय या अस्वीकार ? असलमें लीगकी यह सदाकी चाल है कि जितना मिले, उतना हथिया लें और शेषके लिये अपनी माँग बनायी रक्खें। इससे सहजही अनुमान होता है कि विभाजनके बाद (अभी तो विभाजनमेंही बडे-बडे झगडोंकी सम्भावना है और यह भी कौन जानता है कि विभाजनकी क्रिया भी सफल होगी या नहीं ?) पाकिस्तानी मुसलमान अपना अधूरा काम जारी रक्खेंगे और हिंदुस्थानके तीन करोड मुसलमान उनकी यथायोग्य यथासाध्य मदद करते रहेंगे !

सिंधकी लीगी सरकार जो कुछ कर रही है, वह प्रायः लोगोंसे छिपा नहीं है। सरकारी प्रधान-प्रधान पद मुसलमानोंको देनेकी बात तो पहले आही चुकी है। अब यह भी मालूम हुआ है कि ' पुलिसमें मुसलमानोंकी संख्या बढानेके लिये पंजाबसे मुसलमानोंको लाया जा रहा है। ' ' अमृतबाजारपत्रिका ' (इलाहाबाद) का कराचीका संवाददाता लिखता है कि ' सिंधकी लीगी सरकारने हिंदुओंके विरुद्ध लडाई छेड दी है। हिंदुओंके द्वारा नियन्त्रित शिक्षा-संस्थाओंको सिंध सरकारने आदेश दिया है कि या तो वे बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दें या फिर असहयोग करनेके सारे परिणामोंको भुगतनेके लिये तैयार हो जाएँ। गैर-मुस्लिम शिक्षकोंको निकालकर दूसरे प्रान्तोंसे लाये हुए मुसलमान उनकी जगह नियुक्त किये जा रहे हैं। समस्त स्कूलोंमें मुसलमान तथा गैरमुसलमान सभी विद्यार्थियोंके लिये उर्दू अनिवार्य विषय बनाया जा रहा है। हिंदीको खुले आम गिराया जा रहा है। नौकरियोंकी फी सदी पहलेसेही घटा दी गयी है। ज्यादतियोंके कारण हिंदू-

व्यापारी सिंध छोडकर बाहर जानेकी तजवीज कर रहे हैं। आर्थिक मृत्युके अतिरिक्त, सिंधके हिंदू अपनेको सांस्कृतिक सर्वनाशके खतरेमें भी पा रहे हैं। '

अब तो सिंधमें तमाम हिंदू-स्कूल-कालेजोंकी सरकारी सहायता बंद कर दी गयी है।

' अ० बा० पत्रिका ' प्रयागके १५ जूनके अंकमें छपा है कि ' कराची डी० ओ० डब्ल्यू० मेडिकल कालेजकी कुल ७० सीटोंमेंसे १८ तो बिहारी-बहावलपुरी मुसलमानोंको दे दी गयीं। २९ सिंधी मुसलमानोंने प्रार्थना-पत्र भेजे थे, उन सबको बिना उनकी योग्यताका विचार किये भर्ती कर लिया गया। शेष २३ सीटें अल्पसंख्यकोंको मिलीं। अल्पसंख्यक विद्यार्थियोंके २४० प्रार्थना-पत्र थे। उनमें कुछ तो अणु-कीटाणु-विज्ञानके विशेषज्ञ और प्रथम या उच्च द्वितीय श्रेणीमें उत्तीर्ण ग्रेजुएट थे। पर वे नहीं लिये गये। एक हिंदू विद्यार्थी जो सिंधभरमें बी० एससी० में प्रथम उत्तीर्ण था, नहीं लिया गया। दूसरी ओर ऐसे मुसलमान विद्यार्थी लिये गये, जो दो-तीन या चार-चार बारमें इंटर-मीडियट सायन्सकी परीक्षामें उत्तीर्ण हुए थे। '

अभी उस दिन ' पत्रिका ' प्रयागमें, सिंध एसेम्बली कांग्रेसपार्टीके मन्त्री श्रीपरसराम, वी० ताहिलरामानी एम्० एल्० ए० का पत्र छपा है, उससे पता लगता है कि सिंधमें हिंदुओंका किस बुरी तरहसे अपमान किया जा रहा है, उन्हें सताया जा रहा है और हिंदुस्थानमें जाकर बसनेको खुलेआम कहा जा रहा है!

हिंदुओंके साथ तो यह सलूक हो रहा है और उस दिन सिंधके शिक्षा-मिनिस्टर पीर इलाहीबख्शने कराचीकी जलवायुकी तारीफ करते हुए सारे भारतके मुसलमान पूँजीपतियों और व्यवसायियोंको कराचीमें आकर व्यापार करने और सिंध सरकारके द्वारा दी हुई सभी प्रकारकी सुविधाओंसे लाभ उठानेको निमन्त्रित किया है। इस प्रकार सभी तरहसे हिंदुओंको बिलकुल बरबाद करने और मुसलमानोंको बढानेकी सर्वतोमुखी चेष्टा हो रही है। पाकिस्तानमें वहाँके अल्पसंख्यक हिंदुओंके प्रति कैसा व्यवहार होगा, सिंध तथा बंगालकी सरकारका अबतकका व्यवहार और सीमाप्रान्त आदिके मुसलमानोंके लगातार होनेवाले अत्याचार उसका एक नमूना है। इधर हमारे नेता आदर्शवादके पीछे पागल हैं। महात्मा गांधीके प्रति मेरी चिरकालसे श्रद्धा है; पर इधर वे जो कुछ कर रहे हैं और गीताका हवाला देकर उसे सिद्ध करते जा रहे हैं, उससे हिंदुओंकी निश्चित हानि हो रही है और गीताका भी दुरुपयोग हो रहा है।

पाकिस्तान और हिंदुस्थानका बँटवारा स्पष्ट रूपमें इसी आधारपर हुआ है कि ' पाकिस्तान मुसलमानोंकी पितृभूमि है और हिंदुस्थान हिंदुओंकी, ' यद्यपि यह सर्वथा गलत है। मुसलमानोंकी कोई पितृभूमि यहाँ हैही नहीं, तथापि यह भी मान लिया गया! इसे मान लेनेपर यह होना चाहिये था कि पाकिस्तानमें जैसे शुद्ध मुस्लिम राज्य होगा, वैसेही हिंदुस्थानमें शुद्ध हिंदू-राज्य होगा। पर यहाँ तो ' हिंदुस्थान ' नामतक रखनेपर एतराज है। उस दिन महात्मा गांधीजीने कहा है— " अधिकांश बहुमतवाले क्षेत्र अपनेको भले ही ' पाकिस्तान ' कहें, परंतु भारतके शेष और सबसे बडे भागको अपनेको ' हिंदुस्थान ' कहनेकी कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि ऐसा कहनेसे पाकिस्तानके विपरीत इसका यह अर्थ होगा कि यह हिंदुओंका निवासस्थल है। क्या हिंदू ऐसा समझते है? क्या पारसियों, ईसाइयों और यहूदियोंका जन्म भारतमें नहीं हुआ था? और क्या ऐंग्लो इंडियनोंका हिंदुस्थानके अलावा और कोई दूसरा निवासस्थल है? "

इसपर यदि कोई महात्माजीसे पूछे कि ' हिन्दू क्यों इसे अपना निवासस्थल न समझें? ' पता नहीं किस अतीत कालसे भारतवर्ष हिंदुओंका निवासस्थलही नहीं, उनका जन्मस्थल है। उन्हींकी यथार्थ पितृभूमि है। यदि कुछ पारसी, ईसाई या यहूदी यहाँपर आकर बस गये तो इससे क्या इसका नाम बदल दिया जाय? कुछ हिंदू इंग्लैंडमें जाकर बस जानेसे क्या उसका नाम इंग्लैंड नहीं रहेगा? असलमें तो हिंदुस्थानके किसी एक छोटेसे हिस्सेको भी पाकिस्तान कहलाने देना भी हिंदुओंके लिये महान् शोक और दुर्भाग्यकी बात है। पर बचे हुए ' हिन्दुस्थान ' को ' हिंदुस्थान ' न कहलाने देना तो बहुत बडा अन्याय है। लेकिन यही अन्याय हो रहा है न्यायके नामपर, और हो रहा है उदारताके नामपर। राष्ट्रीयताके मोहने हमारे घरमें ही हमें इतना ' पर ' बना दिया है कि आज हम अपनेको

हिन्दू समझने और कहनेमें भी उदारताकी हानि समझते हैं। हमारे राष्ट्रीय नेता ' मुसलमान ' नामका जरूर आदर करेंगे; परंतु ' हिन्दू ' नाम उनको नहीं सुहाता। इसीलिये ' मुसलमान ' नाम स्पष्टतया रक्खा जाता है, परंतु हिन्दू ' गैर-मुस्लिम ' में गिने जाते हैं, मानो मुसलमानही देशके प्रधान और बहुसंख्यक निवासी हैं, हिन्दू नगण्य हैं। और इसीलिये आज हिन्दू, हिन्दू-संस्कृति और भारत वर्षका खुला तिरस्कार करनेवाले कायदे-आजमका रक्खा हुआ ' पाकिस्तान ' नाम सहजही स्वीकार किया जाता है। परंतु हिंदुस्थानका ' हिंदुस्थान ' नाम रखनेमें लज्जाका बोध होता है और उसपर कानूनी आपत्तियाँ भी उठायी जाती हैं।

न्यायके नामपर मध्यप्रान्तके प्रधान मंत्री पं. रविशंकर शुक्लके मुँहसे सच्चे हृदयके ये उद्गार निकल गये कि— " कायदे आजम मि० जिन्ना जिस प्रकारसे पाकिस्तानका स्वप्न देख रहे हैं, उससे मुसलमानोंकोही अधिक हानि उठानी पडेगी। पाकिस्तानमें एक करोड पचासी लाख हिंदू हैं और हिंदुस्थानमें मुसलमानोंकी संख्या लगभग तीन करोड है। मि० जिन्नाका यह दावा है कि मुस्लिम संस्कृति, भाषा और रहन-सहन हिंदुओंसे भिन्न है। इसीलिये वे पाकिस्तान चाहते हैं। अब उन्हें पाकिस्तान मिल गया है, जिसमें अपने स्वप्नोंको वे पूर्ण रूपमें देख सकते हैं; फलतः पाकिस्तानमें मुस्लिमेतरोंका रहना कठिन होगा। पर इसकी प्रतिक्रिया ' हिंदुस्थान ' पर होगी। हिंदुस्थानमें मुसलमानोंके साथ बतौर विदेशियोंके व्यवहार होगा। वे किसी भी सार्वजनिक संस्थाओंपर निर्वाचित नहीं हो सकेंगे। उन्हें हिंदुस्थानमें सरकारी नौकरियाँ नहीं मिलेंगीं और सरकारकी ओरसे उन्हें जो शिक्षा-सम्बन्धी एवं अन्य अधिक सहायता मिलती है, वे भी बंद कर दी जायँगीं। "

यदि माननीय शुक्लजीने सचमुच ऐसाही कहा हो तो उनका कथन बिलकुल न्यायसंगत है। यदि पाकिस्तानमें अल्पसंख्यक हिंदुओंके प्रति बुरा बर्ताव हो तो यहाँके अल्पसंख्यक मुसलमान अच्छे बर्तावके अधिकारी नहीं हो सकते; परंतु महात्माजी इसीपर बिगड गये और उन्होंने प्रार्थना-सभामें कहा कि— " यदि उपर्युक्त कथन सत्य है तो चाहे वह परिहासके रूपमेंही कहा गया हो, पर वह है बडे दुर्भाग्यका विषय। ' इंडियन् यूनियन् ' (यह ' हिंदुस्थान ' का नाम है) में ऐसा नहीं होगा। उसे तो सक्रिय रूपसे यह दिखाना होगा कि उसके मंत्रिमंडलमें मुसलमानोंका अब भी वही स्वागत होगा जो पहले होता। पाकिस्तानी प्रान्तोंमें (हिंदुओंके साथ) चाहे कुछ भी हो, पर ' इंडियन्-यूनियन् ' के प्रान्तोंमें मुसलमानोंके साथ सर्वथा न्यायपूर्ण व्यवहार किया जायगा। पाकिस्तानके कारण मुसलमानों या अल्पसंख्यकोंके प्रति व्यवहारमें कोई भेद नहीं दिखाया जायगा। "

पाकिस्तानमें अल्पसंख्यक हिंदुओंके साथ कैसा भी बर्बरतापूर्ण बर्ताव हो, पर हम तो यहाँ उनका पूर्ववत् स्वागतही करेंगे! यदि ऐसा हुआ तो यह कैसा ' अन्याय-पूर्ण न्याय ' होगा, इसका विचार विज्ञ पाठकही करें। माननीय श्री टंडनजीने सच्ची बात कह दी, इसीलिये उनपर भी महात्माजी नाराज हो रहे हैं।

महात्माजीके इन सब वक्तव्योंका स्पष्टही हिंदू-जनतापर बहुत बुरा असर हो रहा है। और मुसलमानोंको उभडनेके लिये पर्याप्त उत्साह तथा अवकाश मिलता है। उस दिन एक प्रतिष्ठित हिंदूने बहुत दुखी होकर आवेशमें कहा कि, ' महात्माजी क्या चाहते हैं? क्या बंगाल और सीमाप्रान्तके हजारों नर-नारियोंकी नृशंस हत्या, हजारों सतियोंपर होनेवाले बर्बरतापूर्ण अमानुषी अत्याचार और अगणित दुधमुँहे बच्चोंकी निर्दय हत्यासे भी महात्माजीकी उदारताकी भूख अभी नहीं मिटी? वे हिंदुओंका अब कौनसा सर्वनाश करवाना चाहते हैं, वेही जानें। ' मैंने उनको समझाया— ' भाई! महात्माजी जिस स्थितिकी बातें कहते हैं, उस स्थितिमें वही बातें ठीक हैं। बचानेवालेका स्वभाव बचाना है और काटनेवालेका काटना। बिच्छू काटेगाही, संत बचावेगाही। ' इस प्रकार बहुत कहने-सुननेपर भी उनका समाधान नहीं हुआ। वे बडे निराश और बडे दुखी थे महात्माजीके इस प्रकारके वक्तव्योंसे! आज भारतके बहुसंख्यक हिंदुओंके ऐसेही मनोभाव बनते जा रहे हैं। यह कटु सत्य है, पर है यथार्थ; इसीसे लिखना पडा है। महात्माजीको और उनके भक्तोंको इसपर विचार करना चाहिये।

जो कुछ भी हो, पर यह सर्वथा सत्य है कि महात्माजीकी नीति मुसलमानोंको खुश करनेकी है और इससे महात्माजीके भक्तोंमें अहिंसाके नामपर कायरता आती है और आततायियोंमें अपनी विजयसे उद्दण्डता और बर्बरता बढती है। यही हुआ है और हो रहा है। इसलिये इस समय हिंदुओंको चाहिये कि महात्माजीकी इन बातोंको बिलकुल न मानकर हिंदू-सर्वस्व, महात्माजीके भी पूज्य, हिंदूधर्मके ज्ञाता और अखिल विश्वके हितैषी दिवङ्गत महामना मालवीयजीके अन्तिम संदेशके अन्तिम वाक्योंपर ध्यान देकर उन्हींके शब्दोंमें सक्रिय रूपसे प्रेमपूर्वक मुसलमान भाइयोंसे कह दें कि-' जैसे वे पहले रह चुके हैं अब भी वे एक साथ, एकही भूमिपर रहना चाहते हैं और यदि वे हिंदुओंके साथ शान्तिसे रहना चाहते हैं तो उन्हें निश्चय हिंदुओंके धर्मका आदर करना पडेगा, वे हिंदुओंके पूजागृहों-मन्दिरोंको भ्रष्ट नहीं कर सकेंगे और धार्मिक स्वतन्त्रता, जीवनकी पवित्रता और स्त्रियोंके सतीत्वका उन्हें अवश्य सम्मान करना पडेगा ।'

' महामना मालवीयजीके वाक्य हैं– ' पिछले तमाम वर्षोंमें हिंदुओंने सदा हानि उठायी है । कांग्रेस एक राष्ट्रीय संस्था है और मुस्लिम लीग साम्प्रदायिक। फिर भी दोनोंके साथ बराबरीका व्यवहार किया गया है और इस प्रकार बहुसंख्यक (हिंदू) जातिके अधिकारोंको कुचला गया है । उनकी आशाओंपर विकसित होनेके समयही पानी फेर दिया गया है और भारतीय राष्ट्रीयताके नामपर उनकी संस्कृति और धर्मकी सर्वथा अवहेलना की गयी है ।

' बहुसंख्यक हिंदूजातिके लिये मृत्युका परवाना लेकर आनेवाली इस महामारीके आक्रमणके विरुद्ध हिंदुओंको सिर उठाना चाहिये । चेतावनीकी घंटी बज जानी चाहिये ।

\+ + +

' जो हिंदुओंको शान्तिके साथ नहीं रहने देना चाहते उनके प्रति किसी प्रकारकी सहिष्णुता नहीं हो सकती ।

× × × ×

' कोई भी मूल्य देकर शान्ति चाहनेसे तो समस्याका समाधान नहीं होता, साम्प्रदायिक समस्याका और भी नहीं। हिंदुओंको निश्चय अपने प्रत्येक हिंदू भाईके प्रति कर्तव्य-पालन करनेके लिये उत्साहित करना चाहिये कि वे उन ऋषियों और महात्माओंके धर्मके अनुयायी हिंदू हैं, जिन्होंने मनुष्योंकी वासस्थली वसुन्धराको स्वर्ग बनानेकी चेष्टा की और सारे जगत्‌को कुटुम्बवत् मानकर मातृत्वका प्रचार किया।

' उन्हें अकर्मण्य बिलकुल नहीं रहना चाहिये । उनमें आत्मविश्वास अवश्य होना चाहिये । उनमें अवश्यही साहस होना चाहिये । उन्हें मरनेसे कभी नहीं डरना चाहिये । उन्हें परस्पर भाई-भाईकी तरह प्रेम करना चाहिये और प्रत्येक हिंदूके प्रति सहनशील बनना चाहिये; परंतु उन मुसलमानोंके प्रति सहनशील बिलकुल नहीं होना चाहिये, जो उन्हें शान्तिके साथ रहने देना नहीं चाहते । '

वैकुण्ठवासी महामना मालवीयजीके उपर्युक्त वाक्योंपर ध्यान देकर हिंदुओंको तुरन्त कार्य शुरू कर देना चाहिये और कांग्रेस-सरकारको बाध्य करना चाहिये कि वह सबके साथ न्याय करे, अपनी दब्बूपनकी नीतिसे मुसलमानोंका अनुचित पक्ष करना छोड दे एवं हिंदुओंको मुसलमानोंके दुर्व्यवहारोंसे बचने तथा अपनी संस्कृतिकी रक्षा करनेका सुअवसर और सुविधा दे।

हिंदुस्थान-सरकारमें निम्नलिखित बातें अवश्य अवश्य हों, इसके लिये हिंदूमात्रको—कांग्रेसी, हिंदू-साई, सनातनी, जैन, सिख आदि सभीको एक होकर बडे जोरसे सक्रिय आवाज उठानी चाहिये।

(१) हिंदुस्थानका नाम 'हिंदुस्थान' या आर्यावर्त हो।

(२) हिंदुस्थान शुद्ध हिंदू-राज्य हो और उसका संगठण सर्वांशमें हिंदू-संस्कृतिके आधारपर हो। राष्ट्रीय झंडा गेरुआ हो और उसपर स्वस्तिकका चिह्न हो। एवं 'वंदे मातरम्' राष्ट्रगीत (National Anthem) हो।

(३) हिंदुस्थानमें मौलिक सिद्धान्तरूपमें गो-वध सर्वथा बंद हो।

(४) हिंदुस्थानकी सरकारी भाषा शुद्ध हिंदी (भ्रष्ट हिंदुस्तानी कदापि नहीं) हो और लिपि देवनागरी हो।

(५) हिंदुस्थानमें सैनिक-शिक्षा अनिवार्य रहे और शस्त्र-कानूनमें आवश्यक परिवर्तन हो ।

(६) हिंदुस्थानकी सेनामें केवल हिंदूही रहें। इसलिये पहलेसे सेनाका भी बँटवारा कर लिया जाय ।

(७) हिंदुस्थानमें किसी भी विभागमें उच्च पदोंपर एक भी मुसलमानकी नियुक्ति न की जाय।

(८) हिंदुस्थानमें सरकारी नौकरियोंमें मुसलमानोंके उतनेही स्थान हों, जितने उनकी संख्याके अनुपातसे आते हों। पर वे भी तब हों जब कि पाकिस्तानमें हिंदुओंको संख्याके अनुपातसे स्थान मिले । ※

(९) किसी भी धर्मके धार्मिक विधान समाज-सुधारके नामपर कानून बनाकर कभी न पलटे जायँ ।

(१०) पूर्व और पश्चिम बंगालकी सीमा, पूर्व और पश्चिम पंजाबकी सीमा, पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्तकी सीमा, आसामकी सीमा एवं पाकिस्तान और हिंदुस्थानकी अन्यान्य सभी सीमाओंपर केन्द्रीय सरकारकी ओरसे सर्व प्रकारसे सुसज्जित सुदृढ सेना पर्याप्त संख्यामें तैयार रक्खी जाय और साथही मजबूत और सुसंघटित जन-बलका भी सहयोग रहे। जिससे कभी भी सहजमें हिंदुस्थानपर कोई आक्रमण न होने पावे ।

(११) पाकिस्तानके साथ विदेशी सत्ताका-सा व्यवहार किया जाय तथा आने-जानेमें पासपोर्टकी व्यवस्था रहे ।

(१२) हिंदुस्थानमें मुसलमान एवं अन्यान्य सभी अल्प-संख्यकोंको सब प्रकारकी न्यायोचित सुविधाएँ दी जाएँ । उनके जीवन तथा मान-सम्मानकी रक्षाका सुप्रबन्ध हो ।

हिंदुओंमें नीचे लिखी आठ बातें अवश्य आनी चाहिये

१. अपनी प्राचीन संस्कृति, अपने गौरवमय इतिहास और अपने शौर्य, ऐश्वर्य, ज्ञान और शीलमें सर्वोपरि पूर्वपुरुषोंपर अचल श्रद्धा और उन्हींके आदर्शपर चलनेकी प्रवृत्ति ।

२. हिंदुत्वमें गौरव-बोध । कोई भी हिंदू किसी भी वर्ण, जाति, सम्प्रदायका क्यों न हो हिंदूके नाते अपनाही स्वरूप है—ऐसी एकात्मताकी भावना और परस्परके दुःख-सुखमें आत्मीयतापूर्ण सहयोग ।

३. सामाजिक वर्णादि भेदोंके रहते हुएही एक महान् हिंदु-राष्ट्र निर्माण । ॐ

४. व्यक्तिगत पदलोलुपता, अधिकार-लालसा तथा सम्मान, धन आदि अपने क्षुद्र स्वार्थोंको महान् हिंदू-राष्ट्रके महान् स्वार्थमें मिला देना ।

※ सरकार कर्मचारियोंसे पूछ रही है कि वे पाकिस्तानमें जायँगे या हिंदुस्थानमें रहेंगे । और ऐसी खबर मिली है कि अधिकांश मुसलमान हिंदुस्थानमेंही रहना चाहते हैं । बात भी ठीक है । वे यहासे क्यों जाना चाहेंगे ? पाकिस्तानमें तो मुसलमानोंको जगह मिलही जायगी । वे यहाँ भी जगह रोके रहेंगे और हर तरहसे पाकिस्तान सरकारकी सेवा भी इस्लामकी सेवा समझकर करतेही रहेंगे । सोचना तो हिंदुस्थान सरकारको है कि न्यायकी रक्षा एवं राज्यकी रक्षाके लिये भी इन लोगोंको रखना उचित है या नहीं ।

ॐ आजकल कुछ सज्जन कहते है कि ' हिंदुओंमें जातिभेद तथा खान-पान एवं विवाह-शादीमें प्रतिबन्ध होनेके कारणही हिंदू-जातिकी यह दुर्दशा हो रही है । ' पर यह कथन ठीक नहीं है । यह सत्य है कि ऐसा माननेवाले महानुभावोंमेंसे कुछको सचमुच ऐसाही प्रतीत होता है । साथही कुछ ऐसे भी सज्जन हैं, जो इस अवसरसे लाभ उठाकर कौशलके साथ अपना मनोभिलषित सामाजिक परिवर्तन करना चाहते हैं । असल बात यह है कि एक महान् राष्ट्रकी भावना सुदृढ होनेपर इन भेदोंके कारण कुछ भी बाधा नहीं आती । जैसे अपने सारे शरीरमें पैरसे मस्तकतक प्रत्येक अङ्गमें एकात्म भावना है, अतएव हम स्वाभाविकही

५. दुर्बलोंकी सर्वथा और सर्वदा तन, मन, धन अर्पण करके रक्षा करना और आततायियोंसे जरा भी न डरकर उनके आततायीपनको हरेक आवश्यक उपायसे मिटा देना। दुर्बलको सताना जैसे पाप है, वैसेही आततायीपर दया दिखाना भी पाप है।

६. अपनेको सदा अजेय और शक्तिशाली मानना तथा ऐसाही बननेका सतत प्रयत्न करते रहना। शक्तिसंचय करना एवं सफलतामें पूर्ण श्रद्धा रखना।

७. भगवान्के आश्रय और उनकी असीम शक्तिमयी कृपापर पूरा भरोसा करके बाहरी तथा भीतरी शत्रुओंका दमन करनेके लिये नित्य प्रयत्नशील रहना। 'भगवान्की कृपाशक्ति' तथा 'आत्माकी अमरता'पर दृढ विश्वास करके किसी भी प्राणीका परिणाममें जरा भी अहित न चाहते हुए साहस तथा शक्तिपूर्वक प्रत्येक परिस्थितिका सामना करना।

८ जीवनके प्रत्येक शुभ कार्यको भगवान्की पूजाका प्रकार मानकर उनकी प्रसन्नताके लिये उनके आज्ञानुसार दृढतापूर्वक कर्तव्य पालन करते रहना। कर्तव्यसे च्युत होना नहीं और उसका फल भगवत्प्रीतिके अतिरिक्त अन्य कुछ भी चाहना नहीं।

यदि हिंदुओंने सच्चे हृदयसे सर्वशक्तिमान् भगवान्का आश्रय लेकर ऊपर लिखे अनुसार दृढ प्रयत्न किया तो मेरा विश्वास है कि उनकी बाहरी तथा भीतरी शक्ति अपने-आप इतनी बढ जायगी कि उसके प्रभावसे गुंडोंका सदाके लिये पतन हो जायगा, लीगियोंके द्वारा गुंडईसे छीना हुआ भारतका पवित्र हिस्सा शीघ्रही वापस मिल जायगा और पुण्यभूमि भारत पुनः अखण्ड हो जायगा।

याद रखना चाहिये कि हिंदू-धर्म अच्युत भगवान्के और अखण्ड सत्यके आधारपर प्रतिष्ठित होनेके कारण अनादि और अनन्त है। यह कभी मरेगा नहीं। जो लोग मूढता एवं अभिमानवश इसके नाशका प्रयत्न करेंगे, वेही नष्ट हो जायँगे। राक्षसोंके उत्थानकी भाँति एक बार भलेही उनकी सफलता दिखलायी दे!

(टिप्पणी- पूर्व पृष्ठसे)

सभी अङ्गोंकी रक्षा करते हैं। किसी भी अङ्गमें चोट लगे, हमें समान दुःख होता है। हम अपने किसी भी अङ्गका कुछ भी अनिष्ट सहन नहीं कर सकते। यद्यपि हमारे अङ्गोंमें सभी बातोंमें आकार प्रकार और व्यवहार-बर्तावमें बडे भेद हैं और वे भेद अनिवार्य हैं, तथापि हम सदा-सर्वदा सभी अङ्गोंकी भलाईमें सहजही लगे रहते हैं, वैसेही विभिन्न भेदोंके रहते हुएही एक महान् राष्ट्रका निर्माण हो सकता है। हिंदुओंमें आज जो अनेकों दल दिखाई पडते हैं, इसका कारण तो पश्चिमीय राजनीतिक लहर है, जिसने हिंदुओंकी धर्म भावनाको शिथिल कर दिया और पश्चिमका आदर्श मानकर वे उसके पीछे चलनेको तैयार हो गये। आजसे पचास वर्ष पहले हिंदुओंके जातिभेद और खान-पानमें कट्टरता आजसे कहीं अधिक थी; परंतु उस समय आजकी भाँति न तो इतने दल थे और न प्रान्त, जाति, भाषा, पेशे और धर्मके नामपर किसीकी अलग अलग अधिकारोंकी माँग थी। खान-पान और विवाह-शादीसे ही प्रेम होता तो यूरोपमें जहाँ इनमें कुछ भी प्रतिबन्ध नहीं था, वहाँ महायुद्ध क्यों होते? कौरव-पाण्डवोंमें महाभारत क्यों होता? कलहका मूल कारण बाहरी भेद नहीं, आन्तरिक भेद है। भीतरी भेद न रहकर एकात्मता हो जाय, तो बाहरी भेदोंके रहते भी पूर्ण महान् राष्ट्र बन सकता है।

फिर, इस विषयमें बडा मतभेद है। इस समय सामाजिक वर्णभेदको उठानेकी बात कहनेसे आपसमें कटुता और भी बढेगी, जो किसी तरह भी वाञ्छनीय नहीं है। यदि अगली पीढी सामाजिक भेद नहीं मानेगी, तो वह अपने-आपही कम हो जायगा!

पंजाबकी अवस्था

देहली

पश्चिम पञ्जाबके हिन्दूओंका भविष्य अत्यन्त शोचनीय है। उधरके बहुतसे हिन्दू नौकरी आदिके कारण देहली रहते हैं। प्रायः सभी सरकारी दफ्तरोंमें काम करनेवाले प्रत्येक व्यक्तिसे लिखवा कर लिया गया है, कि वह पाकिस्तानमें काम करना चाहता है अथवा हिंदुस्थानमें। देहलीमें काम करनेवाले उधरके हिन्दूओंमेंसे बहुत थोडोंने पंजाब जानेकी इच्छा प्रकट की है। यहांके एक दफ्तरमेंसे लगभग तीन सौ व्यक्ति उधर जाने हैं, उनमेंसे केवल तीन हिन्दूओंने वहां जानेके लिये अपने आपको प्रस्तुत किया है। शेष दफ्तरोंका अनुपात भी यही समझिये। जो हिन्दू इधर रह रहे हैं, उनको उधर रहनेवाले सम्बन्धियोंके बराबर पत्र आ रहे हैं, कि वे उनका भी इधर प्रबन्ध करें। १५ अगस्तके कारण तो जनता और भी अधिक भय-भीत हो रही है। वहांके जो बहुत धनी हैं, उन्होंने बँकोंके अपने केवल खातेही इधर परिवर्तित नहीं करवाये, अपितु भूषणादि भी बँकोंमें सतालक (Lockers) लेकर धर दिये हैं। सतालकोंकी मांग अत्यन्त बढ रही है। सभी बँकोंके सतालक भर चुके हैं। उन्होंने और सतालकोंके आर्डर दे रखे हैं। आनेवाले सतालकोंके लिये भी बहुतसे नाम अग्रिम लिखे जा चुके हैं। उधर यह अफवाह फैली हुई है, कि सम्भवतः पाकिस्तानी सरकार, किसी विज्ञप्तिद्वारा चल-सम्पत्तिको बाहिर जानेसे रोक दे, इसलिये मध्यम-वर्ग भी अपनी सम्पत्तिको देहली लानेकी व्यवस्था कर रहा है।

वे अपने स्थानको छोडना नहीं चाहते। वास्तवमें वे हिंदु जातिके भूषण हैं। कई शताब्दियोंतक विधर्मियोंसे टक्कर लेकर भी वे अपने धर्मपर अचल रहे हैं। यद्यपि उनमेंसे निस्सार भाग निकल चुका है, सार शेष है। "चिन्ता यशसि न वपुषि" का पाठ उन्होंने पढा है। वे भागकर अपनी तथा शेष-भारतमें स्थित अपने सधर्मियोंकी धवल कीर्तिको कलङ्कित नहीं करना चाहते। चाहे शेष-भारतको स्वराज्य मिल जाये, परन्तु उनकी दशा तो पूर्वसे भी बुरी हो गई है। कुछ दिनोंमें उनकी अवस्था वही होनेवाली है, जो अशोक-वाटिकामें सीताकी थी। वहां तो उसे सान्त्वना देनेवाली त्रिजटा थी, यहां तो उन्हें कोई त्रिजटा दृष्टिगोचर नहीं होती। उन्होंने पाकिस्तान नाटकका पूर्वरंग देखा है। पूर्वरंगसे नाटक समाप्त नहीं होता।

राजनैतिक उन्हें कहते हैं– "पाकिस्तानमें अल्प-संख्यकोंकी संरक्षा होगी।" प्रचण्डातपसे सन्तप्त तथा पिपासाकुल हरिणीको वैज्ञानिक भलेही कहें— "देखो! सूर्यकी किरणें संसारसे जल खींच रहीं हैं। उनमें जल है। इनसे तुम्हारी पिपासा निवृत्त होगी।" परन्तु उसे उष्णरश्मि तथा उसके करोंसे पर्याप्त परिचय है।

उन्हें अतीत वृत्त भी विस्मृत नहीं हुआ। वे उन राजनीतिज्ञोंसे पूछते हैं— "अनेक बारका गान्धी-जिन्ना वार्तालाप, नेहरू-जिन्ना-पत्रव्यवहार तथा देसाई-लियाकत पत्र-व्यवहारका क्या फल निकला, यही पाकिस्तान न?"

मुलतानी अल्प-संख्यकोंका एक शिष्ट-मण्डल पं. नेहरू-जीसे मिला। उन्होंने उन्हें वहीं रहनेकी अनुमति दी है। जब उन्होंने अपने भावी कष्टोंका चित्र खींचा, तब वे मौन रहे। इसके अनन्तर वह श्री. पटेलजीसे मिला। उन्होंने इसी प्रकारकी अनुमतिके साथ उन्हें सान्त्वना भी दी। यद्यपि वे स्वयं भी वहांसे आना नहीं चाहते, तथापि अनागत-विधाता अवश्य बन रहे हैं। उन्होंने यहां एक मुलतान-ट्रस्ट स्थापित किया है। दैव-दुर्विपाकसे यदि उन्हें अपने स्थानसे च्युतही होना पडा, तो आनेके लिये कुछ प्रबन्ध इधर भी करना चाहते हैं। उनकी दृष्टि दो स्थानोंपर है। एक तो यहां तुगलकाबादके समीप, दूसरा दिल्ली-शाहदरा और गाजियाबादका मध्यवर्ती स्थान। कोयटेके अल्प-संख्यकोंका प्रतिनिधि भी पं. नेहरूजीसे मिला है। उन्होंने इसे भी पूर्ववत् ही उत्तर दिया है। उस दिन श्री. पटेलजी यहां नहीं थे, वे बाहिर गये हुये थे, अतः वह श्री. राजेन्द्र प्रसादजीसे मिला।

उनका अनागत-विधातृत्व होना उचितही है। उनका सम्बन्ध उनसे पडा है, जो परम-असहिष्णु हैं। यद्यपि विधर्मियोंकी पर-मत-असहिष्णुता जगत्-विदितही है, तथापि दो उदाहरण दिये जाते हैं—

*

१' Indian Press ' नामक एक पुस्तक यहांके एक पुस्तकालयमें पडी है। उसमें जहां महात्मा (गान्धी) जी आदिका वर्णन किया है, वहां प्रान्त (margin) में, किसी पाठकने, जो कि धर्मान्ध मुस्लिमही हो सकता है, ग्रन्थकार तथा महात्माजीकी निन्दाके साथ साथ जिन्नाजी-की प्रशंसा पैन्सिलसे लिख दी है। स्मरण रहे, इस पुस्तक-का कर्ता अंग्रेज है।

२. यहांके एक कालेजके पुस्तकालयमें गणितकी एक पुस्तक है। जिसका लेखक कोई पाश्चात्य विद्वान् है, हिन्दू नहीं। उसमें रूबाईओंसे लब्ध-कीर्ति उमर खय्यामके किसी सिद्धान्तका खण्डन किया है। उक्त पुस्तकमेंसे, केवल अमर खय्यामके सिद्धान्तके खण्डनविषयक पृष्ठ किसीने फाड दिये हैं। अनुभवियोंका अनुमान किसी मुस्लिम युवकपर-ही है।

इन उदाहरणोंसे इस जातिके शिक्षित-वर्गकी मनोवृत्तिका पता चलता है। शिक्षितेतरका तो कहनाही क्या है।

महात्माजी अपनी प्रार्थनामें कुरानकी एक आयत पढाया करते हैं। इसका जनताने पर्याप्त विरोध प्रदर्शित किया है। कबीरसाहब जिस कार्यमें सफल नहीं हो सके थे, महात्माजी उसीमें प्रवृत्त हुवे। अंग्रेज जातिमें डॉ० एल्-विन जैसे कई व्यक्ति हुये हैं, जिन्होंने अंग्रेजोंके विरुद्ध आवाज उठाई। मुस्लिम शासन-कालसे आरम्भ कर अब-तक, एक भी मुसलमान ऐसा नहीं निकला, जो मुस्लिम मनोवृत्तिके विरुद्ध खडा हुआ हो।

' वैदिक धर्म ' अप्रैल ४७ के अंकमें डॉ० मोहम्मद हाफीज सय्यदका ' इस्लाम और जोरजबरदस्ती ' शीर्षक लेख छपा है। सम्भव है, डॉ० साहबके उद्धरण कुरानमेंसे हों, परन्तु कुरानानुयायिओंने अपना व्यवहारिक स्वरूप संसारको कोई औरही दिखाया है। इस लेखका प्रतिवाद ' सच्चे मुसलमानोंका फर्ज ' शीर्षकसे ' वैदिक धर्म ' मई ४७ के अङ्कमें प्रकाशित हुआही है, तथा इसी अङ्कमें डॉ० लेलेजीका विद्वत्तापूर्ण लेख भी छपाही है, अतः डॉ० साहबके शब्दोंके विषयमें कुछ लिखना पिष्ट-पेषणही है। क्या डॉ० साहबने लायन (lion) प्रेस लाहौरसे उर्दूमें प्रकाशित ' खिलाफत पाकिस्तान स्कीम ' नामक पुस्तक नहीं देखी, जिसमें इसी कुरानके आधारपर मुस्लिमेतरोंको मानवताकी कोटिमें भी स्वीकार नहीं किया गया? अंग्रे-जोंमें काले-गोरेका भेद है, तथापि वे कालोंको भी मानव-ही अंगीकार करते हैं। राजनैतिक-स्तम्भके आधारपर, एक मानवसमुदायको अछूत कहनेका दोष हिन्दूओंपर आरोपण किया जाता है, परन्तु दोषारोपक अछूतोंको मानवतासे भिन्न प्रतिपादित नहीं करते। अतः धन्य है यह कुरान, तथा धन्य हैं उसके अनुयायी।

विधर्मी यदि परम-असहिष्णु हैं, तो हिन्दू परम-सहिष्णु। ऑक्सफोर्डसे 'Sacred Books of the East series' में जेन्दा-अवस्ताका आंग्लानुवाद प्रकाशित हुआ है। उसके प्रथम भागकी भूमिकाके आरम्भमें प्राध्यापक जेम्स डरमेस्टेटरने लिखा है—

The Zanda-Avesta is the sacred book of the Parsis, that is to say, of the few remaining followers of that religion which reigned over Persia at the time when the second successor of Mohammad overthrew the Sassanian dynasty (642 A. C.)………In less than a centuary after their defeat, most of the conquered people were brought over to the faith of their new rulers, ' either by force, or policy, or the attractive power of a simpler form of creed '. But many of those who clung to the faith of their followers, went and sought abroad for a new home, where they might freely worship their old gods, say their old prayers, and perform their old rites. That home they found at last among the ' *Tolerant Hindus*,' on the western coast of India and in the peninsula of Guzerat.

(Vide Zenda-Avesta, 2nd edition of 1895 A. D., Part I, Introduction, page XIII).

इस वाक्य-कदम्बमें, जिन शब्दोंको मैंने इटैलि-क्समें लिखा है, उनमेंसे ' हिन्दू ' शब्दका विशेषण ' Tolerant ' अर्थात् 'सहिष्णु', लेखककी सत्यप्रियताके साथ साथ हिन्दू जातिकी सहिष्णुता जगत्-विदित प्रमाणित करता है।

उपर्युक्त घटना ६४२ ई० में पार्शियामें घटी। इतिहास अपनी पुनरावृत्ति करता है। पाकिस्तानमें आर्योंका भविष्य, तथा पाकिस्तानी सरकारके उनके प्रति व्यवहारकी सूचना, यह लोकोक्ति तथा उपर्युक्त घटना दे रही है। पार्शियामें व्यवहृत हुये उपरिनिर्दिष्ट चिन्हित— either by force, or policy, or the attractive power of a simpler form of creed-ये शब्द पाकिस्तानमें अंकुरित होना चाहते हैं। गत वर्षके अगस्त मासके डायरेक्ट 'ऍक्शन डे' से अबतक 'By force' शब्द पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुका है। हिन्दू समाजकी कुरीतियों तथा सामाजिक अडचनोंके कारण— 'the attractive power of a simpler form of creed' इनमेंसे भी हिन्दू भली प्रकार परिचित हैं। Policy शब्द जिन्हें समझ नहीं आता, उन्हें पाकिस्तानी सरकार जब अपना विधान बनायेगी, तब अवगत होगा, या समयही समझायेगा। 'इतिहास मनुष्यको बुद्धिमान् बनाता है' इस लोकोक्तिसे बोध प्राप्त कर अभीसे कर्तव्यका अनुसरण करना योग्य है।

इस समय पश्चिम पंजाबके हिन्दुओंपर धर्म-संकट उपस्थित हुआ है। इन्होंने कई शताब्दियां स्वयं कष्ट उठाकर, अपने अन्यप्रांतीय सधर्मियोंके कष्टोंको न्यून किया है। आज ये उन्हें अपने कर्तव्यका स्मरण दिलाते हैं। इनकी आर्तध्वनिका उत्तर यदि इधरसे सिंह-नादद्वारा न दिया गया, यदि शेष भारतीयोंने उदासीनता दर्शाई, तो अदूर भविष्यमें संकट इसी प्रकार इनके सिरहाने भी खडा समझिये। पुरुषार्थसे जो कुछ हो सकेगा, उसके लिये तो पाकिस्तानी आर्य-आत्मा सन्नद्ध हैंही, तथा 'रामोऽस्मि सर्वं सहे' भी इसको उत्तराधिकारमें मिलाही है।

मुलतानका दंगा

जब कभी साम्प्रदायिक दंगा आरम्भ होता है, तो मुलतानमें अवश्य होता है। ५ मार्चको कालेजमें पहुंचते ही विद्यार्थियोंने लाहौरमें हुई गिरफ्तारियोंके विरोधमें, जुलूस निकाला। इसपर आपत्ति उठाकर मुसलमानोंने उत्पात आरम्भ कर दिया। कालेज नगरके बाहिर है। मुसलमानोंकी विशेष आबादी भी वहीं है, नगरमें नगण्य है। केवल कुछ व्यवसायी दर्जी आदिकी दुकानें नगरमें हैं, वे दिनमें अपनी दुकानों पर आते हैं, और सायंकाल अपने घरोंको, जो कि अधिकांश बाहिरही हैं, चले जाते हैं। उस दिन वे अपनी दुकानों पर भी नहीं आये, इससे प्रतीत होता है, कि यह पूर्वयोजितही था। मुलतानमें हिन्दू पिटा करते थे। वे वहां बल, जन तथा धनमें किसी प्रकार भी अपर्याप्त नहीं, अपर्याप्ति केवल भीरुताभावकी थी। सम्भवतः सन् १९३८ से उनकी मति सन्मार्गपर आई। उन्होंने सोचा— 'मकानों पर चढ जानेमात्रसे भी तो बचाव नहीं होता, लुटते और पिटतेही हैं, क्यों न मैदानमें आकर मुकाबला करते हुये वीर-गतिको प्राप्त हों। इत्यादि।' अब तो ऐसे अवसरके उपस्थित होनेपर, स्त्रियांतक अपने पुत्रों तथा अभिभावकादिको कहा करती हैं— 'जाओ! कुछ करके दिखाओ। इत्यादि।' इसलिये जब गुण्डे नगरमें प्रवेश करने लगे, तो उनकी दाल न गली। नगरके बाहिर जो इक्के दुक्के हिन्दू रहते थे, उनको मारना, लूटना तथा उनके मकानोंको जलाना आरम्भ कर दिया। कोट-तोले-खां (जो कि नगरके साथ लगती हुई बाहिरकी बस्ती है) के पथपर, जब दुकानोंद्वारा अग्निदेवताकी तृप्ति की जा रही थी, दुकानोंके ऊपर एक मकानमें एक षोडश वर्षीया सुन्दरीपर, जिसके जननी और जनक इन दानवोंद्वारा दुर्गतिको प्राप्त हुये थे, गुण्डोंकी नजर पडी। वह रूपवती थी, मानों तेजकाही प्रतीक थी। ज्योतिकी उठती हुई ज्वालायें कह रहीं थीं— 'इस पापमय लोकमें रहकर क्या करोगी? आओ अपने स्वरूपमें।' उसने हुतभुक्में अपनी आहुति देदी!

"ज्ञान-स्थल" नामक एक मन्दिर, जो कि बन रहा था, की ओर जब वे गये, तो वहांके महन्तने उनकी तरफ अपना हाथी छोड दिया। बस, उधर उन्होंने पीछे मुड कर भी नहीं देखा। एक साधु, जिसकी आयु सवा सौ वर्षकी बताई जाती है, वह एकान्त कुटियामें रहा करता था। उस उदासीन पर विक्रम प्रकाशित कर उन्होंनें उसकी इहलौकिक लीला समाप्त की।

तपेदिकका हस्पताल, जो कि यमराजके सदनकी ड्योढीही कहलाता है, "ये बहादुर" वहां पहुंचे। वहांके रोगी, जो वासक-सज्जा नायिकाकी तरह, अपने पति अन्तककी प्रतीक्षाही कर रहे थे, उनमेंसे केवल हिन्दुओंको

जीवितेशके पास पहुंचाया। उनके दुःखोंका अन्त कर अत्यन्त उपकार किया। वहांके कम्पौण्डर और उसकी पत्नीका बध किया। उस दम्पतिकी हृदय-ग्रन्थि एकमात्र कन्या, जो कि १४-१५ वर्षकी थी, उसकी ओर जब वे लपके, तो उसने समीपके कूपमें छलांग लगा, अपने आपको देवीके अर्पण कर, आर्यपुत्रियोंकी पवित्रताका प्रमाण दिया।

लडकियोंकी एक लॉरी, जो कि प्रथम दिन दंगा आरम्भ होनेसे पूर्व, पढनेके लिये स्कूल गई थी, उसका पता अबतक नहीं लगा।

सुना जाता है, कि एक शाह नामक मुसलमान सब-इन्स्पेक्टर पुलिसने लगभग १५-१६ फायर निरपराध हिन्दुओंपर, साम्प्रदायिक हृदयसे कलुषित होकर किये। यद्यपि वह पकडा गया है, परन्तु उसको होना क्या है? यदि नौखालीमें अपराधी अधिकारियोंको दण्ड दिया गया होता, तो इस ताण्डवकी पञ्जाबमें पुनरावृत्तिही न होती। मुसलमान जातिका एक साधारणसा चपरासी भी, मुसलमान पहले है, शेष सब कुछ पीछे। दुर्भाग्यवश केवल एक हिन्दु जातिही ऐसी है, कि जिसके व्यक्ति सभी प्रकारके वादोंके अनुयायी हैं, केवल एक (हिन्दु) वाद अथवा हिंदुत्वको छोडकर। संसारभरका विश्व-बन्धुत्व हिन्दूओंने अपने सिरपर ले रखा है। सारे जगत्का बुद्धि-वाद इन्हींके पल्ले बन्धा है। "कुत्ता कुत्तेका बैरी" की उक्ति यदि देखनी हो, तो इस जातिको देखिये। कुम्भकर्णी-निद्रासे अभीतक इसका छुटकारा नहीं हुआ।

यद्यपि मुलतानमें लोगोंने साहस और शौर्यसे काम लिया है, परन्तु भविष्य अन्धकार-ग्रस्त प्रतीत होता है। वहांके कुछ धनी लोग, अपनी सुरक्षाके लिये, परन्तु वास्तवमें जातिकी जडोंको खोखला करनेके लिये, हरिद्वार गये हैं, और कुछ जानेकी सोच रहे हैं। ये इतना नहीं सोचते, कि इस नीतिका दुष्परिणाम क्या होगा। इस प्रकार ऐसा दिन दूर नहीं रहेगा, जब कि उन्हें अपने अन्य भाइओंके साथ, मुलतानकी तरह, शनैः शनैः कभी हरिद्वारादिको भी छोडना पडेगा। आज यदि वे हरिद्वारादि-शरण हैं, तो किसी दिन डूबनेके लिये समुद्रके अतिरिक्त और कोई स्थल नहीं रहेगा। इस प्रकार समस्त हिन्दुस्तान पाकिस्तान बन जायेगा।

मुलतान, रावलपिण्डी आदि नगरोंमें तो अपनी संख्या पर्याप्त है, इसलिये प्रतिपक्षी खडे नहीं हो सके। परन्तु इनके आसपासके ग्रामोंमें अपनी संख्या अत्यल्प है, वहां बडी शोचनीय दशा हुई है। ऐसी अवस्था होनेपर भी, हममेंसे अपीडितोंकी तो क्या, पीडितोंकी भी मनोवृत्ति सुधरी नहीं। मुलतानके आसपासके ग्रामोंसे बहुतसे लोग भागकर मुलतान-शरणार्थी हुये हैं, तथा बहुतसे सेवा-समितिद्वारा लाये गये हैं। इस अवसरपर वहांकी "कपूर बस कम्पनी" ने अति प्रशस्त कार्य किया है। वहां कुछ अपनी स्त्रियां आततायियोंके पञ्जेसे छीन कर लाई गई हैं। उनमेंसे कुछ अबलाओंके हिन्दु-मन्य संरक्षक, उनको अपने अपराधके अभावमें जो कि स्पष्टही है, लेनेसे इन्कार कर रहे हैं। उन ग्रामोंमें यहां हमारी संख्या अल्प है, उसका उत्तरदायित्व भी हमपर ही है, न कि यहांके अल्पसंख्यकोंपर। अतएव असमर्थोंपर। हम अपने आपको शैव कहते हैं, परन्तु हमने अपना तनु रुद्र जैसा घोर बनाया होता, तो हमारी सम्पत्ति और दाराओंकी ओर किसीको भी गृध्र-दृष्टिसे देखनेका साहस न होता। हमारी जातिमें भक्तिको आदरकी दृष्टिसे देखा जाता है, परन्तु हमने "लोकान्नोद्विजते च यः" (गीता. १२।१५) की साधना नहीं की। फ्रन्टियरमें एक अंग्रेज महिला उठाई जाती है। उसका प्रश्न पार्लियामेन्टमें गूंजता है। बहुत जल्द वह लौटा दी जाती है। दुनियाभरका दैन्य मानो इस हिन्दुजातिको उत्तराधिकारमें मिला है।

मुलतानके लोगोंमें चैतन्यता तथा साहसका सञ्चार करनेवाले, श्री. नानकसिंहजी लीडर, जो कि प्रथम दिन वीर-गतिको प्राप्त हुये, का उल्लेख किये विना यह कथा अधूरीही है।

मरी (हिमालय)

श्री. कृपाराम ब्रदर्सका बडा नुकसान हुआ, क्योंकि उनकी जायदाद बहुत थी। परंतु उन्होंने अपनी उपकार करनेकी वृत्ति नहीं बदली। वे दुखी जनोंकी सहायता करतेही रहे।

मुलतान, झेलम, रावलपिंडी, अंबाला आदि जिलोंमें आततायियोंने जो अत्याचार किये, उनको लेखनी लिखने और जिह्वा बोलने लजाती है। संसारभरके किसी भी देशके इतिहासमें ऐसी राक्षसी और पैशाची घटनाएं कभी सुननेमें नहीं आईं। पश्चिम पंजाब तो वास्तवमें नरकाग्निमें जलही रहा है। कोई प्रकाश नहीं दीखता, हां ऐसा प्रतीत होता है कि पुनः श्री. गुरुगोविंद सिंह, या राणाप्रताप अथवा श्री शिवाजी महाराजका आविर्भाव होनेवाला है। हिंदु जातीकी दशा और व्यथा अति शोचनीय है।

अमृतसर

यहां हिंदुओंने पर्याप्त उत्साह दिखाया और अपने शौर्य, वीर्य तथा गौरवका प्रदर्शन किया। न केवल लाहौर और अमृतसरमेंही, अपितु उन स्थानोंपर भी जहां वे नितरां अल्पसंख्य थे। रावलपिंडी, अटक जिलेके ग्रामोंमें जहां अति अल्पसंख्यांक जनताको हजारोंकी संख्यामें आकर गुण्डोंने घेर लिया, वहां हिंदुओंकी मृत्यु अधिक हुई, धनहानि भी वहीं अधिक हुई। डेराइस्माईलखांमें विधर्मियोंको भी जन और धनकी हानि अधिक उठानी पडी है। ... इन झगडोंसे हिंदुओं तथा सिक्खोंका पारस्परिक विद्वेष जाता रहा और इनका प्रेम बढता रहा है। जोकि कुछ मासपूर्व आपसमें पर्याप्त मन मुटाव बढा चुके थे, अब दोनों मिल गये हैं। परमात्मा दोनोंकी इस सद्बुद्धिको स्थिर बनावे। इन झगडोंसे हिंदुओंका आत्मविश्वास बढ गया है।

कौंजली

इस जगहके लोगोंका यह खयाल है कि पंजाबके गवर्नरका प्रयत्न लीगी सरकार लानेका था। ३२ रोजतक मुस्लिम लीगके जलूस हर शहर तथा कसबेमें निकलते रहे, किसीने उनको रोका नहीं। खिजर हयात प्राईम मिनिस्टरके खिलाफ उसका मुर्दा बनाकर तथा उसे गालियां देकर जलूस निकलते रहे, उसके मुरदेको आग लगाते रहे। किसीने उनको कुछ नहीं कहा। हमारे कुंजाहमें एक रोज पोस्ट ऑफिसपर पिकेटींग की, और लैटर-बकसके खत डालनेके सुराखको ईंटोंसे बंद कर दिया। पोस्ट मास्टरने डी.सी. को तार दी, पर कोई उपाय नहीं किया गया। इससे मुस्लिम लीगके लोग हजारोंकी तादादमें गुजरातकी कचहरीयोंपर धांवा बोलते रहे। बिलकुल गुण्डाई हो गई, इन जलूसोंमें यह नारे लगाते रहे ' लेके रहेंगे पाकिस्तान ' ' तलवारसे लेंगे जोरसे लेंगे पाकिस्तान ' और खिजर हयातको इन जलूसोंमें बुरी बुरी गालियां देते रहे। ३२ रोजके बाद मुस्लिम लीगके जलूस बंद हुये। खिजर हयातने इस्तीफा दिया। मास्टर तारासिंहने ' पाकिस्तान मुर्दाबादके ' नारे लगाये। कालिजके हिंदू तथा सिख लडकोंने जलूस निकाला। ' पाकिस्तान मुर्दाबाद ' के नारे लगाये। तमाम पंजाबमें फसाद फैल गये। गवर्नरने मुस्लिम लीगकी मिनिस्ट्री बुलवाई, लेकिन इन फसादोंसे मिनिस्ट्री रुक गई, उसे गवर्नरने वापिस ले लिया। इन फसादोंमें पोलिस और मुसलमान अफसर बहुतसे मुसलमानोंके साथ उनकी सहायता करते रहे। हमारे जिला गुजरातमें अमन रहा। यहां हिंदुओंकी आबादी १४ फीसदी है। जिला जहलम तथा रावलपिंडीमें हिंदुओंके साथ बहुत जुलम हुवे, जहां हिंदुओंकी आबादी बहुत कम थी। शहरोंमें हिंदू-मुस्लिमोंका मुकाबला अच्छा रहा। हिंदुओंपर जो अत्याचार फ्रंटीयर, और जहलम-रावलपिंडीके, अटकके जिलोंमें हुये, वे अखबारोंमें नहीं आये। पंजाबमें हिंदू तथा मुस्लिम संगठित हैं। जिस जगह हिंदुओं और सिक्खोंकी आबादी अधिक हैं, वहां मुसलमान दम नहीं मारते। हिंदू-सिक्ख पंजाबमें बहुत जबरदस्त हैं। इनको पुलिस रोक देती है, और मुस्लिम तबाही करते जाते हैं। हिंदुओंके सामने खडे होकर वे नहीं लड सकते। अकेले मुसाफिरोंको शहरोंमें मारते हैं। अगर पंजाबके हिंदू-सिक्खोंको इजाजत दी जावे, तो वे अटकतक अपने भाइयोंकी रक्षा कर सकते हैं। हिंदुओंकी तलासी लेकर इनके पास चाकू भी रहने नहीं देते। मुसलमानोंको कोई पूछता नहीं।

सीमाप्रांतकी सरकार अहिंसापर अमल करती है। गवर्नर मुस्लिम लीगकी सहायता करता है। लीगियोंको प्रचार करने दिया जाता है। चूंकि पंजाबका प्राईम मिनिस्टर मुसलमान है, इसलिये पूरा लाभ हिंदुओंको नहीं पहुंच सकता। अमृतसरमें हिंदु-सिक्खोंने काफी गुण्डे मुसलमानोंको नुकसान पहुंचाया है।

बडे नगरोंमें हिंदू हर जगह कामयाब रहे हैं।

हिंदू अमनसे तभी रह सकते हैं, जब उनमें दिलेरी हो, किसीसे न डरें, परमात्माकी इनमें भक्ति हो, सत्पर चलें संगठन हो; हर हिंदू यह समझे कि सारी हिंदू कौमकी ताकत मेरे पीछे है। अपनी सब कमजोरियोंको दूर करे। हिंदुओंका तब पूरा संगठन हो जावेगा, जब सारी हिंदू कौममें यह खयाल हो जावेगा कि अगर एक हिंदूको तकलीफ हो, तो सारी कौम उसके पीछे है।

पंजाब-बंगालकी तकसीममें लाभ नहीं है, क्योंकि तकसीमसे सूबोंकी ताकत कम हो जावेगी। अगर मुस्लिम लीग पाकिस्तान बनाना चाहे तो उस सूरतमें जरूरी है कि दो हिस्से हो जावें। सारा मुलक अखण्ड रहे, इसीमें मुलककी ताकत है। पाकिस्तानमें मुसलमानोंको भी बहुत नुकसान है, वे मुलकके साथ आगे नहीं जा सकेंगे।

सहार्सा (जि. भागलपूर)

भारतीय सरकारकी सेना जो इस दंगेको शांत नहीं करती, इसका कारण यह है कि, जब कि ब्रिटिश गवर्मेन्ट गोली चलाती थी, उसपर कांग्रेसवाले दुनियाभरमें गुल मचाते थे कि, गरिबों तथा निःशस्त्रोंपर गोली चलाते हैं। इसी खयालसे भारतीय सेना दंगाइयोंपर गोली नहीं चलाती।

पंजाबमें हिन्दू तथा सिक्खोंका संगठन नहीं है, यही उन दोनोंके विनाशका मुख्य कारण है। आपसमें हिन्दु तथा सिक्खोंकी दुश्मनीही लडाईकी जड है। सीमाप्रान्तकी सरकार मुसलमानी सरकार है। जो कि अपनेको कांग्रेसी कहाते हैं, लेकिन दर असलमें लीगी हैं, इसलिये ही वे प्रबन्ध नहीं करते।

कांग्रेसकी नीत्यनुसार वह पंजाब तथा समूचे हिन्दुस्तानमें हिन्दुओंके खिलाफ बिलकूल अन्याय कर रही है जिससे कि हिन्दुओंका हिन्दुत्व एकदम मिट जाय। लेकिन हम हिन्दु लाखों वर्षोंसे हैं, जिनको आज कांग्रेसी लोग मिट्टीमें मिला रहे हैं। हिंदु धर्मपरायण जाति है। जहां मुसलमान अल्पसंख्यक हैं, वहांपर भी हिन्दु हमला करना नहीं चाहते। ये मुसलमानही हैं, जो जहां हिन्दु कम हैं वहां हिन्दुओंपर चढ जाते।

हिन्दुओंकी औरतों व सिक्खोंकी औरतोंने अपनी जान देकर मुसलमानोंको बचाया है। पर हिन्दु औरतें अपनेको अपमानसे बचानेके लिये कुंवोंमें डूबकर या आगमें जलकर मर गई हैं।

हिन्दुओंमें सहनशीलता बहुत है। महात्मा गांधीजीका भी उपदेश है, इसलिये हिन्दुओंने इसका बदला नहीं लिया, जो कि मानवी स्वभाव है कि दुश्मनसे बदला लेना। हिन्दुओंकी बेवकूफी तथा कमजोरी है, जो अपनी अपनी रक्षा खुद नहीं करते।

इसका कारण यह है कि जब हिन्दुओंमें संगठन हो जायगा, तो इनको कोई बिगाड नहीं सकता, लेकिन हमारी कांग्रेसी सरकारने जो कि हिन्दुधर्मको चन्द तरहसे पार्टीफीलिंग करवा दिया है, यही हमारे संगठनको बिगाड रही है। अगर इनमें संगठन हो जाय, तो कोई भी हिन्दुओंको उखाड नहीं सकता।

जनता एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तमें ले जाकर बसाना यह असंभव है। यह हो नहीं सकता। चूंकि जिसको जायदाद है, वह दूसरी जगह नहीं जा सकता। जिसको कुछ नहीं है, वह खाली हाथ है, उसको जहां भेजिये वहीं जायगा, वह उन लोगोंका जहां पेट भरेगा वहीं रहेगा। कांग्रेस जो पंजाब-बंगालको दो विभागोंमें विभक्त करना चाहती है, यह मुनासिब नहीं है। इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। हमारी सम्मति जो अखण्ड हिन्दुस्थान और पाकिस्तानके बारेमें है, वह लिख रहा हूं। हिन्दुस्थान हिन्दुस्थानही है, जैसे अफगानिस्तान, बलूचिस्तान एकही स्थान है, इसी तरह हिन्दुस्थानको पाकिस्तान या राजस्थान या ब्राह्मणस्थान या कायस्थस्थान नहीं बनाना चाहिये।

भारतमें

इस्लामीकरणके षड्यंत्र

सिंधपर आक्रमण तथा अहिंसावादियोंका देशद्रोह

ख्रिस्त शककी सातवी शताब्दिमें अरबके ऊसर मैदानमें इस्लामधर्म निर्माण हुवा, तबसे लेकर केवल सौ वर्षोंमें उसने सिन्धप्रान्ततकका भूभाग पादाक्रांत कर छोडा। ईरान तथा अफगानिस्थान, इन दो देशोंको निगल जानेके पश्चात् उसने सिन्धको अपना भक्ष्य बनाया। सिन्धका अरबीकरण करनेका प्रारम्भ उमरके अमलमें हुवा। सन ६६४ में मुहालिब नामक एक यवन सरदार मुलतानतक आकर लौट गया था। उसके पश्चात् सन ७१२में मुहम्मद बिन कासिमने सिन्धपर प्रत्यक्ष आक्रमण किया। तब अहिंसावादियोंने ठीक समयपर देहद्रोह कर हिन्दु राष्ट्रपुरुषकी पीठमें विषलिप्त छूरा भोंकनेसे हिन्दुराष्ट्र जर्जर हो गया। इस घातक जहरी वारसे उसकी शक्ति क्षीण हो गयी, तथा समरांगणमें उसका पराभव हो चुका। भारतकी अगाडीपर अकेला लडनेवाला शूर राजा दाहर मारा गया, तथा राष्ट्रद्रोही अहिंसावादियोंकी सहायतासे भारतके एक अवयवपर अरबी कलम करनेका प्रयत्न यशस्वी हुवा। मुहम्मद बिन कासिमनें दाहरकी दो सुलक्षणी कन्याओंको गुलामके नाते सुलतानको अर्पित कर इस प्रकार हिन्दू युवतियोंके अपहरणकी नींव डाल दी।

हिन्दुओंका पुनरुत्थान

यह विध्वंसक्षम आक्रमक टोली सिन्धप्रान्तपर साधारणतः ३०से लेकर ३५ वर्षोंतक अपना अधिकार चला सकी। इस अवधिमें क्रान्तिप्रवण हिन्दुजनता संगठित होकर उसने इस पराई आधिकारके कलमको काट डाला; किन्तु इन ३०-३५ वर्षोंके दीर्घकालमें हिन्दुराष्ट्रपर जो भयानक आघात किये गये, उनकी पूर्ति न हो सकी। इस कालमें इस्लामीकरणका विष हिन्दुराष्ट्रके शरीरमें बलपूर्वक ठूँसा गया, और हिन्दुजनताको बलात्कारपूर्वक इस्लामधर्मके पींजडेमें बन्द किया गया। सिन्धमें हुआ हुवा यह धर्म-परिवर्तन, भारतके इस्लामीकरणका प्रारम्भ है। इस बलात्कारपूर्वक धर्मपरिवर्तनको आगे चलकर इस्लामी खड्गका सतत साहाय्य मिलनेसे भारतमें सर्वत्र मुसलमानोंकी संख्या बढते चली। आज जो मुसलमान समाज भारतीय स्वातंत्र्यके मार्गमें रोडा बन बैठा है, उसका जन्म सिन्धमेंही हो गया। इसी सिन्ध प्रान्तमें पाकिस्तानका नेताभी जन्म पा चुका है, तथा इसी सिन्धमें हिन्दुओंके विरोधको दुत्कार कर मुस्लिम लीगी मंत्रीमण्डलने इस्लामियोंके बहुमतके जोरपर पाकिस्तानका प्रस्ताव मान्य करवा लिया है। यह बात भावी अरिष्टकी सूचकही है। हिन्दुजनताका विश्वासघात कर अहिंसाका शुभ्र ध्वज फहरवाते हुए मुहम्मद बिन कासिमके लिये ठठ्ठानगरके द्वार खुले करनेवाले अहिंसावादीही थे, यह बात राष्ट्रघातकी सूचक है।

ऐतिहासिक कालमें भारतमें इस्लामियोंकी संख्या बढनेका कारण हिन्दुओंके सहकार्यके बलपर पुष्ट हो गई हुई प्रतिगामी इस्लामी राज्यपद्धतिही है। इस राजसत्ताके बलपर मुसलमान सुलतानोंने बलपूर्वक हिन्दुओंका इस्लामीकरण किया। इस इस्लामीकरणके कार्यमें भी नूतन धर्मपरिवर्तित पूर्व-हिन्दुओंका ही अधिक साहाय्य हुआ। जो अग्निकाण्ड, विध्वंस तथा हत्याकाण्ड इस्लामी पद्धतिके नामसे प्रसिद्ध हैं, उनको इन नवजात मुसलमानोंनेही चित्रलसे लेकर कन्याकुमारीतक सर्वत्र फैला दिया। इन्हीं नूतन-जाते मुसलमानोंके साहाय्यसे पराई मुसलमान इस्लामी आक्रमणका आतंक भारतके कोने-कोनेतक फैला सके। आज भी उन्हीं मुसलमानोंके वंशज परदेशीय मुसलमानोंकी सहायतासे भारतपर पुनरपि सुलतानी राज्य-शासन निर्माण करनेकी करतूतें बडी तन्मयतासे करते हुए दिखाई दे रहे हैं। भारतके अनाजपानीसे पुष्ट होकर भी खुदको " दुर्रानी " कहलानेवाले एक इस्लामी लेखकने उन धर्मपरिवर्तित नव-मुसलमानोंकी आन्तरिक इच्छा अपनी पुस्तक-

में बडे जोरदार शब्दोंमें व्यक्त की है । हिन्दुजनता एफ्. के. दुर्रानीके ये वाक्य बडे गौरसे पढे,–

मुसलमानोंका ध्येय

" But India is a geographical unity is also a fact, which the Muslims must never forget. There is not an inch of the soil of India which our fathers did not once purchase, with their blood. We cannot be false to the blood of our fathers. India the whole of it is therefore our heritage and it must be reconquered for Islam. Our ultimate ideal should be the unification of India, spiritually as well as politically under the banner of Islam. The final political salvation of India is not otherwise possible." (Meaning of Pakistan by F. K. Durani. preface, p. 10).

धर्मान्तरके मार्ग

ऐतिहासिक कालमें हिन्दुओंको धर्मपरिवर्तित कर इस्लामके अनुयायियोंकी संख्या बढानेके लिये जिन उपायोंका अवलम्ब किया गया, उन्हीं उपायोंका तथा मार्गोंका अवलम्ब आज भी किया जा रहा है । यह स्पष्टतया दिखाई देता है कि, राजसत्ताके आश्रयसे इस्लाम–प्रसारका कार्य यथापूर्व चल रहा है । भारतकी अनेक मुस्लिम रियासतें तथा मुस्लिम जमींदार इस इस्लामीकरणके कार्यमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रीतिसे अपना भार उठा रहे हैं । सर्वसाधारण मुसलमान भी कट्टर उपदेशकके समान इस्लाम–प्रचारका कार्य उत्साह तथा लगनसे करता है । जो मुसलमान नेता इस उद्देशसे यत्न कर रहे हैं, कि ये सारे प्रयत्न सुसूत्रबद्ध हों, उनमें आत्मीयता तथा संगठन निर्माण हो, तथा हिन्दुओंको बलात्कारसे धर्मपरिवर्तित कर उन्हें मुसलमान बनानेका कार्य बडे प्रमाणपर हो, उन सबका प्रमुख नेता है ख्वाजा हसन निझामी । इस व्यक्तिने " दाइए इस्लाम " (Moslem Missionary) इस छोटेसे पुस्तकको लिखकर उसमें यह बताया है कि इस्लाम–प्रचारके कार्यमें कौन कठिनाइयाँ निर्माण होंगी, उन्हें दूर कर इस्लामका प्रचार तथा प्रसार कौन, कहाँ तथा कैसे करें, तथा इसके लिये किन मार्गोंका कहाँ अवलम्ब किया जाय ।

इस महत्त्वकी पुस्तकमें लिखी हुई योजना तथा पद्धतिके अनुसार भारतके कोनेकोनेमें इस्लामीकरणका कार्य बडे जोरोंसे शुरू हुआ है । वे गुट्ट, जिनके द्वारा भारतवर्षमें चलनेवाला इस्लामीकरणका कार्य चलाया जाता है, तथा जिनका उल्लेख ख्वाजा हसन निझामीने अपनी प्रसिद्ध पुस्तकमें कर उनका मार्गदर्शन किया है, इस प्रकार हैं– (१) फकीर, अवलिया इस नामसे पहचाने जानेवाले, (२) उल्मा, मुसलमानी मौलवी, मुल्ला, काजी इत्यादि, इसी गुट्टमें मुसलमान शिक्षकोंका अन्तर्भाव होता है, (३) सब श्रेणियोंका मुसलमान नोकर वर्ग, (४) मुसलमान राजा, जमींदार, मालगुजार इत्यादि, (५) इस्लामी नेता, सम्पादक तथा शायर, (६) हकीम, डॉक्टर इत्यादि, (७) गायिका, वेश्याएँ तथा गानेबजानेका उद्योग करनेवाले लोग, (८) टांगा तथा इक्का चलानेवाले, वृत्तपत्रोंके वार्ताहर तथा फेरीवाले बेपारी इत्यादि ।

इन आठ गुट्टोंके व्यतिरिक्त बलपूर्वक हिन्दु अबलाओंका अपहरण करनेवाला गुण्डोंका वर्ग, स्त्रियाँ तथा बच्चे, इन्हें भगाकर उनका क्रयविक्रय करनेवाला वर्ग, ये भी हिन्दुओंको निगलनेका कार्य मनःपूर्वक किया करते हैं । हिन्दु समाजकी अभूतपूर्व तथा अश्रुतपूर्व शिथिलता, अहिंसाका प्राबल्य, स्वराज्यके लिये मुसलमानोंसे चापलूसी करनेकी प्रतिदिन बढनेवाली प्रवृत्ति, चालाक इस्लामी नेताओंके सामने सदैव नम्र होनेवाला, ढीला, अदूरदर्शी, हिन्दुसंगठनकी ओर केवल दुर्लक्षही नहीं तो उसे विरोध करनेवाला नेता वर्ग, ये भी हिन्दुओंका बलात्कारपूर्वक धर्मपरिवर्तन, हिन्दु अबलाओंका अपहरण तथा मुसलमानोंका हिन्दुओंपर होनेवाला सशस्त्र आक्रमण, इनके सहायकही हो जाते हैं ।

ख्वाजा हसन निझामीने अपनी महत्त्वपूर्ण पुस्तकमें उपरिलिखित भिन्न गुट्टोंको इस्लामप्रसारका कार्य करनेके लिये मार्गदर्शन किया है । उसमें हसन निझामी फकीरोंके सम्बन्धमें लिखता है—" इसलिये कि फकीरोंने अपना जीवन इस्लामको दिया हुआ होता है, उनपर इस्लाम–प्रसारका बहोत बडा तथा महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व आ पडता है । " इन फकीरोंके प्रभावपर हिन्दुलोगोंकी जो श्रद्धा है, उसके विषयमें हसन निझामीके दर्पोद्गार देखिये— " **मुसलमानोंमें लक्षावधि आत्मिक शक्तिशाली फकीर हैं । उनके**

विषयमें प्रत्येक हिन्दु-कुटुम्बमें आदर हुआ करता है। इतनाही नहीं तो असंख्य हिन्दु उनके दैवी सामर्थ्यके सामने सदैव नम्र हुआ करते हैं। पाश्चात्य-शिक्षणालंकृत हिन्दु भी उनके प्रभावसे प्रभावित होकर फकीर और पीरोंके एकनिष्ठ भक्त बने हुए हैं।" निझामी आगे चलकर लिखता है, -- **" यदि किसीको सन्तान न हो, और उसके सब प्रयत्न असफल हो जायँ, तो फिर वह किसी फकीरकी ओर जाता है, और उस फकीरके आशीर्वादोंसे वह सन्तान प्राप्त कर लेता है। "**

हिन्दु समाजकी ओर शोधक दृष्टिसे देखनेपर उपरिलिखित उद्गारोंकी सत्यता प्रतीत होती है। ये मुसलमान फकीर भीख मांगनेके उद्देशसे चारों ओर घूम सकते हैं। इस घूमने-फिरनेमें वे हिन्दुसमाजका सूक्ष्मतम परीक्षण तथा निरीक्षण कर सकते हैं। भीख माँगनेके निमित्तसे हिन्दु समाजमें निर्भयतासे घूमनेवाले फकीर लोग भीक माँगते माँगते सामाजिक जासूसी करते हैं, परन्तु यह बात हिन्दुओंके ध्यानमें नहीं आती। इस सामाजिक जासूसीके साथ वे हिन्दुसमाजके मर्म-स्थान भी देखे बिना नहीं रहते। और इस प्रकार हिन्दुओंके विषयमें सांगोपांग जानकारी मिलनेके बाद प्रसंग पाते बराबर चट्से वे अपना इस्लामका प्रचार शुरू कर देते हैं। बच्चोंके लिये मनौती करनेवाली स्त्रियोंकी तालिकाही उनके पास हुआ करती है। सास-बहुओंके झगडे, पितृहनि अनाथ बच्चे, विशेषतः तारुण्यमें प्रवेश करनेवाली लडकियाँ, पीडित सधवाएँ तथा विधवाएँ, सौतेली माँकी पीडासे दुखी हो गई हुई युवतियाँ, परित्यक्ता सधवाएँ तथा संकटग्रस्त विधवाएँ, बूढे पतिकी तारुण्यसम्पन्न पत्नियाँ, तथा लहरी पतियोंकी अप्रिय स्त्रियाँ, इन सबोंके नामोंकी सूचिही उन फकीरोंके पास हुआ करती है, तथा इन महत्त्वपूर्ण बातोंका उपयोग इस्लामके प्रसारके लिये बडी चालाकीसे करनेमें वे फकीर कुशल हुवा करते हैं।

फकीरोंके चमत्कार

नगरों तथा गाँवोंकी हिन्दुवस्तीमें भीख माँगनेके निमित्तसे ये फकीर सामान्यतः दो पहरमेंही घूमा करते हैं। इस समय पुरुष घरमें नहीं होते, बूढे आराम किया करते हैं, चारों ओर शान्तता हुवा करती है। तब ये धूर्त फकीर कई चमत्कारोंके द्वारा हिंदु स्त्रियोंके अन्तःकरण अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं, जैसे कि-- बालोंमेंसे दूध निकलना, नीम्बू काटकर उसमेंसे लहू टपकाना, खाली हाथोंमेंसे अबीर आदि पदार्थोंका ढेर निर्माण करना, धागेको अंगूठी बान्धकर उस धागेको जला देना, और अंगूठीको वैसेही निराधार लटकाए हुए रखना इत्यादि। तब वे प्रभावित स्त्रियाँ अपने दुःखोंका निवारण करनेके लिये फकीरोंके पास ताबीज, यंत्रतंत्र इत्यादिकी याचना करती हैं। फकीर तो इसी बातको चाहता है। पहली बार वह एक कौडी भी न लेते हुए एकाद ताबीज या गण्डा मंत्रित करके ला देता है, और पीरकी पूजाके लिये केवल फूल ले जाता है। इस समय यदि भिक्षा मिल जाय, तो उसे लेनेसे वह इन्कार नहीं करता। इतनी भूमिका बान्धनेपर वह एकएक कदम आगे बढता है। भोली हिन्दु स्त्री पीरकी मनौती करती है, तथा समय पाकर उस फकीरके साथ पीरका दर्शन भी कर आती है। इसी प्रकार भोली हिन्दु स्त्रियाँ मुसलमानोंके पंजेमें फँस जाती हैं। मैंने ऐसे कई सुशिक्षित तथा अशिक्षित हिन्दु देखे हैं, जो प्रतिज्ञापर यह कहते हैं कि फकीरोंके चमत्कारोंसे तथा जन्तरमन्तरसे तन्दुरुस्त होकर उन्हें आर्थिक लाभ हुआ।

इन लोगोंके साथ जाकर मैंने इन चमत्कारोंको देखा है, और फकीरोंके साथ सम्भाषण भी किया है। कुछ फकीरोंके शरीरोंमें सातों देवियाँ तथा पीर, इत्यादिका संचार होनेका नाटक मैंने देखा है। ये देवदेवताएँ तथा पीर पैगम्बर बारूदकी एक धडाकेबाज अवाजके साथ डरकर गुप्त हो गए हुए भी मैंने देखे हैं। यह सुननेपर कि एक फकीरके शरीरमें हनुमानका संचार होता है, मैं उसे देखने गया था। उस मुसलमान फकीरके शरीरमें संचरित हो गया हुआ टूटीफूटी उर्दूमें बोलनेवाला व हनुमान और कुरसीके नीचे रखे हुए एक पटाकेकी धडाकेबाज अवाजके साथ उस हनुमानका तिरोधान हो जाना, ये प्रसंग मैंने अपनी आँखों देखे हुए हैं। इस संचारकी विद्याके कारण भोलेभाले अशिक्षित लोग तो ठग जातेही हैं; परन्तु आश्चर्य तब होता है, जब कि पढे हुए आंग्लभाषाविभूषित लोग भी इन तथाकथित संचार होनेवाले फकीरोंकी चंगुलमें फँसते हैं। मैंने यह अनुभव किया है कि उन फकीरोंपर इन मूर्ख अरण्यपण्डितोंकी अनन्य श्रद्धा हुआ करती है। मेरे एक मित्रके घर देवताओंके सिंहासनपर एक मुसलमान फकीर अवलियाका चित्र रखा हुआ, और नित्य

उसका पूजन होता हुआ मुझे मालूम था। उस अवलियाके आत्मिक सामर्थ्यकी अनेक कथाएँ भी मैं उस मेरे मित्रके मुखसे कई बार सुन चुका था।

एक दिन मैंने अपने मित्रोंको उस मुसलमान अवलियाका सप्रमाण सत्य वृत्तान्त बताया, और उस मुसलमानकी पूजा करनेपर उनकी खिल्ली भी उडाई। उससे वे मेरे मित्र मुझपर अति रुष्ट हो गए और, छः मासतक उन्होंने मुझसे भाषण नहीं किया। वे यह समझ बैठे कि उस अवलियाके विषयमें मेरे मत भयंकर नास्तिकताके दर्शक हैं। परन्तु जब उन्होंने यह सुना कि मैं इस नास्तिकताको मेरा एक भूषण समझता हूँ, तब तो उनके क्रोधमें अत्यधिक वृद्धि हुई। मेरे उस मित्रके एक परिचित, जो उस अवलियाके भगत थे, तो मुझे मारनेकेही लिये लकडी लेकर दौड आ गये! उस अवलियाके प्रसादके रूपमें बाँटी जानेवाली उच्छिष्ट कॉफी जब मैंने फेंक दी, तब उस भगतसमूहका क्रोधसागर अपनी सीमा पारकर मुझे निगल जाने लगा! जब पुरुष-वर्गकी यह कथा, तब स्त्रीवर्गका कहाही क्या जाय? प्रति शुक्रवारको पीरका दर्शन कर वहाँसे भभूत लानेवाली स्त्रियाँ तथा कच्छ छोडकर नमाज पढनेवाले प्रतिष्ठित हिन्दु पूनामें भी हैं, यह मैं जानता हूँ। पूना तथा अन्य नगरोंमें आज भी कई फकीर हिन्दुओंके द्रव्य तथा भोले भावपर अपने प्रपंचका विस्तार कर रहे हैं।

इन फकीरोंकी चैन, चारितार्थ तथा हिन्दु लडकिओंको भगाना, इत्यादि सर्व कौशल इन भगतगणोंसे प्राप्त द्रव्यपरही चला करता है। विशेषता यह है कि, मुसलमान फकीरोंके द्वारा हिन्दु अबलाओंका अपहरण करनेके लिए हिन्दुओंकाही द्रव्य उपयोगमें लाया जाता है। मुसलमान फकीर बडी कुशलतासे भोली हिन्दु ललनाओंको ठगकर कमाये हुए द्रव्यका उपयोग इस्लामके प्रसारकी ओर करता है। इन फकीरोंके शिष्योंमें अधिकतर संख्या गुण्डोंकीही हुआ करती है। यदि वैसाही मोका आ जाय, तो फकीर अपने उद्दिष्टकी सिद्धिके लिये इन गुण्डोंके द्वारा लठसे लेकर छूरेतक सब उपायोंका अवलम्ब करवाते है।

पीर तथा ताबूत

इसी फकीर वर्गकी प्रेरणासे पीरोंका तथा ताबूतोंका महत्त्व इतना बढ चुका है। कई हिन्दु बडी श्रद्धासे पीरोंकी तथा ताबूतोंकी उपासना करते हुए देखे गये हैं। हिन्दवी स्वराज्य-के शत्रु अफजलखाँकी कबर महाराष्ट्रमें प्रतापगढके निकट है। जिन लोगोंको ऐसे हिन्दु देखने हों, जो कि सन्तानके लिए इस कब्रकी मनौती कर पतनकी चरम सीमातक पहुँचे हैं, वे एकबार अफझलखाँके उर्सके समय प्रतापगढके निकट हो आयँ। मुहर्रमके दिनोंमें सतारेमें "जंगी" नामक ताबूतके सामने कौन और कितनी संख्यामें परशादी बाँटा करते हैं, यह देखनेपर भी हिन्दुओंके अधःपातका अनुमान लग सकता है। हिन्दु समाज एक बार पीछे मुडकर यह तो देखे, कि मुहर्रममें बाघ बनकर ताबूतोंके सामने जो उछलकूदकी धूम मचाया करते हैं, उनमेंसे हिन्दु कितने होते हैं! तब हिन्दुओंके ध्यानमें आ जायगा, कि ताबूत और पीरोंकी उपासनामें हम लोग बहोत दूरतक पहुँच चुके हैं।

संयुक्तप्रान्तमें बालेमियाँका उर्स सुप्रसिद्ध है। उसमें बालेमियाँके घोडेके सामने दण्डौत करनेवालोंमेंसे ९५ प्रतिशत हिन्दुही हुआ करते हैं। इस बालेमियाँने संयुक्तप्रान्तमें ससैन्य घूमकर प्रान्तभरमें आतंक मचा लिया था। उसे युक्त-प्रान्तीय राजा सुहेलदेवने हिन्दुओंकी तक्ष्ण कृपाणका पानी चखाया, आज जहाँ बालेमियाँका उर्स लगता है वहींका प्रसिद्ध बालार्क कुण्ड कई मुसलमानोंके शवोंसे भर गया था। इसी सुप्रसिद्ध लडाईमें वह बालेमियाँ मारा गया, जो कि गंगा-यमुनाओंके अस्तित्वसे पुनीत भूमिको अरबस्तानमें परिवर्तित करना चाहता था। कालान्तरसे वह बालार्क कुण्ड मुसलमानोंके शवोंसे अपवित्र हुआ, ऐसा मानकर हिन्दुओंने उस कुण्डमें स्नान करना छोड दिया, और वहींपर बालेमियाँकी कबर बनायी गई। किन्तु आज! आज तो राजा सुहेलदेवकी स्मृति नष्टप्राय हो चुकी है, और जिसने हिन्दुमात्रको त्राहि भगवान् कर छोडा, हिन्दुओंको लूटकर हत्याकाण्ड और अग्निकाण्डका सत्र प्रारम्भ किया, वही पराई, भारतका शत्रु आज पीर बन बैठा है। हिन्दु उसीको हाथ जोडकर सुखकी याचना करते हैं! जिस दिन हिन्दुओंमें अपने राष्ट्रपुरुषोंकी विस्मृतिके लिए खेद तथा शत्रुकी पूजा करनेके लिए तिरस्कार निर्माण होगा, ठीक उसी दिनसे हिन्दुराष्ट्रका भाग्यसूर्य ग्रहणमुक्त होकर फिरसे एक बार निजी तेजसे चमकने लगेगा!!!

इस प्रकार इस्लामियोंने फकीर, पीर, ताबूत और कब्रोंकी सहायतासे हिन्दुओंका सर्वांगीण परीक्षण कर छोडा है। वे यह भी जानते हैं कि हिन्दुजनताके मर्मस्थान कौनसे हैं। भारतकी

'दार्-उल्-हरब्' माननेवाले ये लोग ठीक उन्हीं स्थानोंपर आघात कर अपना कार्यभाग साध लेते हैं। ऐसा देखा गया है कि, तथाकथित अस्पृश्य समाज इनके कुटिल कारस्थानोंका बलि सहजतया हो जाता है। भोलेभाले हिन्दु किसानोंमें भी फकीरोंके आत्मिक सामर्थ्यके विषयमें श्रद्धा देखी गई है। इस कारण इनके कपट-कारस्थानोंके बलिकी संख्या अधिकाधिक बढते जा रही है। किन्तु अभीतक उच्च-वर्णीय हिन्दु इधर दुर्लक्षही किये हुए हैं। इतनाही नहीं तो यह स्वयंमन्य शिक्षित वर्ग इन बिचारोंकी उपेक्षाही किया करता है। इस निन्दनीय उपेक्षावृत्तिके कारण मुसलमान तथा ईसाई, इन दोनोंको हिन्दुओंको खानेके लिए छुट्टी हो गयी है! हिन्दुसमाजके अन्तर-तक पहुँचे हुए इस तिरस्करणीय उपेक्षावृत्तिका लाभ फकीर सबसे अधिक प्रमाणमें लिया करते हैं।

स्त्री-अपहरण

भारतमें प्रतिदिन हिन्दु अबलाओंका अपहरण हुआ करता है। लखनौमें तो कुछ सहस्र हिन्दु अबलाएँ अपहरण कर मुसलमानोंके घरोंमें ठूंसी हुई पाई गई हैं, जो कि भारतको 'दार्-उल्-हरब्' माननेवालोंके द्वारा प्रजा-निर्मिति कर अपना दुर्दैवी जीवन बिता रही हैं। यह ध्यानमें रखना चाहिए कि इस बडे प्रमाणपर होनेवाले अबलाओंके अपहरणका कारण है हिन्दुओंके रोमरोममें धंसी हुई उपेक्षावृत्ति, तथा उससे भी अधिक फकीरोंने की हुई सामाजिक जासूसी और गुण्डोंकी गुण्डाई। देहातोंमें भी आज कई वर्षोंसे जो लोग किसानोंके काम कर उनका मूल्य प्रतिवर्ष अनाजके रूपमें लिया करते हैं, उनमें निकम्मे फकीरको एक महत्वका स्थान प्राप्त हुवा है। इसलिए इस्लामके प्रचारको बडी सहायता मिला करती है। देहातोंकी अल्पसंख्य मुस्लिम बसतीमें फकीरको सहजही स्थान मिल जाता है, और फिर उस केंद्रमेंसे वह अपनी सामाजिक जासूसीको प्रारम्भ करता है। यदि देहातमें कोई मुसलमान शिक्षक हो, तब तो वह इस फकीरको अन्तः-करणपूर्वक साहाय्य करता है। इस प्रकार उस देहातमें बैठे बैठे उस फकीरको चारों ओरके दसपाँच देहातोंका वृत्त सहजतया मिल जाता है। सामाजिक जासूसीके बलपर इतना वृत्त इकट्ठा कर तथा कुछ हिन्दु लोगोंको पीरोंके भक्त बनाकर यह फकीर ठेट पडोसके नगरको पहुँचता है, तथा वहाँके मुल्लामौलवियोंको यह वृत्तान्त सुनाता है। कई बार यह वृत्तान्त पंजाब तथा यू. पी. में काम करनेवाली इस्लामी संगठन संस्थाओंको लिखा जाता है। इस वृत्तके आधारपर तथा देहातोंमें साहूकारी करनेवाले पठानोंके द्रव्यके तथा बाहुबलके जोरपर हिन्दु स्त्रियाँ भगाई जाती हैं।

इन पठानोंकी सहायतासे हिन्दु स्त्रियाँ मुलतान-पिशावरकी ओर पहुँचाई जाती हैं। इस घृणास्पद कार्यमें हिन्दुओंमेंही जन्म पाये हुए कुछ नराधम भी द्रव्य लेकर साहाय्य करते हैं। परसों ही एक टोली पकडी गई, जो कि अलिगढको केन्द्र बनाकर महाराष्ट्र, मालव, मध्यप्रान्त, बंगाल इत्यादि प्रान्तोंसे हिन्दु लडकियाँ भगाकर उनका क्रय-विक्रय किया करती थी। इस टोलीको युक्तप्रान्तकी पुलिस भी साहाय्य किया करती थी, जिसमें कि ८० प्रतिशत मुसलमान हैं। दूसरी एक टोली बंगालमें काम करती है, जोकि वहांसे बच्चे भगाकर उन्हें औरंगाबादको भेजा करती है। प्रत्येक बालकके पीछे इस टोलीको बहुत बडी रक्कम मिला करती है। ये सब घृणित कार्य बडी निश्चिन्ततासे तथा सातत्यसे चलाये जा रहे हैं। फकीर अपने संचारके द्वारा इन सब षड्यन्त्रोंकी पूर्वसिद्धता कर रखता है। इस्लामका प्रसार इतना अत्यधिक बढनेका मुख्य कारण है फकीरोंके द्वारा चलनेवाली सूत्रबद्ध जासूसी। इस्लाममें प्रतिदिन तथाकथित अस्पृश्य और भोलीभाली हिन्दुजनता, इनमेंसे भरती हुआही करती है। यही कारण है, जिससे कि प्रति-जनसंख्या-गणनाके समय मुसलमानोंकी संख्या बढी हुई, तथा हिन्दुओंकी घटी हुई पाई जाती है। तथाकथित कनिष्ठ जातियोंमेंसे इस्लाममें होनेवाली भरतीका वेग इतना भयंकर है, कि यदि ठीक समयपर उसका प्रतिकार न हुआ, तो ये तथाकथित कनिष्ठ हिन्दु जातियाँ अतिशीघ्र भारतको 'दार्-उल्-हरब्' माननेवाली बन जाएंगी।

जनसंख्यामें क्षय

बंगाल प्रान्तमें हिन्दुओंकी संख्यामें जो भयंकर क्षय हो रहा है, वह यदि थमाया न गया, तो शीघ्रही सब बंगाल प्रान्त अविन्धमय बन जायगा। सन १८७१ में बंगालमें १७० लक्ष हिन्दु थे, और मुसलमान केवल ६५ लक्ष; परन्तु केवल ३० वर्षोंमें इस प्रमाणमें भयानक परिवर्तन हो चुका है। सन १९०१ में मुसलमानोंकी संख्या हो गई करीबकरीब २००

लक्ष !!! और हिन्दुओंकी जनसंख्या मात्र केवल १० लक्षोंसे बढकर १८० लक्ष हो गई । जनसंख्या साधारणतः २५ वर्षोंमें दुगनी हो जाती है । यह नियम हिन्दु और मुसलमान, दोनों-को लागू है । इस नियमके अनुसार मुसलमानोंकी संख्या तो दुगनी हो चुकी, किन्तु हिन्दुओंकी संख्या मात्र १$\frac{१}{८}$ इतनी भी न बढ सकी। मात्र मुसलमानोंकी संख्यामें दुगनाईसे अधिक ६५ लक्ष, इतनी वृद्धि होकर बहुसंख्य हिन्दु अल्पसंख्य हो गए, और उनके सर्वनाशको प्रकटतासे प्रारम्भ हुआ । सन् १८७१ से लेकर १९०१ तकके ३० वर्षोंके कालमें ६५ लक्ष हिन्दु अपने धर्मसे बिछुडकर मुसलमान बनाए गए, और भारतको 'दार्-उल्-हरब' मानने लगे । उनके पूज्यस्थान हुए मक्का और मदीना ! इस प्रकार बंगालमें इस्लामके पुनरुज्जीवनका तथा हिन्दु राष्ट्रके विनाशके आन्दोलनका बीज बोया गया । सन १९०६ में जब कि भारतके कोनेकोनेमें "वन्दे मातरम्" की गूँज झनक रही थी, जब देशभक्त हिन्दु तरुण हँसते हँसते फाँसी तथा काले पानीकी भयंकर सजाओंको निमंत्रण देते थे, ठीक उसी परमोज्ज्वल कालमें उस विषबीजके फलस्वरूप बंगालके मुसलमान इस्लामके पुनरुज्जीवनके लिए उपद्रव निर्माण कर रहे थे, हिन्दुओंके घर जलानेमें आनन्द मनाया करते थे, हिन्दु युवतिओंपर बलात्कार करना, उनका अपहरण करना, इत्यादि घृणित कामोंमें धन्यता माना करते थे और जिससे कि हिन्दुओंके मनमें डर पैदा हो, ऐसे कृत्य करनेमें संलग्न थे ।

सन १८७१ से लेकर १९०१ तकके कालमें अल्पसंख्य हो गए हुए हिन्दु आज मुस्लिम राज्यशासनके पैरों नीचे रौंदे जा रहे हैं । "वन्दे-मातरम्" की भूमिमें प्रतिगामी मुस्लिम राज्यसत्ता नंगा नाच कर रही है । जहाँ वह मनुष्य, जिसे हिन्दु स्त्रियोंके अपहरण करनेके विषयमें सजा हुई थी, आज लीगी मंत्रीमण्डलकी कृपासे बंगालके विधिमण्डलका सदस्य बन सकता है, वहाँ अब हिन्दुओंका नाश होनेके लिये किन बातोंकी कमी है ? स्वयं बंगाल सरकारकी पुलिसही जहाँ खुलना जीलेमें तथाकथित अस्पृश्य हिन्दु जातिओंपर अत्याचार करती है, वहाँ हिन्दुओंकी दशा कैसी होगी, यह विचारनेके लिये कोई बडे पाण्डित्यकी आवश्यकता है नहीं ।

बंगालकेही समान सब भारतको अविन्धमय करनेके लिये मुल्ला-मौलवी, फकीर तथा कुर्रानके प्रचारक अविश्रान्त परिश्रम कर रहे हैं । जिस समाजमें खुले तौरपर अपना हिन्दुत्व तथा हिन्दुधर्म, इनकी खिल्ली उडानेवाले सुशिक्षित लोग प्रतिदिन बढतेही जा रहे हैं, कोई आश्चर्य नहीं कि वह समाज प्रतिक्षण क्षीण तथा बलहीन होता जाय । हिन्दुसमाजका नेतृत्व योगायोगसे जिनकी ओर आ चुका है, वे नेता हिन्दुओंके संरक्षणके विषयमें उदासीन हैं । खेदकी बाद यह है कि, येही नेता हिन्दुसंघटनकी खिल्ली बडी निर्घृणतासे उडाया करते हैं । रातदिन हिन्दुसमाजका परीक्षण करनेवाले फकीरोंकी सुतीक्ष्ण नजरोंमेंसे यह बात छूटने न पाई है । इस्लामकी वृद्धिकी दृष्टिसे फकीर इस वर्मका उपयोग अच्छी तौरसे किया करते हैं ।

ख्वाजा हसन निझामीके चन्द शब्दोंपरसे यह अनुमान किया जा सकता है कि, उसने अपनी पुस्तकके द्वारा हिन्दुओंका इस्लामीकरण तथा इस्लामका प्रचार, इस विषयमें फकीरोंको जो सूचनाएं दी हुई हैं, उन्हें छोडकर और भी कुछ युक्तिओंका तथा मार्गोंका अवलम्ब किया जाता होगा । क्योंकि आवश्यक सूचनाएं समाप्त हो जानेपर निझामीने फकीरोंके लिए लिखा है—

"हिन्दु जातिसे उन फकीरोंको जो नवीन चेले अथवा शिष्य मिलेंगे, उनपर प्रभाव डालनेके और भी कुछ मार्ग तथा युक्तियाँ हैं । उनका ज्ञान होनेके लिए फकीर तथा अन्य लोग मुझसे वैयक्तिक पत्रव्यवहार करें ।" हिन्दु अबलाओंकी जो व्यवस्थित शिकार शुरू है, सिन्धमें हिन्दु तरुणोंके जो वध हो रहे हैं, और कलकत्तामें काम करनेवाली 'मुस्लिम-साहित्य-मंदिर' नामक संस्थामें जो चर्चा हुई है, उस परसे ये मार्ग तथा युक्तियाँ क्या होंगीं, इनका अनुमान लगाया जा सकता है । उस संस्थामें जो चर्चा हुई, उसका कुछ अंश आगे दिया जा रहा है—

ठगनेके प्रकार

"That in the next Census Report, they would see the Hindus in Bengal have been reduced by another 30 lacs."

यही कार्यकर्ता आगे चलकर कहता है,

"We need not be anxious for the upper classes who are only 30 lacs. The middle class forms the majority and they are generally service holders and liable to annihilation if

only we are emphatic and regular as regards our demands and activities.

"For this purpose we must create some 'seeming divisions' amongst ourselves. viz–

(i) Some will act as loyalists and will always support the Government activity and thereby win the love and sympathy of the Government.

(ii) Some will become Congress men who will always demand more rights and privileges for the Mohamedans, which if met even half way will make us the gainer.

(iii) Some will work as Socialists and Communists. They will organise the labours and peasants and through these organizations they will try to capture the sympathy of both Mohamedan and Hindu mass." ('Iye opener' page 4)

ये फकीर लोग हिन्दुओंको येन केन प्रकारेण इस्लामी धर्मके पींजडेमें पकडकर ठूँसनेका काम बडी तन्मयतासे किया करते हैं। प्रतापगढके निकट रहनेवाले " धावडों " को, जो कि हिन्दु थे, तथा जिनके आचार-विचार आज भी हिन्दुही हैं, इस्लाम धर्मके सिकंजेमें फँसानेका कार्य एक फकीरनेही सम्पन्न किया। यही फकीर " रंगीला रसूल " इस पुस्तककी खोज करते हुए इस प्रान्तमें घूम रहा था। वाई, सातारा, कराड इत्यादि इस प्रान्तके गांवोंका निरीक्षण इसी फकीरने किया। ऊपर जिस " रंगिला रसूल " पुस्तकका उल्लेख किया गया है, वह पुस्तक इस्लामियोंके प्रचारको उत्तर देनेके लिये लिखी गई थी। मुसलमान फकीर तथा प्रचारक समय-समयपर हिन्दुओंके देवदेवताओं तथा वीर पुरुषोंकी अत्यन्त दुष्ट निन्दा अत्यन्त अश्लील भाषामें किया करते हैं। " सिताका छिनाला," यह पुस्तिका इसी दुष्ट प्रचारका नमूना है। स्वर्गवासी हुतात्मा राजपालजीने इस पुस्तिकाको उत्तर देनेके लिये " रंगीला रसूल " लिखी थी। हिन्दु जनताको " रंगीला रसूल" की अविस्मरणीय स्मृति है। परन्तु अत्यन्त खेदकी बात है कि वह समाज इस पुस्तककी पार्श्वभूमि नहीं जानता।

पक्षपातका नमूना

इस्लामी प्रचारक, फकीर तथा मिशनरी, इन लोगोंने हिन्दु देवदेवताओंकी निन्दा तथा मजाक करनेका मानो बीडाही उठाया है। मुसलमान समाज इस विषयमें अत्यन्त सावधान रहा करता है। वह सत्यासत्यकी पर्वा नहीं करता। वह तो यही देखता है, कि पैगम्बरकी निन्दा की गई है। बस, फिर मुसलमान पागल बन जाता है। ऐसेही एक पागलने दिन-दहाडे हुतात्मा राजपालजी वर्माका वध किया। महाराष्ट्रके एक लेखकने भगवान् श्री कृष्णके चरित्रपर एक छोटीसी पुस्तक लिखी थी, जिसका नाम था " रंगीला रसूल "। केवल इस नाम-सादृश्यकेही लिये इस पुस्तकपर सरकारकी अवकृपा हो गई, तथा वह जब्त हुई। पिछले कॉंग्रेस सरकारके जमानेमें जब कॉंग्रेस सरकारने इस पुस्तकको निर्बन्ध-मुक्त किया, तब यू० पी० की पन्तसरकारके पेटमें एकदम खलबली मच गई। उसने झट बम्बई सरकारसे जाँचपडताल की। परन्तु जिस " सिताका छिनाला " पुस्तिकामें हमारी राष्ट्रमाता प्रातः-स्मरणीय सीता देवी एक **वेश्या** तथा **रण्डी** थी, ऐसा बताया गया है, उस पुस्तिकका निषेध करनाभी इन लोगोंने आवश्यक नहीं समझा! हे कालनिद्राग्रस्त परहिततत्पर हिन्दुसमाज! क्या तेरी यह नींद कभी खुलेगी भी? ??

बसवेश्वरका अवतार

ऐसेही एक फकीरने कुछ वर्षोंके पहले कर्णाटकमें धूम मचा दी थी। कर्णाटकका परीक्षण करते हुए उस प्रान्तमें घूमनेवाले इस फकीरका केन्द्रकार्यालय था हैद्राबाद रियासतमें, जो फिरसे एकबार भारतपर औरंगझेबी राज्यशासन चलानेकी इच्छा कर रहा है। दक्षिण भारतमें इस्लामीकरणके जो षड्यंत्र चल रहे हैं, उन सबका भरण, पोषण, संचालन तथा नियमन हैद्राबादसे हुआ करता है। कर्णाटककी भोली हिन्दु जनताको फँसानेवाले इस चालाख फकीरका नाम था, " दीनदार सिद्दिक "। यह षड्यंत्री धूर्त अपनेको " चन्न बसवेश्वरका अवतार " कहलाया करता। कर्णाटकमें सर्वत्र फैले हुए लिंगायत समाजमें इस दीनदारने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करा ली थी। हुबली, धारवाड, गदग, बीजापुर, राणी बेन्नूर इत्यादि सर्व महत्त्वके स्थानोंमें इसके हस्तक तथा शिष्य हिन्दुजनताको इस्लामकी झुण्डमें खींचनेके भलेबुरे यत्न किया करते हैं। अनेक लिंगायत हिन्दु इस षड्यंत्रके बलि हो चुके, और दीनदार सिद्दिकका महत्त्व अत्याधिक बढ चुका।

इस दीनदार सिद्दिकके कपटजालसे मुक्त हो गए हुए एक लिंगायत सद्गृहस्थ श्री० भूसप्पा, इन्होंने सिद्दिकके कुटिल कारस्थानोंपर प्रकाश डाला हुआ है। उन्होंने जो अनुभव कहे हैं, वे अत्यन्त उद्बोधक, हिन्दुजनताको भयकी सूचना देनेवाले, और इस्लामियोंके कुटिल षड्यंत्रोंका भेद करनेवाले हैं। श्री० भूसप्पाके शब्द जैसेके वैसे नीचे दिये जा रहे हैं,—

" मेरा जन्मस्थान गदग। मेरे पिताका नाम हणमन्तप्पा, माँका नाम लियव्वा। मेरे दो भाई तथा एक बहन है। मेरी पत्नीका नाम लक्ष्मी। मेरे दो बच्चे तथा एक बच्ची भी है। मेरी उपजाति देवांग। मैं कई दिनोंसे हुबलीमें बुनाईका उद्योग कर सुखसे रहा करता था। आठ महिनोंके पहले " सिद्दीक दीनदार चन्न बसवेश्वर " यह हुबली आ गया। मैं हैदरसाहब नामक गृहस्थके घर काम करता था। सिद्दिककी मुझसे आकस्मिक भेंट हुई। तब मेरे नाम तथा जात-पातकी पूछताछ कर सिद्दिक मुझसे बोला, " तू मेरा शिष्य हो जा। मैं चन्नबसवेश्वरका अवतार हूँ। चन्नबसवेश्वरका जन्म लिंगायत जातिमें हुआ, और आगे चलकर उन्होंने इस्लामी धर्मका प्रचार किया। इस्लामी धर्म और लिंगायत धर्म, इनमें कोई भेद नहीं है। चन्नबसवेश्वर मुहम्मद पैगम्बरके शिष्य थे, तथा बडी श्रद्धासे वे मुहम्मदकी भक्ति किया करते थे। मैं उन्हीं चन्नबसवेश्वरका अवतार हूँ। सब लिंगायत धर्मके लोग मुसलमानही हैं। तू मुझपर विश्वास कर। लिंगायतोंके कालज्ञानमें वर्णित चन्नबसवेश्वर मैंही हूँ, मुझपर विश्वास करके मेरे शिष्यत्वका स्वीकार किये बिना कोई मोक्ष नहीं पा सकता। "

मैं सिद्दिकके इस मायावी भाषणसे मोहित हुआ। आगे चलकर **मेरी पत्नीपर भी सिद्दिकके अनुयायित्वका स्वीकार करनेके लिये दबाव डाला गया, और आखरी निरुपायसे उसने संमति दी !!** पूर्व संकेतके अनुसार एक जुम्माके दिन हुबलीके पिण्डारा गलीकी मसजीदमें मुझे मुसलमान धर्मकी दीक्षा दी गई। उस समय कई प्रतिष्ठित मुसलमान उपस्थित थे। दीक्षाविधि होनेपर मेरा नाम मूसा तथा मेरी पत्नीका नाम मरीयम्मा रखा गया और ये नाम रजिस्टरमें लिखे गये। कुछ दिनोंके बाद हैद्राबादमें सिद्दिकका व्याख्यान था। मैं हैद्राबाद जाकर कुछ दिनोंतक सिद्दिकके साथ रहा। एक दिन सिद्दिकने मुझे उपदेश करना शुरु किया, कि बिना मांसभक्षण किये मोक्ष नहीं मिल सकता; और उसमें भी गाय-बैलका मांस खाना अधिक पुण्यकारक है। परन्तु मैं पवित्र देवांग कुलमें जन्म पा चुका था। मांसभक्षण मैंने जन्मभरमें कभी नहीं किया था। इसलिये मुझे उसका वह उपदेश असह्य हुआ। सिद्दिककी मुसलमानी धर्मप्रचारकी घृणास्पद पद्धतियाँ देखकर मुझे खेद हुआ। आगे चलकर मेरी गलती मेरी समझमें आ गई, और मुझे अत्यन्त पश्चात्ताप हो गया। तब फिर हैद्राबादमें भोलाराम आर्य समाजके सेक्रेटरी श्री० बालकृष्णजीकी साहाय्यतासे अपनी शुद्धि करवा कर मैं फिरसे एक बार सनातन वैदिक धर्मका अनुयायी हो चुका।

यह सिद्दिक भोले भाले हिन्दु लोगोंको ठगकर तथा द्रव्यकी लालच बताकर उन्हें धर्मभ्रष्ट किया करता था। इसके **जालमें कई लिंगायत लोक फँसे हुए हैं।** अब यह सिद्दिक निझामके राज्यमें अपना मायाजाल फैला रहा है। अभी कुछ दिन हुए, उसने एक पत्रक प्रसिद्ध किया है। **उसे पाँच लक्ष रुपिये तथा एक लक्ष मुसलमान सैनिकोंकी आवश्यकता है।** वह चाहता है, कि इन स्वयंसेवकोंकी साहायतासे हम्पी क्षेत्रका विरुपाक्ष मान्दिर तथा तिरुपतिका मन्दिर तोडकर धूलमें मिला दिया जाय, तथा उन मन्दिरोंकी मूर्तिओंके नीचे गडा हुआ ९० कोटि रुपये द्रव्य निकालकर उसके द्वारा इस्लामका प्रचार तथा प्रसार किया जाय। हैद्राबादकी आर्य-प्रतिनिधि-सभाके प्रचारक श्री० चन्द्रभानुजी सिद्धान्तविशारदके पास यह पत्रक है। उसका अंग्रेजी अनुवाद वे प्रकाशित करना चाहते हैं। हिन्दु बान्धवोंसे मैं प्रार्थना करता हूँ कि सिद्दिकके मायाजालसे वे सावधान रहें।"

भीखके निमित्तसे हिन्दुसमाजमें सर्वत्र घूमनेवाले मुसलमान फकीर हिन्दुसमाजका परीक्षण कितनी सूक्ष्मतासे करते हैं, उनकी योजनाएँ कैसी हुआ करती हैं, वे कहाँसे और किस प्रकार सहायता पाते हैं, इत्यादि सब बातोंपर श्री० भूसप्पाके उपरिलिखित वक्तव्यने पर्याप्त प्रकाश डाला है। किन्तु प्रकाशमें आया हुआ यह एकही किस्सा है। सिद्दिकके इस उद्देशसे हम इस बातका अनुमान लगा सकते हैं, कि प्रकाशमें न आये हुए ऐसे कितने प्रकार होंगे, तथा हिन्दुस्थानको इस्लामिस्तान बनानेके लिये कहाँ और किस प्रकारके कृष्ण-कारस्थान

चलते होंगे। यह बिलकुल स्पष्ट है कि हिन्दुस्थानको शत्रु-भूमि माननेवालोंको " हमारे मुसलमान भाई " कहकर उन्हें गलेसे लगानेके लिये सदैव सिद्ध रहनेवाली हिन्दु जनताके पेटमें इस्लामीकरणकी हलाहलसे चुपडी हुई कटार भोंककर उसको सदाके लिये नष्ट करनेके जो अविरत, अमानुष उद्योग चल रहे हैं, उनकी योग्य चिकित्सा कर यदि हिन्दु-जनता अपने संरक्षणके लिए सिद्ध न हुई, उसके नेताओंने उसे जागृत न किया, तो फिर हिन्दु-जनता और हिन्दु-राष्ट्रका भविष्य अन्धकारमय है !!!

नारी अपहरणका एक वृत्तान्त

पीरोंके स्थानोंमें रहनेवाले मुसलमान उन पीरोंकी सहायतासे हिन्दु अबलाओंका अपहरण किस प्रकार किया करते हैं, इस विषयकी एक सत्यकथा मेरे परममित्र धर्मप्राण पं० रामचन्द्र शर्मा 'वीर'ने अपनी पुस्तक "विकट-यात्रा" में दी हुई है। उनके शब्द जैसेके वैसे आगे दिये जा रहे हैं—

" अनेक ऐतिहासिक वस्तुओं देखकर मैं तारागडके सर्वोच्च स्थानपर पहुँच गया। मैंने एक ऐसे स्थानमें प्रवेश किया, जहाँपर एक मजारके निकट कई मुसलमान फकीर बैठे थे। मजारपर लोबान जल रहा था। मोरके पंखेके कई गुच्छे लटक रहे थे। रेवडी, बतासे, मलीदे और जलेबिओंके ढेर लगे हुए थे। एक लोटेमें पानी भरकर एक मुसलमान युवक खडा था और कई मुस्लिम युवकोंके बीचमें एक सुंदर स्त्री औंधे मुँह पडी थी। उस सुंदरीको मैंने एकही दृष्टिमें पहचान लिया। मैंने भले भाँति जान लिया कि, यह स्त्री हिंदू है, और किसी उच्च कुलकी महिला है।

" सायंकाल हो गया था, भगवान् सूर्य-देव अस्ताचलके पीछे छुपनेको जा रहे थे। मैंने कालाकांकर नरेशके कर्मचारियोंको कानमें कहा कि, यह स्त्री मजारके आगे औंधे मुँह पडी है और कुछ देरमें अंधकार होनेवाला है। मुझे शंका है कि इसको मुस्लिम-युवक आज न जाने देंगे। देखिये ये लोग किस गृद्ध-दृष्टिसे और हास्यमय मुद्रासे इसकी ओर टकटकी लगाये हुए हैं! यदि हम लोग यहाँसे चुपचाप लौट जाएँगे, तो आज यहाँ अनर्थ हुए बिना न रहेगा। मुस्लिम गुंडे इसके अंध-विश्वासका अनुचित लाभ उठानेके लिए एकत्रित हो रहे हैं। ये लोग बिना भ्रष्ट किये इसका पीछा न छोडेंगे, और संभव है, इसको मुसलमान बनानेके लियेही यहाँ लाये हों। और ये झूट-मूठ औंधे मुँह क्यों पडी है? इसे यहाँ छोडकर चलनेमें महा पाप होगा। मेरे शब्दोंके उत्तरमें उन्होंने कहा कि क्या आप लडने आये हैं? मैंने कहा, क्या किसी बहिनको धर्मभ्रष्ट होने दिया जाय? मेरे साथी कुछ गंभीर होकर खडे हो गये। सहसा वह हिंदू महिला बैठ गई और सिर घुमाघुमाकर मजारके आगे औंधे मुँह पछाड खा खाकर गिरने लगी। "

मैंने एक मुसलमानसे पूछा—ये औरत क्या करती है?

मुसलमान बोला—पीरबाबासे बेटा माँगती है।

मैंने कहा—क्या इसका पति नपूंसक है? या रोगी है? जीवित पति जब बेटा नहीं दे सका, तब मरा पीर क्या देगा?

उसने कहा—मियाँ क्या लेते हो, चलो हटो यहाँसे।

मैंने कहा—इस औरतको साथ लिये बिना न जायेंगे। यह हमारी बहिन है, इसके हम रिश्तेदार हैं।

मेरे रुखे भावको देखकर वह चुप हो गया। बारबार औंधे मुँह गिरनेसे वह निर्लज्ज नारी थक गई, और नीचा मुँह करके बैठ गई। मजारके फकीरने मुस्लिम युवकके हाथसे पानीके लोटेको हाथमें लेकर "लाइलाहि इल्लिलाह मुहम्मद रसुलिल्लाह" कलमा पढकर लोटेके पानीमें तीन बार छूछू करके फूँककर एक गलास भरकर निर्लज्ज नारीको दिया, जिसे वह पी गई।

यह दशा देखकर मैं काँप गया; इच्छा हुई कि आत्महत्त्या करके मर जाऊं। मुस्लिम युवक मेरेपर लाल लाल आँखे निकालकर झपटे, किंतु मैंने संभलकर डंडेको उठा लिया। इतनेमें राजासाहबके आदमिओंने कडककर कहा, ' खबरदार! इनको अकेले मत समझना; हम लोग आठ आदमी तुम्हारे जैसे पचासोंको पछाड देंगे। ' संघर्षको बढता देखकर निर्लज्ज नारी लज्जित होकर उठकर चलने लगी; हम लोग भी उसके साथ हो लिये। मुस्लिम युवक हाथ मलते और दाँत पीसतेही रह गये "। (बिकट यात्रा, ले० पं० रामचंद्र शर्मा 'वीर,' पृ. ३९-४०)

मौलवी तथा शिक्षक

हिन्दुओंकी पवित्र तथा पुण्यभूमिमें इस्लाम प्रचारके निमित्तसे

अरबकी ऊसर भूमिके रूढाचारोंका बीजारोपण करनेवाला दूसरा गुट्ट है उल्मा, मौलवी तथा मुसलमान शिक्षकोंका। इस गुट्टके विषयमें ख्वाजा हसन निझामीने जो कुछ लिखा है, उसे पढकर हिन्दु जनता अपनी स्मृतिमें लिख रखे। हसन निझामी लिखता है—"देहातोंकी पाठशालाओंमें पढानेवाले मुसलमान शिक्षक इस्लाम-प्रचारका काम उत्कृष्टतया कर सकते हैं। क्योंकि उन पाठशालाओंमें हिन्दु बच्चेही पढा करते हैं। इस सुसन्धिका उत्कृष्ट उपयोग कर उन बच्चोंके मनपर इस्लामके संस्कार किये जाँय। विशेषतः अस्पृश्योंका मतपरिवर्तन कर उन्हें मुसलमान बनाया जाय, और इस प्रकार धर्मप्रसारका शबाब (पुण्य) सम्पादन किया जाय।" हसन निझामीके इस आदेश तथा उपदेशका पालन देहातोंके मुसलमान शिक्षक बडी तत्परतासे कर रहे हैं। राजधानी सतारामें इस प्रकार किया हुआ एक प्रयत्न प्रकाशमें आ चुका है। एक मुसलमान शिक्षक, जो कि खुद्को राष्ट्रीय कहलाकर गणेशोत्सवमें भाग लिया करता था, उसकी पाठशालामें पढनेवाली हँसा नामक मराठेकी लडकीको ले उडा। उसे लेकर वह ठेट मुगलाई पहुँचा, और वहाँ सिकन्द्राबादमें रहने लगा। सिकन्द्राबादमें एक बडे बाडेमें कुछ भगाई हुई हिन्दु लडकियाँ बडे बन्दोबस्तके साथ रखी गई थीं। वहीं उसने हँसाको रखा। परन्तु हँसाका भाग्य बलवत्तर होनेसे वह किसी प्रकार वहाँसे भाग निकली, और फिरसे हिन्दुधर्ममें आ चुकी। अन्य दुर्दैवी हिन्दु लडकिओंका क्या हुआ, आजतक किसे पता नहीं चला। पाठशालाकी पुस्तकोंमें "सबक्तगिन तथा हिरनका बच्चा" नामक एक कहानी है। उस कहानीके आधारपर मुसलमान शिक्षक हिन्दु बालकोंपर इस्लामधर्मकी भलाईके संस्कार किया करते हैं। अस्पृश्योंको अपनी झुण्डमें खींचनेका काम तो चलाही करता है। जिन प्रान्तोंमें हिन्दु अत्यधिक बहुसंख्य हैं, उन प्रान्तोंमें भी मुसलमानोंके लिये भिन्न उर्दू पाठशालाएँ हैं। उन पाठशालाओंमें काम करनेवाले मुसलमान शिक्षक बडी तन्मयतासे तथा आत्मीयतासे इस्लाम-प्रचारका काम किया करते हैं। बम्बई इलाकेमें बेलगाँव जीलेके कारदगा गाँवकी पाठशालामें पढानेवाले मुसलमान शिक्षकके प्रयत्नोंसे २१२ हरिजन एकदम मुसलमान हो चुके। यह कारदगा-वृत्त उर्दू पाठशालाओंके मुसलमान शिक्षकोंके द्वारा किये जानेवाले इस्लाम-प्रचारपर विदारक प्रकाश डालनेवाला है, अतएव वह यहाँ सविस्तृत दिया जा रहा है।

कारदगा-प्रकरण

उपरिलिखित कारदगा गाँव बेलगाँव जीलेकी चिकोडी तहसीलमें है। गाँवकी कुलसंख्या चार पाँच हजारतक है, जिसमें मुसलमान केवल पाँच सौ के करीब हैं। ये सब मुसलमान हैद्राबाद स्टेटसे सम्बन्धित हैं। कर्णाटकमें घूमनेवाले दीनदार सिद्दिक चन्नबसवेश्वरकी दृष्टिसे यह गाँव छूटने नहीं पाया था। यहाँ मुसलमानोंका एक पीर है, जिसका नाम "बंगाली पीर"। सब गाँव इस पीरकी उपासना करता है। अन्य स्थानोंके अनुसार यहाँ भी पीरके उर्समें उसकी मनौती करनेवाले लोग अधिकतर हिन्दुही हुआ करते हैं। हिन्दुओंका भोलापन तथा परप्रत्ययनेय बुद्धि, इन दो गुणोंके कारण इस पीरका महत्त्व कारदगाकी पंचक्रोशीमें तथा इतरत्र फैला हुआ है। भारतको शत्रुदेश माननेवाले पराईओंकी एक कबरको हिन्दुओंके भोलेपन तथा अन्धतासे कारदगा गाँवकी ग्रामदेवताका महत्वपूर्ण स्थान सहजही प्राप्त हो गया है। हिन्दुओंकी इस मूर्खतासे मुसलमान ध्यानपूर्वक लाभ उठाते हैं। कारदगा गाँवके मन्दिरोंकी दुर्दशा अवर्णनीय है। कारदगाके बहुसंख्य हिन्दु लोगोंके मनमें यह विचार कभी निर्माणही होने न पाया, कि इन देवालयोंका जीर्णोद्धार किया जाय। अपनी देवदेवताओंके मन्दिरोंके जीर्णोद्धारके लिए उदासीन रहनेवाले पतित हिन्दु समाजकी उदारताको बंगाली पीरके विषयमें मात्र एकदम बाढ आगयी है। हिन्दुओंमें बंगाली पीरके जीर्णोद्धारको द्रव्य देनेके लिए स्पर्धा निर्माण हुई। यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। कारदगाका प्रत्येक हिन्दु बंगाली पीरके लिए अपने उत्पन्नमेंसे प्रत्येक रुपियेके पीछे दो पाई, इतना द्रव्य निकालकर रखता है। क्या परहिततत्परताकी कोई इससे अधिक सीमा हुआ करती है? ऐसे इस पतनकी पराकोटिको पहुँचे हुए मूर्ख हिन्दुसमाजपर यदि मुसलमान अत्याचार करते रहे, लूटते रहे, उस समाजके बच्चे, लडकियाँ, सधवाएँ तथा विधवाएँ, इन्हें भगाते रहे, उनपर निर्घृण अत्याचार करते रहे, तो उसमें आश्चर्यही क्या है? कारदगाके हिन्दुओंमें फैली हुई इस पीर भक्तिके कारण इस्लामका प्रचार तथा प्रसार खूब पुष्ट हुआ है।

कारदगा गाँवमें दो पाठशालाएँ हैं। उनमेंसे एक है तथाकथित पूर्वास्पृश्योंके लिये। इस पाठशालामें एक मुसलमानको

शिक्षकके नाते नियुक्त किया गया। यह मुसलमान शिक्षक सात–आठ वर्षतक कारदगामेंही रहा। यह धूर्त तथा निपुण शिक्षक बडी सावधानतासे अस्पृश्योंको इस्लामकी प्रतिगामी झुण्डमें खींचनेके प्रयत्न करता रहा। इस शिक्षकको हैद्राबाद रियासतसे साहाय्य हुआ करता था। हैद्राबादमें वास्तव्य कर दक्षिण भारतभरमें इस्लाम–प्रसारका जाल फैलानेवाले धूर्त मुसलमान फकीर तथा उन फकीरोंको प्रेरणा करनेवाली प्रबल शक्ति, इनके साहाय्यसे इस मुसलमान शिक्षकने बडी कुशलताके साथ कारदगाके सर्व पूर्वास्पृश्योंको इस्लामके जालमें खींचनेका षड्यंत्र रचा। पाठशालाके कुछ बुद्धिमान पूर्वास्पृश्य विद्यार्थी तथा उनके पालक, इन्हें लेकर वह शिक्षक कई बार हैद्राबादकी यात्रा कर आया। हैद्राबादमें अपने खर्चसे उन लोगोंको खिलापिलाकर तथा उनका आदरातिथ्य कर वह शिक्षक उनके मनमें इस्लामधर्म तथा निझाम, इनके विषयमें आत्मीयता तथा सहानुभूति निर्माण करनेमें यशस्वी हुआ। यह आत्मीयता तथा सहानुभूति बढती रहे, इस हेतुसे उस शिक्षकने मुगलाईके इस्लामनिष्ठ फकीर तथा अवलियोंको, कारदगाको बुलाना प्रारम्भ किया। इस निमंत्रणको मानकर इस्लामेतरोंको काफिर माननेवाले इस्लामनिष्ठ फकीर तथा अवलिया कारदगामें आकर अपने सान्निध्यसे अस्पृश्य हिन्दुओंको निकट खींचनेका सततोद्योग करने लगे। साथ साथ उन धूर्तोंने धार्मिक चन्देके नामपर मूर्ख हिन्दु समाजसे द्रव्य इकट्ठा करनेका विस्मरण नहीं होने दिया। यह पार्श्वभूमि निर्माण होनेके बाद एक दिन अचानक २१२ अस्पृश्य हिन्दुओंको मुसलमान, भारतभूमिको 'दार–उल्–हरब्' माननेवाले बनानेका कार्य सम्पन्न किया गया !!! जब यह महत्कार्य समाप्त हो चुका, तब फिर कहीं कारदगामें आन्दोलन निर्माण हुआ। अडोसपडोसके हिन्दु दौड–धूप करने लगे, तथा हिन्दु महासभाके प्रचारक भी वहाँ जा धमके ! और फिर हिन्दु जगत्की नीन्द जरासी खुल गई। अस्तु।

संस्कृत पढानेवाला मुसलमान शिक्षक

"बिना हिन्दु-मुस्लीम एकताके स्वराज्य मिलना असम्भव है," इस सिद्धान्तपर दृढ श्रद्धा करनेवाले मेरे एक परिचित हिन्दु मित्र श्री० ×××× लखनौमें आज भी रहा करते हैं। उनकी एकही लडकी है। उस लडकीको उन्होंने घरपरही खूब पढाया है। उनके मस्तिष्कमें सदैव मुस्लिमोंकी मित्रताके विचार रहा करते हैं, इसलिए उन्होंने अपनी लडकीको संस्कृत पढानेके लिये संस्कृत विषय लेकर बी.ए. हो गया हुआ एक मुसलमान मास्टर प्रयत्नतः ढूँड निकाला। युक्तप्रान्तमें परदेकी पद्धति रूढ है। परदा–नियमोंके अनुसार इस मेरे मित्रने अपनी लडकीको स्वजातीय सुशिक्षित समवयस्क युवकोंके साथ हँसने-बोलनेकी अनुज्ञा जरा भी नहीं दी थी। परन्तु आश्चर्यकी बात यह है कि, उन्होंनेही उस अपनी लडकीको पढानेके लिए अपने घर एक मुसलमान शिक्षककी आग्रहपूर्वक योजना की !

मुसलमान हिन्दु युवतिओंकी ओर जिस लोभी तथा कामुक दृष्टिसे देखा करते हैं, उसको यह संस्कृतपठित मुसलमान शिक्षक अपवाद नहीं था। उस लडकीको भगानेकी उसे अच्छी सन्धि प्राप्त हो चुकी। उसने अपना जाल फैलानेको प्रारम्भ किया। घरमें काम करनेवाली दासीके द्वारा पत्रोंका आना–जाना शुरू हुआ। उसी दासीकी सहायतासे घरके बाहर एकान्तमें एक दो मुलाखतें भी हुई। उन्हीं मुलाखतोंमें भाग जानेकी बात निश्चित हुई। अगली मुलाखतमें यह निश्चित होनेवाला था, कि घरसे किस प्रकार निकलें, साथ क्या क्या लिया जाय, तथा अलंकार क्या क्या लिए जायँ। मिलनेके लिये एक विशिष्ट स्थान निश्चित हो चुका था। यह भेंट जिस दिन होनेवाली थी, उस दिन सुबह उस मुसलमान मास्टरने उस हिन्दु लडकीको एक पत्र भेजा। वह पत्र बहोत लम्बा चौडा था। उस पत्रमें वह मास्टर प्रेमकी निदर्शक शपथें खा चुका था, और उसने जोरदार भाषामें यह भी लिखा था, कि उस लडकीके लिए वह कितना असीम त्याग करनेके लिए सिद्ध है। पत्रके शब्द ये थे– "प्यारी ! तुम्हारे लिए मैं दर्यामें कूद पडूँगा, जहर पी जाऊँगा और आगमें जलकर मर जाऊँगा। परन्तु मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता," इत्यादि।

लडकीके सुदैवसे तथा मुसलमान मास्टरसाहबके दुर्दैवसे वह पत्र लडकीकी माँके हाथ आ गया, और उसने उसे लडकीके पिताको दे दिया। इस षड्यंत्रका भण्डाफोड हुआ, ट्यूशन बन्द हो गई। फिर उस मुसलमान शिक्षकने चार-छे गुण्डोंकी सहायतासे लडकीको भगानेकी सिध्दता की। तब यह सब प्रकरण मेरेतक आ पहुँचा। फिर योग्य उपाय किये गए, लडकीको समझाया गया, और तबसे लडकीके पिता सावधान हो चुके। अब ये मेरे भुक्त भोगी मित्र हिन्दु-

संगठनके प्रत्येक कार्यको आत्मीयतासे सहायता किया करते हैं। अज्ञात-कुलशील मनुष्यके समान भारतको शत्रुभूमि माननेवाले लोगोंके लिये " वासो देयो न कस्यचित् " यह नियम हिन्दुओंने बडी कडाईके साथ अंमलमें लाना चाहिए। तभी यह सर्वांगीण आक्रमण बन्द हो सकता है।

मुसलमान नरेश

ख्वाजा हसन निझामीने अपनी पुस्तकमें बिलकुल स्पष्टतासे कहा है कि इस्लाम-प्रचार-प्रसारका काम करनेवाली तीसरी टोली है इस्लामी रियासतोंके राजाओंकी। इस टोलीके साथ सत्ता और सम्पत्तिका दुगना बल होनेसे यह टोली इस्लामीकरणका तथा इस्लामियोंके संगठनका कार्य अधिक यशस्वितासे तथा जोरसे बडे प्रमाणपर कर सकती है। मुसलमानोंकी सबसे बडी तथा अत्यन्त सम्पन्न रियासत है हैद्राबाद। इस रियासतमें ९० प्रतिशत प्रजा हिन्दु है। इस हिन्दु प्रजासे करके रूपमें इकट्ठा किया जानेवाला अधिकांश द्रव्य इस्लामियोंका उदरंभरण करनेके लिए, हिन्दुओंको मुसलमान बनानेके लिए तथा अपनी हिन्दु प्रजापर अन्याय करनेके लियेही व्यय होता है। हिन्दुधर्म नष्ट करनेके लिए इस रियासतसे अगणित द्रव्य खर्च होता है। 'दाइये-इस्लाम' के कट्टर लेखक तथा इस्लामके संगठनप्रचार-प्रसारके लिए रातदिन अमर्याद कष्ट उठानेवाले कुप्रसिद्ध गृहस्थ ख्वाजा हसन निझामीको हैद्राबाद रियासतसे पर्याप्त द्रव्यसाहाय्य मिलता है। जो मुसलमान रियासत मक्का तथा जेरुसलेमके यात्रियोंके लिये तथा जेरुसलेमकी मस्जीदके जीर्णोद्धारके लिए १७ लक्ष रुपिये सहजतया खर्च कर सकती है, उस सम्पत्तिमान इस्लामनिष्ठ रियासतको एक इस्लामनिष्ठ लेखकके लिये कुछ हजार रुपिये खर्च करना कोई बडी भारी बात नहीं है। भारतपर पुनरपि इस्लामी बादशाहत निर्माण करनेकी इच्छा करनेवाला निझाम अपने कोशमेंसे कुछ रक्कम प्रतिवर्ष दानके रूपमें खर्च करता है। ऐसा कहा जाता है कि, कुछ विशिष्ट व्यक्तिओंको इस द्रव्यमेंसे पुरस्कार दिया जाता है। परन्तु कुछ मुसलमानोंकोही यह काकबलि समर्पित किया जाता है। मुसलमानेतर व्यक्तिओंको इस द्रव्यमेंसे साधारणतः प्रतिशत पाँच या सातसे अधिक रक्कम नहीं मिलने पाती। मात्र इस्लामियोंकी तिजोरिओंमें इस रमक्का प्रतिशत ९५ भाग चला जाता है।

गौके चित्रको भी निर्बन्धबाह्य घोषित करनेवाली इस मुस्लिम रियासतमें हिन्दुओंको मानवताके प्राथमिक अधिकार भी नहीं दिये गये हैं। इस रियासतमें हिन्दु अपने उत्सव नहीं मना सकते। नूतन मन्दिर बनाना तो हैद्राबादमें अतिभयंकर अपराध है। पुराने मन्दिरका जीर्णोद्धार भी नहीं करने दिया जाता। यदाकदाचित् किसीने वह प्रयत्न किया भी, तो मुसलमान गुण्डे उसे तोड देते हैं, और इस कृत्यके लिए उन्हें कोई कुछ नहीं कहता। हिन्दु अबलाओंका अपहरण तो दिनदहाडे हुआ करता है। परन्तु उसके लिए आजतक एक भी मुसलमान पकडा नहीं गया। चारों धामोंकी यात्रा पैदल करनेवाली सौ० गयाबाई मनमाडकरके साथकी यात्राको जिस रियासतमें दो पहरके बारह बजे जीलाधिकारी तथा पुलिस प्रमुखोंकी उपस्थितिमें मुसलमान गुण्डे लूट लेते हैं, तथा उन्हें कोई सजा नहीं होने पाती, यह बात तो सहजही ध्यानमें आ सकती है कि उस रियासतमें बिचारी हिन्दु प्रजाके साथ किस प्रकारका व्यवहार होता होगा। इसी रियासतमें औरंगाबादको एक बडे बाडेमें भारतसे भगाए हुए बच्चे रखे जाते हैं। बालक तथा युवतियाँ, इन्हें भगानेवाली टोलीका प्रमुख केन्द्र इस प्रतिगामी इस्लामी रियासतमें है। उन पठानोंको, द्रव्य देनेवाली बँक इसी रियासतमें है। जो कि हिन्दुजनतासे प्रति रुपियेपर तीनसे लेकर छे आनोंतक व्याज पहलेही वसूल कर फिर उसे कर्जा देते हैं, कहनेकी कोई आवश्यकता है नहीं, कि इस कर्जको वसूल करते समय ये पठान साहुकार क्या क्या करते हैं। हिन्दु जनता अच्छी तौरसे ध्यानमें रखें, कि साहुकारीके निमित्तसे चारों ओर अत्याचार करनेवाले ये पठान साहुकार हैद्राबाद रियासतसेही साहस पाते हैं।

निझामका आमूल शासनतंत्र इस्लाममय है। हिन्दु जनताका रक्त शोषित कर इस्लामका पोषण करनेवाली यह रियासत उस अलिगढ विद्यापीठके स्नातकोंकी चरनी बन चुकी है, जो कि भारतके स्वातंत्र्यके मार्गमें रोडे अटकानेके लिएही निर्माण किया जा चुका है, तथा आजकल भारतभंजनके कुटिल कारस्थान करनेमें संलग्न है। सब नौकरियाँ इन्हीं कट्टर इस्लामियोंको बाँटी गई हैं। हिन्दुओंको योग्य होनेपर भी, केवल वे हिन्दु हैं, इसलिए नौकरियाँ नहीं दी जातीं। अनिवार्य उर्दू शिक्षाका भूत इसी रियासतकी हिन्दु प्रजाको नोच नोच खा रहा है। हिन्दु-इतिहासका तथा मराठी साहित्यका निर्माण करनेवाले योगियोंकी स्मृति अवशिष्ट रखनेवाले गाँवोंके विशिष्ट नामोंको नष्ट कर उनका इस्लामी नामकरण करनेका इस रियासतने मानो बीडाही उठाया है। हिन्दु-

ऑंकी संस्कृति नष्ट करनेके लिये जो प्रयत्न इस रियासतमें किये जाते हैं, उनका यह केवल एक नमूना है। मराठी भाषा तथा सन्त मुक्ताबाई, इनसे निकट सम्बन्ध रखनेवाले एक महाराष्ट्रभरमें सुविख्यात गाँवके "जोगाईचें अम्बें" इस नाममें परिवर्तन कर उसे "मोमिनाबाद" बनाया गया है।

वाचकोंको स्मरणही होगा कि, निझामके आदेशानुसार इस रियासतका प्रधानपद कुछ कालतक भूषित करनेवाले सर अकबर हैदरी सीमाप्रान्त, तथा उसके पारके प्रदेशकी सफर कर आए हैं। सीमाप्रान्तमें स्थापित एक मुस्लिम विद्यालयको निझामने कुछ सहस्र रुपिये दान भी दिये हैं।

उडीसापर निझामकी वक्रदृष्टि

इस प्रकार इस्लामके प्रचार और संगठनके लिए सर्वतोपरि प्रयत्न करनेवाली, अरब्बी संस्कृतिका पुनरुद्धार करनेकी इच्छा करनेवाली तथा भारतमें फिरसे एकबार औरंगझेबी साम्राज्य निर्माण करनेका हेतु धारण करनेवाली इस हिन्दुभक्षक रियासतकी वक्रदृष्टि उडीसा तथा विदर्भ, इन दो महत्त्वके प्रान्तोंपर है। सन १८६६ में उडीसामें अत्यंत भयानक अकालके कारण २० लक्षसे अधिक लोग मृत्युके अतिथि बन चुके। इस प्रसंगको लक्षित कर उस समयके निझाम अफझल उद्दौलाने अपने दीवानके द्वारा भारतका शासन चलानेवाले व्हाइसरायको एक महत्त्वपूर्ण पत्र लिखा था। निझामशाहीके अन्तरंगका भेद करनेवाले उस पत्रसे कुछ महत्त्वका भाग यहाँ उद्धृत किया जाता है –

"The Government of Hyderabad are grieved to note that the Government of British India have not been sufficiently mindful of the welfare of their subjects. During recent Orissa famine lakhs of people have perished owing to the callous indifference of the authorities. It must be remembered that the Government of Hyderabad are to a large extent responsible for the establishment and maintenance of British rule in India. Inferentially they are responsible for weal and wealare of the people of British India. If the authorities at Orissa are unable to cope with the situation, the Government of British India would be well advised to hand over the province of Orissa to the management of the Government of Hydrabad, who would administer the province in the interests of the peodle and remit to the British exchequer the balance of the revenue receipts. Hydrabad cannot sit silent while lakhs are perishing in Orissa, despite the fact that the treasury of the said province is replete with cash."

उडीसाकेही अनुसार मद्रास प्रान्तका महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह राजमहेन्द्री, उत्तर सरकार प्रान्त तथा विदर्भ, इस महत्त्वपूर्ण प्रदेशको निझाम निगलना चाहता है। सब पाकिस्तानवाले लेखकोंने यह प्रदेश निझामको देही दिया है। हिन्दु कहीं यह न समज बैठें, कि ये प्रान्त तथा राजमहेन्द्री बन्दर इसी प्रदेशपर निझामके षड्यंत्र केन्द्रित हुए हैं। सीमाप्रान्तकी वन्य आफ्रिडी जातियाँ निझामके चरणोंपर अपना शक्तिसर्वस्व समर्पण करनेके लिए सिद्ध हैं।

अबकर हैदरी सीमा प्रान्तकी सफर कर आये। मुस्लिम लीगके सुलतान जनाब जीनाने निझामसे कुछ गुफ्तगू की। प्रकृति-स्वास्थ्यके निमित्तसे सरहद्द गान्धी भी हैद्राबादकी सफर कर निझामसे मिल चुके। इन सब बातोंपरसे ऐसा प्रतीत होता है कि, निझामको भारत-सम्राट् बनानेके लिये कुछ भयप्रद षड्यंत्र चलते होंगे। कुछ दिनोंके पहले मुहम्मदअली तथा शौकतअलीने अफगान अमीरके साथ षड्यंत्र रचा था। परन्तु ब्रिटिश इन्टेलिजेन्स सर्व्हिसने अमानुल्लाको एक वारमेंही बेकाम कर दिया। उस उदाहरणसे सावधान होकर शायद यह बातचीत अधिक गुप्ततासे चल रही हो।

अपने दातृत्वका ढिंढोरा पीटनेके लिए हिन्दु जनताने दिए हुए करके द्वारा जो द्रव्य कोशमें एकत्रित होता है, उसमेंसे निझाम कुछ रुपियोंका 'दान' करता है। इन कुल २८३९४४ रुपियोंमेंसे २६२८०० रुपिये ४६६ मुसलमानोंको दिये जाते हैं। धार्मिक दानके नामपर भी कुछ द्रव्य खर्च किया जाता है। इस धार्मिक दानके लिए प्रतिवर्ष २०५८२२ रुपिये खर्च होते हैं, जिनमेंसे २०४०२२ रुपिये केवल मुसलमानोंको दिये जाते हैं। मुसलमान संस्थाओंको भी पर्याप्त प्रमाणमें द्रव्य दिया जाता है। पिशावरके इस्लामिया कालेजको निझामने देढ लक्ष रुपिये दिये हुए हैं। इस कालेजका उद्घाटन समा-

रम्भ भी सर अकबर हैदरी कर चुके। राज्यव्यवस्थामें भी इसी प्रकार जात्यन्धता नंगा नाच कर रही है। सब-तहसीलदारोंके स्थान ४० हैं, जिनमेंसे ३७ स्थान मुसलमानोंको दिए गए हैं। ११२ तहसीलदारोंमेंसे १०९ मुसलमान हैं। गौका चित्र रखनेवालेको जिस रियासतमें ५०० रुपिये जुर्माना किया जाता है, उस इस्लामनिष्ठ रियासतमें हिन्दु जनतापर जो अत्याचार किये गये हैं, तथा आज किये जा रहे हैं वे वर्णनातीत हैं। मुगलाईमें घटी हुई कुछ घटनाएँ तो इतनी भयंकर हैं, कि उनका वर्णन करनेमें लेखनी शर्माती है। रियासतकी सब हिन्दुजनता त्रस्त हो चुकी है, तथा अपनेको त्राताहीन अनुभव कर रही है।

अत्यन्त प्रतिगामी विध्वंस, अग्निकाण्ड, लूट-खसोट तथा अबलाओंका अपहरण इन चार बातोंकी जिन अरबी आचार-विचारोंके पीछे अखण्ड परम्परा है, उन्हें आदर्श माननेवाली इस इस्लामी रियासतमें युद्ध-साहित्य निर्माण करनेवाले कारखाने रातदिन चलाये जा रहे हैं, शस्त्रास्त्र तैयार हो रहे हैं, गोलाबारूद भी बन रही है। युद्धपर्वणीके निमित्तसे जो सेना निर्माण की जा चुकी थी, उसमें वृद्धिही हो रही है। शान्तता-संरक्षणके निमित्तसे निर्मित सैन्य युद्धके काममें भी आ सकते हैं, इस सिद्धान्तका मनन करनेपर यह सहजही समझमें आ जायगा कि मुगलाईमें युद्धसाहित्य निर्माण करनेवाले कारखानोंका, गोलाबारूदके साहित्यका तथा प्रतिदिन बढनेवाले सेनासागरका अर्थ क्या है, तथा मुस्लिम लीग किसके बलपर जब देखो तब यादवी-युद्धका डर बताती है। भारतपर सदैव आक्रमण करनेवाली जंगली टोलीओंके नेता मुहंमद जमानखानने एकबार कहा था —

" It is my urgent desire that the roads connecting the frontier to the Hydrabad should be broad and straight."

यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि ये महत्त्वके सूचक उद्गार तथा उनमेंसे ध्वनित होनेवाला भयप्रद संकट किस ओर अंगुली निर्देश कर रहे हैं। क्या हिन्दुजनता अब भी जागृत होकर भावितव्यताको टालनेके लिये भगीरथ प्रयत्नोंका प्रारम्भ नहीं करेगी? अन्यथा यह बात निस्संशय है कि इस नवीन पद्धतिके अरबी आक्रमणको टालना कठिनतम हो बैठेगा !!!

हैद्राबाद रियासतके अनुसारही भोपाल, खैरपूर इत्यादि रियासतोंके इस्लामी राजा इस्लामके संगठन-प्रचार-प्रसारका कार्य मनःपूर्वक कर रहे हैं। भोपालके नवाबने नूतन मन्दिर बाँधना मना किया है। अखिल भारतीय रियासती हिन्दुहितैषी मण्डलने नियुक्त की हुई समितिने भोपाल रियासतके हिन्दुओंकी दयनीय अवस्थाको सप्रमाण सिद्ध किया है। समितिने अपने प्रतिवृत्तके प्रारम्भमेंही लिखा है, " लिखित प्रमाणके विना हमने इस प्रतिवृत्तमें कोई विधान नहीं किया। " श्री० चिदानन्द संन्यासी, कुँवर तेढासिंग तथा चौधरी अनन्तराम, इन लोगोंने प्रत्येक बातका ध्यानपूर्वक शोध करनेके पश्चात् अखिल भारतीय हिन्दुहितैषी रियासती मण्डलके सामने एक प्रतिवृत्त उपस्थित किया है।

उस प्रतिवृत्तका सारांश यहाँ दिया जाता है— " भोपाल रियासतका क्षेत्रफल ६९०२ वर्ग मील है। सन १९२१में जनसंख्या थी ६९२४४८, जिसमेंसे मुसलमान केवल ७७-३६७ थे। इस रियासतके सब अधिकारी मुसलमान हैं, तथा वे हिन्दुजनता तथा हिन्दुधर्म इनका घृणास्पद तथा भयंकर द्वेष भी करते हैं। इस रियासतमें सदैव हिन्दुओंकी लडकियाँ भगाई जाती हैं, और अपराधीको पकडनेके लिये संस्थानी पुलीस हिन्दुओंको कोई साहाय्य नहीं करती। इस रियासतमें ऐसा मुसलमान अधिकारी खपुष्पवत् दुर्लभ है, जिसके कि घरमें कोई भगाई हुई तथा बलात्कारपूर्वक धर्मान्तरित की हुई हिन्दु युवती अथवा बालक नहीं है। विवाहित हिन्दु स्त्रियोंको भगानेके कई उदाहरण हैं। अपराधी कौन है, यह मालूम होनेपर भी पीडित हिन्दु जनता रियासतकी पुलीसको सहायता माँगने नहीं जाती। कारण यह है कि आजतक जब जब ऐसे प्रयत्न किये गए, तब तब अपराधीको कोई शासन नहीं हुआ, किन्तु उस अपराधको प्रकाशमें लानेवाले हिन्दुही केवल वे " हिन्दु " थे, इसलिए दण्डित किये गए। अपराधीको पकडनेके लिए सहायता न देते हुए पुलीस हिन्दुओंको ही पीडना प्रारम्भ कर देती है। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं है कि हिन्दु पुलीसका साहाय्य नहीं मांगते।

हिन्दुओंका कर्ज

मुसलमान अधिकारी अधिकारके बलपर हिन्दूओंसे कर्ज लेते हैं, परन्तु कभी उसे वापस नहीं करते। कस्टमके सर्व

अधिकारी मुसलमान होनेसे हिन्दुओंके मालपर मनचाही जकात ली जाती है। मुसलमानोंका माल बिना जकात दियेही आ जा सकता है, इसलिए पीडित हो गये हुए अनेक व्यापारी अपना बचा हुआ सामान इकट्ठा कर पडोसकी हिन्दु रियासतमें आ बसे हैं। भोपालसे भाग आए हुए कई हिन्दु कुटुम्ब भेलसामें रहते हैं।

मध्यभारतमें रहनेवाली सब हिन्दु जनतापर औरंगझेबी शासन चलानेकी इच्छा करनेवाली इस रियासतमें सब शिक्षण उर्दूमेंही दिया जाता है। वाचनालयोंमें भी यह ध्यान दिया जाता है कि कोई हिन्दी पुस्तक न आने पाय। शिष्यवृत्ति यह मुसलमानोंकी पैतृक सम्पत्ति मानी गई है। सुयोग्य हिन्दु विद्यार्थीको भी शिष्यवृत्ति इसलिए नहीं दी जाती, कि वह हिन्दु है। पाठशालाओंमें जो पुस्तकें चला करती हैं, वे भी अनोखे ढंगकी हैं। इन पुस्तकोंमेंसे हिन्दुधर्म, हिन्दु जिन्हें पूज्य मानते हैं, ऐसी पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियाँ, इनकी भरपेट निन्दा तथा मजाक की गई है। इन्हीं पुस्तकोंमें इन्द्रकी सहायताको जानेवाले पराक्रमी दशरथ राजाको गधा बनाया गया है। पाठशालाके क्रमिक विषयोंमें मुसलमानी रियासतको अग्रस्थान दिया गया है, मुसलमान आक्रमकोंकी स्तुति की गई है तथा हिन्दु रणवीरोंको गालियाँ दी गई हैं। हिन्दुओंको चूसकर उनसे मिले हुए द्रव्यपर मसजिदें बाँधना, काजिओंका चरितार्थ चलाना, रियासतमें तथा रियासतके बाहेर तंझीम तथा तबलीग इत्यादि आन्दोलन चलाना, इत्यादि काम हुआ करते हैं। हिन्दु कार्यकर्ताओंको डर बतानेके लिए राजसत्ताके आशीर्वादसे एक कट्टर आन्दोलन निर्माण किया गया है, जिसका नाम है औरंगझेब असोशिएशन। इस नामसेही संस्थाके अन्तरंग तथा उद्योगका पता चल सकता है। हिन्दुओंको दबानेका यह कार्य अधिक प्रभावपूर्ण पद्धतिसे चलता रहे, इसलिए भारतकी सीमापारके लुटेरे, वन्य, औरतोंको तथा बच्चोंको भगानेका उद्योग करनेवाले आफ्रिदियों तथा पठानोंको रियासतमें भरती किया जा रहा है। यह भरती आज भी चल रही है। तात्पर्य भोपाल रियासत औरंगझेबी जमानेकी एक छोटी आवृत्ति है। रियासतकी हिन्दु जनता मानवके मूलभूत अधिकारोंका भी उपभोग नहीं कर सकती। उसके साथ केवल गुलामके समान व्यवहार किया जाता है।

भोपाल रियासत मध्यभारतका मक्का मदीना है। भोपाल नगरमें कुल १३० मसजिदें हैं, और शेष रियासतमें १०४ हैं। कुर्‌ानके प्रचारकोंको तो भोपाल रियासत मानो एक चरनीही है। सीमाप्रान्तमें, बाहरी प्रदेशमें तथा कश्मीरमें घूमनेवाले ये कुर्‌ानके प्रचारक, अथवा प्रचारकका स्वांग रचनेवाले गुप्तचर रावलपिण्डीसे लेकर भोपालतक रेल्वेको एक पाई भी न देते हुए प्रवास करते हैं। इन प्रचारकोंमेंसे ४१६ प्रचारक मुझे मिल चुके थे। एक रुपियेपर छे आनेतक ब्याज लेनेवाला पठाण साहुकार जिस प्रकारका वेश करता है, ठीक उसी प्रकारका वेश इन प्रचारकोंका हुआ करता है। इनके पास कुर्‌ानकी एक एक पुस्तक हुआ करती है, तथा ये प्रचारक रियासतभरमें चारों ओर घूमा करते हैं। ये प्रचारक तथा मसजिदें इनपर प्रतिवर्ष दो लाख रुपिये खर्च होते होंगे। और भी अनेक मुस्लिम संस्थाओंको प्रतिवर्ष कुछ द्रव्यरूप मलीदा बाँटा जाता है। अलीगढकी सायन्स लायब्ररीको ६००० रुपिये; युक्तप्रान्तके देवबन्दके मदर्साको ३००० रुपिये; कलकत्ताके मुस्लिम अनाथालयको ३२०० रुपिये; अलिगढके क्रिकेट क्लबको २४०० रुपिये; मुस्लिम शिक्षण-संस्थाको ३४०० रुपिये; लखनौके मुस्लिम गर्ल-स्कूलको १२०० रुपिये; पानीपतके मुस्लिम गर्ल-स्कूलको १२०० रुपिये; इस प्रकार अनेक कट्टर मुस्लिम संस्थाओंको प्रतिवर्ष द्रव्य बाँटा जाता है। युद्धके बाद इन रकमोंमें वृद्धिही हुई है। लण्डनसे इस्लामका संगठन, प्रचार तथा प्रसार करनेवाली 'ईशाअत् इस्लाम' इस संस्थाको प्रतिवर्ष डेढ हजार रुपिये दिये जाते हैं। और भी अनेक छोटी मुसलमानी संस्थाओंको तथा कार्यकर्ताओंको द्रव्यरूप मलीदा बाँटा जाता है। इस मलीदेकी रकम होगी करीब करीब दो लाख रुपिये।

अप्रैल १९४६ में भोपालमें मुसलमानोंने दंगेके निमित्तसे बडे भीषण अत्याचार किये। बाजार तथा दुकानें लूटी गईं, हत्याकाण्ड तथा अग्निकाण्ड भी हुए। हिन्दु लोगोंपर अनन्वित अत्याचार किए गए। हिन्दुओंका समूलोच्छेद करनेके निश्चित उद्देशसेही भोपालके मुसलमान काम कर रहे हैं। मुसलमानोंकी हलचलसे यह प्रतीत होता है कि, यही कार्य निकट भविष्यमें बहुत बडे प्रमाणपर चलाया जायगा।"

गुजराथ, काठियावाड तथा निकटके प्रदेशमें मुसलमानोंका जो आन्दोलन चल रहा है, उसका केन्द्र उस प्रान्तके मुसलमान रियासतोंमेंही है। उन्हीं रियासतोंमें वास्तव्य कर रियासती

सत्ताओंकी सहायतासे मुसलमान अपने समाजका संगठन तथा इस्लामीकरण कर रहे हैं। गुजराथी भाषामें चलनेवाला पाकिस्तानका प्रचार, एक विशिष्ट पद्धतिसे होनेवाला हिन्दु युवतिओंका अपहरण, पूर्व संकल्पित योजनानुसार किये जानेवाले भीषण दंगे, हिन्दुओंपर होनेवाले भयानक आक्रमण, इन सबको भडकानेवाली सामग्री तथा साहित्य, जूनागड रियासतमें मिल जाता है। इस जूनागड रियासतमें हिन्दुओंको काफिर तथा भारतको शत्रुभूमि माननेवाले अलिगढी मुसलमान कई वर्षोंसे अड्डा जमाये बैठे हैं। जूनागड रियासतमें मुससमानोंके द्वारा जो भीषण हत्त्याकाण्ड हुए, हिन्दुओंको मूलीके समान काट डाला गया, सम्भव है कि उस प्रकारको विस्मृतिशील तथा आत्महत्यारे हिन्दु भूल गये होंगे। परंतु जिन लोगोंने वह भीषण, अमानुष हत्त्याकाण्ड करवाये, वे अभीतक उनको भूलने न पाये हैं। उन अमानुष कृत्योंके लिये वे रंचमात्र पश्चात्ताप नहीं करते, किन्तु उन आततायिओंकी यह प्रामाणिक कल्पनाही हो बैठी है, कि हिन्दुओंको मारना, उनके घर जलाना इत्यादि सब पुण्यप्राप्तिके साधन हैं। यहाँ उस हत्त्याकाण्डका वृत्तपत्रोंमें प्रकाशित वृत्तान्त इसलिये दिया जा रहा है कि, विस्मृतिशील तथा हिन्दुत्वको हटाकर एक बाजू रखनेवाली हिन्दु जनताको उस भयानक हत्त्याकाण्डकी कल्पना आय।

जूनागढका हत्त्याकाण्ड

"जूनागढ रियासतमें वेरावलको मुसलमान गुण्डोंने हिन्दुओंके जो एकके बाद एक वध किये, उनके कारण वहाँ भीषण हाहाकार मचा है। वेरावल जिलेका ठिकाना तथा बन्दरगाह है। यहाँकी जनसंख्या बारह हजार है, जिसमें अधिकांश मुसलमान हैं। यह गाँव प्रभास-पट्टनसे दो मील दूरीपर बसा हुआ है। प्रयाग तथा ऊना इन दो हिन्दुओंके धर्मक्षेत्रोंके तीर्थकुण्डोंमें मछलियाँ मारकर मुसलमानोंने हिन्दुओंपर प्रथमही आघात किया था। तबसे इन दो जातिओंमें कलहकी आग धधकती रही। गतवर्ष एक मुसलमान लडकेका वध हो जानेके कारण वह अचानक भडक उठी। इस वधके लिये आठ हिन्दु पकडे गये, तथा उनपर केस चलकर उन्हें कडी सजाएँ दी गईं। हिन्दुओंने माँग की कि स्वतंत्र जांच की जाय। ज्युडिशिअल कमिशनर मि० जॉलीके सामने यह केस चली। उन्होंने हिन्दु आरोपितोंको निर्दोष कहकर मुक्त किया।

कुछ तरुण मुसलमान इस सम्पूर्णतया यथोचित न्यायका प्रतिशोध लेनेकी सोच रहे थे। गत शनीचरको उन्होंने अचानक हाथमें छूरे तथा चक्कू उठाकर बाजारमें प्रवेश किया और काटाकाटीको प्रारम्भ किया। कोई भी हिन्दु दीख पडनेपर वे उसे छूरा भोंकनेके लिये दौड करते। चालीस वर्षीय परोपकारी डॉक्टर गोवर्धनदास अपने औषधालयमें बैठे थे। एक मुसलमान तरुण उनके पास जाकर उन्हें अपनी प्रकृति देखनेके लिए कहने लगा। डॉक्टरसाहब उसकी नाडी देखते रहे, कि झट् उस राक्षसने अपने पास रखा हुआ तीक्ष्ण चक्कू निकाला और उसे डॉक्टरके सीनेमें भोंककर उनका वध किया !!!

वेरावलके नगरश्रेष्ठी श्री० गोविन्दजी घरसे दुकानकी ओर जा रहे थे। उन्हें चौकमें पकडकर उनके सीनेमें छूरा मारा गया। लोग उन्हें उठाकर पडोसकी दूकानमें ले गये, परंतु वहीं उनका प्राणोत्क्रमण हो चुका !!! सोनारामजी, प्रेमजी, छोटालाल, रामजी, जमनादास, कालीदास तमोली इत्यादि अनेक हिन्दुओंपर मुसलमानोंने हमले किये। कुछ लोग उसी स्थानपर परलोक सिधारे, तो कुछ औषधालयमें जाकर मर चुके। घायालोंकी संख्या तो बहोतही है। नगरमें हडताल मनाई गई। इस काण्डके बाद तीन-चार दिनतक गाँवके हिन्दु अत्यन्त भयभीत थे।

एक मुसलमान आरोपितने कहा कि, 'मैंने एक हिन्दुको भाजीके समान काट डाला !!!

दूसरे आरोपितने कहा, 'प्रतिशोध लेनेका षड्यंत्र रचाही गया था।'

यह अमानुष राक्षसी अत्याचारका प्रकार यहाँ केवल नमूनेके तौरपर उद्धृत किया गया है। अत्याचारके निर्घृण सत्रसे हिन्दुओंके छोटे छोटे बच्चेतक नहीं छूटने पाते। और यह अनुभवसिद्ध बात है कि स्त्रियोंपर जो राक्षसी अत्याचार किये जाते हैं। उनकी कोई सीमा नहीं है !! इन सारे प्रकारोंके दिन दहाडे घटनेपर भी अभागी हिन्दु जनता स्वसंरक्षणके लिए सिद्ध नहीं होने पाती !!!

खैरपूरका फर्मान

खैरपूर यह एक तीसरी जुलमी मुसलमानी रियासत है। वहाँके नबाबसाहबने तो एक नमूनेदार फर्मान निकाला था, जिसमें कि कहा था, 'कोई भी मुसलमान किसी हिन्दुको अपनी जमीन अथवा स्थावर सम्पत्ति न बेच सकेगा, अथवा उसके पास

गिरवी भी न रख सकेगा। यदि किसी हिन्दुको ऐसी स्थावर सम्पत्ति खरीदनी हो, तो वह अपनी जिम्मेदारीपर खरीदे। क्योंकि यदि मुसलमान उसे वापस माँगने लग जाय, तो हिन्दुका यह कर्तव्य होगा कि, उस सम्पत्तिको विनामूल्य लिए लौटा दे। ' यह आज्ञा खैरपूरमें हिन्दुओंपर चलनेवाली तानाशाहीका नमूना है। हम इस नमूनेपरसे अनुमान लगा सकते हैं, कि वहाँ हिन्दुओंपर क्या गुजरता होगा।

भारतकी प्रत्येक इस्लामी रियासत इस्लामी प्रचारका किला ही है। इस्लामके कूटनीतिनिपुण नेता इन किलोंमें बैठकर हिन्दुओंका तथा हिन्दु स्त्रियोंका अपहरण, इस्लामका संघटनात्मक तथा आक्रमक प्रसार, मुसलमानोंकी संख्यामें वृद्धि तथा जिहादकी सिद्धता, इत्यादि महत्त्वके कार्य किया करते हैं। इस्लामके कट्टर नेताओंको—उदाहणके लिए हसन निझामी, किसी ना किसी रूपसे इन इस्लामी रियासतोंसे द्रव्य मिला करता है। उस द्रव्यके बलपरही वे नेता इस्लामका प्रचार, प्रसार तथा हिन्दु अबलाओंका अपहरण इत्यादि कार्य किया करते हैं।

मुसलमान नेता

पूरी ताकतके साथ इस्लामका प्रचार करनेवाली चौथी टोली है मुसलमान नेताओंकी। सर सय्यद अहमद, आगा खान, अली बन्धु, जिना, डॉ० अन्सारी, अबुल कलम आझाद, हजरत मोहानी, अबदुल कायूम, इफतिखारउद्दीन, खान अबदुल गफारखान, डॉ० खान, अहरारनेता चौ० अफझल हक इत्यादि सब मुसलमान नेता आदि, मध्य तथा अन्तमें केवल मुसलमानही हैं। इन मुसलमान नेताओंके मस्तिष्कमें जिहाद, इस्लामका पुनरुज्जीवन-अर्थात् भारतका पुनरपि विश्वासघात, हत्त्याकाण्ड, मनुष्यवधकी अखण्ड परम्परा रखनेवाली इस्लामी पातशाहतकी फिरसे स्थापना तथा सब भारतका इस्लामीकरण, ये बातें भरी हुई हैं। इनमेंका एक भी भारतीय स्वतंत्रताके लिए अपना इस्लामीपन भूलनेको सिद्ध नहीं है। मुस्लिम लीगके सुलतान कायदे आजम जिन्नाने तो घोषितही किया है कि वे ' हिन्दी नहीं ' हैं। भारतपर फिरसे औरंगजेबी साम्राज्यके स्वप्न देखनेवाले कट्टर इस्लामी नेता तथा पाकिस्तान कल्पनाके जनक चौधरी रहमत अलीने तो सुस्पष्ट, तीव्र शब्दोंमें मुसलमानका अन्तःकरण प्रकट किया है। मुसलमानोंको ' हमारे प्यारे मुसलमान भाई ' कहनेवाले भोले हिन्दु इन शब्दोंको गौरसे पढें। रहमत अली कहता है—

" It is false in the name of history, because India never was, and never will be the Muslim Mother-land. The issue is crystal- clear and admits only clear-cut answer. Either they are Indian or they are not. If they are let them be consisted and live in and abide by India. That is embrace Indianism and submit to " Pak Indica." If they are not, let them be decisive and abandon 'India' That is live to sever all ties with India, to save the Millat from Indianism and to serve " Pak Islamica." (The Millat of Islam and Menace of Indianism. (पृष्ठ ५)

यह भला आदमी ' हिंदुस्थान ' इस नामसे अत्यधिक घृणा करता है। वह ' हिन्दुस्थान ' का सम्पूर्णतया इस्लामीकरण कबका कर चुका है। यह इस्लामका कट्टर सैनिक इस हिन्दुओंकी पितृभूमि तथा पुण्यभूमिको ' दीनिया ' (मुसलमानोंका देश) कहता है। उसने अपनी " The Millat of Islam and the menace of Indianism " इस प्रसिद्ध पत्रिकामें मुसलमान जनताको जो कुछ आज्ञाएँ की हुई हैं, उनमेंकी छटी आज्ञामें वह स्पष्ट शब्दोंमें कहता है कि—

"Convert the sub-continent of India into the continent of Dinia "

सातवी आज्ञामें भारतवर्षको दारुल-हरब माननेवाले इस इस्लामनिष्ठ मनुष्यने इस्लामके कारण उन्मत्त बने हुए यहाँके मुसलमान समाजको स्पष्ट चेतावनी दे रखी है कि—

" Organise the continent of Dinia and its dependancies in the orbit of Pak-Asia."

मुसलमान समाजमें चरम सीमातक पहुँची हुई जो अराष्ट्रीयता तथा अंग्रेजोंका प्रेम ओतप्रोत भरा हुआ दिखाई देता है, उसका बीजारोपण बहोत पुराने जमानेमें हो चुका है। मधुजिव्ह तथा समय समयपर राष्ट्रीयताका अवगुण्ठन ओढनेवाले इस्लामी नेता इसका संगोपन भी बडे यत्नपूर्वक कर चुके हैं।

चाहे कोई भी मुसलमान हो, वह हिन्दुओंको इस्लामकी दीक्षा देनेके लिये सदैव सिद्ध रहता है। वह प्रतिदिन सब भारतको इस्लाममय करनेके स्वप्न देखा करता है। इसी पार्श्व-भूमिपर मुसलमान समाजमें प्रसरित हो गई हुई अंग्रेज-निष्ठा, हिन्दु-द्वेष तथा राष्ट्र-द्रोह चित्रित हैं। उनका हिन्दु-द्वेष, देश-द्रोह तथा अँग्लो-मुस्लिम प्रेम, येही पाकिस्तानके जनक हैं। मुसलमानोंमें उनके धर्मपर नितान्त निष्ठा कभी पाई नहीं गई है ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता, कि किसी मुसलमानने अपनी सात्विक धर्मनिष्ठाके लिए कष्ट सहे हों, अथवा देह त्याग किया हो। मुसलमामोंके बर्तावकी एक विशिष्ट अरबी पद्धति हुआ करती है। कुराणकी कुछ आज्ञा-ओंका उनके मनपर बडा प्रभाव होता है, जिनमें कि एक है—

" Fight the infidels untill there shall be none left. " (Islam & Psychology, p. 67)

इस आज्ञापर भाष्य किया गया है—

" There can be no peace with the infidel, but, when the Musalmans are not in sufficient force, there is no harm in their giving up the Jihad for a certain time. " (Ibid, page 68)

हौतात्म्यसे इस्लामको कोई सम्बन्ध है नहीं। महम्मद पैगम्बर सर्वदा इस बातकी ओर ध्यान दिया करते थे, कि इस्लामिओंको धर्मपालनमें कोई कठिनाइयाँ न उठानी पडें। सवास पाशाने अपने ' Etudes Sud theorie du Droit Musalman ' इस ग्रन्थमें उपरिलिखित विषयका सांगोपांग विचार किया है। उसके विवेचनका सारांश यह है—

" The Musalman should not suffer for his beliefs. If he is stronger, he ought to impose them, but if he finds himself too weak to resist with any prospect of success, he must submit for the time being to every foreign law that is forced upon him by violence. According to a fundamental precept of Islamic law, " the dogma of constraint, " his powerlessness takes from his conduct all blameable character. " (Islam & Psychology, page 72)

कुरानकी आज्ञाएँ तथा उनपरकी टीका-टिप्पणियाँ मुसलमान समाजपर एक बहोत बडा परिणाम कर चुकी हैं। दो दो तीन तीन पीढियाँ एकही घरमें काम करते हुए गुजरनेपर भी समय आनेपर मुसलमान अपना मुसलमानीपन दिखाकर चट अपने मालकको छूरा भोंकनेके लिए किस प्रकार सिद्ध होता है, इसका उत्तर कुरानकी आज्ञाएँ तथा टीकाटिप्पणिओंमें मिल जाता है। चाहे जो कुछ हो जाय, फिर भी मुसलमान अपना मुसलमानीपन नहीं भूलता तथा उससे विश्वासघात नहीं करता। दूसरोंके साथ विश्वासघात करनेमें वह कभी नहीं हिचकिचाता। मुसलमानोंके सब आन्दोलन, व्यवहार, भाषण-लेखन, इनकी ओर हिन्दुओंने इस सिद्धान्तको ध्यानमें रखते हुएही देखना चाहिए। हिन्दुओंके नैतिक नियमोंमें यह आप-पर भाव नहीं है। परन्तु मुसलमानोंमें वह पर्याप्त है। यह अच्छी तौरसे ध्यानमें रखकरही सर्वदा हिन्दुओंने अलीबन्धु तथा दूसरे मुसलमान नेताओंका परीक्षण तथा निरीक्षण करना चाहिए।

सय्यद अहंमद खान

जिस सद्गृहस्थने पाकिस्तानी प्रवृत्ति तथा राष्ट्रद्रोही वृत्ति, इनका यत्नपूर्वक पालनपोषण किया, उसका नाम सय्यद अहंमद खान। देहलीकी डूबती हुई मुसलमानी बादशाहतकी नौकरीका पीछा छोडकर यह गृहस्थ ईस्ट इंडिया कम्पनीका नौकर हुआ। सन १८५७ में अंग्रेजोंका राज्य नष्ट करनेके लिए देशभरमें एक क्रान्तिकी लहर पैदा हो चुकी थी। उस तेजस्वी लहरको नष्ट करनेके लिए जिन लोगोंने ब्रिटिश सरकारको बहुमूल्य सहाय्यता दी, उन लोगोंमें सय्यद अहंमद खान अग्रगण्य थे। क्रान्तिका उपशम हो जानेके पश्चात् उन्होंने और एक काम किया। उस क्रान्तीमें मुसलमानोंने भाग लेकर अंग्रेज सरकारके मनमें जो एक किल्मिष निर्माण किया था, उसे दूर करनेका यशस्वी प्रयत्न सय्यद अहंमद खान कर चुके। ये पहलेसेही हिन्दु-विरोधी थे। अंग्रेजोंकी कृपासे इन्होंने सन १८७७ में अलिगढको महामेडन अँग्लो ओरिएंटल कॉलेज स्थापित कर पाकिस्तानी प्रवृत्ति तथा अराष्ट्रीय वृत्तिका प्रत्यक्ष संगोपन तथा संवर्धन करनेको प्रारम्भ किया। यही शिक्षण संस्था-धर्मोन्मत्त मुसलमान समाजको कई कट्टर नेता दे चुकी है।

सन १९४० में येही मुसलमान विद्यार्थी चुनावके निमित्तसे सीमाप्रान्तमें, जो कि काँग्रेसका किला था, जाकर उपद्याप कर चुके हैं। उसी प्रकार हिन्दुओंके मनमें डर पैदा हो, इसलिए 'मुजाहिदीन' इस नामकी जो एक गुप्त संस्था स्थापित की गई है, उस संस्थामें इन अलिगढी मुसलमान विद्यार्थिओंका प्रमाण भी अधिक है। उन्होंने अभी अभी अलिगढके कल्याणगंज मुहल्लेमें हिन्दुओंके ८५ दुकान जलाकर इस संस्थाके कार्यका नमूना बता दिया है!! सय्यद अहंमद खानने बोये हुए विषबीजका यह महान् वृक्ष निर्माण हो चुका है। उस वृक्षकी छायामें बैठकर हैद्राबाद रियासतके अनुसार भारतपर फिरसे एकबार औरंगजेबी शासन निर्माण करनेके यत्न उसी रियासतकी सहायतासे किये जा रहे हैं। सय्यद अहंमद खानने लखनौको स्थापित की हुई दूसरी संस्था 'नब्दा' के प्रचारक मध्यप्रान्तसे पूर्वास्पृश्योंके ३० लडकोंको फुसलाकर भगा चुके थे, और उनके मुसलमानी नाम रखकर उन्हें नब्दामें भरती भी कर चुके थे। लखनौके महाराष्ट्र-मण्डलके अध्यक्ष श्री० द० बा० बर्वे, + आर्य समाजके कार्यकर्ता स्वर्गवासी रासबिहारी तिवारी, तथा महाराष्ट्र-मण्डलके अन्य कार्यकर्ता, इन लोगोंके यत्नोंसे उन लडकोंकी मुक्तता हो चुकी। इन लडकोंमेंसे पाँच-छे लडके कानपूरको भगाए गए, वेही केवल परधर्मियोंके पाशोंसे मुक्त न हो सके।

नब्दा संस्थाके मराठी भाषाभाषी प्रचारक धर्मप्रसार करनेके कारण मध्यप्रान्तमें घूमा करते हैं। उनमेंसे एकने इन लडकोंमेंसे चार-पाँच लडकोंको फुसलाकर नागपुर लाया, तथा उन्हें खूब खिलापिलाकर, पैसे देकर तथा सिनेमा देखाकर खूष किया। फिर ये लडके अपने मित्रोंको ले आये। इस प्रकार ३० लडकोंकी यह टोली मोटरमें बिठाकर नागपूरसे इलाहाबाद लाई गई, और वहाँसे लखनौ। फिर उन्हें नब्दामें रखा गया। इसके बाद किसीका नाम महंमद, किसीका नाम अहंमद, किसीका नाम युसूफ, इस प्रकार उनके नामोंमें परिवर्तन किया गया।

इसके पश्चात् करीब करीब डेढ महिनेसे एक दिन इन लडकोंकी टोली लखनौके एक मुहल्ले लालबागमेंसे चली थी, और वे लडके आपसमें मराठीमें बोल रहे थे। उन सबोंके वेश मुसलमानी पद्धतिके थे। उन लडकोंके उस टोलीके × × × ये महाराष्ट्रीय सज्जन देख चुके। उन्होंने पूछताछ कर वह वृत्तान्त महाराष्ट्र-मण्डलमें आकर कहा। उसके बाद बडे प्रयत्नोंके पश्चात् उन लडकोंकी मुक्तता की गई। उनमेंके एक-दो सैन्यमें भरती हो चुके, और एक दो मॅट्रिककी परीक्षा देकर उद्योग करने लगे।

सय्यद अहंमदखान 'सर' भी हो चुके थे। इनके प्रयत्नसे स्थापित हो गई हुई 'नब्दा तुल् उल्मा' तथा 'दारुल-उल्म' ये दो संस्थाएँ मुसलमानोंको अरबी पढानेके लिए स्थापित की गईं। नब्दामें आज जावा, सुमात्रा और मलायातकके लडके इस्लामका शिक्षण पाते हैं। जावा, सुमात्रा तथा पूर्वीय द्वीपोंमें जो इस्लामीकरणका नूतन आन्दोलन चल पडा है, उसका लखनौसे अत्यन्त निकट सम्बन्ध है। भारतकी इस्लामी संस्थाएँ अपने प्रचारक तथा कार्यकर्ताओंको भेजकर इस्लामीकरणके कार्यको सहाय्यता किया करती हैं। परन्तु जावा, सुमात्रा तथा फ्रेंच इण्डोचीनमें हिन्दुत्वका जो स्वयंस्फूर्त आन्दोलन चल पडा है, तथा जो दिनपरदिन वृद्धिंगत हो रहा है, उसको सहाय्यता देनेका हिन्दुओंने रंचमात्र भी प्रयत्न नहीं किया। सन्त-महन्तोंने निकाले हुए फण्डोंको तथा परधर्मिओंको करोडों रुपिये देनेवाले हिन्दु समाज! क्या तूने कभी विचार भी किया है, कि हिन्दुओंके लिए तेरे कोशमेंसे कितना खर्च होता है?

मौ० मुहंमद अली

कोकोनाडामें जो भारतीय काँग्रेसका अधिवेशन हो चुका, उसके अध्यक्ष तथा 'वन्दे मातरम्' इस राष्ट्रगीतको विरोध करनेवाले कट्टर मुसलमान मौ० मुहंमदअलीने सन १९२१ में कहा हुआ एक वाक्य मुसलमानोंके अन्तरंगका परिचय करा देनेवाला होनेसे यहां उद्धृत किया जा रहा है—

"यह ठीक है कि काँग्रेसने हम लोगोंको साहाय्यता की है, किन्तु वह मुस्लिम जातिकी आकांक्षाएं तृप्त नहीं कर

+ सन १९३८-३९ में श्री० द० बा० बर्वे यू० पी० सरकारके बिझिनेस-मॅनेजरके स्थानपर काम किया करते थे। हिन्दुसभाके कार्यमें प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष भाग लेनेके अपराधके कारण काँग्रेस सरकारने, जिसके उद्योग मंत्री डॉ० काटजू थे, उन्हें निकाल दिया। किन्तु उस सरकारने न तो नब्दाकी ग्रँट बन्द की, न इस प्रकरणकी जाँच भी की!!

❀

सकती। मुसलमान राष्ट्रीय सभामें भाग न लें।" गान्धीजीको मध्यस्थ कर अमीर अमानुल्लासे जो षड्यंत्र चल रहे थे, उस विषयमें पूरा वृत्त जाननेके लिए अलाहाबादके 'लीडर' पत्रने अपना एक मनुष्य भेजकर मुहम्मद अलीसे मुलाखात की थी। इस मुलाखातमें मुहंमद अलीने जो भी कुछ फर्माया, वह यह है–

"I am Muslim first, everything else afterwards. If Amir of Afghanistan fights the enemies of Islam, he would have my entire support. If he fights the present Government of India because they are turbulent neighbours he has my entire sympathy and he can free Afghanistan from fear by the liberation of India." (The Leader, 13-5-1921).

गांधीजीके विषयमें आप कहते हैं—

"However pure Mr. Gandhi's character may be, he must appear to me, inferior to any Musalman, even though he be without character.'

मुहम्मद अलीकाही अनुकरण करते हुए अहमदाबादमें सुलेमान इब्राहीम जिसका सम्पादन करते हैं, उस 'बोझगार' पत्रने यह घोषित किया है कि—

"Is not even a worst Muslim better than a Hindu? The Maulawi will have to answer that query in the affirmative."

मौ० शौकत अली तो इन सब लोगोंसे कुछ अधिकही कट्टर मुसलमान तथा हिन्दुद्वेष्टा थे। वे अपने 'खिलाफत' वृत्तपत्रके द्वारा मुसलमानोंको भडकाया करते थे। शौकत अलीकीही जातिके एक सद्गृहस्थने बम्बईके फ्री प्रेस जर्नलमें एक लेख लिखकर शौकत अलीके कारस्थानोंका भण्डाफोड किया था। उस लेखका अनुवाद दि. ८-६-१९३२के मराठी वृत्तपत्र 'सकाळ' में प्रसिद्ध हुआ है। उसमेंका महत्त्वका भाग आगे दिये जा रहा है। 'जबसे मौ० शौकत अली कानपूरके मुसलमान परिषद्के अध्यक्ष हो चुके थे, तबसे यह दीख पडता है कि उन्होंने अपनी नीति निश्चित की है। हिन्दु तथा काँग्रेसवाले मुसलमानोंके विरुद्ध तबसे वे मुसलमानोंको भडकानेके लिए प्रयत्नशील हैं। गत अप्रैलमें बम्बईमें दादरको हिन्दु-मुसलमानोंकी मारापीटी हो चुकी थी, उसको निमित्तमात्र समझकर शौकत अली उसका खूब उपयोग कर रहे हैं।'

खिलाफत कमिटीकी ओरसे मौ. शौकत अलीके सम्पादकत्वमें निकलनेवाले खिलाफत नामक उर्दू पत्रमें दि. २४-४-१९३२ को दादरकी मारापीटीके सम्बन्धमें शौकत अलीने 'भक्तके अन्त्य संस्कार बडे समारम्भके साथ हों!' इस शीर्षकका एक लेख नीचे अपने हस्ताक्षर कर लिखा है। अपने तर्कज्ञानके अनुसार उस मारापीटीकी मीमांसा करते हुए वे कहते हैं— "यह घटना क्यों घटी, यह कहनेके लिए किसी ज्योतिषीकी आवश्यकता है नहीं। हिन्दु जाति उपद्रव करनेके लिए सिद्ध हो चुकी है। अंग्रेजोंके साथ लडाई कर वह पहलेसेही बुद्धिमान और निर्भय बन चुकी है। और अब कुछ मूर्ख मुसलमान उसे मिल गये हैं, इसलिये वह अधिकही निर्भय बनी है। अब वे लोग मुसलमानोंको कुचलनेपर उतारू हो गये हैं। परन्तु ईश्वरकी कृपा होनेपर वे अथवा इस्लामके अन्य कोई भी शत्रु इस्लामका बाल तक बांका नहीं कर सकते।"

मौलाना मुहम्मद अलीका वचन है— "हुसेनके वधका मतलब है याजीदका वध। क्योंकि प्रत्येक करबलाके समय इस्लामको नवजीवन प्राप्त होता है। दूसरा कारण यह है कि, दिन-प्रतिदिन मुसलमान दुबले बन रहे हैं। यदि मुसलमानोंमें आज उतने स्वयंसेवक होते, जितने कि पहले थे, तो यह नौबद न आने पाती। यदि आज मुसलमान एक मतसे तथा एक दिलसे रहते, तो फिर गुण्डोंकी क्या हिंमत थी, कि वे मुसलमानोंका वध करें अथवा खूनखराबी करें?"

मौ० शौकत अली आगे लिखते हैं– "अब मैं उम्मीद करता हूं कि, कमसे कम दस हजार स्वयंसेवक तैयार हो जायेंगे, तथा गलीगलीमें उनकी टोलियाँ काम करते हुए दिखाई देंगीं। इसके लिए मुसलमान आपसी द्वेषभाव भूलकर एक दिलसे काम करें। ऐसा होनेपर पवित्र इस्लामको धक्का लगानेका प्रयत्न कोई भी न कर सकेगा।"

दादरमें मुसलमानोंकी नित्यकी शरारतोंके कारण जो मारापीटी हुई, उसमें एक पठानको, जिसके जातवाले हिन्दुओंपर जुलुम कर उनसे एक रुपियेपर छे आनेतक ब्याज वसूल करते हैं, तथा समय पाकर हिन्दु युवतिओं तथा बच्चोंको भगाया करते हैं, जरा अधिक प्रसाद मिल चुका था। इस प्रसादाधिक्यके कारण वह आततायी पठान परलोक सिधारा। इस पठानके मृत्युके हेतु मुसलमानोंने मौ० शौकत अलीकी प्रेरणाके अनुसार एक शोकसभा मनाई। उस सभामें मौ० शौकत अलीने किये हुए गरल–वमनका वृत्तान्त दि. २४-४-३२ के 'खिलाफत' में दिया गया है। वह इस प्रकार है— 'पैगम्बरवासी महंमद दीनने जो अपूर्व स्वार्थत्याग किया है, उसको ध्यानमें रखते हुए हम लोगोंने उसीका अनुकरण करनेका प्रयत्न करना चाहिये। बम्बईमें कोई नहीं जानता था कि महंमद दीन कौन था। किन्तु उसने अल्लाहके मन्दिरका (मस्जिदका) संरक्षण

करते हुए अपने प्राणोंका बलिदान किया, कि बस उसकी कीर्ति केवल बम्बईमें नहीं, तो भारत-भरमें फैल चुकी।' व्याख्यानके अन्तमें मौ० शौकत अलीने स्वयंसेवकोंकी भरती शुरू रखनेके लिए मुसलमानोंसे प्रार्थना की।

'खिलाफत' में इस सभाका जो वृत्त दिया था, उसपर शीर्षक था, 'यह है युद्धमें मरनेवालोंकी दिव्य परम्परा !! ईश्वर इन शुद्धमना भक्तोंको मुक्ति प्रदान करे!'

इसके बाद दि. २७-४-३२ की 'खिलाफत' में मौ. शौकत अलीने लिखा हुआ एक लेख भी मुसलमानोंके अन्तरंगपर विदारक प्रकाश डालनेवाला है, इसलिये वह यहां उद्धृत किया है— 'प्रत्येक मुसलमानकी यह धारणा हो चुकी है, कि बम्बईके मुसलमानोंको आगे चलकर एक बडे संकटका मुकाबला करना होगा। उसके लिए सबको सिद्धता करनी चाहिये। मैं स्वयं शान्तताका भोक्ता हूं। मुसलमान अपने विधायक कार्यक्रम पूरी तौरसे सम्पन्न कर सकते हैं, परन्तु मुसलमानोंका नाश मैं खुली आंखोंसे नहीं देख सकता। उनका संरक्षण करनेके लिए मेरा जीवित तथा सम्पत्ति, दोनों उपस्थित हैं।'

दि. ४।५।३२ के 'खिलाफत' में शौकत अलीने और एक लेख लिखा है। वे लिखते हैं— "छोटे-बडे, स्पृश्य तथा अस्पृश्य हिन्दु आज एकही विचारसे प्रेरित हो गए हैं। वे सोच रहे हैं कि, देशमें हिन्दुओंकाही राज्य हो, तथा सब राज्यसूत्र अपनेही हाथमें हों। मैं आज इस वृत्तको प्रकटतया उद्घोषित करना चाहता हूं। वे इस दावको खेल रहे हैं, कि अंग्रेजोंको पीडा देकर सब सत्ता अपने स्वाधीन कर ली जाय, तथा पश्चात् मुसलमान आदि अल्पसंख्यांकोंको सताया जाय। यदि यह दाव सध गया, तो फिर अल्पसंख्यांकोंको अंग्रेजोंको छोडकर हिन्दुओंके गुलाम बनकर रहना होगा।"

शौकत अली आगे लिखते हैं— "इसलिए मैं मुसलमानोंसे दावेसे कहता हूं कि राजकारणमें मैंने जिस भूमिकाका स्वीकार किया है, वही यथायोग्य है। जीवट तथा धैर्य इन दो गुणोंके विना संसारकी कोई भी जाति अपनी उन्नति नहीं करने पाई है। केवल चिढ जानेसे कार्य नहीं होता।"

"अपनी सिद्धता हो चुकी तथा अपने पास युद्धकी सामुग्री एकत्रित हो चुकी कि बस, युद्ध उद्घोषित कर दो। युद्ध करनेके लिए योग्य सन्धि हो, तथा युद्धकी आवश्यकता भी होनी चाहिये।"

दि. ५।६।३२ की 'खिलाफत' में "मौ० शौकत अलीकी सूचनाएं" यह शीर्षक देकर जो कुछ लिखा गया है, उसका कुछ अंश यह है—

"कल मैं एक पत्र पा चुका हूं, जिसपर पता लिखा हुआ नहीं था। वह पत्र आगे दिया जाता है— "दंगा शान्त होनेपर भी मुसलमानोंपर छिपे हमले हो चुके हैं। मैं यह नहीं समझ पाता कि मुसलमान क्योंकर चुप बैठे हैं! क्या अल्लाहने उन्हें शक्ति नहीं दी है? मैं बम्बईके मुसलमानोंको प्रकट प्रश्न करता हूं, कि यदि तुम्हारे पास शक्ति है, तो फिर तुम यह अन्याय खुली आँखों कैसे देख सकते हो ? क्या इस्लामका शेर (शौकत अली) तुम्हें पीछे खींच रहा है? इस स्वस्थताकी बजाय मर जाना कई गुना अच्छा है। अब हम मौ. शौकत अलीसे कहना चाहते हैं कि, यदि हिन्दु नेताओंको शान्तताकी आवश्यकता है नहीं, तो फिर हम भी उसे नहीं चाहते।......... मुसलमानोंको भडकाकर हिन्दुओंपर प्रतिशोध लेनेके लिये आप कुछ भी प्रयत्न कर उद्युक्त कीजिये। हम सब लोग सिद्धही हैं। आपके विना मुसलमानोंमें चेतना निर्माण करनेवाला दूसरा कोई है नहीं, इसलिए हम आपकी पुकारकी बाट देख रहे हैं।" (इसके नीचे मिर्झाखान साहेब खिलाफतवालाके हस्ताक्षर हैं)

काफर तथा "भाई"

एक फटे टूटे मुसलमानसे लेकर आंग्लविद्याविभूषित मुसलमानतक प्रत्येक मुसलमान हिन्दुओंका द्वेष किया करता है, उपद्रव करनेके लिए सिद्ध रहता है, और आशापूर्ण नेत्रोंसे अफगाण तथा तुर्ककी ओर देखा करता है। उसके मनमें सदैव भारतमें इस्लामी राज्य प्रस्थापित करनेके विचार रहा करते हैं। मौ. शौकत अलीके द्वारा पुरस्कारित मुस्लिम स्वयंसेवक सेना, अल्लाम्मा मश्रकीके खाकसार, मुस्लिम लीगकी मुस्लिम नॅशनल गार्डस् सेना तथा मुजाहिदीनकी गुप्त संघटना, इन सबका एकमात्र उद्देश है, हिन्दुओंकी इस पवित्र मातृभूमिको मुसलमानोंका देश बना देना, तथा भारतवर्षसे हिन्दुओंका नामतक मिटा देना। बावला हिन्दु समाज सदैव मुसलमानोंको भाईके नाते आलिंगन देनेको और अपना आत्मघात करनेको उतावला ही होकर रहता है। परन्तु मुसलमान मात्र हिन्दुओंकी सम्भावना 'काफर' इस नामसेही करता है। (काफर शब्दका अर्थ है नीच, हीन, काट डालनेकी योग्यताका तथा कुत्ता) मुसलमान हिन्दुको भाई कहना कदापि पसन्द नहीं करता। काफरको भाई कहनेसे मुसलमान स्वयंको तथा इस्लामको अपमानित समझता है। खिलाफतके आन्दोलन-कालमें भी मुसलमान हिन्दुओंको भाई कहनेके लिए सिद्ध नहीं थे। और आज तो वे बहोत दूर जा चुके हैं। मूर्तिपूजक हिन्दुको भाई कहना मुसलमान तिरस्करणीय मानता है। सन १९२६ की खिलाफत

परिषद्में एक मुसलमान वक्ता भाषणके वेगमें हिन्दुओंको 'भाई' कह गया। बस! सम्मेलनभरमें गडबडी मच गई, और वातावरण तप्त हो उठा। 'खिलाफत' में इसका प्रतिवृत्त दिया गया है। उसका सारांश यह है—

"Feelings ran so high, that when a member referred to the Hindus as 'brethren', there was an outburst from a considerable section of the audience how demanded the withdrawal of the word 'brethren' and objected to its application to Kafirs."

आजकी मुस्लिम लीग इस भावनासे ओतप्रोतही है, किन्तु सन १९२० में भी उसमें यह भावना कम न थी। उसका संवर्धन तथा प्रतिपालन अली बन्धुओंनेही किया था। सन १९२० में नागपूरमें जो लीगका अधिवेशन हुआ उसमें एक प्रस्ताव पास हुआ था। उसमें उपरिलिखित भावनाही ठूंस ठूंस कर भरी हुई है। उस प्रस्तावका कुछ भाग आगे दिया जा रहा है—

"To promote the friendship and union between the Musalmans and the other communities of India; to maintain and strengthen the brotherly relations between the Mahomedans of India and those of other Countries."

भारतके पराई शत्रुके साथ षड्यंत्र रचनेकी मुसलमानोंकी यह आदत बहोत पुरानी है। इसी आदतसे मुसलमानी पातशाहत नष्ट हो चुकी। इसी आदतके परिणाम प्रचलित राजकारणमें, तथाकाथित राष्ट्रीय मुसलमानोंके नेतृत्वमें प्रकट हो गए हैं। सन १९२१ में काँग्रेसका अधिवेशन अहमदाबादमें हो चुका। उस वर्ष हकीम अजमलखाँको काँग्रेसके अध्यक्ष बनाया गया। उसी वर्ष अहमदाबादमेंही मनाये गए 'खिलाफत' के अधिवेशनके अध्यक्ष भी येही कट्टर मुसलमान थे। इस खिलाफत अधिवेशनमें तुर्कस्तानके सुलतानसे राजनिष्ठ रहनेका प्रस्ताव खडे होकर बडे आदरके साथ गम्भीरतासे सम्मत किया गया था। रशब्रुक् विल्यमके '१९२१ सनका भारत' इस इंग्लिश पुस्तकमें इस घटनाका उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

"A resolution of allegiance to the Sultan of Turky was passed, all standing." (India in 1921, page 314.)

"Indian Moslem" इस महत्त्वपूर्ण पुस्तकके लेखक कोई नबाबने स्वीकृतही किया है कि—

"In Kabul designs on India have long found a natural incubation."

इस प्रमाणको देखनेपर भी कोई निश्चित कह नहीं सकता कि हिन्दुओंकी आँखे खुलेंगी। इसलिए उसी ग्रन्थमेंका और एक उद्धरण दिया जा रहा है—

"Is there any reason to suppose that the descendants of the men who would not defend their homes against Babar and Akbar are to-day of better mettle? If Hinduism has no worthier representatives than the loud voiced and quarrelsome Bengalies then an unhesitating answer would have to be given in the negative. Of course there are some Hindus such as the Sikhs and the Marathas, both minorities with whom the first Mogul conquerors never came in contact, that may be classed as of superior quality and entitled under every respect to respect. And no doubt if India ever comes again to be sub-divided, as was her usual lot before the Mogul arrived, they would be entitled to obtain their share in a general partition. But it would not be in any India that preserved its unity. In default of British control, resigned in weariness or disgust, that unity could only be revived and sustained by the Moslems recruited, as they would be, by their kinsmen and co-religionists from the regions beyond the North-West Frontier."

मुस्लिम लीगके सुलतान महम्मद अली जीनाने सीमापारकी वन्य टोलिओंको जो एक सन्देश भेजा था, उसपरसे यह अनुमान किया जा सकता है कि, मुसलमान-नेता भारतके विनाशके षड्यंत्र किस प्रकार रचा करते हैं। जिन्ना मियां अपने सन्देशमें कहते हैं—

"The Musalmans of India have great faith and hopes in you and believe that you will be unconquerable soldiers of Islam like your unconquerable rocks and through you Islam in India will be able to revive the glories of past."

परकीय मुसलमानोंकी सहायतासे तथा हिन्दुओंको बनाकर भारतपर फिरसे एक बार गजनीके लुटेरे महम्मदका तथा औरंगजेबका राज्य स्थापन करनेकी बातें मुसलमान उनकी खुशामत करनेवाले, उनको आलिंगन देनेवाले इतनाही नहीं तो अपनेको भी

मुसलमान समझनेवाले हिन्दुओंको+ एक ओर हटाकर बडी स्पष्टताके साथ बोला करते हैं। सन १९२५के सितम्बरमें मध्यवर्ती विधि-मण्डलमें पण्डित मोतीलाल नेहरू तथा बॅ० जीनाके सहकार्यसे राष्ट्रीय माँगका प्रस्ताव संमत हुआ था। इस प्रस्तावके सम्बन्धमें अपना मत प्रकट करते हुए पंजाबकी युनिअनिस्ट पार्टीके जनक सर फजली हुसेनके वृत्तपत्र " मुस्लिम औट-लुक " ने विना संकोचके एक लेख लिखा था। हिन्दु तथा मुसलमानोंके संगठनके बलपर स्वराज्यकी यात्रा करने जानेवाले भोले तथा परहिततत्पर हिन्दु उस लेखका मनन करें। वह लेख इस प्रकारका है—

" We approved of the demand put forward in the Legislative Assembly because when the British surrender power to the Indians, the Muslims will naturally appropriate that power– if necessary– with the aid of the Afghans. While we believe that much Tanzeem work remains to be done before even the Muslims can honestly declare that they really desire freedom or deserve it. We also recognise that nothing is so educative as war and after a healthy battle with Hindus, both communities will improve, that is, if any Hindus should survive the battle. The Gokulchand Narang School of politicians knows just as well as we do that Swaraj will be either Hind Raj or Muslim Raj and their Sanghatan activities are nothing but preparations for the war which must ensue. Our own anticipation is that the British will lose India as a result of the approaching world war; because that war will be upon us, before the Muslims of India are strong enough to prevent it or at least to preserve India's neutrality. Muslim Raj will automatically ensue, because the masters of India then will, in all likelihood, be the Afghans. But if the Hindus are in a hurry for the inevitable to occur, if they will not wait for the next world war to end British domination in India but prefer to coax the British to surrender power immediately, we see no harm in humouring them in their haste. In other words we have no objection to using the Hindu politicians as tools and at the same time telling them the truth namely, that it is Muslim rule in India to which we look forward and the next time Muslims rule India, we trust, they will continue the good work begun by Sultan Mahamad of Ghazni and Aurangzeb. "

उस समय हिन्दुओंको केवल ठगनेके उद्देशसे काँग्रेसमें आए हुए मुसलमान आजकी अपेक्षा कुछ अधिक थे। उन तथाकथित राष्ट्रीय नेताओंमें डॉ० सैफुद्दीन किचलु नामक एक कट्टर मुसलमान थे। उन्हें 'मुस्लिम औट्-लुक' का यह स्पष्ट-वक्तृत्व नहीं जँचा। इसलिए उन्होंने अपने ' तंझीम ' पत्रमें कुछ जरासा विरोध दर्शित किया। ' तंझीम ' का कहना यह था कि, " मुस्लिम राज्य तो हमारा भी ध्येय है। हिन्दुस्थानकी परिस्थिति भिन्न होनेसे वह मुस्लिम राज्य हिन्दुओंके सहकार्यसे चलाया जायगा, इत्यादि। " इसपर " मुस्लिम औट् लुक" ने यह प्रहार किया कि, " कुर्आनके अनुसार वे काफर, जो कि मुसलमान नहीं हैं, मुस्लिम राज्यके भागी होही नहीं सकते। " कै० पूजनीय लाला लजपतरायजीके ' पीपल ' पत्रमें दि० १८-२-२५ को यह सब वृत्तान्त विस्तारपूर्वक दिया गया है।

क्या यह आश्चर्य नहीं है कि इतना होनेपर भी मुस्लिम राज्यकी स्थापना करनेकी इच्छा करनेवाले कट्टर मुसलमानोंपर हिन्दु विश्वास कियाही करते हैं ? हिन्दुओंकी इस दुर्बलतासे मुसलमान सम्पूर्णतया परिचित हैं। भारतमें मुगल साम्राज्य निर्माण करनेवाला बाबर कहा करता था कि,—

" The people of Hindustan are a strangely foolish and senseless race, possessed of litte reflection and less foresight. "

राष्ट्रीयताका स्वांग रचनेवाला अहरार नेता चौधरी अफजल हक तो इससे भी आगे बढ चुका है। उसने अपना अनुभव कहते हुए लिखा है–

" He (Hindu) will not kill an enemy; on

+दि० ३०-१०-२४ के ' यंग इण्डियामें ' प्रसिद्ध किए हुए गान्धी-शौकतअली संवादमें महात्मा गान्धी कहते हैं—

" I am speaking to you as though I was a Musalman; because I have cultivated that respect for Islam which you have for it. "

the contrary he will be hospitable enough to offer milk to a serpant that happens to make its appearance in his house." (Pakistan & Untouchability, page 14, by Afazal Haq.)

हिन्दु जनता अब कितने दिनोंतक साँपको दूध पिलायगी ? वे हसरत मोहानी, जो कि सशस्त्र क्रान्तिकी साहायतासे भारतका स्वराज्य लेनेका प्रस्ताव अत्यन्त आग्रहसे राष्ट्रीय सभाके अधिवेशनमें प्रस्तुत कर चुके थे, आज यू० पी० मुस्लिम लीगके एक कट्टर आधारस्तम्भ हैं। चौ० खलिकुझमाँ, जोकि एक बार यू० पी० काँग्रेसके अध्यक्ष थे, आज मुस्लिम लीगके कट्टर नेता हैं। काँग्रेसमें श्री० बाबू जगत्नारायणके अखण्ड-भारतके प्रस्तावको खडा विरोध करनेवाले पंजाब प्रान्तीय काँग्रेसके अध्यक्ष मियाँ इफतिखारउद्दीन, जो कि मौ० आझादके निकटतम मित्र हैं, आज मुस्लिम लीगमें चमक रहे हैं। दूसरे एक पंजाब काँग्रेस कमिटीके पुराने अध्यक्ष मियाँ दाउद गझनवी भी अभी अभी मुस्लिम लीगमें सम्मीलित हो चुके हैं। मध्यवर्ती विधिमण्डलके काँग्रेस पक्षके नेता मियाँ अबदूल कायूम तो जोरोंसे प्रचार कर रहे थे, कि सीमापारकी वन्य टोलिओंको भारतीय सेनामें भरती किया जाय। उसके लिए उन्होंने पत्रक भी प्रसिद्ध किया था। यह पत्रक इस्लामी कुटील नीतिका मूर्तिमन्त हलाहल होनेसे यहाँ दिया जा रहा है। काँग्रेसकी झुण्डमें रहकर भारतको इस्लामी देश बनानेके षड्यंत्र रचनेवाले अबदूल कायूम फर्माते हैं-

"If twenty thousand tribesmen are serving in our army, they not only be a source of a strength to us, but we will have no danger of raids or kidnappings from their relatives at home. Surely they are better fighters than even the Gurkhas. I hope the Government of India will revise their policy regarding the tribes and a peaceful time will soon come."

(फ्री प्रेस, ३-२-४०)

एकबार हिन्दु-धर्मीय गुरखोंको निकालकर उनके स्थानपर आफ्रिडी पठानोंकी भरती की, कि समज लीजिये, उत्पातको प्रारम्भ हो चुका। ये आफ्रिडी वन्य टोलियाँ और निझाम, दोनों आपसमें खूब सम्बन्धित हैं। अकबर हैदरीके सीमापार जानेसे यह घनिष्ठता अधिकही बढ चुकी है। निझामको भारतके सिंहासनपर अधिष्ठित करनेका जो एक नाटक खेला जायगा, उसमें अकबर हैदरी एक महत्त्वका पात्र है। जब एक विद्यालयके उद्घाटनके लिये हैदरी पेशावर गए थे, तब उन्होंने वहाँके मुस्लिम विद्यार्थिओंको इस प्रकारका उपदेश किया था—

"The students of Islamia College have to shoulder heavy responsibility, and I hope that they shall not shrink from that responsibility. You are the missionaries who are to preach and propagate Islam to the various tribes in India."

(मराठा, २२-३-४०)

केवल मुसलमानोंके लिए जो उर्दू पाठशालाएँ हुआ करती हैं, उनमें इस्लाम-प्रचारका यह तत्त्व अच्छी तौरसे समझा दिया जाता है। "इस्लाम संकटमें है," "इस्लामके लिए मर जाओ," इत्यादि घोषणाएँ सतत मुसलमान विद्यार्थिओंको सुनाई जाती हैं। उसका परिणाम यह हुआ है कि, मुसलमान विद्यार्थिओंकी उच्छृंखलता, उद्दण्डता तथा धर्मोन्मत्तता बढ गई है। अलिगढके मुसलमान विद्यार्थी अलिगढ स्टेशनपर मनमाने उत्पात किया करते हैं।

आज काँग्रेसमें जो मुसलमान नेता विद्यमान हैं, उनमें डॅ० असफअल्ली तथा मौ०अबुल कलम आझाद विशेषतया प्रसिद्ध हैं। इनमेंसे मौ० आझाद प्रत्येक दृष्टिसे सम्पूर्णतया अरबी हैं। यह धूर्त गृहस्थ मक्कामें जन्म पा चुका है, तथा इस्लामके कट्टर विद्यापीठ 'अल्-अझ्-हार' में इसका शिक्षण हो चुका है। तुर्की अरबी तथा फारसी इन तीन भाषाओंकी विज्ञ यह मनुष्य कट्टर मुसलमान है। ये भारतमें पहले बाल्कन युद्धके निमित्तसे आ चुके थे। इस आगमनका मुख्य प्रयोजन था डूबती हुई खिलाफतको बचाना। पहले महायुद्धके पूर्व इन्होंने खुले तौरपर मुस्लिम संगटनका कार्य तथा गुप्ततासे जिहादकी सिद्धता की। सन १९१४ के महायुद्ध-कालमें गालीब पाशाको मिलकर मुल्ला मौलविओंकी सहायतासे जिहाद पुकारनेका जो एक षड्यंत्र रचा गया था, उसमें इस गृहस्थने बहोत बडा भार उठाया था। पॅन-इस्लामके पुरस्कर्ता परदेशीय मुसलमानोंके साथ इनके अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। काँग्रेसके व्यासपीठपरसे लोगोंके सामने अपना मुसलमानीपन स्पष्टतया घोषित करनेवाले तथा इस्लामने गत१२०० वर्षोंमें संसारभरमें जो उत्पात मचाए, जो हत्याएँ, लूट-खसोट तथा अबलाओंका अपहरण किया, उस परम्पराको न भूलनेवाले इस कट्टर अरबी मुसलमानके मनमें हिन्दुओंके लिए द्वेष होना कोई असम्भव नहीं है। कुछ वर्षोंके पहले मुस्लिम लीगको अपने सभासदत्वके द्वारा भूषित करनेवाला यह गृहस्थ आज राष्ट्रीयताया बुरका ओढकर

काँग्रेसमें सम्मिलित हो चुका है, उसका अध्यक्ष भी बन चुका था। सिन्ध, पंजाब, आसाम तथा यू० पी०, इन प्रान्तोंमें काँग्रेस मुस्लिम लीगके साथ सन्धि कर समान प्रतिनिधित्वकी नीतिपर संयुक्त मंत्रिमण्डल स्थापन करे, इसलिए जो प्रयत्न हो चुके, उनमें इस कूटनीतिज्ञ गृहस्थका एक बहोत बडा हिस्सा था। इस सद्‌गृहस्थने मुस्लिम लीगके व्यासपीठपरसे जो कुछ कहा था, वह विस्मृतिशील हिन्दुओंने ध्यानमें धरना अत्यावश्यक है, इसलिए यहाँ दिया जाता है—

" That by the Lucknow Pact, they had sold their interests. The Delhi proposals of March last opened the door for the first time to the recognition of the real rights of Musalmans in India. The separate electorates granted by the pact of 1919, ensured Muslim representation, but what was vital for the existence of the Community was the recognition of its numerical strength. Delhi opened the way to the creation of such a state of affairs as would guarantee to them in the future of India a proper share. Their existing small majority in Bengal and the Punjab was only a census figure, but the Delhi proposals gave them for the first time five provinces of which no less than three- Sindh, Frontier Province, and Baluchistan- contained a real overwhelming Muslim majority. If the Muslims did not recognise this great step they were not fit to live. There could now be nine Hindu provinces against five Muslim provinces and whatever treatment Hindus accorded in the nine provinces, Muslims would accord the same treatment to Hindus in the five provinces. Was not this a great gain ? Was not a new weapon gained for the assertion of Muslim rights ? " (Thoughts on Pakistan, page 105, by Dr. B. R. Ambedkar.)

राष्ट्रीयताके पर्देकी ओटमें छिपी हुई सत्यवस्तुका मौ० आझादके द्वारा उपरिलिखित उद्धरणमें स्पष्टतया भण्डाफोड हो चुका है। बॅ० असफअली यह चीज भी उसी जातिकी है। असेम्ब्लीमें दिये हुए भाषणमें राष्ट्रीयताके अवगुण्ठनमें छिपे हुए इस सद्‌गृहस्थने घोषित कर डाला था, कि भारतमें अनेक राष्ट्र हैं। किन्तु उसी समय डॉ० देशमुखने असफअलीको मुहतोड जवाब दिया, और वह प्रकरण वहीं समाप्त हो चुका।

नेताजी सुभाषबाबू, पं० जवाहरलाल आदि सब नेताओंके मतानुसार " जातीय निर्णय " + यह वस्तु राष्ट्रीय प्रगतिके लिये अत्यन्त विघातक है, और ये नेता अपना मत प्रकट भी कर चुके हैं। अपने दि० २–६–३६ के पत्रकमें पं० जवाहरलाल नेहरूने निकाले हुए हृदयस्पर्शी उद्‌गार जातीय निर्णय तथा राष्ट्रीय मुसलमान, इनपर विदारक प्रकाश डालनेवाले हैं। जवाहरलालजी कहते हैं—

" I cannot conceive anyone thinking clearly in terms of Independance or of social change accepting or approving of the Communal decision. It has been a matter of great surprise, and regret to me that many of our Muslim friends and Comrades who stood for Indian Independance should so approve of this pernicious Decision. "

पं० जवाहरलाल नेहरूका यह पत्रक प्रकाशित होनेपर भी जिन्नासे मित्रता रखनेके प्रयत्न करनेवाले बॅ० असफअली जिन्नाको लिखते हैं –

" In 10 out of 11 provinces the substance of your 14 points has been conceded and the percentage in services has been fixed. Is the Communal Award another bone of contention?

+जातीय निर्णयके विषयमें जन्मजात अरब मौ. आझादका अग्रलिखित मत ध्यानमें धरनेलायक है—

" The award has given the Muslims only one of their famous fourteen points namely separate electorate. It has not placed the Muslims under a permanent statutory majority in Bengal. Concluding he hoped that Moulawi Ismail Khan and Mr. Masud Ahmad will try to explore fresh avenues of nagotiations with the Congress and the said Communalist Muslims would be exposed in their true colours if the Hindus take a bold attitude and offer a statutory majority to the Muslims on the basis of joint electorate. "

(मौ. आझादकी मतप्रणाली Communal Award इस पुस्तकमें विस्तारपूर्वक दी गई है।)

The Congress is pledged to seek no alteration of it by invoking outside aid. When it is done it must be done by agreement among contending parties. The culture, language, script and religion of minorities are already guaranteed. What else is there ? "

सन १९०६ में इंग्लैंडमें भारतीयोंमें क्रान्तिकारक आन्दोलन फैल रहा था, तब बॅ० असफअलीने प्रकट की हुई तिरस्करणीय वृत्ति, तथा कैलासवाली स्वामी श्रद्धानन्दजीके वधके समय असफअलीने किये हुए उद्योग उनकी राष्ट्रीयताका बुरका फाड देनेके लिए पर्याप्त हैं। हिन्दुओंके इस्लामीकरणके विषयमें तो स्वयं बॅ० असफअली उदाहरण स्वरूप हैं।

राष्ट्रीय मुसलमान पक्षकी ओरसे १९४६में मध्यवर्ती चुनाव लडे गये। यह राष्ट्रीय मुसलमान पक्ष अपनी ओरसे कई नामधारी राष्ट्रीय मुसलमान खडे कर चुका था, जिनमें महंमद अहंमद काझमी नामक एक सद्गृहस्थ थे। ये सद्गृहस्थ केन्द्रीय असेम्ब्लीमें गर्जना कर चुके थे, कि भारत 'दार-उल्-हरब' है। (यह सब वृत्तान्त आगे चलकर दिया जायगा)

आझाद मुस्लिम

कुछ चतुर मुसलमानोंने 'आझाद मुस्लिम' इस नामका एक नवीन स्वांग रचा, और देहलीमें एक अधिवेशन किया। इसके लिये जो खर्च हुआ, वह अर्थात् हिन्दु-मुस्लिम-एकताके लिये तडपनेवाले बावले हिन्दुओंके तिजोरिओं-मेंसे निकाला गया था। इन लोगोंने भी अपनी मुस्लिम वृत्ति प्रकट की। मुफ्ती लियाकत उल्लाके भाषणके कुछ अग्रलिखित वाक्य 'आझाद मुस्लिम' यह चीज क्या है, इसको दर्शित करानेवाले हैं, इसलिये यहाँ दिये जा रहे हैं—

" They would themselves chalk out the safe-guards necessary for the protection of their religious rights and would fight out any party, however powerful, that would refuse to accept those safe-guards, as they would fight the Government for freedom. "

वहाँ एकत्रित होगये हुए मुसलमानोंने दीर्घ कालतक तालियाँ बजाकर इस भाषणका स्वागत किया। मौ० हाफिझुल रहमान तथा डॉ० के० एम्० अश्रफके भाषणोंमें इन मुफ्ती महाशयकी अपेक्षा कई गुना अधिक इस्लाम-निष्ठा झलकी। 'पाकिस्तान' शब्दको इन लोगोंका विरोध है, परन्तु उसकी ओटमें छिपे हुए मुस्लिम अधिराज्यका मात्र इस पक्षके आवरणके नीचे ढंके हुए प्रत्येक मुसलमानने समर्थनही किया है। अहरार नेता अफझल हक तो स्पष्ट शब्दोंमें कह चुके हैं—

' We are not fighting for nationalism. ' (Pakistan & Untouchability, page 139 by Affazal Huq) **इसी पुस्तकमें वे कह चुके हैं, कि हिन्दुस्थानका शासन "शरियत" के अनुसार चलना चाहिये। "कान्फिडरसी ऑफ इण्डिया" के लेखक 'पंजाबी' ने तो स्पष्ट लिखा है कि—**

" We shall have to advocate a world revolution on Islamic lines. Consequently our ultimate ideal is a world revolution on purely Islamic lines. " (Confedercy of India, by a Punjabi. pages 269-70)

मुसलमान नेताओंके अन्तरंगका परिचय होनेके लिये इतने प्रमाण पर्याप्त हैं।

मुसलमानी वृत्तपत्र

मुसलमानी वृत्तपत्रोंके सम्पादक तथा लेखक तो इस्लामका प्रचार तथा हिन्दुधर्म, हिन्दु वीरपुरुष और राष्ट्रीय विभूतिओंकी निन्दा करनेका कंकणही बाँध चुके हैं। मुसलमानी वृत्तपत्र तथा लेखक पूज्य हिन्दु व्यक्तिओंकी अत्यन्त गर्ह्य तथा दुष्ट निन्दा किया करते हैं। खुदको कबीर-पन्थी कहलानेवाले भी इसी प्रकारका प्रच्छन्न प्रचार किया करते हैं। हिन्दु वाचकोंने कमसे कम सुना तोभी अवश्य होगा, कि "पेशवा" नामक कट्टर मुस्लिम पत्रमें छत्रपति शिवाजी महाराजकी गर्ह्य निन्दा करनेवाला लेख प्रकाशित हो चुका था। कोई आवश्यकता नहीं है, कि जौनपुरके दाऊद मियाँने छत्रपति शिवाजी महाराजके विषयमें जो गरल-वमन किया है, उसका हिन्दु वाचकोंको परिचय करा दिया जाय। कश्मीरके उपद्रवी मुसलमानोंका पक्ष लेकर दौडधूप करनेवाले गर्विष्ठ काश्मिरी पण्डितनेही जब शिवाजी महाराजके कार्यको 'ट्रेचरस्' इस अर्थके विशेषणसे सम्बोधित किया है, तथा महात्मा गांधीही जब राणा प्रताप तथा छत्रपति शिवाजीको Misguided patriots **कहते हैं, तब कोई आश्चर्य नहीं है, कि हिन्दूेतरोंके मुख**

चाहे जैसा विष वमित करते रहें। मुसलमानोंमें 'सीताका छिनाला' नामक पुस्तकका प्रचार बहोत बडे प्रमाणपर हो चुका है। हिन्दु जनताको शायद यह बात मालूम न हो। हिन्दुओंने इस पुस्तकका निषेधतक नहीं किया। राम, सीता तथा कृष्ण इनके विषयमें मुसलमान लेखकोंने जो प्रलाप निकाले हैं, उनमेंके कुछ नमूनेके तौरपर आगे उद्धृत किये जाते हैं— "राम और कृष्ण वगैरह, कि जिनको तुम लोग अवतार समजते हो, सब गुमराह और बदख्याल थे।"

(रद्दे हिन्दु, पृ० २८)

इस विधानकी चर्चा करते हुए वह मुसलमान लेखक कहता है कि— 'सातवी वजह यह है कि, वो राम निहायत बेगैरत (निर्लज्ज) और बेशरम था कि, अपनी जोरू सीताकी हरामकारी (व्यभिचार) और बदमुआमलगी (अव्यवस्था) मालूम करके घरसे निकाल दिया।' (किस्ता पृ० ३१)

'अजब है कि कृष्ण जैसे बदजात (नीच), जानी (व्यभिचारी) फसादीको अवतार समझते हो। क्या यह मालूम नहीं कि कृष्ण अहीर याने ग्वालेका बेटा था?'

(किस्ता, पृ० ३३)

"रामकी सीता उठा रावणने लंका ले गया।
हाथ जब लगा पराया, सत कहां उसमें रहा।
और कृष्ण अवतार कहते सो था राना नाबकार।
उससे कोई दूसरा जानी (व्यभिचारी) न था बदकार।
जुएबाजीमें दिया कोन कौनसा जुएमें हार।
चोर था और था उचक्का चुप तो रह कुछ दम न मार" ॥

(किस्ता, पृ० ४९)

"कब तलक प्रशस्ति करे सफदर तू कर अब मुख्तसर। सच नहीं हिंदूके सब झूटे हैं सारे शास्तर।" (किस्ता, पृ. ५४)

जिस पुस्तिकामें ये प्रलाप निकाले गये हैं, उसका नाम है "रद्दे हिन्दु" और यह पुस्तक लखनौमें मुहम्मद फखरुद्दीनने छापी है।

और एक पुस्तक "नियोगका भोग" गुल्जार इब्राहीम प्रेसमें छपी हुई है, जिसके लेखक हैं कोई अलीखान साहब! यह पुस्तक भी निन्दायुक्त कविताओंसे भरी हुई है। और भी 'तेगेफकीर बर गर्दने शरीर' (बदमाशकी गर्दनपर फकीरकी तलवार), 'शुद्धिके अडियल टट्टूपर ताजियाना,' 'तलकीने मजहब,' 'उन्नीसवीं सदीका महर्षि,' 'शुद्धितोड' इत्यादि अनेक अश्लील तथा दुष्ट निन्दासे भरी हुई किताबें मुसलमानोंने प्रकाशित की हैं। इस प्रकार मुस्लिम लेखक, सम्पादक तथा प्रकाशकवर्गने संगठित होकर हिन्दु, हिन्दुधर्म तथा हिन्दुओंकी राष्ट्रीय विभूतियाँ, इनकी निन्दाका कार्य अन्तःकरणपूर्वक करनेका मानो बीडाही उठाया है। ठीक उसके विरुद्ध इस्लाममें अभावसेही रहनेवाली मानवता तथा श्रेष्ठताकी स्तुति करनेकी हिन्दुओंमें स्पर्धा लगी रहती है।

जो वर्धा योजना गान्धीजीके प्रेरणानुसार तथा हिन्दुओंके द्रव्यबलके आधारपर निर्माण हो चुकी है, उसके अनुसार निर्मित पुस्तकोंमें राम तथा कृष्णको स्थान नहीं है। छत्रपति शिवाजी तथा त्यागमूर्ति राणा प्रताप, इन राष्ट्रनिर्माताओंके चरित्र उनमें दिखाई नहीं देते। छत्रपति सम्भाजी, गुरु गोविन्दसिंग तथा बन्दा बहादुर, इन हुतात्माओंके नाम उनमें पाए नहीं जाते। प्रातःस्मरणीय सीतादेवी, सावित्री, चितौडकी चितामें अपना शरीर बलिदान करनेवाली अमर पद्मिनी, तथा अपने शौर्य तथा पराक्रमके द्वारा देशशत्रुओंके मनमेंही आदर निर्माण करनेवाली क्रांतिमूर्ति राणी लक्ष्मी, इन अमर कन्याओंका उन पुस्तकोंमें अनुल्लेखसे वध किया गया है। इस महान् कृत्यका उद्देश है "राष्ट्रीयताकी नवनिर्मिति" !!! वर्धा शिक्षण योजनाके अनुसार जो आदर्श रखे गये हैं, उनमें राष्ट्रीयत्व ढूँढनेपर भी नहीं मिलने पाता। किन्तु उमर, उस्मान, अली तुघलक सुलतान, बाबर, नूरजहान तथा चान्दबीबी, इन पराइओंके चरित्र मात्र वाणीमें शक्कर घोलकर वर्णित किये हैं, और हिन्दु विद्यार्थिओंको पढाए जाते हैं! स्वयं महात्मा गान्धीजी भी कह चुके हैं, कि राणा प्रताप तथा युगनिर्माता छत्रपति शिवाजी (Misguided) राह भूले हुए थे, और उन दोनोंसे अबुबकर तथा उमर बहुत अच्छे थे! (हरिजन १७-२-३७, काँग्रेसका खूनी इतिहास, लेखक लालचन्द आर्य पृ० २-३)

मुसलमान सम्पादक, लेखक, इस्लामी पाठशालाएँ तथा विद्यालयोंके मुस्लिम अध्यापक, प्राध्यापक और विद्यार्थी हिन्दु कर्मयोगिओंकी तथा नेताओंकी हत्या

करनेवाले मुसलमानोंका गौरव बडी आत्मीयतासे किया करते हैं। उस आततायिओंको 'गाझी' इस उपाधिसे भूषित कर हिन्दुओंकी हत्या करनेको मानो उत्तेजितही किया जाता है। स्वामी श्रद्धानन्दजी जैसे श्रेष्ठ व्यक्तिका विश्वासघातसे वध करनेवाले आततायी हिंसक मुसलमानकी उत्सवयात्रा भी निकाली जाती है, यह सबको मालूम है। पढेलिखे मुसलमान भी हिन्दुओंका वध करनेके कृत्यको पुण्य-कृत्यही मानते हैं। ऐसे हिंसक आततायी गाझीको स्वर्गकी प्राप्ति हो, इसलिए मुसलमान अल्लाकी प्रार्थना भी किया करते हैं।

इन कृत्योंमें अग्रेसर है यू० पी० का देवबन्द मुसलमानी महाविद्यालय। इस देवबन्दके मुस्लिम विद्यालयके कट्टर मुसलमान शिक्षक तथा विद्यार्थिओंने स्वामी श्रद्धानन्दजीका विश्वासघातसे वध करनेवाले खूनी अब्दुल रशीदको स्वर्ग मिल जाय, इसलिए कुर्रानके पाँच आवर्तन किये थे। विश्वासघातसे मनुष्यवधका भयंकर अपराध करनेवाले .अब्दुल रशीदको सातों स्वर्गोंके शिखरपर अत्युच्च स्थान मिले इस हेतुसेही ये आवर्तन किये गए थे! हिन्दुओंको पाठ पढानेवाली इस मुसलमानी वृत्तिको हिन्दु खूब अच्छी तौरसे समझ लें, और फिर यदि उन्हें सर्पमुखमें प्रवेश करना हो तो करें, उन्हें रोकनेकी शक्ति किसीमें नहीं है।

इस्लामका स्वरूप मूलतः प्रतिगामी है। प्रगति, क्रान्ति तथा उन्नति, इन बातोंसे अरबस्तानमें निर्माण हो गई विचार-प्रणालीका कोई सम्बन्ध है नहीं। जनताका राज्य, ज्ञानका संवर्धन तथा वृद्धि और लोकसत्ता, इन बातोंसे उसे घृणा है। उसमें एकही बात पाई जाती है, दूसरोंको दास बनानेवाला साम्राज्यवाद। डॉ० मार्गोलिसने कहा है कि—

"It is difficult to conceive of any other authority coming between the Divine Being and His Viceroy, whence Islam contemplated imperiailsm from the first. (Mohammedanism by Dr. D. S. Margoliouth, D. Litt., page 15)

इस्लामने ज्ञानकी उपासना नहीं की है, किन्तु ग्रन्थालय जलाए हैं। जहाँ जहाँ इस्लाम घुस पडा, वहाँ वहाँ अव्यवस्था और अराजकताका नंगा नाच शुरू हुआ, और मानवसमाजका विध्वंस हो चुका। जिन्होंने इस सम्पूर्णतः प्रतिगामी इस्लामके मानवता-विरोधी स्वरूपका विवेचन किया, उन श्री० नाथूराम शर्माका वध अब्दुल कायूम नामक बदमाषने न्याय-मन्दिरमेंही छूरा भोंककर उस समय किया, जब कि श्री० नाथूरामजीने लिखी हुई "इस्लामका इतिहास" नामक पुस्तकपर अभियोग चल रहा था। इस अत्याचारी राक्षसका बचाव करनेका काम लाहोरके सुप्रसिद्ध मुसलमान बॅरिस्टर बरकतअलीने किया। उस कट्टर मुसलमान बॅरिस्टरने अपनी ओरसे भाषण करते हुए यह कहा कि, "कुरानके आदेशानुसार काफिरको मारना अपराध नहीं है। हर मुसलमानका वह एक आवश्यक कर्तव्यही है।"

मूर्तिपूजकोंपर हमला

काफिरको मारनेकी जो आज्ञा कुर्रानमें दी हुई है, वह इस प्रकार है– फईजन् सलखल् अश्हुरूल हुर्मु फक्तुलुल मुश्रिकीन है सुबजत्तुमूहुम व खुजू हुमवः सुरुहुम वक् लदूलहुम कुल्ल मर्स्वद फईनतावू व अका मुस्सलात व आतुज्जकात फखल्लू सबील हुम इन्नलाह गफू रुरहीम। (कुराण रु. ९. रु. १ आ ५)

इन अरबी वाक्योंका अर्थ मौ० महम्मद अल्लीने अपने कुर्रानके अंग्रेजी अनुवादमें इस प्रकार किया है—

"And when the mouths wherein ye are not allowed to attack them shall be past 'kill the idolators wheresover ye shall find them' & take them prisoners and besiege them, and lay wait for them in every convenient place. But if they shall repent and observe the appointed times of prayer, and pay the legal alms, dismiss them freely; for God is gracious and merciful."

इस आदेशका सारांश यही है कि, "मूर्तिपूजकोंको मार डालो, उन्हें लूट लो, और यदि वे मुसलमान हो चुके, तो फिर उन्हें क्षमा करो।" इस आदेशके अनुसार मुसलमानोंने भारतवर्षमें कार्यक्रम शुरूभी किया है। दंगे तथा उपद्रव, यह उसी प्रकारका एक अंग है। मुसलमानोंने जो दंगे किये हैं, उनमें उन्होंने किये हुए अत्याचार मानवताके मुखपर कालिख पोतनेवाले हैं। विशेषतः हिन्दु अबलाएँ और बच्चे, इनपर मुसलमानोंने जो नृशंस और

घृणाजनक अत्याचार किये हैं, उनका वर्णन करनेका सामर्थ्य वाणीमें है नहीं !!

हिंदुओंके अनेक कर्तृत्वशील नेता मुसलमानोंके इस हत्याकाण्डके बलि हो चुके हैं। कानपूरके 'प्रताप' पत्रके सम्पादक स्वर्गवासी श्री० गणेश शंकर विद्यार्थि एक खूनी मुसलमानके छूरेके बलि हो चुके। भारतको शत्रुभूमि माननेवालोंका आर्यसमाजपर अत्यन्त रोष रहा है, और इसीलिये आर्यसमाजके कई नेताओंका इन नराधमोंने वध किया है !! इस हत्याकाण्डका हिन्दुजनताको समग्र ज्ञान हो, इसलिये उसकी सूचि यहाँ दी जा रही है—

नाम	स्थान	किस शस्त्रसे वध किया
१ पं. लेखराम	लाहोर	छूरा
२ " तुलसीदास	फरीदकोट	,,
३ महात्मा रामचन्द्र	बुटहरा-जंभू	लठ
४ स्वामी श्रद्धानन्द	दिल्ली	पिस्तौल
५ म. राजपाल	लाहोर	छूरा
६ पं. नाथूरामल	कराची	,,
७ म. मेघराज	इन्दूर	,,
८ श्री. खण्डेराव	भडोच	लठ
९ सेठ जयराम	जोधपूर	छूरा
१० बद्रीशाह	बहराइच	,,
११ सरदार धर्मसिंह	लुधियाना	लठ
१२ लाला पालामल	कसूर	छूरा
१३ म. नानकचन्द	दिल्ली	,,
१४ लाला लुणीदाराम	कैम्बलपूर	पिस्तौल
१५ श्री. आयाराम काल्लूर	मियाँवली	छूरा
१६ सौ. आयाराम काल्लूर	मियाँवली	छूरा
१७ कन्या (आयाराम)	,,	,,
१८ श्री. देवकीनन्दनजी	कैम्बलपूर	,,
१९ ,, भैरवसिंह	अबू रोड	पिस्तौल
२० ,, पुरुषोत्तम शाह	गोधरा	छूरा
२१ ,, नारायणसिंह	पटना	,, तथा भाला
२२ ,, ब्रजलालजी	चिचौली	,,
२३ ,, नौबतसिंह	मीरपूरखास	,,
२४ ,, वीरूमल	कराची	,,
२५ ,, नेबन्दराम	सक्कर	,,
२६ श्री. भक्त फूलसिंह	रोहतक	पिस्तौल
२७ ,, कुलकर्णी वकील	सोलापूर	,,

सन १९३७ में होलीके दिन पानिपतके मुसलमानोंने एक मध्यमवयीन हिन्दु स्त्रीको जीवित जला दिया !!! उदाहरणभी कहाँतक दिये जायँ ? यदि अत्याचारोंका केवल उल्लेखही करना हो, तो ५०० पृष्ठ भर जायेंगे ! आश्चर्य यह है कि मुसलमान समाज, लेखकवर्ग तथा वृत्तपत्र इन सब कृत्योंका गौरवही किया करते हैं !!

हकीम तथा जर्रेवाले

भारतमें इस्लामीकरणका कार्य करनेवाला और एक गुट्ट है, हकीम तथा जर्रेवालोंका। कोई आश्चर्य नहीं है कि हिन्दुओंपर जीनेवाला यह वर्ग हिन्दुविरोधी कृत्योंको मुक्तहस्तसे सहायता किया करता हो। अशिक्षित हिन्दुओंमें जर्रेवालोंका महत्व अधिक हुआ करता है। ये जर्रेवालेही हिन्दुओंको पीरोंकी पूजा करनेके लिए उत्तेजित किया करते हैं, जिसके द्वारा इस्लामीकरणका चंचुप्रवेश हुआ करता है। हिन्दुओंका पैसा तो ये नोच लेतेही हैं, साथ साथ हिन्दु युवतियाँ और मनुष्योंको भी अपने झुण्डमें खींच लेते है।

मुसलमान वेश्या

मुसलमान वेश्याएँ तो इस्लामीकरणका कार्य बहोत अच्छी तौरसे कर रही हैं। इनके विषयमें ख्वाजा हसन निझामीने लिखा है, "ये स्त्रियाएँ यत्न करनेपर इस्लामका प्रचार बहुत बडे प्रमाणपर कर सकती हैं। मैफलमें ये इस्लामधर्मविषयक गझल गायँ तथा इस्लामका श्रेष्ठत्व श्रोताओंके मनपर अंकित करें।" गानेका धन्धा करनेवाला वर्ग बहुशः मुसलमान होनेसे कई मुसलमानी चीजें हिन्दुओंको कण्ठस्थ हो चुकी हैं। 'मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे' यह गीत तो कुछ दिनोंके पहले खूब लोकप्रिय हो चुका था।

ख्वाजा हसन निझामीने की हुई सूचनाको मुसलमान वेश्याएँ बडी अच्छी तौरसे अमलमें लाया करती हैं। मुसलमान वेश्याओंके लिए अपने द्रव्यका व्यय करनेवाले कई माईके लालोंसे वाचक परिचित होंगे। केवल दो उदाहरणही देना पर्याप्त होगा।

हिन्दु किसानोंको ठोक-पीटकर उनसे पैसे वसूल करनेवाला एक यू० पी० का हिन्दु जमींदार लखनौकी ×××× इस मुसलमान वेश्याको २५००० रुपियोंकी एक साडी दे चुका है ! और भी उस वेश्याके लिये उसने एक बंगला बनाया हुआ है। बिहारके ×××× इस गाँवकी घटना तो बोध लेने लायक है। एक मुसलमान वेश्यासे इस गाँवके हिन्दु जमींदारको प्रेम हो गया। मुसलमान वेश्याने भी उस जमींदारके साथ प्रेमका नाटक खूब अच्छी तौरसे रचा। वह बावला हिन्दु जमींदार उस नाटकसे यहाँतक पागल हो गया, कि उस मुसलमान पण्यांगनाके कारण घरदार छोडनेतक बारी आ गई। आखरी उसके हितचिंतकोंने उससे यह कहा कि उस मुसलमान वेश्याकी शुद्धि कर—उसे हिन्दु बनाकर फिर उससे ब्याह कर लिया जाय। कामातुर जमींदारको यह बात एकदम मान्य हो चुकी, और उसने जाकर मुसलमान वेश्यासे यह विचार कहा। परन्तु मुसलमान वेश्याने धर्मान्तरके लिये अपनी असम्मति प्रकट कर जमींदारसे कहा, "मैं केवल तुम्हारा प्रेम चाहती हूँ, और शायद वह मुझे नहीं मिलेगा, इसलिये मैं मक्का-शरीफ जाऊंगी।"

कुछ दिनोंके पश्चात् वह वेश्या सचमुच मक्का चली गई। जाते समय उस जमींदारकी सब सम्पत्ति अपने नाम करवानेको वह नहीं भूली। उस वेश्याको अपनी सब सम्पत्ति देनेके पहले जमींदार महाशय उसे एक ट्रस्टको दे चुके थे। उस ट्रस्टके व्यवस्थापक, इस नाते वे स्वयं देख भाल कर रहे थे। अब वह सम्पत्ति मक्कासे लौटी हुई उस वेश्याको दी गई है। आज भी वे जमींदार महाशयही उस सम्पत्तिके व्यवस्थापक हैं। कोई शंका नहीं है, कि उस सम्पत्तिका उपयोग उनके पश्चात् इस्लामीकरणकी ओरही होगा।

फेरीवाले

मुसलमान टाँगेवाले, इक्केवाले, फेरीवाले तथा वृत्तदूत, यह इस्लामीकरणका कार्य करनेवाला आठवा गुट्ट है। इनमेंसे फेरीवाले हिन्दुओंकी गलीगलीमें घूमकर हिन्दु स्त्रियोंके विषयमें खूब अच्छी तौरसे जानकारी करा लेते हैं, तत्पश्चात् फकीर तथा गुण्डोंकी सहायतासे उनको भगानेका षड्यंत्र रचा जाता है। ठीक समयपर टांगेवालों तथा इक्केवालोंकी सहायतासे उनको भगाया भी जाता है। लखनौमें इस प्रकार स्त्रियोंको भगानेवाली इक्केवालों तथा टांगेवालोंकी टोलीही पकडी गई थी।

और दो संस्थाएँ

इस प्रकार यह इस्लामीकरणका कार्य बडे उत्साहसे चल रहा है। विशेषतः उत्तरभारतमें इसका जोर अधिक है। बंगालमें तो स्वयं मुस्लिम लीगी मंत्रिमण्डलकी छत्र-छायामें हिन्दु अबलाओंके अपहरणका कार्य बहुत बडे प्रमाणपर चला करता है। सिन्धमें हिन्दुओंके वध, हत्याकाण्ड, लूट-खसोट तथा बलपूर्वक इस्लामीकरणके साथ हिन्दुओंका समूलोच्छेद करनेके षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। पंजाब तथा सीमाप्रान्तमें हिन्दुओंकी संख्या प्रतिदिन कम हो रही है। इस्लामीकरणका क्षेत्र दक्षिणभारतमें तथा जावा सुमात्रातक बढाया चुका है। दक्षिणभारतमें मलबार किनारेपर जिन दो संस्थाओंने हिन्दुओंको भक्षण करनेका कार्य चलाया है, उनमेंसे 'खुद्दाम-इ-काबा-खिलाफत' का नाम बहुत लोग जानते हैं। तुर्कस्तानसे राजनिष्ठ रहनेवाली तथा हिन्दुओंको काफिर कहनेवाली इस संस्थाको कई हिन्दुओंने द्रव्य देकर पुष्ट किया है। परन्तु वहीं जो एक दूसरी संस्था काम कर रही है, उसका नाम तथा कार्य हिन्दु नहीं जानते।

यह कट्टर संस्था 'जिहाद' –इस्लामप्रसारके लिये युद्धकी सिद्धता तथा संगठन किया करती है। सन १९२० में मलबारमें हिन्दुओंपर जो नृशंस तथा घृणास्पद अत्याचार किये गये, उनका संगठन, नियमन तथा मार्गदर्शन इसी कट्टर संस्थाके द्वारा हुआ !! एक दिन यह 'जिहाद' पुकारा गया। २० अगस्त १९२० को 'अली-मुसालीपुर' को खलिफा उद्घोषित किया गया, और उसके बाद हिन्दुओंपर अनन्वित अत्याचार हुवे। इन अत्याचारोंकी साधन-सम्पत्ति-गुण्डे तथा शस्त्र, पहलेही इकट्ठे किये गये थे, और उनके बलपर जिहादकी घोषणा की गई। इस जिहादमें जो अत्याचार हुए, उनका अधिकृत वर्णन आगे दिये जा रहा है—

"The Hindus were visited by a dire fate at the hands of the Mopalas, massacres, forcible conversions, desecration of temples, foul outrages upon women, such as rapping open,

pregnant women, pillage, arson & destruction in short all the accompaniments of brutal and unrestrained barbarism were perpetrated freely by the Moplas upon the Hindus untill such time as troops could be hurried to the task of restoring order through a difficult and extensive tract of the country. This was not a Hindu–Muslim riot. This was just a Barthalomeior."

इस हत्याकाण्डमें सहस्त्रावधि हिन्दुओंको बलात्कारपूर्वक मुसलमान बनाया गया !! हिन्दु इस बातको ध्यानमें रखें, कि मोपलाओंके इन अत्याचारोंका समर्थन सब कॉंग्रेसी मुसलमानोंने बडे जोरोंसे किया था।

खुद्दाम इ-काबाके समान पोन्नानाकी 'माऊ-माथुल-इस्लाम-असोशिएशन,' लखनौकी 'अदारे-दारुल्-मुबल्लगीन' (इस्लाम-प्रचारक-संघ), अम्बालाकी 'जमीयत-इ-तब्लीघ-उल्-इस्लाम' (the Society for propagation of Islam) यह कट्टर संस्था, (यह कट्टर संस्था केवल दो कार्य किया करती है। पहला शुद्धि संगठन-को परास्त करना, और दूसरा मुसलमानोंको जिहादके लिए तैयार करना), लाहौरकी 'अंजुमान इ-हिमायत-इ-इस्लाम,' तथा कादियान और लाहौर इन दो केन्द्रोंसे इस्लामीकरणके कार्य करनेवाली 'अहमदीया' संगठन–संस्था, '– तांझीम' का आन्दोलन तथा संगठना, इत्यादि संघ तथा संस्थाएँ हिन्दुओंका भक्षण करनेका कार्य बडी तन्मयतासे तथा सावधानीसे किया करती हैं।

इन सबोंको उद्देशित कर ख्वाजा हसन निझामी अन्तः-करणपूर्वक विनन्ति करते हैं, "इस आन्दोलनमें एक अत्यन्त महत्वकी बातकी ओर विशेष ध्यानपूर्वक लक्ष पहुँचाना चाहिये। अपने ध्येयकी ओर लक्ष केन्द्रित कर आपसके शिया, सुन्नी, वहाबी इत्यादि भेद कार्य करते समय सम्पूर्णतया भूल जाना चाहिये। भाईओं, उठो ! दुश्मन तुम्हारे बिरादरोंको मुरादित (धर्मभ्रष्ट) कर हिन्दु बना रहा है, और इस्लाम चिल्ला चिल्ला कर तुम्हें कह रहा है कि उठो, तुम्हारे पर जो कर्जा है उसे चुका दो, ताकि कयामतके दिन तुम्हें पैगम्बरके सामने शर्माना न पडे।" हसन निझामी आगे चलकर लिखते हैं, "जहाँ जहाँ काम शुरू होगा और उसकी प्रगति होती होगी, वहाँ यह ध्यान रखना चाहिये, कि उसकी खबर अख-बारोंमें जाहीर न हो। उसी प्रकार अखबारोंमें इस विषयमें एक अक्षर भी प्रकाशित न होना चाहिये कि कहाँ और कितने लोग मुसलमान बनाये गये।" सर्वत्र संचार करनेवाले मुसलमान प्रचारक इस सूचनाको बडी सावधा-नीसे अंमलमें लाया करते हैं।

भारतवर्षमें आज ७५ प्रतिशत हिंदु हैं। आजतकके मुसलमानीकरणके वेगका विचार करनेपर यह ज्ञात होता है कि, सामान्यतः प्रतिशत ५ हिंदुओंको मुसलमान बननेके लिये बीससे लेकर पचीसतक वर्ष लगा करते हैं। इसी गणितके अनुसार देखा जाय, तो भारतके सब हिंदु अगले तीन–चारसौ वर्षोंमें मुसलमान बन जाएँगे और भारतमें हिंदुओंका नामतक न बचने पायगा ! यदि ईसाइओंका आक्रमण ध्यानमें लिया जाय, तो इस कालको डेढ सौ वर्षोंसे कम करना होगा। भारतका निरीक्षण तथा परीक्षण बडी सावधानीसे कर उसका एक एक अंग निगलनेवाले पाश्चात्य लेखकोंकी तीक्ष्ण दृष्टि भारतके भीषण भवितव्यको देख चुकी है। एक सुप्रसिद्ध लेखक मेरे-डीच टाऊनसेण्डने बिलकुल स्पष्टतासे लिख रखा है कि—

"India, unless all is changed by intervention of some new force, must become a Mohamedan country." (M. Townsand, Asia & Europe.)

गालीब पाशाका आज्ञापत्र

सन १९१५ के फर्वरीमें पूर्व योजनाके अनुसार पेशावर, रावलपिण्डी, कोहट आदि नगरोंसे अनेक मुसलमान विद्यार्थी घर छोडकर भाग निकले। इन सब भगोडे मुसल-मान विद्यार्थिओंने किसी प्रकार भारतकी सीमा पार कर काबूलमें प्रवेश किया। यू० पी० के देवबन्द मुस्लिम विद्या-लयके दो कट्टर मौलवी भी इसी प्रकार भागकर काबूल पहुँचे। काबूलमें कुछ मुसलमान नेता पहलेसे जा बैठे थे। वहाँ जिहाद पुकारनेके विषयमें विचार-विनिमय किया गया, और तुरन्त हेजाज, इराक, मध्य एशिया, अफगाणिस्तान आदि देशोंमें प्रचारकोंके द्वारा इस कोनेसे लेकर उस कोने-तक जिहादका प्रचार किया गया। देवबन्दके दो मौलवी एक हस्तककी सहायतासे तुर्की सेनाधिकारिओंसे बातचीत कर उनके द्वारा हिन्दुस्थानके मुसलमानोंके नामसे जिहाद पुकारनेका एक आज्ञापत्र निकलवा चुके थे।

मौ० अन्सारी तथा मौ० आबेदुल्ला, ये दो मौलवी उस आज्ञापत्रककी प्रतिलिपियाँ भारतके कोने-कोनेतक पहुँचा चुके, तथा उसके बाद इस्लामके प्रचार तथा संगठनके कार्यमें भी संलग्न हो चुके। अफगाणिस्तानका कार्य समाप्त होते बराबर मौ० अन्सारी अरब पहुँचा। मौ० महंमूद हसन नामक उसका एक मित्र वहाँ पहलेसे उपस्थित था। उसके द्वारा अरबमें घटनेवाला षड्यंत्र रूप धारण करने लग चुका था। तुर्की सेनापति गालीबपाशासे इन दोनोंकी खूब बातचीत हो गई थी। इसी गालीबपाशाके द्वारा भारतके मुसलमानोंके लिये जिहादका फर्मान निकलवानेमें भी यह मौलवी-त्रय यशस्वी हो चुका था। मौ० अन्सारी तथा मौ० आबेदुल्लाके द्वारा भारतमें जिस पत्रकका प्रचार किया गया, वह गालीबपाशाकाही आज्ञापत्र था। किन्तु भारतमें सर्वत्र प्रसृत हो गये हुए इस आज्ञापत्रकका उपयोग मुसलमानोंको उठानेकी दृष्टिसे अपेक्षाके अनुसार नहीं हुआ।

परन्तु इस अपयशसे तीनों मौलवी निराश नहीं हुए। अरबमें पहुँचते बराबर मौ० अन्सारी तथा मौ० महमूद हसनने एक नवीन षड्यंत्र रचा। ये दोनों इस प्रयत्नमें लग चुके कि, मक्काके शेरीफकी ओरसे भारतीय मुसलमानोंके नामसे जिहादका आज्ञापत्र निकलवाया जाय। इस षड्यंत्रका पता साम्राज्य-सरकारको लग गया, और उसको समूल नष्ट करनेके लिये ब्रिटिश-गुप्तचर-विभाग सुप्रसिद्ध अंग्रेज गुप्तचर कर्नल लॉरेन्सको अरब भेज चुका। कर्नल लॉरेन्सने अरबमें पहुँचकर बडी कुशलतासे मक्काके शेरीफको इस षड्यंत्रोंसे अलग किया और यह षड्यंत्र अयशस्वी हुआ। इस प्रकार जिहाद पुकार कर भारतमें फिरसे एकबार इस्लामी अधिराज्य स्थापित करनेके यत्नका आकस्मिक अन्त हुआ। इस षड्यंत्रको 'पीली रेशमी चिट्ठिओंका षड्यंत्र' इस नामसे पहचाना जाता है। इस षड्यंत्रके जो पत्र भारतमें आ चुके थे, वे पीले रेशमी कोटके अन्तर्भागमें सीये गये थे।

इस अपयशसे भी जिहादके प्रचारक तथा प्रसारक और षड्यंत्रके रचयिता निराश नहीं हुए। किन्तु उनके भारतविरोधी कारस्थान द्विगुणित उत्साहसे शुरू हुए। इस उत्साहका कारण था तीसरा अफगाण युद्ध। यह तीसरा अफगाणयुद्ध अफगाण अमीर अमानुल्लाके नेतृत्वमें शुरू हुआ। इस अफगाण युद्धमें सीमापारकी सब वन्य टोलियाँ, मुजाहिदीनके स्वयंसेवक मौ० अन्सारी, मौ० आबेदुल्ला, मौ० बर्कतुल्ला, मौ० महमूद हसन, सब षड्यंत्रवाले जिहादके पुरस्कर्ता तथा प्रचारक इत्यादि लोग सम्मिलित थे। मौ० बर्कतुल्ला, मौ० आबेदुल्ला, मौ० अन्सारी आदि लोगोंका जो मण्डल काबूलमें भारतविरोधी कारस्थान रच रहा था, उसने एक प्रस्ताव किया था, जिसका एक महत्त्वका वाक्य आगे दिया जा रहा है— "If Amir agreed to join in the plot, he would be acknowledged as the King of India" कोई आश्चर्य नहीं कि इस मण्डलने अफगानयुद्धमें भाग लिया हो। भारतकी वायव्य सीमापर बारबार जो उपद्रव हुआ करते हैं, उनको भडकानेका काम इस मण्डलनेही किया है। अमीर हबीबुल्लाके वधके षड्यंत्रमें इन लोगोंकाभी कुछ भाग हो ऐसी शंका है। तबसे काबूलमें भारतविरोधी कुटिल कारस्थानोंका केन्द्र स्थापित हो चुका है। एक कट्टर मुसलमान लेखक इस बातको स्वीकार भी कर चुका है। 'Indian Moslem' इस महत्त्वपूर्ण पुस्तकका अज्ञात लेखक लिखता है, 'In Kabul, designs on India have long been lound a natural encubation.'

मुजाहिदीनके अनुयायी

अफगानिस्तानमें बैठकर भारतके विरुद्ध षड्यंत्र रचनेवालोंको सन १९१४ से लेकर आजतक अत्यन्त महत्त्वकी सहायता पहुँचानेका कार्य 'मुजाहिदीन' नामक मुस्लिम संस्थाने किया। आजकल भी ये मुजाहिदीनके लोग स्वस्थ नहीं बैठे हैं। जिहाद तथा इस्लामी साम्राज्यके पुनरुजीवनका सक्रिय प्रचार प्रसार करनेवाली इस संस्थाकी स्थापना सय्यद अहंमदशाहने की। यह अहंमदशाह यू० पी० के बरेलीका रहनेवाला था। यह अरबस्तानमें पहुँचकर वहाँपर वहाबी-पन्थका अनुयायी हो चुका। मक्काकी यात्रा करनेके कारण यह वहाबी-पन्थका कट्टर अनुयायी बन चुका। इसकी इस कट्टर धार्मिकताको और भी तीक्ष्ण तथा विद्रोही बनानेका कार्य उसके रोमरोममें बसे हुए सिक्ख-द्वेषने किया। कट्टर इस्लाम उपासक तथा पराकाष्ठाका सिक्ख द्वेष्टा, इस नामसे वह प्रसिद्ध था। वह

अपनेको सय्यद कहलाता था। पंजाबसे सिक्खोंको खदेड़-कर वहाँ इस्लामी राज्यकी पुनश्च स्थापना करनेके ध्येयसे प्रेरित होकर इस धर्मोन्मत्त गृहस्थने अविश्रान्त परिश्रम किये। सीमापारकी वन्य जातिओंकी सहाय्यता लेकर यह अनेक दंगे कर चुका। सीमाप्रान्तके नगरोंपर भी यह कई बार आक्रमण कर चुका। परन्तु उसमें वह अयशस्वी हुआ। सिक्खोंने उसे पराजित कर वापस लौटाया, और इस प्रकार सय्यद अहंमदशाहका जिहाद अयशस्वी हुआ।

यह जिहादका कार्य कदापि बन्द न होकर सदैव चलता रहे, और उसके बलपर भारतका ' दार-उल्-इस्लाम ' में रूपान्तर करनेवाली पार्श्वभूमि निर्माण हो, इस हेतुसे सय्यद अहंमदशाहने कट्टर मुसलमानोंका-भारतकेही अन्नपर पुष्ट होकर उसको ' दार-उल्-हरब ' माननेवालोंका जो उपनिवेश स्थापित किया, उसका नाम ' मुजाहिदीन ' है। सन १८६३ में इस आक्रमक उपनिवेशका मुख्य केन्द्र सिताना (Sitana) में था। यह बलशाली केन्द्र सिन्धु नदीके तटपर बूनेर (Buner) की सीमापार था। इस केन्द्रकी व्यवस्थाका सब भाग सय्यद अहंमदशाहके शिष्यसमूहने उठाया था। यह शिष्यवृन्द उस केन्द्रका संचलन तथा नियमन भी किया करता था। ऐसा प्रतीत होता है कि आज यह उपनिवेश पहलेसे दुगने उत्साहसे कार्य कर रहा है, अब इस उपनिवेशमें दो प्रमुख विभाग हो गये हैं। एक विभागका केन्द्र है चामरकन्द (Chamarkand) और दूसरेका है समस्ता (Samasta)

इस जिहाद-प्रिय उपनिवेशकी वृद्धि प्रतिदिन हो रही है। पंजाब, सिन्ध, बंगाल, यू० पी०, बिहार, इन प्रान्तोंसे कट्टर इस्लामी युवक येनकेन प्रकारेण इस उपनिवेशमें जाकर सम्मिलित होते हैं। पीठपर कश्मीरी ऊनी कपडोंका बोजा लटकाकर भारतमें घूमनेवाले इस्लामी फिरस्ते, फकीर तथा मुल्ला इस मुजाहिदीनकी भरतीका कार्य स्वयंस्फूर्तिसे किया करते हैं। मुजाहिदीनके 'चामरकन्द' विभागके भरतीका कार्य बंगाल तथा बिहारमें बडी अच्छी तौरसे हुवा करता है। बिहारमें ' अहली हादिस ' इस नामसे जो धनवान् व्यापारी वर्ग पहचाना जाता है, वह मुजाहिदीनके भरतीका कार्य बडी सावधानीसे किया करता है। कुराणकी आज्ञाके अनुसार आचरण करनेवाला यह व्यापारी गुट्ट भारतको ' दार-उल्-हरब ' माना करता है। केवल द्रव्यार्जनके लियेंही इस गुट्टको भारतमें रहनेका पाप करना पडता है। उस पापका क्षालन यह गुट्ट मुजाहिदीनको द्रव्य देकर तथा उसमें स्वयंसेवकोंकी भरती करवाकर किया करता है।

बंगालमें रंगपूरसे भी मुजाहिदीनके चामरकन्द केन्द्रकी भरती हुआ करती है। इस केन्द्रका संवर्धन तथा उसमें गाझीओंकी भरती करनेका भाग पंजाब तथा सिन्धने अपने सरपर उठाया है। भारतमें हिन्दु अबलाओंपर अत्याचार कर गुप्त होनेवाले अनेक गाझी मुजाहिदीन-उपनिवेशमें आश्रय पाते हैं। इपीके फकीरका विद्रोह, सीमाप्रान्तमें समय समयपर हिन्दुओंपर होनेवाले अत्याचार तथा हिन्दु अबलाओंका अपहरण, उसी प्रकार सीमाप्रान्तपर बारबार होनेवाले वन्य टोलिओंके आक्रमण, इन सबकी प्रेरक तथा संचालक शक्ति मुजाहिदीन उपनिवेशही है।

जिहाद तथा इस्लामी राज्य निर्माण करनेका प्रचार मध्यवर्ती विधिमण्डलसे लेकर किसी देहातकी मस्जिदतक चारों ओर बडे उत्साहसे चला करता है। सन १९३७ से यह भयानक प्रचार अधिक बल पा चुका है। भारतके बहुधा सब प्रान्तोंमें उपद्रव भी अतिभयानक प्रमाणमें तथा उग्ररूपमें होने लगे हैं, और तभीसे यह भी अनुभव हो रहा है कि, कई प्रान्तोंमें मुसलमान राज्य स्थापित हो चुका है। सन १९३७ से लेकर ४५ तक पाँच बडे प्रान्तोंकी हिन्दुप्रजा भारत-संरक्षण तथा मुस्लिमराज्य इन दो दबावोंके बीच निर्घृणतासे रौन्दी गई है।

भारतको ' दार-उल्-हरब ' माननेकी घोषणा हो चुकी है, और उस घोषणाके अनुसार उद्योग तथा कारस्थानभी होने लगे हैं। केन्द्रिय विधिमण्डलके एक मुसलमान सदस्य काजी महम्मद अहम्मद काझमी, जो कि राष्ट्रीय मुसलमान पक्षके अधिकृत इच्छुक थे, दि० ६ अगस्त सन १९३८ में केन्द्रिय विधिमण्डलमें भारतको 'दार-उल्-हरब' माननेकी घोषणा कर चुके। हिंदु नेता राष्ट्रीय मुसलमानके नाते जिस गृहस्थको सरमाथे किया करते थे, उस काझमीके उन महत्वपूर्ण शब्दोंका हिंदु खूब अच्छी तौरसे मनन करें। वे शब्द इस प्रकार हैं—

" It was at that time the Mussalmans began to think and consider whether India was, " Dar-ul-Harab, " or " Dar-ul- Aman " or " Dar-ul-Islam. " It was at that time that continuous agitation was carried on by Mussalmans and they decided that India was not "Dar-ul-Islam" it ceased to be "Dar-ul-Aman" and it was " Dar-ul-Harab. " Even uptil to-day certain of our prayers are offered on the basis that it is " Dar-ul-Harab. "

काझमी महोदयकी उपरिलिखित घोषणाका अभ्यासु वृत्तिसे विचार करनेवाला 'अॅन्युअल रजिस्टर' जिन महत्त्वपूर्ण पंक्तिओंको लिख चुका है, वे ये हैं—

" Here we think we get an inside view of the mind of the Mussalmans in India, who under the influence of old world-ideas are being taught every-day of their life in their mosques that India is a country of enmity. We have been told of a sect among the Muslims of Bengal about 30 lakhs strong to whom congregational prayers are prohibited owing to an injunction of Quoran. Because in enemy countries the life of the faithful assembled in a congregation of prayer was likely to be exposed to attacks leading to mass massacre. This daily repetition of India being an enemy country, the offering of daily prayers, based on the thought or belief that India was " Dar-ul-Harab; " This practice creates and starts those mental processes that make the Muslims in India so impatient that make possible the outburst of violence of thought and action at the slightest occasion. "

इन पंक्तिओंसे स्पष्ट हो चुका है कि हिन्दु जनतापर सदैव होनेवाले आक्रमण मसाजिदोंमेंसे क्यों होते हैं ? मुस्लिम-संचालित वृत्तपत्र इस आगीमें घी डालनेका काम बडी सावधानतासे तथा चातुर्यसे किया करते हैं। डाक्काका अतिभीषण बलवा शुरू होनेके पहले हिन्दुओंको भयकी अग्रलिखित सूचना दी गई थी—

" The time has come to show the little rats that the lion is not dead, but only sleeping. They will have their answer. They will see to whom Bengal belongs. They shall be taught the lesson they need. "

यह उस भयंकर पाठकी सूचना थी, जो डाक्का तथा उसके पडोसके चालीस गाँवोंको पढाया गया !!!

यह भयप्रद बलवा शुरू होनेके पहले कुछ दिन सन १९४१ के मार्चमें मैमनसिंग विभागमें Kalihati and Ghatai Muslim League Conference मनाई गई। उस परिषद्में स्वागताध्यक्ष महाशय जिस कविताको गा चुके, वह महत्त्वपूर्ण तथा अर्थपूर्ण होनेसे उसका प्रसिद्ध किया हुवा अंग्रेजी अनुवाद आगे दिया जा रहा है—

" The oppressed remain silent by seeing the hypocracy of the idolators, Oh death-like eddy :

Oh victorious soldiers ! March forward on our religious pilgrimage to the Kaaba under the banner of League.

We shall spill as much blood as required.

We want Pakistan, a proper division.

If it cannot be achieved by words, Muslims are not affraid to use swords and spears.

Where are the Muslim youths ! we shall attain the desire of their hearts by tying down the wild tiger.

Come quickly break-down Somanath.

If you want freedom, Burn, Burn, Burn the Hindu houses and let all troubles end. "

इस परिषद्के समाप्त होनेके बाद डाक्कामें एक अति भयानक स्वरूपका बलवा प्रारम्भ हुआ। एक दो दिनोंमें उस बलवेकी आग इर्दगिर्दके चालीस गाँवोंमें जा पहुँची। इस बलवेमें हिन्दुओंके घर जलाए गए, दुकान लूटे गए, हिन्दु युवतियाँ भगाई गईं, अनेक हिन्दुओंको बलपूर्वक मुसलमान बनाया गया। ये सब अत्याचार दिन दहाडे होनेपर भी बंगाल पुलिसने-जिसमें कि मुसलमानोंकी संख्या अत्यधिक है—इन अत्याचारोंको रोखनेके लिए हाथतक नहीं उठाया। अनाथ, भयग्रस्त तथा पीडित हिन्दुजनता घरदार छोडकर आश्रयके लिए त्रिपुरा संस्थानमें जा पहुँची। त्रिपुराके उदारधी नरेशने

उन अनाथ हिन्दु लोगोंको-जिनमें कि स्त्री-पुरुष, तरुण-वृद्ध, बाल-बालिकाएँ और तीन महिनोंसे पन्धरह दिनोंतक बच्चे भी थे—आश्रय दिया, और अन्नवस्त्र भी। डाक्का तथा पडोसके देहातोंमें हिन्दुओंपर जो अत्याचार किए गए, वे वर्णनातीत हैं। बलवेकी खबर मिलते बराबर डॉ० शामा-प्रसाद मुकर्जी डाक्का जा पहुँचे। उन्होंने बलवेके विषयमें जो कुछ कहा, वह बलवेकी कल्पना आनेके लिए पर्याप्त है, इसलिए यहाँ दिया जा रहा है—

" Building after building in Chouk Bazaar, Moghul Toli Bazaar, Raisahib Bazaar, have been looted and burnt in broad daylight, obviously when Police force was in charge of those areas. It was in one of those areas that we came across an angry Muslim mob, armed with deadly weapons, freely moving about although section 144 was in force. "

इस बलवेकी तथा दूसरे उपद्रवोंकी जाँच करनेके लिए एक समिति नियुक्त की गई। उस समितिके रिपोर्टका एक वाक्य इन बलवोंपर पर्याप्त प्रकाश डालनेवाला है, इसलिए वह यहाँ उद्धृत किया जाता है—

" There can be little doubt that information of the manner in which they were stayed had been noted throughout Bengal and the probable result would be to create an impression that the Govt. would refrain from active prosecution of creminal proceeding arising out of communal disturbances particularly where Muslims were concerned. "

आश्चर्य करनेका कोई कारण है नहीं, कि जिस स्थानपर इस प्रकारका पक्षपाती मंत्रिमण्डल दंगाइयोंको हर प्रकारका सहाय्य करनेको उद्यत रहता है, वहाँ ऐसे उपद्रव निर्माण होकर हिन्दुजनताका हत्याकाण्ड किया जाय। कुलटीमें तो स्वयं बंगालकी पुलिसही असहाय हिन्दुओंका संहार कर चुकी है। डाक्का, नोआखाली, पबना और मैमनसिंग आदि जिलोंमें हिन्दु दिनदहाडे मुसलमानोंके द्वारा लूटे गए, तथा उनके घर जलाये गए। सन १९४४ में खुलना जिलेमें हरिजनोंपर भी इसी प्रकार अत्याचार किए गए।

*

पाकिस्तानी राज्य

बंगालमें हिन्दुजनतापर जो अत्याचार हो रहे हैं, तथा हिन्दु अबलाओंका जो अपहरण हो रहा है, उसमें सन १९३७ से एक नई बाढ आ चुकी है। इस भयप्रद बाढका कारण है मुसलमानोंका पाकिस्तानी शासन। बंगालमें सन १९३५ तथा ३६ इन दो वर्षोंमें केवल ७ दंगे हुए। परन्तु जबसे पाकिस्तानी राज्यशासन प्रारम्भ हुआ, तबसे लेकर अग्निकाण्ड, हत्याकाण्ड तथा अबलाओंका अपहरण, इनमें चौगुनी वृद्धि हुई। काँग्रेसने भी अपनी नीतिसे इस लीगी शासनको कुछ थोडासा सहाय्य पहुँचाया हुआ है। काँग्रेसकी नीतिसेही बंगालकी हिन्दु प्रजा इतनी अधिक कुचली गई। बंगालके गत चुनावमें हक्क मियाँकी कृषक पार्टीके लोग बहुसंख्यासे चुने गए थे। काँग्रेस और मुस्लिम लीगको भी कई स्थान मिल चुके थे। फजलूल हक्कने मंत्रिमण्डल बनानेके लिये काँग्रेससे सहायता माँगी। परन्तु काँग्रेसने वह अत्यन्त आवश्यक सहायता नहीं दी, जिससे लीगको सन्धि मिल चुकी। आगे चलकर लीगी मंत्रिमण्डल अधिकारारूढ हो चुका, और बंगालमें-वन्दे मातरम्की जन्मभूमिमें ' दार-उल्-हरब ' को 'दार-उल्- इस्लाम' बनानेके लिये निश्चयसे और मुसलमानोंकी निसर्गजन्य प्रतिगामी वृत्तिके बलपर पाकिस्तानी शासनका प्रारम्भ हो चुका। इस वर्ष मुसलमानोंने छः दंगे किये। सन १९३८ में यह संख्या बढकर २४ हुई। सन १९३९ से लेकर १९४० तक कुल ३७ दंगे किये गये, और इन बलवोंमें अगणित हिन्दु अबलाओंका अपहरण किया गया। पशुता भी शरमा जायगी, ऐसे अत्याचार उनपर किये गये, और अनेक हिन्दुओंको बलात्कारपूर्वक मुसलमान बनाया गया।

सिन्ध-प्रान्तमें

सिन्धप्रान्तमें तो हिन्दु अबलाओंका अपहरण तथा हिन्दुओंके वध नित्यशः हुआ ही करते है। यहाँपर भी लीगी मंत्रिमण्डलके द्वारा शासन चलाया जाता हैं। सन १९२९ में जो एक भीषण दंगा सक्करमें हुआ, उसपरसे इस हिन्दु-हननकी कल्पना की जा सकती है। इस दंगेके निमित्तसे हिन्दुओंका अतिभयंकर संहार किया गया, तथा उनकी सम्पत्ति लूटी गई। मानवी रक्तको सुखानेवाले इस अतिभयंकर उपद्रवके अधिकृत वृत्तमें अग्रलिखित बातोंको स्वीकृत किया गया है—

"१४२ हिन्दु शस्त्रोंसे मारे गये, १० हिन्दु जीवित जलाए गए, ५८ हिन्दु घायल हुये, जिनमेंके ९ परलोक सिधारे, १६४ हिन्दुओंके घर जलाय गये, और ४६४ हिन्दुओंके घर लूट लिये गए। कुछ हिन्दु युवतियाँ भगाई गईं ।" डॉ० चोइतराम गिडवानीने इस दंगेके वि यमें जो एक पत्रक प्रकाशित किया है, उसमें भी इसी प्रकार क्षोभजनक वृत्त दिया गया है।

ऐसी शंका की जाती है कि सक्करमें हिन्दुओंपर जो आक्रमण हुआ, उसके पीछे कोई योजनाबद्ध संगठन होगा। परन्तु इस दंगेमें किसीने नेतृत्व नहीं किया। सक्करमें गीताजयन्तीके समय प्रो० मलकानी सक्करके दंगेका उल्लेख कर हिन्दुओंपर भडक उठे। इस घुस्सेका कारण प्रो० मलकानीने यह बताया कि, सक्करके भीषण बलवेमें एक-दो मुसलमान मर गए! इन मरे हुए मुसलमानोंके लिए जो जाँच हुई, उसके फलस्वरूप पुलिसोंने कुछ हिन्दुओंको पकडकर उनपर केस चलाई, परन्तु वे निर्दोष सिद्ध हुए, अतएव मुक्त किए गए। फिर भी प्रो० मलकानीने हिन्दुओंपर पुष्पांजलि अर्पित कर उनको यह फर्माया कि, हिन्दु लोग उन एक-दो मुसलमानोंके वधका प्रायश्चित्त करनेके लिए सिन्धु नदीमें डूब मरें!!! कैसी अजीब राष्ट्रीयता है? परन्तु सुननेलायक कहानी अभी समाप्त नहीं हुई है। सक्करके दंगेमें निराश्रित हो गए हुए हिन्दुओंको सहाय्यता करनेके लिए बम्बईके सिन्धी व्यापारी सिन्ध प्रान्तिक कॉंग्रेस कमेटीके एक अध्वर्यु सेठ ईसरदास, एम्. एल्. ए. के पास ३० सहस्र रुपिये दे चुके। परन्तु यह द्रव्य निराश्रित हिन्दुओंके लिये खर्च होने नहीं पाया। उसमेंसे कुछ भाग कॉंग्रेसके त्यागी देशभक्तोंके वेतनमें खर्च हुआ। और अत्यन्त लज्जाकी बात यह है कि, जब मौ० आझाद सिन्धमें गए, तब उनको उस द्रव्यमेंसे १०००० रुपियोंकी भेंट की गई!! कॉंग्रेसके इस पापको डॉ० टिल्लूमल तथा श्री० लालचन्द आर्य प्रकाशमें ला चुके। ऐसे कितने पाप भूतकालके पडदेमें छिपे हुए हैं! किन्तु हिन्दुजनता, तू कहाँ?

हिन्दुओंपर बहिष्कार

सिन्धमें मुस्लिम लोगने इस्लामियोंकी अर्थशक्ति बढानेके लिये Buy Muslim यह नया आक्रमक आन्दोलन चलाया है। उस आन्दोलनके निर्मितिका तथा संवर्धनका श्रेय जी० एम्० सय्यदको है। यह आन्दोलन सिन्धमें खूब बढ चुका है। अन्य प्रान्तोंमें भी इसको पहुँचाया जा रहा है। सिन्धके अहरारपक्षीय नेता चौ० अफजल हक अपनी पुस्तकमें स्पष्ट शब्दोंमें कह चुके हैं कि, हिन्दुओंके इस आर्थिक बहिष्कारका आन्दोलन आखिल मुस्लिम जनताका है। अफझल हक महाशयके वे शब्द आगे उधृद्त किये जाते हैं—

"···· whenever any, and commercial agitation is started, it always follows or ends in slogen of defensive bycott of the Hindu shops. This slogen touches the heart of the people more than anything else."

आगे चलकर हक महोदय फर्माते हैं,-

"This defensive bycott of Hindu-shops, therefore, is essentially a mass-movement. With the awakening of Muslim masses, the bycott movement will gain strength and volume."

(Pakistan & Untouchability. p. 54, 55)

कॉंग्रसके नेता तथा वृत्तपत्र जिस अहरार पक्षको 'राष्ट्रीय' इस नामसे सम्बोधित करते हैं, वह अहरार पक्षही हिन्दु दुकानोंको बहिष्कृत करनेका यह आन्दोलन चलाया करता है। हिन्दु युवकोंके हृदयसम्राट् त्यागमूर्ति भगतसिंगके भाई सरदार कुलबीरसिंगने एक प्रश्नके द्वारा इस अहरार पक्षके स्वरूपपर पर्याप्त प्रकाश डाला है। उन्होंने चौ० अफझल हकसे पूछा था—

"How is it that no sooner does the Ahrar influence increase in a certain locality than Hindu-shops are closed down & Muslim-shops are opened and the bycott movement gains ground?"

चौ० अफझल हकने इस प्रश्नका दिया हुआ उत्तर अहरार पक्षका अन्तरंग स्पष्ट करनेवाला है। उन्होंने कहा था,

"When they (Musalmans) review the situation and study the position in the light of those lectures, they find the Hindu, the worst aggressor than the foreigners in this respect." (ibid, p. 58)

इस पुस्तकमें चौ० हक सारे परदोंको हटाकर अग्रलिखित स्वीकृति स्पष्ट शब्दोंमें दे चुके हैं। महन्तबाजीसे ढोंगसे तथा वृत्तपत्रोंके प्रचारसे ठगे जानेवाले हिन्दु इन पंक्तिओंका मनन करें—

" .... it has become my habit not to buy anything from a Hindu-shop. "

इसके बाद इस जखमपर नोनका पानी छिडकते हुए चौ० हक कहते हैं,—

" I do not hate any Hindu still my steps seldom turn towards a Hindu—shop. " (p. 79)

हिन्दु समाज अपनी सहानुभूतिके द्वारा अपने नाशके लिए उद्युक्त उन्हीं शत्रुओंको पुष्ट कर रहा है, जो कि भारतको शत्रुभूमि कहते हैं, हिन्दु दुकानोंको बहिष्कृत करते हैं तथा उसके लिए पर्याप्त प्रचार करते हैं । यह नहीं है कि केवल ' Buy Muslim ' के आन्दोलनको चलाकर ही सिन्धके पाकिस्तानवाले चुपचाप बैठे हैं । हिन्दुओंकी अर्थशक्ति नष्ट करनेके लिये और भी कुछ उपायोंका अवलम्ब किया जाता है । इन प्रयत्नोंका ज्वलन्त उदाहरण है वे विधिनियम, जो कि सिन्धमें सम्मत हो चुके हैं, तथा ' Black Bills ' इस नामसे पहचाने जाते हैं । सीमाप्रान्त, पंजाब तथा बंगालमें भी इसी प्रकारके प्रयत्न अत्यन्त सावधानतासे परन्तु निश्चय-पूर्वक किये जा रहे हैं । लीगी मंत्रिमण्डल हिन्दुओंकी अर्थ-शक्ति नष्ट करनेके लिए आवश्यक उन सब नियमोंको बना रहे हैं । प्रो० अबदुल्ला सफदर तो स्पष्ट शब्दमें कह चुके हैं कि—

"Of course in certain provinces the Muslim money-lending and feudal classes use the State power for crushing their economic rivals by legislating various quasi-anti-usurious bills, and by enforcing them against the Hindu money-lenders. In practice the State here defends the economic position of the Muslim feudal lords, and money-lenders, though it proclaims itself the guardian of the downtrodden mass particularly the peasantry."

आसामका आन्दोलन

बंगालके अनुसारही आसामको भी सम्पूर्णतया मुसलमान बनानेके दृढ निश्चयसे इस्लामियोंके उद्योग शुरू हुवे हैं । अनेक सूक्ष्मासूक्ष्म मार्गोंसे आसाममें मुसलमानोंकी संख्या बढानेके यत्न किये जा रहे हैं । आसामी हिन्दुओंको और तथाकथित वन्य जातियोंको इस्लामधर्मकी झुण्डमें खींचनेके यत्न इस्लाम-मिशन-सोसायटीके द्वारा हो रहे हैं । इस संस्थाका मुख्य केन्द्र है शिलाँग । सन १९४० के १० मार्चको इन सोसायटिओंकी एक परिषद् हुई थी, जिसमें उसको कार्यवाह बोले—

" I will not dabble in Politics. But I sincerely believe that this ' Islam Mission Society ' can do openly, peacefully and lawfully what others of our Muslim organizations cannot do in similar way. This 'Islam Mission' can turn a minority, in course of few years, into an overwhelming majority and easily solve the baffling problem of Assam Politics. "

बलपूर्वक धर्मान्तर, हिन्दु अबलाओंका बहुत बडे प्रमाण पर होनेवाला सामूहिक अपहरण, उनपर प्रतिदिन होनेवाले अमानुष अत्याचार, हत्याकाण्ड, अग्निकाण्ड और चढते प्रमाण-पर होनेवाले दंगे एकही उद्देशकी नींवपर अवस्थित हैं । कुरानके मतानुसार सब देशोंका तीन भागोंमे बँटवारा होता है । जिस देशमें इस्लामिओंका राज्य है, वह देश ' दार-उल्-इस्लाम ' के नामसे पहचाना जाता है । इस देशका शासन कुरानके आदेशानुसार चलता है । ' दार-उल्-अमन् ' इस नामसे जो देश पहचाना जाता है, उसपर प्रत्यक्ष इस्लामका राज्य न हो, तो भी चल सकता है । फिर भी इसके सब व्यवहार ' दार- उल्-इस्लाम ' के समान कुरानके तथा मुसलमानी विधानके अनुसार चलने चाहिये । मुसल-मानोंके लिये इन दोही देशोंमें रहनेकी आज्ञा की गई है । तीसरा विभाग है ' दार-उल्-हरब, ' जिसमें कि कुरानकी आज्ञाके अनुसार मुसलमान रह नहीं सकते ।

इस आज्ञाकेही कारण सय्यद अहम्मदशहाने भारतवर्षको त्याग कर मुजाहिदीन नामक स्वतंत्र उपनिवेश स्थापित किया । ' दार-उल्-हरब ' इस नामसे पहचाने जानेवाले भूभागके विषयमें मुसलमानोंके दोही कर्तव्य हो सकते हैं; एक उसका त्याग करना, और दूसरा उस देशको विजय कर ' दार-उल्-इस्लाम ' बनाना । इसी उद्देशको लेकर मुसलमानोंके सब उद्योग चल रहे हैं । ' इस्लामी अधिराज्यकी स्थापना ' इस निश्चित ध्येयको लक्षित करही इस्लामी नेताओंके सब व्यवहार चल रहे हैं । विशेषतः उत्तर भारतमें इन प्रयत्नोंका जोर अधिक है । परन्तु यह समझनेका कोई कारण नहीं है कि दक्षिण भारत इनसे

सर्वथा मुक्त है। बम्बई तथा अहमदाबाद, इन दो स्थानोंमें मुसलमानोंने जो अतिभीषण उपद्रव किये, वे इस विधानके सम्पूर्णतः समर्थक हैं। दक्षिणभारतमें इस्लामके प्रचार तथा प्रसारके लिये निधि एकत्र करनेका काम भी बडी सावधानतासे चल रहा है। कहनेकी कोई आवश्यकता है नहीं, कि उस निधिका उपयोग कहाँ और कैसे होगा।

भारतमें इतस्ततः फैली हुई रियासतें भी इस्लामी प्रचार तथा प्रसारमें सहयोग दे रही हैं। इन रियासतोंके विषयमें बहुत कुछ पहले लिखा जा चुका है। भोपाल रियासतमें एक कट्टर मुस्लिम सेना निर्माण की जा रही है, जिसमें ४००० से कुछ अधिक आफ्रिडी तथा पठाण हैं। इस रियासतमें कट्टर तथा इस्लामनिष्ठ युवकोंको भी सैनिकी शिक्षा दी जा रही है। इस विषयमें 'आवाज' नामक हिन्दी वृत्तपत्र लिखता है, 'इस सेनाका संगठन भोपाल-नबाबकी इच्छानुसार हो रहा है। यह सेना भोपालके आसपासके इलाकेमें, राज्यके संरक्षणके तथा इस्लामके प्रचारके लिये निर्माण की जा रही है। भोपाल नबाब शायद औरंगजेब बननेका स्वप्न देख रहे हैं।'

निझामकी रियासतमें अरबोंकी भरती नित्य हो रही है। इस रियासतके मुख्य मंत्री सर अकबर हैदरी जब पेशावरके इस्लामिया कॉलेजका उद्घाटन करने गये थे, तब पेशावरकी महाबदखाँ मस्जिदमें सीमाप्रान्तके सब मौलवी तथा अकबर हैदरी, इनकी आपसमें भेंट हुई थी। भेंट समाप्त होनेपर अकबर हैदरी सीमापार गए, और उन्होंने भारतके हिन्दु स्त्री-पुरुषोंको भगानेवाले, वारंवार उत्पात मचानेवाले, वन्य, सुधारणाओंसे कोसों दूर रहनेवाले कट्टर मुसलमानोंके नेताओंसे बातचीत की।

मुस्लिम लीगके अध्यक्ष कायदे आजम जिन्नासाहब भी बलुचिस्तान जाकर बलुची लोगोंसे मिल आये थे। उन्होंने निझामके चरणोंपर सर्वस्व अर्पण करनेवाली उन आफ्रिडी जातिओंको एक सन्देश भी भेजा था, जिसमें उन्होंने लिखा था—

"The Musalmans of India have great faith and hopes in you, and believe that, you will be unconquerable soldiers of Islam like your unconquerable rocks and through you Islam in India will be able to revive the glorious past."

कायदे आजमके इस सन्देशसे प्रकट हुआ है कि उन्होंने की हुई पाकिस्तानकी घोषणा मुस्लिम राज्यके पुनरुज्जीवनके लिएही है। मुस्लिमोंके मतानुसार भारतभूमि 'दार-उल्-हरब' है। इस शत्रुभूमिको 'दार-उल्-इस्लाम' करनेके उद्देशसे पाकिस्तानकी घोषणा की गई है। पाकिस्तान यह मुसलमानोंका अन्तिम ध्येय है नहीं। इस माँगका उद्देश सर्वथा भिन्न है। पाकिस्तानका वास्तविक आविष्कार डॉ० जाकीर हुसेनने कराचीके 'यंग मेन्स मुस्लिम असोसिएशनमें,' जो कि कायरोके जमियत्-अशशुब्बनकी शाखा है, दिए हुए एक व्याख्यानके रूपसे किया है। डॉ० जाकीर हुसेन कहते हैं, कि "विश्वव्यापी इस्लाम पाकिस्तानकी मर्यादाओंको कदापि मान्य नहीं करेगा।" मुसलमानोंके और एक कट्टर नेता चौ० खलिकुझमाँ, जो एक बार युक्त प्रान्त काँग्रेसके अध्यक्ष थे, अपने लाहोरके भाषणमें पाकिस्तानकी माँगका अन्तस्थ हेतु प्रकट कर चुके हैं। उन्होंने कहा था,—

"Muslims, therefore, are destined to be the rulers of India. Pakistan is not the final demand of Muslims but only the first stage towards a pan-Islamic world power."

मुसलमान नेता, फिर वे चाहे जिस पक्षके हों, पाकिस्तान, दार-उल्-हरब, और इस्लामका पुनरुत्थान इत्यादि घोषणाओंपरही रुक नहीं गए। उनके अधीन जिन पाँच प्रान्तोंका राज्यतंत्र आ चुका, वहाँ अधिकाधिक प्रयत्न कर वहाँकी मुस्लिम जनतामें उन्होंने पाकिस्तानका बीज बो दिया। यह बीज अब वृक्षरूप हो चुका है। आजकल मुसलमानोंकी धर्मोन्मत्ततामें जो एक बाढ आ चुकी है,हिन्दुओंपर डाला हुआ आर्थिक बहिष्कार जो प्रतिदिन उग्रतर रूप धारण कर रहा है, हिन्दु युवतिओंके अपहरणमें जो वृद्धि हो रही है, उसपरसे यह कल्पना की जा सकती है कि,पाकिस्तानके निमित्तसे बोया गया यह इस्लामी अधिराज्यका बीज कितनी गहराईतक पहुँच चुका है। दुःखकी बात यह है कि इस विषाक्त बीजको खादपानीके द्वारा परिपुष्ट करनेका काम हिन्दुओंके राष्ट्रीय नेता तथा उन्होंने हिन्दुजनतासे इकट्ठा किया हुआ द्रव्य कर रहा है। भारतके पाँच प्रान्तोंमें उठा हुआ पाकिस्तानका पदचिन्ह अपनेको हिन्दु कहानेको शरमानेवाले महापुरुषोंकी सहायतासेही उठ सका है। मुसलमानोंने विनायास मिली हुई राज्यसत्ताका उपयोग हेतुपूर्वक हिन्दुओंकी शक्ति क्षीण करनेमें किया है। ये प्रयत्न यहींपर रुके नहीं हैं। इतरत्र भी हिन्दुओंको बाजू हटानेके यत्न किये जा रहे हैं। डाक विभाग तथा रेल्वेमेंसे

हिन्दुओंको बडी सावधानीसे एक ओर हटाया जा रहा है। रेडिओ विभाग तो प्रकटतासे हिन्दुसंस्कृतिको उखाडनेके यत्न कर रहा है। हिन्दुराष्ट्रका सर्वनाश करनेवाली कृत्या अपने पैर चारों ओर फैला रही है। हिन्दुजनताके सर्वस्वका नाश होने जा रहा है!!!

परन्तु तथाकथित राष्ट्रीय नेतागण राष्ट्रघातक अहिंसाका बुरका ओढकर इस आपत्तिकी ओर हेतुपूर्वक दुर्लक्ष कर रहा है, इतनाही नहीं तो इस महान तथा सर्वस्वनाशक आपत्तिको अपने बर्तावसे संजीवन दे रहा है। भारतमेंसे हिन्दुओंको उखाडनेके ये जो षड्यंत्र चल रहे हैं, उनको 'कम्युनिस्ट' नामको धारणकर भारतमें उत्पात मचानेवाले तथा अपनेको ' रॉयिस्ट ' कहलवाकर लोगोंके सामने "जनता योजना" उपस्थित करनेवाले हिन्दुही अप्रत्यक्षतया सहायता पहुँचा रहे हैं। यही एक बात अत्यन्त घातक है। बाह्य शत्रुओंके आक्रमणसे राष्ट्र नष्ट नहीं होने पाते। किन्तु अत्यन्त सामर्थ्य-सम्पन्न राष्ट्र भी अन्तःशत्रुओंने अन्धेरेमें किए हुए आघातोंसे मिट्टीमें मिल जाते हैं। यदि इतिहासके इस आदेशकी ओर हिन्दुओंने दुर्लक्ष किया, तो फिर भूतलसे हिन्दु संस्कृतिका नामतक मिट जायगा। यदि मुसलमानोंको भारत छोडना पडा, तो उनकी अधिक हानि नहीं होगी। परन्तु हिन्दुओंकी ?

यदि भारत नष्ट भी हुआ तो भी इस्लामको कोई धक्का नहीं पहुँचेगा। परन्तु हिन्दु अच्छी तौरसे ध्यानमें रखें कि, यदि हिन्दु जाति नष्ट हुई, तो फिर हिन्दु संस्कृति तथा सभ्यता, इनका चिन्ह तक संसारमें नहीं रहने पायगा, और मुसलमानोंकी वही इच्छा है। जिन इस्लाम–नेताओंके पीछे इस्लामी जनता खडी है, वे नेता अपनी इस आन्तरिक इच्छाको कभीके प्रकट कर चुके हैं। सन १९०६ से भारतमें मुसलमानोंकी जो कारवाइयाँ बडे जोरोंसे चल पडी हैं, उनके पीछे इस इस्लामी साम्राज्यका उद्देशही है। मुसलमान जनता इस उद्देशकी पूर्तिके लिए सतत प्रयत्नशील है। साम्प्रत वे प्रयत्न मुस्लिम लीगके नेतृत्वमें संगठित शक्तिके बलपर तथा संख्याधिक्यके द्वारा जिन प्रान्तोंकी सत्ता उनके स्वाधीन हुई है, उन प्रान्तोंके शासनयंत्रके आश्रयसे चल रहे हैं। लीगके कौन्सिलने रमजानके मासमें डायरेक्ट–ॲक्शनका निर्णय लेकर और उसके अनुसार १६ ऑगस्टका रक्तलांछित दिन मनाकर उस संकल्पित कार्यको चालना भी दी है।

भारतमें मुसलमान यह चाहते हैं, कि वे बहुसंख्य हों तथा हिन्दु अल्पसंख्य रहें। कुरानके आदेशके अनुसार मुसलमानोंको छोडकर और सब लोग काफर हैं। प्रत्येक मुसलमानके मनमें यह बात भी जम गई है, कि हिन्दुओंको अर्थात् काफरोंको लूटना अत्यन्त लाभदायक है। हिन्दुओंको लूटनेकी तथा हिन्दु अबलाओंको भगानेकी लगनमें मुसलमान मगन हो गए हुए दिखाई देते हैं। हिन्दुओंको लूटनेके लिए वे सदैव सिद्ध रहते हैं। उसके लिए चाहे जिस आपत्तिको उठानेमें वे यत्किंचित् मात्र नहीं हिचकिचाते। दंगेका नाम सुनतेबराबर हिन्दुओंके सामने एक भयका पहाड खडा हो जाता है, और मुसलमानोंके मनमें हर्षके तरंग उठने लगते हैं। दंगेमें सदैव मुसलमानोंको लाभही हुआ करता है। इसलिए वे दंगा करनेके लिए सर्वदा तत्पर रहते हैं। सर्वसाधारण इस्लामियोंकी यही मनोवृत्ति हुआ करती है। पढा हुआ अथवा आंग्लविद्याविभूषित मुसलमान भी इस नियमको अपवाद नहीं है। इतनाही नहीं तो, यह पढा हुआ मुसलमान इस वृत्तिका साक्षात् प्रतीकही हुआ करता है। चाहे जिस कोटिका मुसलमान हो, उसपर कुरानकी छाप हुआ करती है। मुसलमान कुरानके प्रत्येक अक्षरको अपरिवर्तनीय माना करता है। भारतको वह अपनी मातृभूमि (Motherland) मानही नहीं सकता। राष्ट्रकल्पनासे उसे कोई सम्बन्ध है नहीं। तब फिर राष्ट्रनाशके लिये उसने षड्यंत्र रचना भी क्रमप्राप्तही है। आज उन षड्यंत्रोंने रूप भी धारण किया है। परन्तु अत्यन्त दुर्दैवकी बात यह है कि जिन लोगोंके रक्तसे तथा त्यागसे भारतका इतिहास लिखा गया, वे क्रान्तिप्रवण हिन्दु अपने राष्ट्रके उद्धारके लिए दीनतासे इन शत्रुओंके मुखोंकी ओर ताक रहे हैं, इतनाही नहीं तो इस्लामी औद्धत्यके सामने साष्टांग प्रणिपात कर रहे हैं !!!

हिन्दु नेतातक यह नहीं जानते, कि मुसलमान यह चीज क्या है, घातपात तथा अत्याचार करनेमें वह कहाँतक पहुँच सकता है, गर्भवती हिन्दु स्त्रीपरभी खुले बाजारमें बलात्कार करनेमें वह किस प्रकार नहीं शर्माता, तथा विश्वासघातकी भावना उसके रोमरोममें कहाँतक बसा करती है। फिर बिचारे सामान्य हिन्दु इसे कैसे जान सकेंगे ? प्रत्येक हिन्दुको भारतको दार–उल्–हरब माननेवाले इस अराजक तथा उत्पातप्रिय समाजका सूक्ष्म निरीक्षण करना चाहिए। परन्तु भारतमें सर्वांगीण क्रान्ति चाहनेवाले तथा उस क्रान्तिके लिए चाहे जिस त्यागको करनेकी क्षमता रखनेवाले हिन्दु समाजको अभीतक यह आकलन नहीं हुआ है, कि मुसलमान यह वस्तु क्या है।

भारतवर्षका जीवन–शोषण करनेवाली साम्राज्यशाहीको भारतमेंसे निकाल देनेके लिए एक नवीन महादजीकी राह देखते हुए

मक्काकी ओर ध्यान देकर चलनेवाला मुसलमान सब आवश्यक साहाय्य करेगा, इस भ्रान्त कल्पनासे हिन्दुजनता आत्मघातके लिए सिद्ध हुई, और इस हिन्दुत्वनाशक विषके घोंटको अपने हाथोंसे पी गई। इस विषके कारण हिन्दुराष्ट्रकी प्रतिकारशक्ति क्षीण हुई, और इस व्यथित राष्ट्रने हिन्दु-मुस्लिम एकताके विना स्वराज्य नहीं मिल सकता, इस अपसिद्धान्तको अपने गले मढ लिया। इस कारण मुसलमानोंका यथार्थ आकलन होना अशक्य हुआ। ईसाई आदि अन्य धर्मियोंके अनुसारही मुसलमान भारतके स्वातंत्र्यकी चिन्ता नहीं करता। भारत स्वतंत्र रहे या परतंत्र, मुसलमानको उससे कोई लाभ अथवा हानि है नहीं। इस्लामकी दृष्टिसे यह देश 'दार-उल्-हरब' ही है। हाँ, यदि मुसलमानके मनमें यह निश्चय हुआ कि स्वतंत्र भारतका शासन 'शरिअत' के अनुसार चलेगा, तब तो वह हिन्दुओंको साहाय्य कर सकता है। परन्तु हिन्दु ध्यानमें रखें, कि शरियत-मुसलमानी विधानकी स्थापनाका सरल अर्थ है हिन्दु संस्कृतिका नाश। हिन्दुओंके आत्मसमर्पणके बादही मुसलमान ब्रिटिश-साम्राज्यशाहीसे लड सकता है, अन्यथा नहीं।

जिसका ठीक तौरसे आकलन न होने पाया है, ऐसी एवंगुण-विशिष्ट यह वस्तु भारतीय क्रान्ति, उन्नति, प्रगति तथा संरक्षणके मार्गमें रोडा बन बैठी है। भारतको मुसलमान स्वराष्ट्र अथवा स्वदेश नहीं मानता। जिन्ना मियाँने हिन्दी (Indian) के बुरके-को भी चीर डाला है। रहमत अली तो इससे भी आगे बढकर कहता है कि, "भारतवर्ष न तो इस्लामियोंकी जन्मभूमि था, और न आगे चलकर होगा भी।" भारतको दार-उल्-इस्लाम बनानेके निग्रहसे सिन्धमें मुसलमानोंके उद्योग चल रहे हैं। वहाँ हिन्दुओंका जीवित, वित्त तथा मान धोखेमें है। पूर्वसंकल्पित योजनाके अनुसार युवा हिन्दुओंके वध हुआ करते हैं। बंगालमें हिन्दु युवतिओंकी जो मृगया हुआ करती है, वह वर्णनातीत है। पंजाबमें तो गत चुनावके समय मुस्लिम लीग प्रकटतासे घोषित कर चुकी थी कि,—

"ऐ मुसलमानों, १९ फर्वरीको पंजाबका चुनाव समाप्त हो जायगा, और फिर हिन्दुओंकी सम्पत्ति, भूमि, बहूबेटियाँ, इन सबपर तुम्हारा अधिकार होगा!!" इन घोषणाओंसे तथा मसजिदोंमें होनेवाले भाषणोंसे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि, भारतमें अराजक निर्माण कर हिन्दुओंको नष्ट करनेके उद्देशसे ही मुसलमान एक एक कदम आगे बढा रहा है। लीगके सुलतान बॅ० जिन्नासाहब तो देहलीमें हो गए हुए मुस्लिम लीगके अधिवेशनमें तैमूरलंगके आवेशसे यादवीकी धमकियाँ दे चुके थे! अलिगढमें मुस्लिम विद्यार्थिओंके सामने, जोकि एक गोलाबारूदका भण्डारही है, जिन्नासाहब सुस्पष्ट शब्दोंमें अराजककी घोषणा कर चुके हैं—

"What will happen to Muslims if the British surrender to congress? My reply is that, even the combined forces of China and America, who are now supporting the Congress-claim, cannot sacrifice Indian Muslims. If they ignore us, we will make it impossible for them to carry on the administration of the country."

(जीनाका भाषण, अलीगड, ३।११।४१)

यह घोषणा होनेपर मुसलमान अपनी सिद्धता करने लगे, और १६ ऑगस्ट १९४६ से इस अराजकके प्रात्यक्षिकको प्रारम्भ हुआ। इस अराजककी सिद्धताकी जाँच करनेके पहले यह उचित होगा कि, सिन्धमें जो अराजक फैल चुका है तथा हिन्दुओंके वध हो रहे हैं, उनकी कहानी कही जाय।

सिन्धमें मुसलमानोंका निर्णायक बहुमत है। जिन हिन्दुओंने सिन्धप्रान्त तोडकर स्वतंत्र करनेमें साहाय्य किया, उन हिन्दुओंके वध उसी स्वतंत्र सिन्धमें हुआ करते हैं। इस विषयमें सिन्ध-प्रान्तीय हिन्दु सभाके मंत्री श्री० भोजराज अडवानी अपने प्रकाशित पत्रकमें कहते हैं —

"Hundreds of Hindus were murdered in towns and villages. Property worth crores was burnt and looted, several girls were kidnapped, several women who were pregnant and babies were burnt alive, criminal prosecutions were launched against Hindus and Hindu Sabha leaders. Hindu leaders were externed from their native places. Hindu writers were harassed with prosecutions, papers were banned and so on."

सिन्धमें हिन्दुओंको नौकरिओंसे भी हटाया जा रहा है। जब यू० पी० जैसे हिन्दु बहुसंख्य प्रान्तमें प्रतिशत ८० मुसलमान अधिकार-स्थान भूषित कर रहे हैं, तब सिन्धका पूछनाही क्या? कोई आश्चर्य है नहीं कि सिन्ध पुलिसमें हिन्दु अभावरूपेण उपस्थित हैं। केवल ९ हिन्दु डिप्टी कलक्टरके स्थान शोभित कर रहे हैं। शेष सब वरिष्ठ स्थान मुसलमानोंको दिए गए हैं। सिन्धमें केवल हिन्दी भाषापर बन्धन है, और किसी भाषापर नहीं। उर्दू तथा

अरबीके प्रचारके लिए सिन्ध मंत्रिमण्डल पानीके समान पैसा बहा रहा है। 'सिन्ध मद्रसा' इस कट्टर मुसलमानी पाठशालाको सबसे अधिक अर्थात् ४६००० रुपिये ग्रँट मिला करती है। विद्यालयोंमें भी मुसलमानोंके लिए स्थान सुरक्षित रखे गए हैं। इसके ठीक विरुद्ध हिन्दु अल्पसंख्य होनेपर भी उनके लिए कोई स्थान नहीं रखा गया है। इन सुरक्षित स्थानोंकी तालिका नीचे दी जा रही है, जिसपरसे इस भस्मासुरका स्वरूप ध्यानमें आ जायगा —

नाम		मुसलमान तथा सुरक्षित स्थान
N. J. Highschool	शिकारपुर	शें. ५०
,,	लारखाना	,, ५०
,,	नौशेरा	,, ७५
,,	मीरपूर खास	,, ५५

शिष्यवृत्ति तो मुसलमानोंकी मानो पैतृक सम्पत्ति है। उच्च वाङ्मयीन शिक्षणके लिए प्रतिमास २० रुपियोंकी जो ४८ शिष्यवृत्तियाँ हैं, उनमेंसे हिन्दुओंको एक भी दी नहीं जाती। उद्योग–शिक्षाके लिए प्रतिमास ३० रुपियोंकी शिष्यवृत्तियाँ भी मुसलमानोंको दी गई हैं। हायस्कूलोंकी ७०० शिष्यवृत्तिओंमेंसे हिन्दुओंके लिए एक भी नहीं है। सरकारकी तिजोरीमेंसे मुसलमानोंको यह परशादी प्रकटतासे बाँटी जाती है। यहाँ यह बात ध्यानमें रखनी चाहिए कि, सिन्धमें करोंके द्वारा जो कुछ उत्पन्न सरकारको मिलता है, उसमेंसे आधा भाग हिन्दुओंका है। लोकलबोर्डकी ओरसे भी मुसलमान इसी प्रकार परशादी पाते हैं। लोकलबोर्डकी ओरसे २०से लेकर ३० रुपिये प्रतिमासकी २६ शिष्यवृत्तियाँ, हायस्कूल शिक्षाके लिए १ से लेकर ७ रुपिये प्रतिमासकी ८८ शिष्यवृत्तियाँ तथा प्राथमिक शिक्षाके लिए १से लेकर ३रुपिये प्रतिमासकी ८०५ शिष्यवृत्तियाँ दी जाती हैं। परन्तु ये सब मुसलमानोंकोही दी जाती हैं। हिन्दुओंको एक भी मिलने नहीं पाती।

सिन्ध लोकलबोर्ड द्वारा कुर्रानके ३५६ वर्ग चलाए जाते हैं। इन वर्गोंके शिक्षकोंको वेतनके ऊपर और दस रुपिये दक्षिणा दी जाती है। और भी १००० मुल्लाओंकी पाठशालाएँ चलाई जाती हैं। इन पाठशालाओंके लिए सिन्ध सरकार खूब व्यय किया करती है। हिन्दु विद्यार्थिओंके लिये एक भी वसतिगृह नहीं है; सरकारी खर्चेसे जो तेरह वसतिगृह निर्माण हो चुके हैं, वे सब मुसलमानोंके लिए सुरक्षित हैं। शिक्षा–विभाग सम्पूर्णतया इस्लामी है। सब हिन्दुओंको उसमेंसे निकाला गया है।

सब सिन्धी साहित्यका इस्लामीकरण बडे धडाकेके साथ चल रहा है। "रंगमहेल," "सोमनाथजी मन्दिर," "पाकिस्तानका विजय," "काफिरोंका विध्वंस" (Breaker of Kafar) इत्यादि प्रक्षोभक पुस्तकें नित्य प्रसिद्ध हुआ करती हैं। इन पुस्तकोंमें बुरे शब्दोंसे हिन्दुओंकी तथा उनके राष्ट्रीय विभूतिओंकी निन्दा की गई है। सिन्धकी कट्टर लीगी सरकार इन पुस्तकोंको बारबार साहाय्य भी करती है। जी० एम्० सय्यदने अगुआ बनकर हिन्दुओंको बहिष्कृत करनेकी योजना अंमलमें लाई। जिस दिन 'मुक्ति–दिन' मनाया गया, उस दिन प्रकटतासे आक्रमणको आवाहन किया गया। जी० एम्० सय्यद यह हिंसक कट्टरता (Fanaticism) तथा धर्मोन्मत्त इस्लामका मूर्तिमन्त प्रतीक है। इसके भाषणसे सर्वत्र हिन्दु–द्वेषकी आग फैल गई, तथा हिन्दुओंपर कठोर बहिष्कार डाला गया। मुसलमान जबरदस्तीसे हिन्दुओंके खेत हडप बैठे, और मुस्लिम लीगका राज्ययंत्र होनेके कारण वे खेत हिन्दुओंको वापस मिलना भी दुष्कर हो गया है। लीगी मंत्रिमण्डल इसी उद्देशसे काम कर रहा है कि, व्यापारके क्षेत्रसे हिन्दुओंका समूलोच्चाटन किया जाय। लीगी मंत्रिमण्डल रेशनके दुकान तथा व्यापारी सिण्डिकेट स्थापन कर चुका है, और उनके द्वारा हिन्दुओंको व्यापारसे वंचित किया जा रहा है। सब अधिकारी वर्ग मुसलमान होनेसे हिन्दु व्यापारिओंको जो कष्ट उठाने पडते हैं, उनकी कथा अवर्णनीय है। हिन्दुओंका समूलोच्छेद करनेके लिए सिन्धका मंत्रिमण्डल नवीन नवीन विधिनियम बना रहा है। आजतक ४ विधिनियम बनाए गए हैं, जिनके नाम हैं—

(1) Land Alienation Bill, (2) Money Leanders Bill, (3) Postponment of Decrees Bill, (4) Debt Cancellation Bill.

पहले नियमसे हिन्दुओंकी भूमि, दूसरेसे अर्थशक्ति, तिसरे तथा चौथेसे हिन्दुओंने दिया हुआ कर्जा हडप करनेकी योजना की गई है।

मुसलमान डाकू हिन्दुओंका प्रत्यक्ष घात करनेका काम कियाही करते हैं। शिकारपूर जैसे बडे नगरमें अभी अभी केवल हिन्दुओंके घरोंपर दिनदहाडे तीन डाके डाले गए, और नित्यक्रमके अनुसार पुलिस अभीतक एक भी डाकूको पकडने न पाई है। हिन्दु लडकियाँ तो खुले आम भगाई जाती हैं, परन्तु सिन्धमें विधिनियम इन अपराधोंको शासन नहीं किया करते। विधिनियम तथा शासनसंस्थाका काम एकही है, और वह है हिन्दुओंको लूटना, कुचलना तथा उनके वध करना। सिन्धके अराजककी ठीक कल्पना आनेके

लिए वहाँ घटी हुई कुछ घटनाओंकी तालिकाही यहाँ दी जाती है।

(१) स्तकन्द तहसीलके काझी अहमद नामक देहातमें रहनेवाले विष्णुमल तथा सेठमलके घरोंपर दि० ४ अप्रैल १९४६ के दोपहरमें पाँच सशस्त्र मुसलमानोंने आक्रमण किया, और १०००० रुपियोंकी सम्पत्ति लूट ले गये।

(२) टाण्डो गुलाम अल्ली इस गाँवपर आठ सशस्त्र डाकुओंने आक्रमण कर पूरे गाँवभरमें लूट-खसोट की। यह प्रकार ५ अप्रैल १९४६ को दिनमें घटा।

(३) थारूशाह नामक गाँवमें हिन्दुओंका कोई उत्सव था। उसके निमित्त नन्दीकी स्थापना कर हिन्दु उसकी रथयात्रा निकाल चुके। दिनांक था ४ अप्रैल १९४६। विना किसी कारणके मुसलमानोंने यात्रापर सशस्त्र आक्रमण किया।

(४) ७ अप्रैल १९४६ को बाँगुलडेरोमें एक सिख्खको मुसलमानोंने कुल्हाडीसे टुकडे टुकडे कर मार डाला।

(५) दि० ९ अप्रैल १९४० को थारूशाह नामक गाँवमें बाबा सीतलदासके घरपर मुसलमानोंने कुल्हाडी, भाला, इत्यादि शस्त्रोंसे आक्रमण किया, जिससे कि घरके लोग खूब घायल हुए।

(६) चकके निकट मोरातीन गाँवमें १० अप्रैल १९४० को मुसलमान डाकुओंने डकैत की।

(७) सीतारोड तथा कान्दीआरो इन गाँवमें हिन्दु बसतीमें प्रतिदिन ३, इस प्रमाणमें चोरियाँ शुरू हुई हैं।

(८) कावरके निकट घाटहर गाँवमें एक हिन्दुके घरपर नमाज पढनेवाले डाकुओंने आक्रमण किया, और एक गर्भवती स्त्रीको काट डाला।

(९) ८ अप्रैल १९४६ को कुकुमल नामक हिन्दुको मारपीटकर उसका घोडा भगाया गया।

(१०) हैद्राबादको दंगा होनेके लिए एक षड्यंत्रही रचा गया था। मुसलमान हजाम थे उस षड्यंत्रके कर्णधार। १२ अप्रैल १९४६ को ये हजाम कुर्रानके फटे हुआ पत्रे रद्दीके नाते बेचनेके लिए बाजारमें निकल पडे। एक-दो हिन्दु दुकानोंमें वे उस रद्दीको लेकर गये भी। किन्तु हिन्दु व्यापारिओंको इस षड्यंत्रका पता लग चुका था, अतएव किसीने भी उस रद्दीको नहीं खरीदा। बिचारे मुसलमानोंने रचा हुआ सब षड्यंत्र निष्फल हुआ!

(११) हैद्राबादमें दि० १५ अप्रैलको एक मुसलमान गुण्डेने एक हिंदु लडकेपर आक्रमण कर उसपर कुल्हाडीसे वार किए।

(१२) हैद्राबादमें एक पुलिसनेही लूट- खसोट की।

(१३) सक्करमें खुले बाजारमें मुसलमान गुण्डोंने हिंदुओंपर आक्रमण किया। ये गुण्डे पिस्तौल लेकरही आ चुके थे। उनकी गोलिओंसे दो हिंदु घायल हुए। परन्तु सिन्ध पुलिसने उन गुण्डोंको छोडकर हिंदुओंकोही पकडना प्रारम्भ किया! अन्धेर-नगरी और किसको कहते हैं?

(१४) सिन्धके सब मुसलमानी वृत्तपत्र हिंदुओंको निरर्गल गालियाँ दिया करते हैं। परन्तु उनपर बन्धन डालनेका नाम न लेनेवाली सिन्धकी लीगी सरकारने हैद्राबाद गॅझेटसे १००० रुपिये सिक्युरिटी इसलिये माँगी, कि उसने सरकारपर टीकाटिप्पणी की थी।

(१५) २० अप्रैल १९४६ को बादिम गाँवमें एक मुसलमान गुण्डा आसूमल नामक हिन्दु व्यापारीपर आक्रमण कर उसका घोडा तथा व्यापारके लिये लाया हुआ माल लूट लेकर भाग गया।

(१६) खान बहादुर खुरोंका एक नौकर खैरपूर रियासतके गाम्बट गाँवसे एक विवाहित हिन्दु स्त्रीको भगाकर लारखाना ले गया। परन्तु उसकी कोई जाँच नहीं होने पाती।

(१७) बागरजी गाँवमें हिन्दुओंके खेतोंसे गेहूँकी फसल, भाजी, इत्यादि सब काट डालकर उन खेतोंको उध्वस्त किया गया। बारीमल नामक हिन्दुकी घाँसकी गंजी जला दी गई। कुल हानि १५००० से लेकर २०००० रुपियोंतक हुई। परन्तु पुलिसने इधर ध्यानही नहीं दिया।

(१८) दुबेला गाँवमें दि० २० अप्रैल १९४६ को एक मुसलमानने एक हिन्दु दुकानदारको केरोसीनकी बोतलोंसे पीटा।

(१९) लारखानाकी Women's Institute से सीनेके यंत्रोंकी चोरी हुई, जिसका अभीतक पता नहीं लगा।

(२०) १५ अप्रैल १९४६ को कराचीमें मुसलमान गुण्डोंने चक्कूसे एक पुरभैय्याका वध किया।

(२१) रातोदेरो और आबाद इन गाँवोंमें दि० २० अप्रैल १९४६ को मुसलमानोंने ४ हिन्दुओंपर आक्रमण किया । एक हिन्दु काट डाला गया ।

(२२) भीटशाहामें दि० २१ अप्रैल १९४६ को मुसलमानोंने एक हिन्दुके घरपर सशस्त्र आक्रमण किया ।

(२३) दि० २२ अप्रैल १९४६ को सांघीमें एक हिन्दुका वध किया गया ।

(२४) दि० २९ अप्रैल १९४६ को कादरपुर रोड स्टेशनपर गुण्डोंने राहगीरोंपर पिस्तौल लेकर आक्रमण किया, और उन्हें लूट लिया ।

(२५) चक गाँवमें गोहत्या की गई ।

(२६) थारुशाहामें ४ हिन्दु साधुओंको निर्दयता-पूर्वक काट डाला गया ।

इस्लामीकरणका कार्य भी बडे वेगसे शुरू हुआ है। कराचीमें प्रकाशित होनेवाले मुस्लिम लीगके वृत्तपत्र 'अल्वहीद' में एक इस्लामीकरणका वृत्त प्रकाशित हो गया है, जो कि सम्भवतः गलतीसे छपा होगा । क्योंकि सब इस्लामी संस्थाएँ इस्लामीकरणके वृत्तको प्रकाशित न करनेका अलिखित नियम बडी सावधानीसे निभाया करती हैं । अल्वहीदमें प्रकाशित हुआ है कि, इस अप्रैलमें १२ हिन्दुओंको मुसलमान बनाया गया । ×

इस अल्वहीद पत्रने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके विषयमें झूटी खबरें प्रकाशित करनेका मानो बीडाही उठाया है । इस पत्रमें 'आयेशा कुरेशी' नामक काल्पनिक लडकीका एक पत्र छपा है । इस पत्रके अन्तमें अग्रलिखित पंक्तिओंके द्वारा मुसलमानोंको भडकानेका यत्न किया है ।

"मैं जब स्कूलसे घर लौट रही थी, तब मेरे जैसी कुलवती तथा परदा-नशीन लडकीके पीछे संघी लोगोंकी एक टोली चलने लगी, और उन्होंने असभ्य शब्दोंमें मेरी मजाक उडानेको प्रारम्भ किया । उसी रास्तेसे जानेवाले एक वयस्क हिन्दु गृहस्थने उन लोगोंको चमकानेपर वे उसको गालियाँ देने लगे, तथा उसकी खिल्ली उडाने लगे । मेरे सुदैवसे १५-२० लोग वहाँसे जा रहे थे । उनके प्रयत्नसे मेरी आब्रू बच गई, तथा उन काफरोंसे मेरा छुटकारा हुआ ।"

इसके बाद अल्वहीदके कार्यालयमें निर्माण हो गई हुई यह काल्पनिक आयेशा कुरेशी लिखती है, "-कुछ शतकोंके पहले कुछ सहस्र मुसलमानोंने करोडों बनिओंमें आतंक पैदा कर उनपर विजय प्राप्त किया था । उन मुट्ठीभर थके-माँदे मुसलमानोंने इस पराए देशमें आकर करोडों बनिओंको मूली-गाजरके समान काट डाला था । और आज शक्तिशाली बलपूर्ण १० कोटि मुसलमानोंको क्या इन बनिया लोगोंका नाम संसारसे मिटा देना अशक्य है ?"

२ मईके अल्वहीदमें यह झूटा प्रचार किया गया है । इस प्रचारको झूटा कहनेका कारण यह है कि, आयेशा कुरेशी नामक कोई लडकी कराचीकी किसी पाठशालामें नहीं पाई गई । इसलिए इस 'आयेशा कुरेशी' नामके समानही यह सारा वृत्तान्त असत्य है । ४ मई १९४६ को अल्वहीदने "आसाममें मुसलमानोंपर काँग्रेसके अत्याचार," इस शीर्षकमें केवल झूटा वृत्त प्रकाशित किया था । उसमें लिखा था, "- काँग्रेसके अत्याचारोंके कारण आसामके मुसलमान मृत्युके भक्ष्य बन रहे हैं ।"

इस सब प्रचारका उद्देश है केवल मुसलमानोंको भडकाना । मुस्लिम लीगके वृत्तपत्र, डॉन (देहली), स्टार ऑफ इण्डिया (कलकत्ता), सदा-ए-आम (पटना), तनबीर, हमदम (लखनौ), अल्वहीद (कराची) सबके सब झूटे प्रचारके लिए वाचनीय हैं ।

हिन्दुओंका समूल उच्छेद कर भारतपर इस्लामी अधिराज्य स्थापित करनेके अमानुष, आसुरी उद्योग केवल सिन्धतकही सीमित नहीं हैं । पंजाबमें भी वही चल रहा है । अटक तथा अम्बाला जीलोंमें केवल हिन्दुओंकेही घर लूटे जाते हैं, केवल हिन्दु धनिकोंकेही वध किये जाते हैं, केवल हिन्दु लडकियाँही भगाई जाती हैं, और आश्चर्य यह है, कि इन अपराधोंके लिए न तो कोई पकडा जाता है, न किसीको सजा होती है। हिन्दी शिक्षा देनेवाले तथा आर्यसमाजके द्वारा संचालित विद्यालयोंको नवीन ग्रँट दी नहीं जाती, और पुरानी बन्द की जाती है । गुर्गांवके इन्स्पेक्टरने तो एक पत्रकके द्वारा घोषितही किया था, कि उस विभागमें हिन्दी शिक्षा कतई न दी जाय ।

+ उपरिलिखित वृत्त सक्करमें प्रसिद्ध होनेवाले हिन्दुसंगठन साप्ताहिकके दि० १३ मई १९४६ के प्रति लिपीसे लिया गया है ।

द्रव्यके अभावका कारण बताकर डेरागाजीखाँकी आर्य-पुत्री पाठशालाकी ग्रँट बन्द की गई। और जो सरकारी मुस्लिम लडकिओंका विद्यालय उसीके निकट है, उसपर केवल ७९ लडकिओंके लिए सहस्त्रावधि रुपिये निष्कारण खर्च किए जाते हैं !!

हिन्दुओंके धार्मिक उत्सवोंपर सदाके लिए कडे निर्बन्ध हैं। नौकरिओंमें सर्वत्र मुसलमानोंकी भरमार है। अधिकारी तो बहुशः मुसलमानही हैं। पुलिस प्रतिशत ७७·७ मुसलमान; इन्स्पेक्टर प्रतिशत ६६·७; सब-इन्स्पेक्टर प्रतिशत ६५; हेडकॉन्स्टेबल प्रतिशत ७६; हवलदार प्रतिशत ८३; जमादार प्रतिशत ७२ मुसलमान ! पंजाब सरकारने एक प्रस्ताव सम्मत किया है, जिसके द्वारा प्रतिशत ५० नौकरियाँ मुसलमानोंको दी गई हैं, तथा ५० मुसलमानेतरोंको। उन मुसलमानेतरोंमें हिन्दु प्रतिशत ३० और शेष प्रतिशत २०। हिन्दुओंमेंसे दो स्थान अस्पृश्योंके लिए रखे गए हैं। परन्तु यह प्रस्ताव कागजपर पडा हुआ है, और सर्वत्र मुसलमानोंको भरती किया गया है।

बंगालमें तो सर्वत्र मुस्लिमराज्य नंगानाच कर रहा है। वहाँ मुसलमान मुस्लिम-राज्य निर्माण करनेके निश्चित उद्देशसेही अत्याचार, हिन्दु युवतिओंका अपहरण तथा हिन्दुओंके वध इत्यादि कृत्य किया करते हैं।

यू० पी० में मुस्लिम संस्थाओंका एक बलवान् जालही निर्माण हो चुका है। वहाँ पाकिस्तानकी स्थापना कर हिन्दुओंमें आतंक निर्माण करनेके लिये एक गुप्त मुस्लिम संस्था स्थापन हो चुकी है। इस संस्थाके हस्तकही पूर्व योजनाके अनुसार सन १९४६ में काशीगंज, अलिगढ बरेली, झाँसी आदि नगरोंमें सुसंगठित स्वरूपके बलवे निर्माण कर चुके हैं। इस संस्थाने निकाला हुआ एक पत्रक यहाँ सम्पूर्ण स्वरूपमें दिया जा रहा है—

The Clarion Call.

" You must have read the recent speech of the British Prime Minister. It is an open challange to the Muslims. It seems as if the Cabinet Mission is coming with a definite plan to crush the Muslim demand of Pakistan. Muslim India shall resist such a sinister move with all her might. Qaid-e-Azam has made it repeatedly clear, that Muslims will oppose the move for one constitution making body. He has often hinted that the Muslims of India shall wage war both against the Hindus and the British if the demand of Pakistan is not conceded. In the light of the recent events this seems inevitable.

"Qaid-e-Azam will not come to every individual asking him to get up and wage war against the Hindus and the British. He can only give you hints. If we are not conscious of the paramount importance of the struggle, and are not fully prepared for the battle, bearing the minutest detail of our programme in mind and do not know the proper line, of action, the ways and means of coercing, harassing and routing our enemies, we cannot give an enthusiastic and effective response to the call of the leader. Therefore, it is high time to chalk out a programme for the future and equip ourselves for the service of Muslim India at the call of the leader.

" We have formed a secret organization of the Mujahids to give the necessary instructions to our youth. We earnestly request Muslim youths to come forward and save the nation from distruction and permanent serfdom. In the name of Islam and God we appeal to you to give your lives. At present we are suggesting certain ways in which you can prepare yourselves for the coming battle with the Hindus who want to enslave us forever—

(1) Spread out in the country-side and organise the campaign. Consider yourself the leader and educate the masses in the following ways.

(2) Hold secret meeting, enrol Mujahids. Develop strong communal feelings. Instruct the people to adopt ways and means to overawe the Hindu public, for example setting fire and spreading false rumours. Give lessons to people in sabotage.

(3) Preparations— All the people to keep weapons, that is lathis, knives, guns, pistols etc, in the houses. The art of fighting should

be learned and practised,

(4) Scientific method of destroying Government properties, buildings and Hindu properties, cutting wires and destroying railway lines must be very perticularly known to every body.

(5) Secret service- (a) The number of the policemen which may be available to the authorities must be known. (b) Full information about ammunition which the police of any city possess. (c) Wireless sets which are placed at the police station must be destroyed. (d) Muslim servicemen in the army and the police should be incited against the Government and the Hindus.

(6) Investigation- In every city, influential Muslims must be approached and their help should be sought. The goondas and warlike people must be encouraged and engaged,

(National Herald, Dated 7 April 46)

Regd. No. B. 1463

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवळेकर, भारत-मुद्रणालय, औंध.

वैदिक धर्म

संपादक
पं. श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

विषयसूची

वार्षिक मूल्य
म. ऑ. से ५) रु.; वी. पी. से ५।=) रु.
विदेशके लिये १५ शिलिंग।
इस अंकका मू. ॥) रु.

ज्येष्ठ सं. २००४
जून १९४७

क्रमांक ३३०

वैदिक धर्म

क्रमांक ३३०

वर्ष २८ ॥ ज्येष्ठ, विक्रम-संवत् २००४, जून १९४७ ॥ अङ्क ६

मैं दिग्विजयी बनूंगा

अहं अस्मि सहमान, उत्तरो नाम भूम्याम् ।
अभीषाड् अस्मि, विश्वाषाड्, आशां आशां विषासहिः ॥

(अथर्व. १२।१।५४)

"(अहं) मैं (सहमानः अस्मि) विजयी हूँ, अपनी (भूम्यां) मातृभूमिमें (उत्-तरः नाम) यशस्वी होकर उच्चतर अर्थात् अधिक श्रेष्ठ बनूंगा । मैं (अभीषाट् अस्मि) मैं चारों ओरसे प्रभावी बनता हूँ, तथा मैं (विश्वा-षाट्) सब प्रकारसे पराक्रमी बनूंगा, और (आशां आशां) प्रत्येक दिशा और उप-दिशामें मैं शत्रुको (विषासहिः) परास्त करूंगा ।"

प्रत्येक पुरुष अपने देशमें नित्य दक्ष रहे और सदा विजयी बननेका यत्न करे । पुरुषार्थ प्रयत्न द्वारा तथा अपनी शूरता, वीरता और प्रभुता द्वारा मनुष्य प्रभावशाली बने । शत्रुका हमला होनेपर अपने स्थानसे हटना न पडे, इतनी तैयारी सदा रखे । चारों ओर देखे कि अपने शत्रु क्या कर रहे हैं और उनकी चाल देखकर अपनी तैयारी ऐसी करे कि समय आनेपर भागनेकी आवश्यकता न हो । सब संकटोंकी पहिलेही कल्पना करे और वैसी ही अपनी प्रतिकार करनेकी शक्ति बढावे और सदा दक्ष रहे, कभी शिथिल न बने । चारों दिशाओंमें अपना प्रभाव होना चाहिये, इतनी शक्ति अपने अन्दर बढानी चाहिये । व्यक्तिगत शक्ति और संघ-शक्ति ये दोनों शक्तियाँ अपने पास रहनी चाहिये, तब विजय होगा । इनमें एककी भी त्रुटी हुई तो पराजयकी संभावना होगी । यह सब विचार करके किसी तरह अपनी शक्ति कम न होने दे । 'मैं सदा विजयी बनूंगा' यही भाव सदा मनमें रखे और प्रयत्न भी वैसा ही करे । विजय अवश्य होगी ।

सिकंद्राबादका दंगा

सिकन्द्राबादके कुछ सोशियलिस्ट कार्यकर्ताके निमन्त्रण पर बाबू जयप्रकाश नारायण अपनी धर्मपत्नीके साथ ७ मई १९४७ को हैदराबाद पधारे और सिकन्द्राबादकी जनताने हवाई अड्डे पर उनका जो स्वागत किया व जुलूस निकाला वह हैदराबादमें चिरस्मरणीय रहेगा। उसी दिन सायं किंग्सवेके समीप हुसैनसागरके पास पौन लाख जनताके सामने उनका जो भाषण हुआ वह भी बडाही उत्तरदायित्वपूर्ण था। जुलूस व सभा पूर्ण शान्तिके साथ समाप्त हुए।

गिरफ्तारी

८ मई ४७ को प्रातः ४ बजे श्री महादेवसिंहके घरपर अचानक पुलिस पहुंच गई। बाबू जयप्रकाशजीको जगाया गया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। तथा उसी दिन उन्हें उनकी पत्नीके साथ हवाई जहाजसे बम्बई भेजा गया। विरोध-प्रदर्शनमें जनताने हैदराबाद और सिकन्द्राबाद दोनोंके बाजारोंको पूर्णतः बन्द कर दिया।

पुलिसने जनताको फोडनेके लिए सख्ती की। यही दृश्य सिकन्द्राबादमें देखा गया। ८ मईको ३ बजे दिनको किंग्सवेमें एकत्रित जनता पर पुलिसने एकाएक लाठी चार्ज कर दिया। कई घायल हुए और कई बेगुनाह गिरफ्तार कर लिये गये। इन पकडे गये लोगोंके साथ पुलिसका दुर्व्यवहार होनेके संबन्धमें शिकायतें वसूल हुई हैं। इस बातकी भी शिकायतें प्राप्त हुई है कि पुलिसके कुछ जवानोंने घरोंमें घुसकर भी जनताको पीटा और गिरफ्तार किया। गाली गलौच तो साधारण बात थी।

नलागुट्टेमें आक्रमण- ८ मईको रातके १०-११ बजे अचानक मुसलमानोंके एक बडे समूहने नल्लागुट्टे नामी महल्लेकी सोती हुई हिन्दू जनतापर आक्रमण कर दिया। दरवाजोंको तोडकर घरोंमें घुस गये। कई घायल हुए और पांचकी मृत्यु हुई। रातभर महल्लेमें गडबड मची रही। लारियों व मोटारोंमें मुसलमान और उनके नेताओंको घूमते हुये देखा गया। इस अवसर पर पुलिसके काफी जवान मौजूद थे, किन्तु शोकसे कहना पडता है कि पुलिसने इस जमघट्टेको फोडनेका कोई प्रयत्न नहीं किया।

घास मंडी, मार्केट इत्यादि स्थानोंपर मुसलमानोंके जत्थे दिखाई दे रहे थे। सभी इस्लामी होटलें खुली थीं, जो उपद्रवी मुसलमानोंके बैठनेका केन्द्र बनी हुई थीं। ९ मईको नमाजके बाद नल्लागुट्टेके पश्चिमी भाग पर आक्रमण कर दिया गया। हिन्दू घायल और दो-चार मारे गये। चित्रा टॉकीज, मार्केट, घास मण्डी, नल्लागुट्टा, किंग्सवे, मानिकप्रभु मन्दिरके पास आतंक फैल गया। इस सारी स्थितिको पं० विनायकरावजी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद स्टेटके सामने रखनेपर। प्रधानजीने तुरन्त सिकन्द्राबाद आकर स्थितिका अवलोकन किया। कांग्रेसी तथा अन्य कार्यकर्ताओंको भी सूचना दी गयी थी।

आर्य समाजमें निरन्तर दुर्घटनाओंके समाचार आ रहे थे। विपत्तिग्रस्त स्थानोंसे भागे हुए लोगोंका पता लगाकर श्री गंगारामजीके साथ अन्य नेता वहां गये और निराश्रितोंसे वार्तालाप किया। इन शरणार्थियोंकी संख्या लगभग१००० थी। उनकी दयनीय दशाको देखकर मन्त्रीजी सभाने उनके भोजनका प्रबन्ध करनेका आदेश दिया और उसके लिये ५००) रु. दिये। श्रीगोपालजी जोशी और श्री रामपालजी लाहोटीने ढाई सौ रुपये तथा कुछ अन्न-सामग्री इकट्ठा करके वेस्ली हायस्कूलमें पीडितोंके भोजनादिका प्रबन्ध किया।

अधिकारियोंसे भेंट

जब दंगेके बन्द होनेका कोई चिन्ह नहीं दिखाई दिया और मुसलमानोंका उपद्रव उत्तरोत्तर बढता गया; तथा मार्केटके पास एक गायको काटकर फेंक दिया गया, बन्सीलाल पेठमें अशान्ति फैलनेकी सम्भावना बढने लगी, स्वयं पुलिस कान्स्टेबल उपद्रवको बढानेमें बराबरके साथी बनने लगे और हिन्दु निर्दोषी होकर भी पकडे जाने लगे व बच रहनेवालोंकी जान व मालके संरक्षणकी आशा न रही, तो एक संयुक्त शिष्ट मंडल पुलिस मन्त्री श्री नवाब अलीयावर जंगसे मिला। शिष्ट मण्डलने प्रार्थना पत्रके रूपमें पुलिसके वर्तमान प्रबन्ध और सिकंद्राबादमें इस समय नियुक्त पुलिसके प्रति असन्तोष और अविश्वास प्रकट किया और प्रार्थना की कि प्रबन्धके लिये भेजी जानेवाली पुलिसमें कमसे कम ५० प्रतिशत हिन्दू कान्स्टेबल हों। ऐसा ही कुछ प्रबन्ध करनेका आश्वासन दिया गया।

तथापि पुलिस कान्टेबलोंके पक्षपात पूर्ण व्यवहारके समाचार कम नहीं हुए।

मनोहरलाल अं. सहस्त्रे आर्य प्र. स. है. द.

" हिंदुओंकी अवनतिकी मीमांसा "

(समालोचना)

(लेखक— श्री. पं. रघुनाथशास्त्री कोकजे, सांख्यतीर्थ, लोणावळा, सहाय्यक— श्री. पं. ग. र. वैशम्पायन, विद्याभूषण, पूना । प्रकाशक -- श्री डी. एम्. जोगल, जोगल एण्ड सन्स, ५७० शनिवार पेठ, पूना । मूल्य २॥) प्रकाशकसे सर्वाधिकार सुरक्षित, पृष्ठ-संख्या १८०)

हिंदुसमाजका सुधार करनेके इच्छुक अनेक प्रयत्न कर रहे हैं, उनका परिणाम शहरी सज्जनोंपर कुछ न कुछ होता है, पर हिंदु समाजके निम्नतम स्तर तक इस सुधार की पहुंच नहीं होती, इसका कारण ढूंढना चाहिये। इस पुस्तक के पढनेसे वह कारण पाठकोंके सन्मुख उपस्थित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है । इसलिये इस पुस्तक का इस समय विशेष महत्त्व है ।

इस पुस्तकमें कई महत्त्वपूर्ण विषयोंका अच्छा विवरण किया गया है। पवित्रताकी कल्पना, पतितोंके वर्ग, प्रायश्चित्त, पतित स्त्रियाँ, अवैवाहिक संतान, धर्मभ्रष्टता, आदि अनेक विषय इस पुस्तकमें ऐसे हैं कि जो पाठकोंके मनमें अवश्य क्रान्ति पैदा करेंगे, अतः इनका पठन विचारपूर्वक पाठकोंको करना चाहिये ।

हिंदुसमाजमें बहुत सद्गुण हैं, परंतु जैसा अन्न उबारता भी है और तारता भी है, उसी प्रकार हिंदुसमाजमें कुछ सद्गुण ऐसे बढ गये हैं कि, वे तारनेके स्थानमें समाजका घात ही करने लगे हैं । गुणोंकी सचाई और दोषोंकी बुराई परि-स्थितिके अनुसार समझनी चाहिये, इस बातका विचार हिंदु नहीं करते, इस कारण इनके गुण ही इनके मारक हो रहे हैं।

जातिभेद की तीव्रता, संप्रदायोंकी कटुता, अहिंसाकी अत्यधिकता, निवृत्तिके ऊपर अधिक बल देना, समष्टिके हितकी अपेक्षा स्वार्थको अधिक मानना, रूढिवादमें जकडा रहना, दैववादका असीम अवलंब, दम्भ, प्रयत्नवादका उपहास करना, आप्तजनोंको अल्प कारणसे दूर करना, दूसरोंपर अधिक विश्वास रखना, अहिंदुओंको न पचा सकना आदि अनेक दोष हिंदुसमाजमें हैं, जो हिंदुओंकी प्रगतिको रोक रहे हैं । इनको दूर करनेका यत्न होना चाहिये, यह ग्रंथ-कर्ताकी सूचना अत्यंत मननीय है ।

*

मुहम्मद कासीमने आठवीं सदीमें सिन्धपर आक्रमण किया, इस समय हिंदुओंका पराभव होनेका कारण आपसकी फूट और आपसमें अविश्वास ये थे । अपनेही दलित वर्गोंके साथ घृणा करनेका हिंदुओंका स्वभाव जैसा उस समय था, वैसाही आज भी है। मुहम्मद कासीम की सहायता करनेवाले जाट तथा मोढ जातिके लोग थे । इस समय ये घोडेपर जीन लगाकर बैठ नहीं सकते थे, अच्छे कपडे पहन नहीं सकते और सिरपर पगडी भी बांध नहीं सकते थे । इस तरह के सामाजिक मानहानिसे तंग आकर वे शत्रुको जा मिले थे । (पृ. ७)

हिंदुओंकी प्रवृत्ति अपने लोगोंको उदासीनतासे देख-नेकी थी, वह कासीमके आक्रमणके समयही थी, ऐसी बात नहीं । वह आजतक वैसी ही है । भारतके कर्ताधर्ता आजके कांग्रेसकी नीति मुस्लीमोंको सहानुभूतिसे देखती है और हिंदुओंको दबाती जा रही है । कासीमके आक्रमणके समय जो था वही भाव हिंदुओंमें आज भी कार्य कर रहा है ।

छूआछूत तथा जातीय उच्चनीचता की बात हिंदुओंमें शुरूसे जारी थी, पर आक्रमणकारी मुसलमानोंकी प्रवृत्ति इससे बिलकुल विपरीत थी, वे हिंदु व्यक्तिको खींच ले जाकर उसे धर्मान्तरित होनेपर बडे सम्मानकी जगहपर रखनेको सिद्ध थे । छत्रपति शिवाजी महाराज कितने शूरवीर और प्रभावी थे, पर राजा जयसिंह उसको जातिको हीन समझता था । राजा जयसिंहने यहांतक कहा था कि "मैं बादशहाका बन्दा, बादशहाका विजय करनेके लिये तथा बादशहाके साथ रिश्ता जोडनेके लिये भी सिद्ध हूं, पर शिवाजीका घराना तो नीच है, इसलिये उससे छूअे अन्नको भी मैं नहीं खा सकता " (म० पत्र इतिहास पृ. २४) यहांतक हिंदुओंमें आपसका विरोध और उच्चनीच भाव

था। इसलिये ये आपसमें मिल नहीं सकते थे।

हिंदुओंके स्वभावका एक दोष श्री गोविंदराव कालेजी– निजाम दरबारमें पेशवाओंके वकील— स. १७९२ में लिखते हैं— " आजकल महादजी शिंदेके प्रतापके कारण सब कुछ प्रदेश वापस मिला है। यवनोंमें तिलके बराबर अच्छी बात हो जाय, तो उसे ताडके बराबर कर दिखाया जाता है, और हम हिंदुओंको आकाशके बराबर यश मिले तो भी उसे मुंहसे कभी कहा न जाय। " (म. पत्र. पृ. २६०) यह हिंदुओंका स्वभावसाही है, इस कारण हिंदु अपनी जातिको प्रोत्साहन नहीं देती, पर यवन अपनी जातिको उत्साहित करते रहते हैं। इसका परिणाम जातिकी प्रगतिपर विलक्षण होता है। हिंदुओंमें आपसमें इसीसे वैमनस्य बढता जाता है और यवनोंकी संघटना और संख्या बढती जाती है।

हिंदुओंमें अपने लोगोंको दूर करनेकी प्रवृत्ति अधिक है, इससे दूर किये गये अपमानित आदमी दूर होते जाते हैं, इतनाही नहीं, पर वे शत्रुजातिमें मिलते हैं और वहांसे उपद्रवकारी भी हो जाते हैं। ऐसे अनेक उपद्रव हिंदुओंको सहने पडे हैं, पर हिंदु जातिने उस अपनी पद्धतिमें आवश्यक परिवर्तन नहीं किया है। ' पवित्रताकी सुरक्षा ' करनेके लिये हिंदु इसी पद्धतिको छोडना नहीं चाहता, यह एक बडी भारी आपत्ति है कि जिससे हिंदुओंकी संघटना नहीं हो रही है और यह सांघिक बलसे भी वंचित होता जा रहा है।

हिंदुओंमें एक जाति दूसरी जातिको नीच समझती है यहांतक कि चण्डाल भी दूसरे अच्छूतसे अपने आपको ऊंचा मानता और दूसरेको नीच मानता है। अच्छूत भी समान भूमिपर नहीं हैं, उनमें भी उच्च नीच भाव हैं। इसलिये सब हिंदु एक स्थानपर सम भावसे उपस्थित नहीं रह सकते।

बुद्ध भगवान्‌से लेकर जातपात तोडकमण्डलतक अनेक लोगोंमें हिंदुओंकी जाति-संस्थापर आघात किये पर वह संस्था आज भी वैसी अटूट रही है और हिंदुओंको निर्बल कर रही है। अपने रक्तकी पवित्रताकी कल्पना जाति-व्यवस्थामें है और यही हिंदुओंकी निर्बलताका प्रमुख कारण सिद्ध हुई है। ऐसे अनेक कारणोंसे हिंदुओंमेंसे कई हिंदु दूसरे धर्मोंमें गये और वेही आज हिंदुओंको जडसे उखाड देनेके लिये सिद्ध हुए हैं। हिंदुओंको इसका अवश्य विचार करना चाहिये।

रावणने सीताका हरण किया। भगवान् रामचन्द्रने रावणको परास्त करके सीताजीको वापस लाया। एक सीतादेवीकी सुरक्षा करनेके लिये इतना बडा युद्ध उस समयके आर्योंने किया था। आज कितनी अबलाएं भगायीं जातीं हैं ? पर ' शान्त रहो और सहते जाओ ' ऐसाही उपदेश आजके नेताजन करते हैं। इसलिये राक्षस बढते जाते हैं और साथ साथ आर्य महिलाओंका भी दुःख बढता जाता है। रामके राज्याभिषेकके बाद रामराज्य शुरू हुआ। उस समय एक धोबीने कहा कि ' सीताको रामचन्द्रने घरमें रखा पर मैं नहीं वैसा करूंगा। ' यह निंदा सुनतेही भगवान् रामचन्द्रजीने सीताका त्याग किया है। यही प्रथा इस दिनतक चली आ रही है और सहस्रों हिंदु स्त्रियोंका परित्याग किया जा रहा है। पवित्रताकी सुरक्षाके लिये पुरुषोंको सुसज्ज रहना चाहिये, न कि पुरुषोंकी निर्बलताके कारण स्त्रियोंको त्यागते जाना उचित है।

हिंदुलोग यदि इस विषयमें स्मृतियोंको पढेंगे तो उनको सुरक्षाका मार्ग दीख सकता है। इस पुस्तकके पृ. ३० से ६० तकके दो प्रकरण इस दृष्टिसे मननीय हैं। ' हिंदुधर्मशास्त्र और प्रायश्चित्त ' तथा ' पतित स्त्रियाँ और हिंदुधर्मशास्त्र ' ये दो प्रकरण शास्त्रदृष्टिसे बडेही विचार करने योग्य हैं।

जो समझते हैं कि बलात्कारित स्त्रीका भी पुनः स्वीकार नहीं करना चाहिये, तथा अन्य प्रकारकी पतित स्त्रीको भी शुद्ध करके नहीं लेना चाहिये, वे इन दो प्रकरणोंको मननपूर्वक पढें और हिंदुधर्मशास्त्र कितना उदार है यह जानें। बात यह है कि धर्मशास्त्र न जाननेके कारणही कई बुरी रीतियाँ हिंदुओंमें उत्पन्न हो गयीं हैं जो इन दो प्रकरणोंके पढनेसे दूर हो सकतीं हैं।

धर्मभ्रष्ट कौन है और कौन नहीं, इसका शास्त्रसिद्ध विचार लेखकने छठे प्रकरणमें पृ. ६१ से ८० तक किया है। लेखक अन्तमें कहते हैं कि " शास्त्रदृष्टिसे इन सब प्रकारके पतितोंको शुद्ध कर अपनेमें मिला लिया जा सकता है। " यदि हिंदु इस तरह अपने भाइयोंको अपने साथ पुनः मिला लेंगे तो हिंदुओंका बल कितना बढ जायगा ?

पृ. ११८ पर लेखक एक बात बडी महत्त्वकी लिखते हैं। वह यह कि– ' बुद्ध तथा जैन धर्ममें गृहस्थाश्रमको नीची श्रेणीका माना गया है और विषयसुखका त्याग कर ब्रह्मचर्य-का पालन करनेके महत्त्वका बहुतही वर्णन किया गया है। जहां गृहस्थका पत्नीसुखही निंदित हुआ, वहां विधवाविवाह आदि कैसे हो सकते हैं ? ' इससे पुनर्विवाह निंदित हुआ और पुनर्विवाह न करना उच्चताका लक्षण बन बैठा है।

हिंदुधर्मशास्त्र पर बुद्धों और जैनोंके आचारधर्मकी धाक इस तरह जम गयी है जो इस समयतक दूर नहीं होती और इसीमें हमारे लोग भ्रांतिसे भ्रमण कर रहे हैं।

हिंदुसमाजमें दूसरोंको मिला लेनेकी बात नहीं रही है। इसके अनेक कारण हैं, अन्य धर्मोंको अपवित्र मानना यह एक इसका कारण है। अपने धर्मका संख्याबल घटनेसे जो हानि होती है उसका विचार न करना एक बडा भारी कारण है। समाजके सामने व्यापक ध्येय नहीं था। अपना धर्म विश्व-व्यापक बनानेका ध्येय सामने न रहनेसेही ऐसा हुआ है। अपना धर्म ' कृण्वन्तो विश्वं आर्यं ' के अनुसार विश्वभर फैलानेका ध्येय न रहनेके कारण ये सब दोष उत्पन्न हुए हैं। हमारा सब ध्यान व्यक्तिगत पवित्रता रहा, सामूहिक बलका भाव हमारे मनसे हट गया, यही इस अधोगतिका एकमात्र कारण है। इस विषयका विचार पाठक इस पुस्तकमें पृ. १३६–१३८ तक देख सकते हैं।

पृ. १३९ से अन्ततक ' उपाय और जागरित हिंदुओंका कर्तव्य ' में दो प्रकरण प्रत्येक हिंदुको मननपूर्वक देखनेयोग्य हैं। इस उपाय–योजनाका अमल करनेसे हिंदुओंमें नव-चैतन्य आ सकता है और हिंदुओंकी संघटना भी हो सकती है, अतः हिंदुओंके घरघरमें इस पुस्तकका पाठ होना चाहिये।

हम जानते हैं कि हिंदुधर्म वास्तवमें सच्चा मानवधर्म अथवा सच्चा विश्वधर्म है। यदि इस धर्मको उसके मूल रूपमें देखा जाय तो वह तत्त्वदृष्टिसे, आचार–दृष्टिसे, अथवा अन्तिम ध्येयकी दृष्टिसे सर्वोपरि धर्म है। पर इसमें ऐसी कुप्रथाएं बीच बीचमें उत्पन्न हुई कि उनके कारण इस धर्म-की ओजस्विता मारी गयी और परम निर्बलता इसमें आ गयी है।

श्री. पं. रघुनाथ शास्त्रीजीने इस धर्मके इस पुराने रोगका अच्छी तरह निदान किया है और इसपर उपाय भी बताये हैं। ये उपाय करनेसे यह हिंदुधर्म पुनः तेजस्वी, ओजस्वी, वर्धिष्णु, प्रभविष्णु और जयिष्णु हो सकता है। हिंदुधर्मियों-को उचित है कि वे इस पुस्तकका पाठ करें, मनन करें, अपने दोषोंको देखें और जानें, उनसे जो अपने धर्मकी हानि हुई है वह अच्छी तरह अनुभव करें और इस ग्रंथके अन्तमें जो उपाय और कर्तव्य बताये हैं, उनको अपने जीवनमें ढालें और हिंदुधर्मको पुनः सजीव, सचेतन और प्रगतिशील बनानेका यत्न करें।

हम पं. रघुनाथशास्त्रीजीका धन्यवाद करते हैं कि आपने ऐसी उत्तम पुस्तक निर्माण की और हिंदुधर्मकी सच्ची उन्नतिका मार्ग बताया है। जो पाठक इसको पढेंगे वे पं. रघुनाथ शास्त्रीजीका धन्यवाद किये विना नहीं रहेंगे। योग्य समय पर यह पुस्तक प्रसिद्ध हुई है। हम चाहते हैं कि सब हिंदु इसका स्वागत करें और इस तरह अपना सुधार करके विश्वमें यशस्वी बनें।

'हिन्दी', 'उर्दू' या 'हिन्दुस्तानी'

"जहाँ तक 'हिन्दी,' 'हिन्दुस्तानी' और 'उर्दू' नामोंका सम्बन्ध है, इस देशकी इस भाषाके लिए जिसे बादमें 'खडी-बोली' कहा जाने लगा, 'हिन्दी' नाम "हिंदुस्तानी" नामसे तीन सौ बरस पुराना है और 'उर्दू नामसे कम-से-कम चार सौ वर्ष पुराना है। यद्यपि ये तीनों नाम मुसलमानोंके आनेके बाद और उन्हींके रखे हुए हैं। तेरहवी सदीके अन्तमें फखरुद्दीन मुबारक गजनवीने एक फारसी-हिन्दी डिक्शनरी तैयार की और चौदहवीं शताब्दीके आरम्भमें अमीर खुसरोने अपनी भाषाको 'हिन्दवी' और 'हिन्दी' कहा। कम-से-कम उस समयसे लेकर अब तक इस नामका बराबर प्रयोग होता रहा। सोलहवीं शताब्दीसे इस भाषाके लिये 'हिन्दुस्तानी' नाम भी प्रयुक्त होने लगा। सोलहवीं, सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दीकी बहुतसी पुरानी किताबोंमें 'हिंदुस्तानी' नामका बराबर प्रयोग होता रहा। इस जबानके लिये जिसे पहले हिन्दुस्तानी कहा जाता था सतरहवीं सदीमें पहले-पहल 'उर्दू' नामका प्रयोग आरम्भ हुआ......।" ('हमारी जबान' में प्रकाशित पंडित सुन्दरलालजीके लेखसे)

'नये हिन्द' की 'नयी बोली'

प्रयागसे हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटीकी ओरसे 'नया-हिन्द' नामका जो रिसाला छपता है, उसका उद्देश्य हिन्दी और उर्दूके बीचकी एक 'नई-बोली' तैयार करना है। इस 'नई-बोली' के बारेमें अंजुमने तरक्कि ए उर्दूके अखबार "हमारी-जबान" की राय है—

"...नई—हिन्दीके 'प्रचारक' सम्भवतः इसे पसन्द नहीं करेंगे। उर्दूके पक्षपाती तो निश्चयसे यही कहेंगे कि यह एक बनी बनाई जबानको बिगाडनेका प्रयत्न मालूम होता है। हिंदुस्तानमें यह 'नयी-बोली' के आविष्कारका आन्दोलन वास्तवमें गान्धीजीने आरम्भ किया था कि वह सारे भारतके लिये अंग्रेजीके स्थानपर एक मिलीजुली भाषाका काम दे सके। इसका नाम पहले "हिन्दी अथवा हिंदुस्तानी" रखा गया था। अब केवल "हिन्दुस्तानी" कहना पर्याप्त समझा जाता है। **इस आविष्कारका नमूना 'हरिजन सेवक' पत्र है जिसकी लिखाई उर्दूमें होती है किन्तु प्रायः शब्द ऐसे 'संस्किरती' कि ऊर्दू वालोंका तो क्या कहना अच्छे-अच्छे हिन्दी जानने वाले भी बडी कठिनाईसे इनके अर्थ समझ सकते हैं।** 'नया-हिन्द' वालोंने इस अधिकतामें कुछ कमी करनेका प्रयत्न किया है। वे शायद अपना क्षेत्र भी उत्तर-भारत तक ही सीमित रखाना चाहते हैं। हमारी रायमें यही सदुद्देश्य हो तो पुण्य ही मानना चाहिये, लेकिन तब भी हम 'रिसाले' के संस्थापकोंकी सेवामें कुछ निवेदन करना चाहते हैं—

"सौ डेढ सौ वर्षसे उर्दू एक स्थायी साहित्यिक भाषा बन गई है। व्याकरण और कोषोंने, ऊँचे दर्जेके कवियों तथा गद्य-लेखकोंने इस का ढांचा तैयार कर दिया है और साहित्यिक माप-दण्ड भी। इसमें ज्ञानविज्ञानकी हजारों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। सैकडों समाचार-पत्र और पत्रिकायें छप रही हैं। इस हालतमें उर्दूवाले किसी परिवर्तनको स्वीकार न करेंगे। सम्भव है "नई" हिन्दीवाले भी यही आपत्ति उठायें। ऐसी हालतमें दोनोंमें तोडफोड करके एक 'नई-बोली' प्रचलित करनेमें कैसे सफलता मिल सकती है?"

हिंदी साहित्य संमेलन

(श्री. सभापतिजीके अभिभाषणसे)

सिंध भूमिको श्रद्धाञ्जलि

संमेलनका यह अधिवेशन ऐसे प्रान्तमें हो रहा है, जहाँ हिन्दी बोली नहीं जाती, किन्तु समझ लेते हैं, और जहाँकी लिपी भी, अरबी लिपिका परिवर्द्धित संस्करण है। सिन्धी भाषापर ऐतिहासिक उतार-चढावोंके कारण बाहरकी भाषाओंका काफी प्रभाव पडा है, पर अन्य अनेक भारतीय भाषाओंकी भाँति सिन्धी भी प्रकृतिसे संस्कृत और प्राकृतमूलक है। सिंधी के विद्वान् लेखक श्री झमतमल नारुमलने अपने सिन्धी भाषाके व्याकरणमें, जिसे १८६२ में सिंध--सरकारने प्रकाशित कराया था, लिखा है, "सिन्धीमें कुल २०,००० शब्द हैं, जिनमें १२००० संस्कृतके तद्भव हैं, ३५०० देशज हैं, २००० फारसीके और २५०० अरबीके शब्द हैं। ३५०० देशज शब्दोंमें भी बहुत-से संस्कृतमूलक शब्द हैं। क्रियाएँ, सर्वनाम, संख्यावाचक, विशेषण और अव्यय सब संस्कृतमूलक ही हैं।"

सिन्ध प्रदेशकी प्राचीनतम सभ्यताका तो कहना ही क्या। यहांकी सांस्कृतिक समृद्धिकी साक्षी संसारको आज भी सहस्रों वर्षके पुराने मोएँनजो-दडोके भग्नावशेष दे रहे हैं। ऋग्वेदने, महाभारतने तथा पुराणोंने इस आर्यावासकी महिमाका भूरि-भूरि गान किया है। हमारे सौभाग्य--सूर्यका उदय और अस्त दोनोंही इस प्रदेशने देखे। इतिहासने न जाने कितनी सीधी-टेढी रेखाएँ इसके जीर्ण अंचल पर खींचीं। सिन्धको सचमुच अपने अर्जनका सबसे अधिक विसर्जन करना पडा। क्या-क्या जबर्दस्त सांस्कृतिक संघर्ष हुए यहां; फिर भी सिन्धने अपनी मूलगत भावनाओंको बहुत-कुछ ध्वस्त होनेसे बचा लिया। यहाँके ग्राम्यगीतों और सिन्धी भाषाके अनेक तद्भव तथा अपभ्रंश शब्दोंने हमारी मूल संस्कृतिको सर्वथा विशृंखल नहीं होने दिया। यहाँके सूफी सन्तोंपर भारतीय रहस्य-दर्शन की छाप हम स्पष्ट देखते हैं। सचल सरमस्तकी एक साखी है—

आहि रूहु मुँहिं जो अर्ब जो ऐं खाक हिंदु जी;
महमद मिल्यो हुते त हिति श्याम मिल्यो आहि।×

अर्थात्, मेरी आत्मा अरबकी है और मेरा शरीर हिन्दी है, वहां अगर मुहम्मद मिले हैं, तो यहां श्याम मिले हैं। महान् सूफी सामीने कहा है—

गुरु गम उड़ाणी, गुदी सहिज आकास में
सतई लोक लंघे करे, सुन में समाणी,
बोले प्रेम बचन सां बेहद जी बाणी।+

मतलब यह कि गुरुकी कृपासे यह गुडिया (आत्मा) आकाशमें उड गई और सातों लोकोंको पारकर सुन्नमें समा गई और (प्रेम) पवनसे बेहद (असीम) की बानी बोल रही है।

सिन्धके सूफी-सम्राट् शाह लतीफकी प्रेम-कहानियोंमें हम उसी अध्यात्म-रसको पाते हैं, जिसे कबीर और जायसीने प्रेमके सहज निर्झरोंसे प्रवाहित किया था। आज भी सिन्धके महान् साधक साधु वास्वानीका आध्यात्मिक सन्देश हमें भारतकी ऋषि-परंपराका स्मरण कराता है। सिन्धके प्रति मेरी श्रद्धा-भक्तिको साधु वास्वानीके प्रेमपूर्ण प्रवचनोंने ही ज्वलन्त किया था। आज इस पुण्यप्रदेशको, इस प्राचीनतम आर्य--भूमिको मैं श्रद्धापूर्वक शिरसा प्रणाम करता हूँ।

राष्ट्र-भाषाका स्वरूप

सबसे पहले मैं राष्ट्र-भाषाके स्वरूपके सम्बंधमें ही कहना चाहता हूँ। संमेलनका मत स्पष्ट है। वह हिन्दीको, उसके प्रचलित रूपमें, राष्ट्र-भाषा और नागरी लिपिको राष्ट्र-लिपि मानता है। उसकी इस मान्यतामें शुद्ध और पूर्ण राष्ट्रीय दृष्टि-कोण रहा है। जहाँतक हिन्दीके बोलनेका सम्बन्ध है, विभिन्न हिन्दीभाषी प्रदेशोंमें भी उसके अनेक रूप प्रचलित हैं। लिखी भी वह कई शैलियोंमें जाती है। एक शैली उसकी उर्दू भी है, जिसका चलन विशिष्ट जनोंमें पाया जाता है। स्पष्ट है कि

× कौमी बोली (हैदराबाद सिन्ध)— जून, १९४५
+ कौमी बोली—मई, १९४५

हमने इस विशिष्ट शैलीको बहिष्कृत नहीं किया है; ऐसा करनेकी हमारी कभी मनशाभी नहीं। किंतु सम्मेलनने हिन्दीकी उसी साधारण शैलीको राष्ट्र-भाषा माना है, जिसमें कबीर, रैदास, जायसी, तुलसी, सूर, मीरा, गुरु नानक, रहीम, रसखान, हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण, प्रसाद, पंत आदि कवियों और संतोंने, तथा राजा शिवप्रसाद, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, महावीरप्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचन्द आदि लेखकोंने राष्ट्रके विचारों और भावोंको, भिन्न-भिन्न कालों और अलग-अलग परिस्थितियोंमें, स्वाभाविक रीतिसे व्यक्त किया है। ये सब मणियाँ एकही अखंड सूत्रमें पिरोई हुई हैं। भारतीय राष्ट्रकी व्यापक भावनाओंको व्यक्त करनेकी क्षमता रखनेवाली संस्कृत और प्राकृतमूलक भाषाएँ ही सदासे रही हैं। और हिन्दीने तो इस दिशामें सबसे अधिक काम किया है। राष्ट्रीय चेतनाको जगाने और फैलानेमें वह सबसे अधिक समर्थ भाषा सिद्ध हुई है, इसमें कोई सन्देह ही नहीं।

हमारे देशमें भाषा कभी वाद-विवादका विषय नहीं बनी थी। उसपर कभी राज-सत्ताका अंकुश नहीं रहा। मुसलिम शासन-कालमें भी राज-भाषा फारसी उसके फलने-फूलनेमें दखल नहीं दे सकी। राज-भाषा लोक-हृदय और लोक-मस्तिष्कपर थोडेही शासन कर सकती है? यह अलग बात है कि हमारे कवियों और लेखकोंने अरबी, फारसी और तुर्कीके अनेक शब्दोंको सद्भावसे, सहज रीतिसे, ग्रहण कर लिया। हमारी भाषामें वे घुल-मिल गये, रच-पच गये। इसमें कोई साम्प्रदायिक या राजनीतिक दृष्टि नहीं थी। यह अंगीकार तो 'अयत्न-साधित' हुआ। इस चीजके भीतर, अनजतायें, प्रेमकी भावना काम करती थी। वे यह सोच-सोचकर नहीं लिखते या कहते थे कि अमुक शब्दको इसलिए लेना ठीक नहीं कि उसे अमुक जन-समुदाय नहीं समझ सकेगा। यह भी समझे और वह भी समझे, बल्कि शब्दोंके बँटवारेमें हम काफी उदार भी समझे जायें– इस नीयतसे हम लिखेंगें और बोलेंगे तो वह भाषा स्वभाव-सरल न होकर बनावटी ही होगी। भले ही हमारी मनशा भाषाको सरल या आमफहम बनानेकी हो, पर अपने इस अस्वाभाविक प्रयत्नमें हम सफल नहीं हो सकेंगे। दो विभिन्न भाषाओंके समानार्थक शब्दोंको एकसाथ रखनेसे भी भाषाके आमफहम बनानेका प्रश्न हल नहीं होगा। साम्प्रदायिक ऐक्य-साधनकी धुनमें भाषाको जान-मानकर बिगाडना किसी भी दृष्टिसे समीचीन नहीं। बेमेल शब्दोंको कान उमेठ-उमेठकर जबरदस्ती ऐसी जगह बिठाना, जो उनके लिए मौजूं न हो, एक व्यर्थकाही प्रयास है। कभी इस तरह सरल, सुबोध और सामान्य भाषा बनी है? इस फेरमें पडकर भाषाको— हिन्दीको भी और उर्दूको भी--अस्वाभाविक और असुन्दर क्यों बनाया जा रहा है? सरल भाषा तो स्वभावसे ही सुन्दर होती है। जिस भाषामें, जिस शैलीमें सौंदर्य नहीं, लोच नहीं, चमत्कार नहीं, वह लोक-हृदयको कैसे आकृष्ट कर सकती है?

कबीरने भाषाको 'बहता नीर' कहा है। प्रवाह सहज अर्थात् 'अयत्नसाधित' होता है। हमें इस बात को भी तो ध्यानमें रखना चाहिए कि हम किस प्रकारकी भाषा या शैलीद्वारा क्या कहना या लिखना चाहते है। भाषा और शैली दोनों विषय--विशेषका अनुसरण करती हैं। विषयकी यथेष्ट व्यंजना लेखक या वक्ताके यथार्थ ज्ञान पर निर्भर रहती है। कबीरने और उनकी कोटिके पारदर्शी संतोंने सरल--से सरल भाषामें अध्यात्मके ऊँचे और गहरे सिद्धांतोंका सफलतापूर्वक निरूपण किया है। पर उनका अनुकरण कौन करे? वे तो भाषाके अधिनायक थे, भावोंके सम्राट् थे। उनकी निपट सरल--सहज भाषा उस महारस की अनूठी गागर है, जिसे उन्होंने जीवनकी सहज साधनासे भरा था। पूज्य गांधीजीकी भी हिंदी ऐसी ही स्वभाव-सरल होती है। वे भाषाके नियमोंका भंग जान--बूझकर नहीं करते। मगर उनके 'हरिजनसेवक' की वर्तमान हिन्दी,-नहीं नहीं, हिन्दुस्तानी को जरा आप देखें। उसमें हिंदी और उर्दूका बेमेल गठ-बंधन किस भौंडेपनके साथ किया जा रहा है! हिन्दुस्तानीके नाम पर हिन्दी और उर्दूका यह भद्दा परिहास अच्छा नहीं।

यदि समन्वयके विचारसे राष्ट्र--भाषाको बिलकुल नये साँचेमें ढाला जा रहा हो, तो मुझे इतना ही कहना है कि समन्वयीकरणमें भाषा की मूल प्रकृतिका हमें पूरा ध्यान रखना होगा। यह व्याख्या कोई खास मानी नहीं रखती कि हमें ऐसी जबानमें लिखना चाहिए, जिसमें न संस्कृतके कठिन शब्दोंकी अधिकता हो और न अरबी--फारसीके मुश्किल लफ्ज इस्तेमाल किये जायें, और जिसे सर्वधारण समझ लें। विषय को देखते हुए हम जान--मान-कर कठिन शब्द नहीं रखेंगे, पर संभव नहीं कि हमारी भाषामें यथास्थान संस्कृतके तत्सम

तथा तद्भव शब्द प्रचुरतासे उपयोगमें न लायें जायें। विदेशी भाषाओंके जो शब्द हमारे नित्यके व्यवहारमें आते हैं और घुल--मिल गये हैं वे हिन्दीमें हमेशा आदर का स्थान पायेंगे, आवश्यकतानुसार निर्बाध रूपसे हम नये शब्दोंको भी खपाते रहेंगे। इतना ही नहीं, राष्ट्र--भाषाको अधिक समृद्ध बनानेके विचारसे भिन्न-भिन्न जनपदों और प्रांतोंके बहु-अर्थ-गर्भित समर्थ और सुन्दर शब्दोंका भी हम उसमें समावेश करेंगे। समन्वयका मैं भी विरोधी नहीं, प्रेमी हूँ। किन्तु समन्वय वैसा, जैसा रागमें भिन्न--भिन्न स्वरोंका। प्रत्येक रागका उसकी अपनी प्रकृतिके अनुसार, बँधा हुआ सरगम होता है। इस स्वरको यहां इतना स्थान मिला है, तो उस या उन स्वरों को भी उतना ही मिलना चाहिए, अथवा यह स्वर मध्यम लगाया गया है, तो वह भी मध्यम ही लगाना चाहिए—यदि इस न्याय-नीतिको लेकर आप सरगमकी पुनर्रचना करने बैठेंगे तो उससे कौनसा राग बनेगा! इस नीतिसे भला कभी सामंजस्य सिद्ध हुआ है! यही बात भाषाके सम्बंधमें भी है। जिस प्रयत्न द्वारा हमारी भाषाकी प्रकृतिका अंग-भंग होता हो, उसे असुन्दर और विरूप बनाया जाता हो, उस प्रयत्नका चाहे जो नाम दिया जाये, पर उसे समन्वय या सामंजस्यका प्रयत्न नहीं कहा जा सकता। असली सिर काटकर उसकी जगह बकरेका सिर चिपका देनेसे दक्ष प्रजापति की जो शकल बनी थी उसे देखकर तो भगवान् रुद्र भी खिलखिलाकर हँस पडे थे! उस विचित्र आकृतिको नर और अजाका समन्वय कहनेके लिए क्या आप तैयार हैं? इस प्रकारके असामंजस्यपूर्ण कृत्रिम प्रयत्नोंसे न कभी समन्वय हुआ है और न होगा।

अच्छा तो यह होगा कि हिन्दी और उर्दूको अपने-अपने रास्ते बढने और फैलने दिया जाये। बिना किसी बाहरी जतनके, पहलेकी तरह, आपसमें अपने-आप दोनों अनजताये आदान-प्रदान क्यों न करती रहें? राष्ट्रके विचारों और भावोंको व्यक्त करनेकी जिसमें जितनी अधिक सामर्थ्य होगी वह उतने ही बडे जन-समूहको स्वयं अपनी ओर खींच लेगी। उद्यानमें आप सभी फूलोंको अपने--अपने रसमें महकने दें। एक पेडका फूल तोडकर दूसरे पेडकी डाली पर न खोंसते फिरें। भ्रमर किन फूलों पर जाकर बैठते हैं और किनपर नहीं इस व्यर्थकी चिंतामें न पडें—यह पसंदगी तो आप कृपा कर रस--ग्राही भ्रमरों पर ही छोड दें। प्रकृत रसिकोंके आगे गिने--चुने फूलोंके गुलदस्ते सजासजाकर न रखें।

तब तो शायद इसका यह अर्थ हुआ कि हमें भाषाके क्षेत्रमें किसी भी प्रकारका सुधार, प्रयत्न और प्रचार नहीं करना चाहिए। नहीं, मेरा यह आशय कदापि नहीं। प्रयत्न और प्रचार हम अवश्य करें, पर वह शुद्ध रचनात्मक हो, अकृत्रिम हो और भाषा--विज्ञानके नियमोंसे असम्बद्ध न हो। यदि हमारे प्रचार का आधार समर्थ साहित्य का निर्माण होगा, तो फिर विवाद या शंकाके लिए स्थान ही नहीं। रचनात्मक अर्थात् प्रेम-मूलक प्रयत्न और प्रचारसे हम विभिन्न भाषाओंमें सही और स्वाभाविक समन्वय सिद्ध कर सकेंगे। और तभी, मलिक मुहम्मद जायसीकी इस साखीका अर्थ भी हृदयंगम हो सकेगा—

तुरकी, अरबी, हिन्दुई भाषा जती आहि।
जेहि महँ मारग प्रेमका सबै सराहैं ताहि॥

मगर 'प्रेमके मारग' का, सन्तों और सूफियोंके ऊँचे निर्मल घाटका जहाँ वर्णन करेंगे वहीं हम अन्तरके आमने-सामने बोलनेवाली सहज भाषाका सहारा लेंगे। शास्त्रीय गम्भीर विषयोंके निरूपणमें हम दूसरी ही भाषा और शैलीका प्रयोग करेंगे। इसी प्रकार दर्शन और विज्ञानकी भाषासे राजनीतिक और सामाजिक विषयोंकी भाषा भी भिन्न होगी। अपने विचारों व भावोंको यथार्थ, परिष्कृत और सुन्दर ढंगसे प्रकट करनेकी दृष्टिसे कहीं हम संस्कृतके तत्सम शब्दोंका उपयोग करेंगे, कहीं तद्भव शब्दोंको काममें लायेंगे और कहीं देशज और अन्य भाषाओंके शब्दोंको स्थान देंगे। ऐसा होगा हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दीका स्वरूप, और यह रूप निर्धारित भी हो चुका है।

राजनीतिक और साम्प्रदायिक प्रश्न हमारी भाषापर दबाव नहीं डाल सकेंगे। उसपर राज-शासन नहीं चल सकेगा; उलटे, उसके अन्दर राज्यको जमाने और उलट देनेकी शक्ति होगी। यह शक्ति बीज-रूपसे हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दीके अन्दर विद्यमान है। राष्ट्रकी भावनाओंको जगाने और एक छोरसे दूसरे छोरतक फैलानेमें हिन्दीका सबसे अधिक हाथ रहा है। फिर हिन्दीको किसी खास सम्प्रदायकी भाषा कहनेका कौन साहस करेगा? हिन्दीका उर्दूसे न वैर है, न उससे कोई भय है। वह तो उसकी ही अपनी एक विशिष्ट शैली है। कलकी हिन्दुस्तानीसे

भी उसे कोई खटका नहीं, न हिन्दुस्तानी नामसे ही उसे चिढ है। यदि हिन्दुस्तानी नामसे भाषाके उसी स्वरूपको ग्रहण किया जाता हो जिसे कि हम आज राष्ट्र-भाषाके रूपमें स्वीकार कर रहे हैं, तो हिन्दीका 'हिन्दुस्तानी' नामकरण करनेमें हमें सङ्कोच नहीं होगा, यद्यपि नया नामकरण बिल्कुल व्यर्थ है। प्रश्न तो असलमें भाषाके स्वरूपका है।

'रेडियो' की हिंदुस्तानी

इस सिलसिलेमें मेरा ध्यान स्वभावतः उस 'हिन्दुस्तानी' पर भी जाता है, जिसका प्रसार और प्रचार रेडियोपर किया जा रहा है। राष्ट्र-भाषा हिन्दीका रेडियोकी इस भाषा-नीतिसे काफी अहित हुआ है। हमारे हजार विरोध-प्रदर्शन करनेपर भी उसकी नीतिमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। सम्मेलन तो अपना निश्चित मत स्पष्ट कर चुका है। 'एक भाषा' का सम्मेलन भी समर्थक है। समन्वयसे वह घबराता नहीं। किंतु राष्ट्रकी बहुत बडी जन-संख्यामें समझी जानेवाली हिन्दीकी बलि देकर या उसे बुरी तरह विकृत करके 'एक भाषा' बनाने का वह अन्ध समर्थक नहीं है। समन्वय न्यायसङ्गत और स्वाभाविक होना चाहिए। राष्ट्रीयताके तथा भाषा-विज्ञानके स्थिर सिद्धान्तोंके आधारपर ही 'एक भाषा' का निर्माण हो सकता है। उस 'एक भाषा' के नामपर कोई खास बहस नहीं, यद्यपि 'हिन्दी' नाम सबसे अच्छा है। हमें तो उसके 'स्वरूप' से मतलब है। अबतक इस दिशामें कुछ भी निश्चित नहीं हुआ है, जिससे हमें सन्तोष हो। उलझन वही-की-वही है। हमारी अन्तर्कालीन राष्ट्रीय सरकारने भी अबतक कोई कदम नहीं बढाया। यदि सम्मेलनके तर्कसङ्गत सुझावोंके अनुसार एक भाषा- निर्माणका प्रश्न सम्भव न दीखता हो, तो फिर खबरोंको हिन्दी और उर्दूमें अलग-अलग 'ब्राडकास्ट' किया जाये, और इसी प्रकार विभिन्न रेडियो-स्टेशनोंसे प्रान्तोंकी जनसंख्याके उचित अनुपातसे दूसरे प्रोग्राम भी सुनाये जाया करें। रेडियोकी वर्तमान हिन्दी-घातक नीतिका अन्त तुरन्त होना चाहिए। सम्मेलनने जिस सद्भावपूर्ण न्यायकी आशासे बहिष्कार-आन्दोलन उठाकर सहयोगका हाथ बढाया था, उसका सही उत्तर उसे अबतक नहीं मिला। हिन्दी-जगतमें फिर अन्दर-अन्दर रेडियो-विभागकी इस उपेक्षा-नीतिसे असन्तोष और क्षोभ बढ रहा है। क्या भारत-सरकार इस प्रकार असन्तोषका बढते रहना राष्ट्रके हितमें अच्छा समझती है?

एक गलत प्रचार

भारतके उन प्रान्तोंमें, खासकर दक्षिणमें, जहां हिन्दी बोली नहीं जाती, कुछ दिनोंसे यह मत फैलाया जा रहा है कि शुमाली याने उत्तरी हिंदुस्तानमें वह जबान बोली और बरती जाती है जो न हिन्दी है न उर्दू, फिर भी जो हिंदी और उर्दूकी मिलावटसे बनी है— उसे वहाँ हिंदुस्तानी कहते हैं और वही वहाँकी आमफहम भाषा है। एक जिम्मेदार सज्जनने तो यहाँतक कह डाला कि हमारे लिए तो संस्कृत-निष्ठ हिन्दी और अरबी-फारसीके लफ्जोंसे लदी उर्दू ये दोनोंही एक जैसी अजनबी हैं। एक तकरीरमें यह भी कहा गया कि सम्मेलनने जिस हिन्दीको राष्ट्र-भाषा मान रखा है उसमें आज सही नजर और फैली हुई कौमियत नहीं दिख रही है। जबरदस्ती कौमियत कायम करनेके लिए भारत राष्ट्रका सब-कुछ बलि कर देनेकी तैयारी हो रही है। इसके लिए कुछ ऐसे विद्वानोंकी व्यवस्थाएँ भी ली गई हैं, जिन्होंने जान या अनजानमें ऐतिहासिक और सांस्कृतिक तथ्योंकी तोड-फोड की है और कुछ नये आविष्कार भी किये हैं। भाषा-विज्ञानके विद्वानोंके मतोंकी उपेक्षा की गई है। हिन्दी भाषा तथा साहित्यके इतिहासके पन्ने उलटनेकी आवश्यकता नहीं समझी गई। चूंकि उद्देश्य जबरदस्त कौमियत कायम करनेका रहा है, इसलिए स्वभावतः प्रायः ऐसे पंडितोंका सहयोग प्राप्त किया गया है जो राजनीतिक समझौतों और सौदोंके बलपर साम्प्रदायिक एकीकरणकी संभावनामें विश्वास करते हैं। इसी हेतुको साधनेके लिए नये-नये तर्कों द्वारा तरह-तरहका प्रचार किया जा रहा है। मैं उन तर्कोंके अनावश्यक विस्तारमें उतरना नहीं चाहता। इतनाही कहूँगा कि हजार प्रचार करनेपर भी कोई इस प्रखर सत्यपर पर्दा नहीं डाल सकता कि "भारतवर्षका कम-से-कम चार-पाँचवाँ हिस्सा प्रकृतिसे ही संस्कृत शब्दोंको समझता है," इसलिए उसकी दृष्टिमें संस्कृतमूलक हिन्दी 'अजनबी' हो नहीं सकती। हिन्दीकी शरीर-रचनामें संस्कृतके तत्सम और तद्भव शब्दोंका रहना स्वाभाविक है; उन्हें वह छोड नहीं सकती। उसकी जिस संस्कृत-निष्ठतापर आज आक्षेप किया जाता है वही तो उसकी लोक-व्यापकताका मूल कारण है। सम्मेलनके पूना-अधिवेशनमें श्रीनरसिंह चिंतामणि केलकरने यह बिलकुल सही कहा था कि— "मराठी और हिन्दीके बीच जो नाता पहलेसे है वह तो संस्कृत भाषाके कारण ही है।",

हिन्दीको ' संस्कृत-निष्ठ ' कहनाही गलत है। हिन्दी तो हिन्दी है।

हिन्दीकी विशिष्ट शैली उर्दूको जो सीखना चाहते हैं शौकसे सीखें। हमारी उनके साथ कोई बहस नहीं। उर्दूके लहलहे बागसे कितनेही अच्छे खुशबूदार फूल चुने जा सकते हैं। उसमें सैर करनेको कौन मना करता है? यदि बने तो फारसी-साहित्यका भी ज्ञान-लाभ कर सकते हैं। हमारा किसी भी भाषा और उसके साहित्यसे विरोध नहीं। किंन्तु संस्कृत-मूलक या संस्कृतयुक्त भाषा-भाषियोंपर उर्दूको और हिंदुस्तानीके नामसे परिचित नई कौमी जबानको, जो उर्दूका ही एक भद्दा रूप है, लादा नहीं जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि हमारे सन्मान्य मित्र कृपाकर अहिन्दी-भाषी प्रांतोंमें व्यर्थ भ्रम न फैलायें, बुद्धि-भेद पैदा न करें। यह मुझे विश्वास है कि देशमें शुद्ध राष्ट्रीयताके विकसित होते ही इस और ऐसे ही दूसरे भ्रमोंका निवारण अपने-आप हो जायेगा। सूर्य-मण्डलको कोहरेका आँचल आखिर कबतक छिपाये रख सकता है?

हिन्दी और हिन्दुस्तानीके इस अप्रिय वाद-विवादपर, पक्ष और विपक्षमें, इधर बहुत-कुछ कहा और लिखा गया है। मेरे विद्वान् मित्र भदन्त आनन्द कौसल्यायनने समय-समय पर राष्ट्र-भाषा हिन्दीके पक्षका खासा तर्क-सङ्गत और शिष्टतापूर्ण समर्थन किया है। अन्य विद्वान लेखकोंने भी अपने-अपने ढंगसे हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानीपर कई खोज-पूर्ण लेख लिखे हैं। किन्तु घरेलू विवादमें कभी-कभी कुछ कटुता-सी देखनेमें आई है। यह हमारे लिए शोभाकी बात नहीं है। आपसके ऐसे विचारोंमें शील-मर्यादाका हमें पूरा ध्यान रखना है। गांधीजीने राष्ट्र-भाषा हिन्दीकी अनुपम सेवा की है। सम्मेलन उनका सदा ऋणी रहेगा। आज दुर्भाग्यसे भाषाके प्रश्नपर हमारा उनके साथ मत-भेद हो गया है। मत-भेद प्रकट करते समय हमारी तर्क-शैली और भाषामें अविनय नहीं आनी चाहिए। हमें यह न भूलना चाहिए कि गांधीजीके त्याग-पत्रका अर्थ सम्मेलनका परित्याग नहीं है। उन्हींके शब्दोंमें, उनके सम्मेलनसे निकलनेका अर्थ 'सम्मेलनकी अर्थात् हिन्दीकी ज्यादा सेवा करना है।' सम्मेलनके गत वर्षके अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल मुनशीके इन शब्दोंसे मैं सहमत हूं कि "सम्मेलन और गांधीजी दोनों अपने-अपने स्वधर्मका पारस्परिक उदारतासे अनुसरण करें। राष्ट्र-भाषाविषयक प्रश्नके समाधानके लिए अटूट श्रद्धा, उत्साह और त्यागकी आवश्यकता है।"

सम्मेलनने जिन परिस्थितियोंमें कार्य किया उनको बहुत अनुकूल नहीं कहा जा सकता। न उसे राज-सत्तासे प्रोत्साहन मिला, न जैसा चाहिए वैसा श्रीमन्तोंसे, और न देशके दिग्गज विद्वानोंसे। राज्यसे उसे प्रोत्साहन मिल भी नहीं सकता था। उसने सम्मेलनको सन्देहकी ही दृष्टिसे देखा। श्रीमन्तोंने भी प्रायः उपेक्षा की; हिन्दीके कामको उन्होंने शीघ्र फलदायक नहीं समझा। हमारे विद्वानोंने राजभाषा अंग्रेजीमें लिखना शायद अधिक गौरवपूर्ण माना। सम्मेलनको बडी विषम परिस्थितियोंमेंसे गुजरना पडा। सीमित साधनोंको लेकर वह अपनी जीवन-यात्रा तय कर रहा है। विरोध और अप्रिय असहकारका सामना उसने विनम्रतापूर्वक किया है। उसने अपने अस्तित्वको विनाशके पथसे बचाया है। उसने कभी भी साहित्यिकताका तथा राष्ट्रीयताका अहित नहीं किया। निश्चयही, सम्मेलनने राष्ट्र-भाषा हिन्दीकी पताकाको ऊँचा किया है।

सम्मेलनका मार्ग लोक-सेवाका मार्ग है। भारत-राष्ट्रकी सेवा उसने विना किसी भेद-भावके की है। जातिगत, धर्मगत और सम्प्रदायगत भेद-भावको उसने सदा दूर रखा है। जैसे राष्ट्र सबका है, वैसे भाषा भी सबकी है। मैं फिर दोहराऊँगा कि सम्मेलन जिस राष्ट्र-भाषा हिन्दीका प्रचार कर रहा है, उसका किसी भी भाषासे वैर या विरोध नहीं है। भाषाएँ तो सभी ज्ञान-विज्ञानका प्रकाश देनेवाली हैं। यों तो भाषाके रूप में अंग्रेजीसे भी हमारा कोई विरोध नहीं है। पर जिस दुष्टतासे उसने हमारे मानसको मोहित या आक्रान्त कर रखा है, उससे निस्सन्देह अंग्रेजीके साथ हमारा विरोध है, वैर है। निश्चयही उन सब स्थानोंसे हम अंग्रेजीको निकाल बाहर कर देना चाहते हैं, जहाँ उसे पैर नहीं रखना चाहिए था। इस अंग्रेजीने ही हमें अंग्रेजोंका क्रीतदास या ' मानसपुत्र ' बनाया है। हमारे राज-काजमें, हमारे आपसके व्यवहारमें, हमारी सार्वजनिक संस्थाओंमें अंग्रेजी भाषा क्यों दखल दे? अंग्रेजोंके साथही अंग्रेजीको भी हमें पद-च्युत करना है; यह हमारी प्रतिज्ञा है।

हिंसा-अहिंसा

(लेखक— श्री० वशिष्ठजी)

हमने पहिले काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, भय आदिको मानसिक हिंसा कहा है । लोकमें ये अन्ध प्रवृत्तियों या विरोधी शक्तियोंके नामसे विख्यात हैं । हमारी अन्ध प्रकृतिके लिये ये सहायक और बाधक दोनों हैं । पृथक् रूपसे इन सबको हम हेय मानते हैं, किन्तु ये हमारे कार्यक्षेत्रमें– चाहे वह कार्य पाप हो या पुण्य– हमारे कर्मोंका संतुलन करके हमारी रक्षा करती हैं। हमें किसी बुरे कामके करनेवालेपर क्रोध आता है हम उसे दण्ड देना जरूरी समझते हैं, किन्तु भय हमारे सामने हमारी शक्ति संतुलनको रखकर हमें उस अनधिकार चेष्टासे–चाहे वह प्रकटमें पुण्य और धर्म ही क्यों न प्रतीत होती हो – रोक देता है । कामातुर होकर जो कुचेष्टा करनेको मानव प्राणी उद्यत हो जाता है, भय उसे भी यथाशक्ति रोकता है हमारी अन्ध व धुंधली प्रकृतिके जीवनमें ये सब विष, ये विकार 'विषस्य विषमौषधम्' बने रहते हैं । और इसीलिये ये हमारे लिये न्यूनाधिक रूपसे जरूरी हैं ।

अहिंसावादी इन मानसिक हिंसा-भावनाओं (प्राणोंके आवेश व आवेगों) द्वारा प्रेरित प्रत्यक्ष कर्मको देखकर निग्रहको श्रेष्ठ समझता है। रोगका निराकरण उसे सूझता नहीं इसलिये दमनको अपनाता है। शत्रुको रूपान्तरित करके मित्र बनानेकी अपेक्षा कामक्रोधादिको नियन्त्रणमें, बन्धनमें, कैदमें रखना चाहता है। प्राणोंके आवेश व आवेग प्रेरणा दे रहे हैं, किन्तु अहिंसावादी दमन कर रहा है। गीताके शब्दोंमें तो यह सब प्रयत्न प्रपञ्च है ।

किन्तु यदि हमारे अन्दर समग्र समता है और हमारा विरोधी अपने प्राणोंके आवेशके वशीभूत होकर भ्रान्तिवश हमपर आक्रमण कर रहा है । प्रेम व मृदु भाषणके द्वारा उसकी भ्रान्तिको दूर करनेकी अहिंसावादीकी सूझ तो अच्छी है, किन्तु यदि वह हमारे प्रेममय मृदुभाषणसे भी शान्त न हो तो उसके हिंसामय प्रहारको स्वीकार करनेसे किसीका भी कल्याण प्रतीत नहीं होता। अहिंसावादी उसके प्रहारको सहन करके अपनी हानि तो कर सकता है, किन्तु प्रहारकर्ताके हृदयसे हिंसाभावनाका उन्मूलन नहीं । उस चिकित्सापद्धतिको कौन श्रेय देगा जिसके अपनानेसे वैद्य बीमार पड जावे और रोगीके रोगमें तनिक भी कमी न हो?

अहिंसावादी हिंसा कर्मके लिये कटिबद्ध शत्रुके प्रति जिस सुहृद्-व्यवहारकी दुहाई देता है उस सौहार्दसे भी विरोधीमें एक भिन्न प्रकारके प्राणमय आवेशकी क्षणिक भावनाकी जागृतिही होगी जिसे ममता मोहकी भावुकताके समकक्षही कहा जा सकता है और जो किसी भी क्षण किसी वैसे ही प्रतिरोधद्वारा धूँवेके मेघोंके समान नष्ट होकर किसी घोर रजोगुणी आवेशका रूप ले सकती है और ले लेती है। ऐसी अवस्थामें अहिंसावादीका प्राणमय कर्म व जीवन संक्रामक रोगोंसे भरे हुए नगरमें भ्रमण करनेवाले किसी दुर्बल, क्षीणकाय आगन्तुकके समानही होगा जो पग पगपर रोगोंका आखेट होता रहता है और उनसे बचनेके लिये, उनका निग्रह करनेके कहते एक चलता फिरता निग्रहका, दमनका इस्पताल अपने साथ बांधे फिरता है ।

अहिंसावादी कहता है कि जिसको हमसे हानि पहुँची है और क्रोधातुर होकर हमपर आक्रमण करना चाहता है, हमारे पश्चात्ताप करनेपर भी हमें क्षमा न करके हमपर आक्रमण करता है तो हमें उसके आक्रमणको स्वीकार कर लेना चाहिये । ❀ किन्तु किस लिये ? क्या इससे हमारा विरोधी आवेशमुक्त हो जायगा ? हमारी हानि करके क्या उसके प्राणोंमें समता, शान्तिकी स्थापना हो जायगी ? या किसी उद्दण्ड विजिगीषाका अट्टहास होगा ? अपवाद नियम नहीं होते, किसी येशू जैसे सन्तके दाये गालपर थप्पड खानेसे बांया गाल पेशकर देनेपर सम्भव है कोई भावुक ईसाई लज्जित हो जावे, किन्तु अधिकांश

❀ देखो वैदिक धर्म, वर्ष २५, अंक २ माघ सं० २००० पृष्ट ८९ ।

घटनाओंमें उद्दण्ड प्रहारकर्ता यही अनुभव बटोरता है– "संसार जूतेसेही ठीक किया जाता है।" यदि हमने अपनी भूल होनेपर भी प्रहारकर्ताके हिंसाकर्मको सिर झुकाकर अपनी अहिंसाकी भ्रान्ति वश स्वीकार कर लिया तो प्रहारकर्ताके अन्तस्तलपर यही अनुभव अङ्कित होगा कि आक्रमण मारकाट, खून खच्चरही सफलता व जीवनके निर्भ्रान्त मार्ग हैं। हमारी अहिंसा घोर हिंसाकी संस्थापिका होगी।

हम कह आये हैं कि ये प्राणोंके आवेश व आवेग एक दूसरेकी प्रतिगामी शक्तियां हैं जो 'विषस्य विषमौषधम्' हैं। यदि हमारा प्रतिगामी भाई क्रोध रोगसे बीमार है तो अहिंसावादी वैद्य उसकी चिकित्साके लिये सहिष्णुतासे भिन्न कोई दूसरी औषधि जानताही नहीं। क्रोध रोगके लिये मन्यु भी औषधि है जो क्रोधातुर रोगीमें भयका संचार करके उसका संतुलन कर सकती है। प्रहारकर्ताके ऊपर उग्रतर प्रहार करनेसे वह भयभीत होकर अपने क्रोधको भीतरही भीतर भडकाता रहेगा। यदि ऐसा मान लिया जाय तो हम प्रहारकर्ताके प्रहारको सहन करके उसे विनम्र, शान्त बना डालेंगे, ऐसा मानना भी क्लिष्ट कल्पना है। प्रहारकर्ता प्रहारमें सफल होकर विजिगीषासे उद्दण्ड बनेगा न कि विनम्र।

अतः अपनी भूलको स्वीकार करके विरोधीकी क्षति पूर्ति कर देना तो अच्छी बात है, किन्तु उससे आगे उसकी प्रतिहिंसा भावनाको स्वीकार करना असुरवृत्तिके आसुरी प्रहारको स्वीकार करके यथार्थ शुभ, वास्तविक अहिंसाका वध करना है; सत्यपर असत्यका, प्रकाशपर अन्धकारका प्रभुत्व बैठाना है और यह है सब उस अहिंसावादीकी ममताके कारण, लोभके वशीभूत जिसे जीवन धारण करनेवाली मानव कायासे घोर ममता है भले ही वह काया व उसमें रहनेवाले वे प्राण हलाहलसे भी अधिक भयानक हो गये हों।

श्रीयुत टाल्सटायकी औपन्यासिक कहानियोंकी कल्पनाके अनुरूप यह सूझ बडी सुन्दर व मनोहर है।× नाटक और कविताकी कल्पनामें अनूठी है किन्तु व्यवहारमें ? चारों तरफसे सन्दूककी तरह अपने देशको बंद करके संयम व निग्रहकी सतत साधनासे शायद अहिंसावादीका देश दो चार हजार वर्षमें समताकी उस भूमिकाको प्राप्त कर ले जिसे अहिंसावादी अहिंसा कहता है किन्तु जब विदेशी जिन्दगीके मजोंके लिये, सुन्दर स्त्रियों, धन सम्पत्ति आदिके सुख भोगोंके लिये–जिनके लिये उनकी तल्लीनता व आसक्ति शताब्दियोंसे परिपक्व की जा रही है, जिनका लक्ष्य, धर्म, स्वर्ग व ईश्वरप्राप्ति व परम गति दूसरोंकी लूटना, तबाह करना आदि है, हमारे देश द्वारपर आक्रमण कर रहे हैं, तब वे अहिंसावादीके सौजन्य व्यवहारका कोई मूल्य नहीं मानेंगे।

बुतश्किन (मूर्तिभंजक) बुतपरस्तों (मूर्तिपूजकों) के सौजन्यसे पिघलकर अथवा फिसलकर अपने परलोकको नहीं बिगाडेंगे। अलबत्ता अहिंसावादी ऐसे आक्रमणकारी विदेशियोंको भोजन, वस्त्र देकर उनके आसुरी घोर कर्मको शीघ्र सफल कर सकता है, असुरकी विजिगीषामें एक अन्यथा सिद्ध सहायक हो सकता है। बडी कठिनाईसे बरमा देशको विजित करनेवाले जापानके हाथोंमें समस्त भारत वर्षको उपहार रूपसे भेंट कर सकता है। किन्तु कविता व रंग मंचपर कल्पनाके प्रवाहमें यही प्रदर्शन किया जा सकता है कि जापान अहिंसावादीके चरणोंपर क्षमा याचना करके भारतवर्षके साथ साथ बरमाको भी मुक्त करके लौट गया।

अहिंसावादीकी कविता गा रही होगी—

'भाइयों! अनुर्वर मरु देशोंमें रहकर उर्वर देशोंको लूटना कहांतक ठीक है' तब आक्रमणकारीके नादिरशाहका कत्ले आम अहिंसावादीके सम्पन्न पराजित देशकी सम्पत्तिको ठेलोंमें लादकर अहिंसावादीके कानमें घोषणा कर रहा होगा, **'इधर केशरीकी गर्जना सियारका विलाप उधर'**।

यदि अहिंसावादी※ मनुष्योंमें छिपी हुई कामवासनाको देख व पहचान सके तो उसे पता लगेगा कि प्रायः सभी मनुष्य पर-नारी-गमनके लिये इच्छुक रहते हैं अर्थात्

× देखो वैदिक धर्म वर्ष २५, अंक ४, चैत्र सं० २००० पृष्ठ २२२ से २२४ तक।

※ देखो वैदिक धर्म वर्ष २५, अंक ४ व ७, चैत्र व आषाढ सं २०००, पृष्ठ २२६ से २२८ व ३५१ से ३५६।

छिपी हुई कामवासना अनेक नारीगामिनी होना चाहती रहती है। नैतिक, सामाजिक वा राजदण्ड भय उन्हें इस चेष्टासे तटस्थ रखता है। भय मनुष्यको बहुतसी बुराइयों, उद्दण्डताओंसे बचाता है। भय वह विष है जो अनेक आवेग विषोंसे मनुष्यकी रक्षा करता है।

यदि अहिंसावादीकी अहिंसा शिक्षासे यह निश्चित हो जाय कि कोई स्त्री वा पुरुष बलात्कार करनेवालेका वध नहीं करेगा तो कामी पुरुषोंका एक बडा भय निर्मूल हो जावे और उन्हें बलात्कार करनेके लिये प्रोत्साहन मिले। जबतक मनुष्यमें काम हिंसाद्वारा हनन है तबतक प्रतिकूल भय हिंसाका होना अनिवार्य है। यह उस समचित्त अहिंसावादीके लिये जरूरी न भी हो जो काम व भय दोनोंसे परे जा पहुंचा है किन्तु कामुकके लिये भय जरूरी है और वह तबतक जरूरी है जबतक वह काम-मुक्त न हो जाय। बलात्कार करनेवाले कामुक दूषित शरीरसे अहिंसावादीको बडी ममता है किन्तु वह यह नहीं विचारता कि कामुकका शरीर कामवासना का हथियार बना हुआ है जिसको मुक्त करनेका उपाय है यन्त्र, उस हथियारके अधिपति 'मनुष्य' का काम वासनाकी आज्ञापालनसे इन्कारी। किन्तु वह 'मनुष्य' तो कामवासना का स्वागत कर रहा है, अतिथिके समान उसको परितृप्त करना चाहता है। भला वह किसी उपदेशको सुनेगा? दुराचार उसका मनोनीत विनोद है, विजिगीषा है! ऐसे संकटकालमें स्त्रीको न तो उपदेश औषधि देनेका अवसर है और न रोगी औषधि स्वीकार करनेको उद्यत है। कारण वह अपनेको रोगी नहीं, बल्के परम स्वस्थ समझता है और इसीलिये उसने यथासम्भव, उत्तेजक, मादक, स्थम्भन औषधियोंका सेवन करके कामवासनाको बीभत्स बनाया है।

जो कुछ रोगी अपनेको परम स्वस्थ समझता हुआ कामवासनाके वशीभूत होकर करने जा रहा है वह एक घोर, कुपथ्य, ऐसा कुपथ्य जिससे रोगीके प्राण व शरीर-यन्त्र उग्रतर भयानक रोगी, दूषित होकर असाध्य भूमिकाको बीभत्सताको प्राप्त करेंगे और बलात् युक्त की गई स्त्री भी इस व्यभिचार रोगकी झपेटमें आ जायगी। फिर भी अहिंसावादी कामवासनाद्वारा नियुक्त कामुकके उस नश्वर शरीरको कायम रखना चाहता है जो कृत्यमें विघातक, विनाशक बनाया जा चुका है। ऐसे विघातक शरीरको नष्ट करनेसे अहिंसावादीकी दुनियाका दीवाला नहीं निकलेगा। अतः ऐसी अवस्थामें बलात्कारके लिये उद्यत कामी पुरुषका वध कर डालनाही अचूक औषधि अनुपम चिकित्सा दिव्य अहिंसा है, क्योंकि उस आततायीके शरीर प्राणका बने रहना विश्वचेतनामें सतत हिंसाकी बाढ लाते रहना है।

अहिंसावादी कहता है कि मातृत्व बलात्कारकी मन्त्रणा सहकर भी बलात्कार करनेवालेको क्षमा कर सकता है। यह ठीक है किन्तु मातृत्व बलात्कारके लिये कटिबद्धको नष्ट करके फिर उत्पन्न कर सकता है। मातृत्व जनी तत्व है। यदि वहां वात्सल्यका ज्योत है तो उसकी रक्षाके लिये एक दुर्दमनीय विध्वंस भी है विरोधीके प्रति। बलात्कारके लिये उद्यत कामुकमें कामुकताद्वारा वात्सल्यका दम घोंट दिया गया है। मातृत्व यह कैसे सहन कर सकता है कि उसका पुत्र कामुकताका यन्त्र बने। पुत्र शरीर नहीं है, वध भी पुत्रका नहीं होता–मां यह नहीं कहेगी 'मैं तुम्हारी माता हूं, अपनी मातासे तुमने यह व्यवहार किया।' कारण कामुकता उसकी सन्तान नहीं, वह तो आसुरी शक्ति है, जो मातृत्वके वात्सल्यका वध कर रही है। ऐसेमें मातृत्वकी दिव्य हिंसा–पिपासा जागृत हो जायगी जो वात्सल्यका नहीं उस शरीर यन्त्रका विध्वंसकर डालेगी जो वात्सल्यको दबानेवाली कामुकताद्वारा उपयोगमें लाया जा रहा है। मातृत्व क्या उस पैशाचिक कामुकताको क्षमा करेगा जो उसके वात्सल्यका वध करनेपर कटिबद्ध है? अहिंसावादीकी अन्धी ममता इतनी अदूरदर्शी है कि वह प्रत्यक्षकी एक सेर हानिको देखकर सिहिर उठती है, भले ही वह विषाक्त एक सेर परोक्षमें एक मनका विध्वंस कर रहा हो।

जिस स्त्रीमें यथार्थ मातृत्व जागृत है वह अपने हाथसे अपने उस पुत्र-शरीरके टुकडे टुकडे करनेसे भी न चूकेगी जिसके प्राणोंमें वात्सल्य व मातृत्वको कामुकताने दबा लिया है। ऐसी आदर्श माताको अपने पुत्रकी भौतिक नश्वर शरीर प्रिय नहीं है बल्कि इन सबसे परे वे संस्कार प्रिय हैं उसकी आत्माको समुन्नत करते हैं तथा उसके स्वदेशी सखा हैं।

हिन्दी विरुद्ध उर्दू

(लेखक- **गणपतराव** बी० गोरे, कोल्हापूर)

उर्दू- सलाम बी हिन्दी ! जमान-ए दराजसे मुलाकात हुई।

हिन्दी- [मुखसे न बोलती हुई स्लेटपर उर्दू लिपिमें निम्न शब्द लिखकर स्लेट उर्दूके सामने पढनेके लिए धर देती हैं]—

'नमस्ते बहिन ! क्षमा करें आज मेरा मौन दिवस है, अतः लिखे शब्दों द्वारा ही बातें करनेपर विवश हूं। ' (१९ शब्द)

उर्दू- [उर्दू लिपि स्वरहीन लिखे जानेके कारण तथा संस्कृतजन्य हिन्दी शब्दोंके उच्चारणसे अपरिचित होनेके कारण उक्त उर्दूमें लिखे लेखका प्रत्येक शब्द उर्दूने इस प्रकार पढा]—

१ नुमसते, निमसते, नुमुसते, निमुसते, नुमुसुते, नुमुसिते, नुमस्ते,निमस्ते, नुमुस्ते, निमुस्ते, नुमिसते, निमिसते, नुमिस्ते, निमिस्ते, नुमसिते, निमिसिते, नमसिते, नुमुसिते, नुमिसिते, नमुस्ते, निमस्ते या नमस्ते। (२२ प्रकार)

२ बुहिन, बिहिन, बुहन, बिहन, बुहुन, बिहुन, बहुन, बहन, बहनु, बहिनु, बुहिनु, बिहिनु, बिह्नु, बुह्नु, बिह्न, बिहुनु, बुहुनु, बहुनु, बुहिन्, बिहिन्, बुहन्, बिहन्, बुहुन्, बिहुन्, बहुन्, बहन्, या बहिन। (२७ प्रकार)

३ खशमा, खुशमा, खिशमा, खश्मा, खुश्मा, खिश्मा, खुशिमा, खशिमा, खिशिमा, खुशुमा, खिशुमा या खशुमा। (१२ प्रकार)

४ करीं, कर्यं, कुरें, किरें या करें। (५ प्रकार)

५ आजु, आजि, आज् या आज। (४ प्रकार)

६ मयरा, मुयरा, मियरा, मियुरा, मुयिरा, मयिरा, मयुरा, मुयुरा, मीरा, मैरा वा मेरा। (११ प्रकार)

७ मवन, मुवन, मिवन, मविन, मवुन, मुवुन, मुविन, मवनि, मविनि, मवुनि, मवनु, मवुनु, मविनु, मिविनि, मिवुनि, मविनि, मवन्, मुवन्, मिवन्, मवुन्, मुवुन्, मुविन्, मोन, मून, या मौन। (२५ प्रकार)

८ दवस, दवुस, दविस, दुवस, दुवुस, दुविस, दवस्, दवुस्, दिवस्, दुवस्, दुवुस्, दुविस्, दवसि, दवुसि, दुवुसि, दविसि, दोस, दूस, दौस या दिवस। (२० प्रकार)

९ हे या है। (२ प्रकार)

१० अतह, उतह, इतह, अत्ह, उत्ह, इत्ह, उतह्, इतह्, अतुह, उतुह, इतुह, अतुह्, उतुह्, इतुह्, अतहु, उतहु, इतहु, अत्हु, उत्हु, इत्हु या अतह्। (२१ प्रकार)

हिन्दी- [कोई साधारण शब्द भी उर्दू लिपिमें लिखे जानेके कारण यथायोग्य रीतिसे उच्चारा जा नहीं सकता, इस बातको देखकर उसने हाथके एक इशारेसे उर्दूको अधिक कष्ट करनेसे रोक दिया और दूसरे इशारेसे सुमित्राको अपने पास बुला लिया जिसने ' लिखे ' से ' विवश हूं ' तकके शेष ९ शब्दोंको पढकर उनका भाव उर्दूको समझा दिया।]

उर्दू बोली- ' एक जबानके अलफाज दूसरी जबानमें लिखकर पढनेसे जो दिक्कत होती है, वही मुझको हुई इसमें मेरा क्या कुसूर ? '

हिन्दी ने स्लेटपर लिखा और सुमित्राने पढकर सुनाया ' संसारकी किसी भी भाषाका कैसेही विकट उच्चारका शब्द क्यों न हो यदि हिंदी अर्थात् नागरी लिपिमें लिखा जाय तो अत्यंत शुद्ध उच्चारा जा सकता है ! यह पूर्णता संसारकी किसी भी अन्य लिपिमें नहीं !! '

उर्दू- बताइये कि कई उर्दूके अक्षरोंके उच्चार रखनेवाले अक्षर नागरी लिपिमें कहां हैं ? इन्हें आप क्रमशः ख, फ, ग, क और बाकियोंको ज से ही अदा करते हो ना ?

हिन्दी [का लेख सुमित्राने पढा]- ' कदापि नहीं ! इन्हें हम ख़, फ़, ग़, क़ और शेष ४ को ज़ से तथा पांचवेको झ़ से लिखते हैं। अब आप बताइये कि अरबी भाषामें निम्न १८ अक्षर कहां हैं ?

ग, घ, ङ, च, छ, झ, ञ, ट, ठ ड, ढ, ण, थ, ध, प, फ, भ तथा ष.

बहिन ! संस्कृत वा नागरी लिपिमें ४७ अक्षर हैं, अरबीमें २९ और फारसीमें ३२ हैं। ' प ' ' ग '

' च ' अरबीमें नहीं हैं, किंतु फारसीमें है। आश्चर्य तो यह है कि एकही स्वरके लिए अरबी फारसी दोनों लिपियोंमें जे़, ज़ाल, जो़ए और ज़्वाद ये चार अक्षर व्यर्थ ही रखे गये हैं। हिन्दीवाले इन चारोंका काम एक ' ज़ ' से निकाल लेते हैं! इसी प्रकार हिन्दीका एक ' स ' अक्षर अरबी फारसीके तीन अक्षरों ' से, ' ' सीन् ' तथा 'स्वाद' का काम निकाल लेता है! अरबी-फारसीके बडे और छोटे ' काफ ' को हिन्दीवाले क्रमशः ' क़ ' और ' क ' ऐसे एकही अक्षरसे समझाते हैं। इसी प्रकार अरबी फारसीमें ' अ ' तथा 'ह' स्वरोंके लिए भी दो दो अक्षर हैं! अतः बहिन! आपको संस्कृत वा नागरी वा हिन्दी लिपिकी श्रेष्ठता मान लेनी चाहिए।'

उर्दू— मैं तो तब मानूंगी जब आप कुर्आन शरीफकी सूरते फातिहाको शुद्ध उच्चारों सहित नागरी लिपिमें लिख दिखाओगी।

हिन्दी [ने लिखा, सुमित्राने पढा]

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन।
अर्रह्मानिर्रहीमि। मालिकि यौमिद्दीनि।
ईय्याक नअ्बुदु व ईय्याक नस्तईनु।
इह्दिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम।
सिरातल्लज़ीन अन्अम्त अलैहिम्।
ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़आल्लीन॥
(कुर्आन सूरत १ आयत १-७)

बहिनजी! बताइये इसमें कितनी अशुद्धियां हैं! आपने तो उर्दूमें लिखे हुए साधारण हिंदीके १० शब्दोंको सरासरी १५-१५ विभिन्न उच्चारोंसे पढा था ना?

उर्दू— वाकई, नागरी लिपिमें तो अरबी हूबहू लिखी जा सकती है, पर बहिन! यह तो बता कि इतना होते हुए भी महात्मा गांधीजी ' हरिजन ' हफतेवारमें अरबी फारसी अलफाज क्यों घुसेडा करते हैं?

हिन्दी [ने लिखा सुमित्राने पढा]— ' केवल मुस्लिम् लीगको सन्तुष्ट करनेके लिए वे हिंदुओंसे दुराग्रह कर रहे हैं। आजकल आप बिहारके पीडित हिंदुओंसे, मुसलमानोंकी सहायताके लिए धन एकत्र कर रहे हैं। बिहारी हिंदुओंको उन्होंने कहा है कि यदि आप ' पंजाब दिवस मनाओगे तो मैं जलकर भस्म हो जाऊंगा!' हिंदू चाहे जितने मारे जाएं, उनपर कितनीही आपत्तियां आएं, कांग्रेसिओंको सच्चा दुख नहीं होता। क्यों? इसलिए कि उन्हें हिंदुओंने मत [वोट] देकर राज्यकारभारी बनानेका पाप किया है! क्या हिंदु कांग्रेसकी मुस्लिम्-धारजिणी नीतिको पहिलेसे ही नहीं जानते थे? पंजाबको दुभंग करके मुस्लिम लीगके लिए पाकिस्तान बनवानेका प्रस्ताव अभी अभी कांग्रेसिओंकी ओरसेही रखा गया है!! पं० नेहरूजीने संस्थानी प्रजा मंडलकी बाग डोर कश्मीरके मतांध शेख अबदुल्लाको सौंप दी है, दूसरी ओर राजाओंकी ओरसे नरेन्द्र मंडलके प्रधान भोपालके नबाब साहेब हैं! चक्कीके इन दो पाटोंके बीचमें संस्थानी हिंदू प्रजाको पीस डालनेकी व्यवस्था की गई है, परंतु हिन्दू गाढ निद्रामें सो रहे हैं! विनाशकाले विपरीतबुद्धिः!'

उर्दू— मगर गांधीजी तो हिंदुओंके महात्मा हैं!

हिन्दी [का लेख सुमित्राने पढा]— ' पंडित, ब्राह्मण, साधु, महात्मा, संन्यासी और मित्र बनके ही हिंदुओंको नामशेष किया जा रहा है। हिंदु तो शत्रुओंसे भी सावधान नहीं रहते, फिर इनसे कैसे रहेंगे? गत ४० वर्षोंसे महात्माजीने हिंदुओंको अहिंसाका पाठ पढाकर उनमेंसे आत्म-रक्षा तथा क्षत्रियत्वके भावोंको समूल निकाल-दिया है, अतः अब वे बंगाल, पंजाब आदि स्थानोंमें मूली गाजरके समान काटे जा रहे हैं। मित्र शत्रुसे भी अधिक घातक हो सकता है। इसीलिए वेदने मनुष्यको सिखाया है कि परमात्मासे ऐसी प्रार्थना किया कर कि पहिले वह तुझे मित्रोंसे बचाए और फिर शत्रुओंसे, यथा—

अभयं मित्रादभयममित्रात्...।
(अ. १९।१५।६)

अर्थ— हे परमात्मा! हमें [प्रथम] मित्रोंसे भयरहित कीजिए [फिर] शत्रुओंसे भयरहित कीजिए। परंतु हिन्दूलोग अर्थसहित वेद नहीं पढते!

[इतनेमें समीपके जंगलसे बडेभारी शब्द सुनाई देने लगे]

उर्दू— यह क्या है?

हिन्दी— ने ' काई मृगया है ' ये शब्द उर्दूमें लिख-कर स्लेट उर्दूके सामने धर दी।

उर्दू— [पढती है] कोई मर गया है ।

हिन्दी— [ने हिंदीमें लिखा और सुमित्राने पढकर सुनाया] मरा कोई नहीं, ' मृगया ' संस्कृत भाषामें शिकार [Chase, hunting] को कहते हैं। जंगलमें शिकार हो रहा है। ये ' हा हू ' उसीकी है ।

उर्दू— बहिन ! वाकई उर्दू हरफोंमें दूसरी जबानोंके अलफाज दुरुस्त लहजेमें लिखना नामुम्किन् है । हिन्दीही कौमी हुरूफ [राष्ट्रीय लिपि] बननेके लायक है । उर्दूको बनाना दुराग्रह ही है, अच्छा सलाम !

हिन्दी ने हाथ जोडकर नमस्ते की ।

भारतका विच्छेदीकरण तथा संरक्षण

(ले०— लेफ्ट० **शं. ग. चाफेकर**, बी. ए., ए. आय्. आर्. ओ., पुणे)

संरक्षणविषयक अनास्था

सन १९४० से लेकर पाकिस्तान का भूत भारतके सरपर सवार हुवा है, तथा आज तो राष्ट्रीय नेताभी भारतके विच्छे-दनका समर्थन कर रहे हैं। अंग्रेजोंने भारत छोडनेकी तिथि निश्चित की है। वाइसराय जब ब्रिटिश मंत्रियोंसे चर्चा कर वापस लौटेंगे तब जूनके पहले सप्ताहमें यहभी निश्चित होगा कि ब्रिटिश मंत्री भारतकी समस्या किस प्रकार हल करते हैं। बंगाल, पंजाब तथा सीमाप्रान्तमें जो पूर्व-नियोजित उपद्रव चल रहे हैं, उनपरसे आगे चलकर उन प्रान्तोंके अल्पसंख्याकोंकी कैसी दशा होगी, इसका कुछ अनुमान किया जा सकता है। पंजाब तथा बंगालके हिन्दु तथा सिक्खोंने पंजाब तथा बंगालका भी बँटवारा हो जाय, ऐसा तीव्र आन्दोलन चलाया है। मैं एक सामान्य सैनिक हूं, राजनीतिके विषयमें बहोत कम जानता हूं। इस बँटवारेके सैनिकी दृष्टिकोनसे क्या परिणाम होंगे, उन्हींको वाचकोंके सम्मुख प्रस्तुत करनेका मेरा विचार है। यदि गत बीस वर्षोंके हमारे नेताओंके वक्तव्य, भाषण, लेख इत्यादि पढ जायँ तो उनका भारतीय-संरक्षणविषयक अज्ञान सहजही ध्यानमें आ जाता है। बडे खेदके साथ कहना पडता है कि डॉ० मुंजे, श्री० कालीकर, पं० कुंझरू, ऐसे इने-गिने चार छे नेताओंको छोडकर अन्य नेताओंने इस प्रश्नकी ओर दुर्लक्षही किया है।

बँटवारेके कारण निर्मित संकट

यदि पाकिस्तान की माँग पूरी की जायगी, तब फिर भारतमें पश्चिम पाकिस्तान, हिंदुस्थान, पूर्व पाकिस्तान तथा संभवतः मध्यमें एक राजस्थान, इतने भाग निर्माण होंगे। अर्थात् एक देशके चार टुकडे बनेंगे। क्या ये चार देश अपने अपने संरक्षणका भार उठा सकेंगे ? यह भी संभव है कि ये चारों देश आपसमें लडेंगे, अथवा किसी अन्य शत्रुसे जाकर मिलेंगे। मेरे मतानुसार ये चारों विभाग स्वसंरक्षणक्षम नहीं बनेंगे। इसके कारण निम्न प्रकार हैं—

(अ) सांप्रत भारतीय सेनामें हिन्दुओंमेंकी कई उपजातियाँ, सिक्ख तथा मुसलमान सम्मीलित हैं। गत सौ वर्षोंमें इस सेनामें एक ऐक्यसा निर्माण हो गया है। प्रत्येक सैनिकके मनमें अपनी पलटनका अभिमान वास करता है। एकही पलटनमें कई हिन्दु, मुसलमान तथा सिक्ख कंपनियाँ हुवा करती हैं, तिसपरभी किसी सैनिकको पूछनेपर वह अपने रेजिमेंट अथवा बटालियनकाही नाम बताता है। भारतीय सेनाने एक उत्कृष्ट परम्परा निर्माण की है। इस सेनामें

भारतकी अन्यान्य जातियोंके गुणविशेषोंका एकत्र समुच्चय पाया जाता है। ये गुण परस्परपूरक भी हैं। पठान तथा पंजाबी मुसलमानोंका साहस, सिक्खोंकी स्थिरता, मराठोंकी जीवटता, राजपूतोंका अविच्छिन्न धैर्य, गुरखा-गढवालीका मृत्युभयरहित शौर्य, इन सब गुणोंसे आज संयुक्त भारतीय-सेनाको एक विशिष्ट स्थान प्राप्त हो चुका है। देशके बँटवारेके साथ सेनाकाभी बँटवारा अवश्यंभावी है। ऐसा होनेपर प्रत्येक विभागको उपरिलिखित गुणोंमेंसे कुछ गुणोंकी कमी सहन करनी पडेगी। आज सौ वर्षोंतक जो जातियाँ कंधेसे कंधा भिडाकर लडती रहीं, उन्हींको परस्परके विरुद्ध लडते हुए देखना सचमुच दुर्दैव है। अपने रक्तसे सींचा हुवा यह वृक्ष अपनेही हाथोंसे तोडना अत्यन्त कटु प्रसंग है।

व्ययकी व्यवस्था

(आ) देशके अखण्ड रहनेपर सहजही देशका आय अधिक होगा, जिससे सैन्यभी अधिक रखते बनेगा। स्वतंत्र अखण्ड भारतमें ३ लक्ष सैन्य रखनेका निश्चित हुवा था। दूसरे देशोंकी अपेक्षा यह बिलकुल कम था। आगामी पाँच वर्षोंमें १०२ कोटि रुपिये सेनाके लिये खर्च किये जानेवाले थे। परन्तु यदि देशके ३ अथवा ४ खण्ड हुवे, तब तो प्रत्येकको संरक्षणकी व्यवस्था करनी होगी, व्ययभी बढेगा, तथा आय कम होगा। तीनों विभागोंको २-२॥ लक्ष सेना पास रखना कठिन होगा। यदि संयुक्त देशको २००० टॅन्क्स् रखना सुशक्य हुवा, तो प्रत्येक भागको ३०० टॅन्क्स् भी रखना कठिन होगा। संरक्षण भी दुर्बल होगा। यदि सेना अधिक रखी जाय, तो व्यय बढेगा, तथा उसको सहन करनाभी प्रत्येक विभागको प्रायः अशक्य होगा।

आवागमनका अभाव

(इ) संरक्षणमें आवागमन एक महत्त्वका अंग होता है। भारतके खण्ड होनेपर आवागमनमें बडी असुविधा निर्माण होगी। सांप्रतके लोह-मार्ग तथा सडकें अखिल भारतके संरक्षणकी दृष्टिसे बनाई गई हैं। इग्लैण्ड, जर्मनी तथा फ्रान्स इनकी अपेक्षा हमारे इधर आवागमनके मार्ग पहलेही कम हैं। सैन्यकी गतिका वेग आवागमनकी सुविधाओंपरही निर्भर होता है। आगे बढनेवाली सेनाको सडकें तथा लोहमार्ग इनके द्वारा पेट्रोल, बारूद, खाद्य पदार्थ, कपडे, दवाइयाँ आदि साहित्य पहुंचाना पडता है। पिछले युद्धमें उत्तरी अफ्रिका तथा ब्रह्मदेशमें सैन्यकी शीघ्र प्रगति न हो सकी। कारण यही था कि वहाँ लोहमार्गोंका अभाव था। ब्रह्मदेशमें तो सर्व सामग्री वायुयानोंद्वारा भेजनी पडी। ब्रह्मदेशमें सन १९४४ की चढाई करनेके पहले स्टिलवेल मार्ग पूरा करना पडा। यदि भारतके पूर्व पाकिस्तान, हिन्दुस्थान तथा पश्चिम पाकिस्तान ऐसे तीन भी टुकडे किये गये, तो भी तीनोंको आवागमनके लिये कष्ट उठाने होंगे। पश्चिम पाकिस्तानमें करांची यह एकही बन्दरगाह है। वहाँसे उत्तरमें जानेवाले दो तथा पूरबमें जानेवाला एक ऐसे तीनही लोहमार्ग हैं। यदि कराची बन्दरगाह नष्ट कर दिया जाय, तथा लोहमार्गोंपर बमवर्षा हो, तब तो पश्चिम पाकिस्तानको बाहरसे सहाय्य तथा सामग्री मिलना असम्भव है।

(ई) पश्चिम पाकिस्तानको बलुचिस्तान अथवा अफगानिस्तानसे पर्याप्त सहाय्य मिलना असम्भव है, क्योंकि वे दोनों देश पिछडे हुवे हैं। अफगानिस्तानसेही युद्ध छिड जानेपर यह मार्ग नष्टप्राय हो जायगा।

सीमाका प्रश्न

यदि सीमापारकी टोलियाँ शत्रुसे मिल गईं, तो फिर संपूर्ण पंजाबको डर निर्माण हो जायगा। अंग्रेजोंके चले जानेपर वे टोलियाँ निःसंशय अधिक पीडादायी होंगी। पंजाबमें सर्वत्र नहरोंका जाल फैला हुवा है। यदि इन नहरोंके तट उध्वस्त हुवे, तो फिर वर्षामें संपूर्ण देश जलमय हो जायगा, तथा धान्योत्पादन भी बन्द होगा। पाकिस्तानके अधिक आवागमनके मार्ग पूर्वपश्चिम फैले हुवे, अर्थात् हिन्दुस्थानसे संबद्ध हैं। बँटवारा होनेपर यह कोई निश्चय नहीं, कि हिन्दुस्थान पाकिस्तानको सहाय्य करेगाही। पूर्व पाकिस्तानसे तटस्थ मध्य हिंदुस्थानमेंसे होकर पश्चिम पाकिस्तानको सहायता पहुंचना असम्भव है। यह भी कोई कह नहीं सकता, कि पाकिस्तान मुस्लिम राज्य है, इसलिये उसके साथ पश्चिम दिशाके मुस्लिम राज्य लडेंगेही नहीं। ईरान, अफगानिस्तान, तुर्कस्तान, अरबस्तान, तथा ईजिप्त इनके, वे इस्लाम धर्मीय राष्ट्र होते हुवे भी युद्ध हुवे हैं। योरपके राष्ट्र ईसाई होनेपरभी परस्परसे लडा ही करते हैं। सांप्रतके युद्धमें यह सिद्ध हो चुका है, कि तटबन्दीका कोई उपयोग नहीं होने पाता, किन्तु "गहराईके बचावका" (Defence in depth) ही अवलम्ब

करना पडता है । पूर्व तथा पश्चिम पाकिस्तानको " गहराई " ही नहीं है । यदि बंगाल द्विखण्ड हुवा, तो फिर कलकत्ता भी हिन्दुस्थानमेंही समाविष्ट होगा, और पूर्व-पाकिस्तानको चितागाँव यह दूसरे दर्जेका बन्दरगाहही बचने पायगा ।

सैनिकी दृष्टिसे भी असम्भव

(उ) पाकिस्तानमें युद्धसामुग्री बनने नहीं पाती । यदि खरगपूर तथा इच्छापूर हिन्दुस्थानमें सम्मीलित हुवे, तो फिर पाकिस्तानमें युद्धसामग्री बनानेवाला एक भी कारखाना नहीं बचेगा ।

(ऊ) लोहा तथा कोयला इनकी खदानें पश्चिम बंगाल, बिहार तथा मध्यप्रान्तमें हैं । पाकिस्तानको कोयला, मँगनीज और लोहा ये पदार्थ, जिनसे कि मुख्यतः युद्धसामग्री बनती है, उपलब्ध न हो सकेंगे । दूसरे कारखाने भी हिन्दुस्थानमें ही रहेंगे । जमशेदपूर हिन्दुस्थानमें होगा । कराची तथा चितगाँव उध्वस्त हो जानेपर बाहरसे सामग्री आना असंभव है।

(ऋ) हिन्दुस्थानका संरक्षणभी कठिन हो जायगा । नैसर्गिक सिमाएँ नष्ट हो जानेपर पाकिस्तानसे हिन्दुस्तानपर मैदानी हमले हो सकते हैं । यदि पूर्व तथा पश्चिम पाकिस्तान शत्रुसे मिल गये, तो फिर सम्पूर्ण उत्तरीय भारत उन दोनोंकी पकडमें आकर नर्मदाके दक्षिण तटपर संरक्षक युद्ध करना होगा । धान्योत्पादक प्रदेश तथा कोयला शत्रुके हाथमें चला जायगा । युद्ध अर्ध वर्तुलाकृति प्रचण्ड सीमापर लढना होगा, तथा नेपालका सम्बन्ध टूट जानेसे सेना-भरतीमें कठिनाई होगी ।

विच्छेदन क्यों नहीं चाहिये

(ऋ) यह भी संभव है, कि ये तीनों टुकडे आपसमें लडेंगे । इसका लाभ उठाकर कोई बलिष्ठ शत्रु सबको खा जायगा । इन तीनों भागोंमें अल्पसंख्य हिन्दु तथा मुसलमान रहेंगेही । संभव है कि वे जयचंदकी (Fifth column) भूमिका करते रहेंगे । एकबार आपसमें कटुता निर्माण हो चुकी, कि फिर इन तीनों टुकडोंका परस्पर सहकार्य असम्भव है । शत्रु द्वार खटखटाता रहे, और फिर सहकार्यपर विचार किया जाय, इससे यह कई गुना अधिक हितकारक है कि, पहलेसेही सहकार्य किया जाय । क्योंकि प्रसंग पडनेपर यदि सिद्धता शुरू की जाय, तो फिर युद्धकी सिद्धता तथा सामग्रीकी निर्मिति, ये काम ही १॥-२ वर्ष खा जाते हैं । सन १९४१ में युद्ध-प्रवेश करनेपर भी अमरीका युद्धसाहित्योत्पादनकी सीमातक १९४४ मेंही पहुंचने पाई । बँटवारा होनेपर प्रत्येक भाग अपनी बंदूकें, तोपें, वायुयान इत्यादि साहित्य भिन्न आकारका बनायगा । फिर पाकिस्तानकी बनी हुई गोलियाँ हिन्दुस्थानकी बन्दूकके काम नहीं आयेंगी । भावी युद्धमें सहकार्य सुकर हो, इसलिये इंग्लैंड तथा अमरीका इन दोनोंमें युद्धसाहित्य एकही नापका तथा एकही नमूनेका बनानेका करार हुवा है । दूसरा महायुद्ध समाप्त होनेपर भी अन्यान्य राष्ट्रोंमें द्वेष तथा अविश्वास अवशिष्ट ही है । समबलत्व (Balance of power) समान्तर रखनेके लिये बडे बडे राष्ट्र प्रयत्नशील हैं । भारतके टुकडे होनेपर उसके बलके संतुलनपर बडा गंभीर परिणाम होगा, तथा आगामी युद्ध भारतमेंही छिडना कोई असंभव नहीं है ।

हमारे नेता, विशेषतः मुस्लिम नेता इस आपत्तिका गंभीरतापूर्वक विचार करें । बँटवारेसे समस्त देशपर आपत्ति आ सकती है, यह ध्यानमें लेकर देशविच्छेदनके आग्रहका त्याग कर वे बलिष्ठ स्वतंत्र भारतकी स्थापना करें ।

---

*

महात्मा गांधीकी अहिंसा और गीता

(लेखक— प० ऋभुदेव शर्मा ' शास्त्राचार्य ' ' साहित्याऽऽयुर्वेदभूषण ' ' वेदरत्न ' आचार्य, ' सांगवेदोपवेद विद्यालय ' हैदराबाद द०)

महात्माजी प्रार्थना तथा अन्य अवसरोंपर गीताका पाठ करते हैं। उनके मनपर गीताका उतनाही प्रभाव है जितना एक वैदिकके मनपर वेदका प्रभाव होता है। गीता श्री वेदसे ही निकली है और महाभारत नामक इतिहासके अंतर्गत महाभारत ग्रन्थका अङ्ग है। महाभारतको आदिसे अन्ततक पढ जाइये तो एक निष्कर्ष आपके समक्ष अवश्य दिखाई पडेगा कि महाभारतके अनेक वाद वार वार दुहराये गये हैं जैसे कोई सिद्धान्ती मनुष्य अपना सिद्धान्त वार वार दुहराता हो। गीतामें जिन सिद्धान्तोंका प्रतिपादन है वे नये नहीं हैं। वे अनेक अध्यायोंमें अनेक वार आ चुके हैं। अश्वमेध प्रकरणमें अश्वकी आत्माको नित्य और शरीरको अनित्य मानकर कहा गया है, आत्माका कोई नाश नहीं कर सकता शरीर तो नाशमान है अतः हत अश्व अवश्य स्वर्ग पायेगा। यह कोई हिंसा नहीं।

महात्माजी गीताको मानते हुए अस्त्रशस्त्रोंसे की गई हिंसाका अपलाप नहीं कर सकते। अर्जुन हिंसासे ही भयभीत हो रहा था।

"कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन। इषुभिः प्रतियोत्स्यामि० ' गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके० ' कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ' इत्यादि ' यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः '॥ अर्जुन समझता था मैं अपने बन्धु-बान्धवोंका नाश कर डालूंगा यह कितना बडा पाप होगा ? हिंसा महापाप है। महाराज कृष्ण समझाते हैं, तू शरीरका नाश करेगा अथवा आत्माका ? आत्माका नाश नहीं हो सकता ' न हन्यते हन्यमाने शरीरे ' अर्थात् शरीरके हत हो जानेपर भी आत्माका हनन नहीं होता। ' नायं हन्ति न हन्यते ' जब मान लिया आत्मा नहीं मारा जाता तब तू अपनेको, मारनेवाला— आत्माका हत्यारा— कैसे समझता है ? जब तू हत्यारा नहीं तो तुझे पाप भी नहीं। यदि कहे कि शरीरका नाश हो जाता है, मुझे उसका शोक है, तो सुन, शरीर अजरामर नहीं है, उसका विनाश अवश्यंभावी है। ' जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।' तू नहीं मारेगा, तो भी ये मरेंगे, 'कालोऽस्मि लोक क्षयकृत् प्रवृद्धः ' भगवान् सबका क्षय कर रहा है। शरीर नाश नहीं होता, शरीरकी हिंसा कोई हिंसा नहीं है। हिंसाका सम्बन्ध व्यवहारसे है। मनुष्य धर्मकी रक्षा और अधर्मके नाशके लिए युद्ध करता है तो गीताके मतसे वह कोई हिंसा नहीं है। गान्धीजी शस्त्र-द्वारा प्रतिकारके विरोधी हैं परन्तु उनका धर्मशास्त्र इसका विरोधी नहीं है। आर्य विद्वान् गान्धीजीके गीता-विरोधको उन्हें अवश्य समझायें।

———

' राष्ट्रभाषा भवेद्देव! सर्वश्रेष्ठा हि नागरी '

(लेखक— डॉ० रलाराम ' काश्यप ', मल्लास्ट्रीट, नवाँ कोट, लाहौर)

संसारमें सबसे श्रेष्ठ भाषा देवनागरी हमारी राष्ट्र-भाषा हो, संसारकी प्रत्येक जाति अपनी अपनी मातृ-भाषाके गुणकीर्तन करती है, पर भारतकी विचित्र स्थिति है। यहांपर विदेशी भाषाओंका साम्राज्य है। यहांतक कि कई भारतवासी विदेशी भाषाओंको भारतकी राष्ट्रभाषाका आसन देनेतकको उद्यत हो रहे हैं। कई कहते हैं कि देशके एक कोनेसे दूसरे कोनेतक अंग्रेजी समझी जाती है। कई उर्दूकोही राष्ट्रभाषा बनानेका हठ किये चले जाते हैं। विचारणीय विषय यह है कि ये भाषाएं कहांतक राष्ट्रभाषा बननेकी पात्र हैं। भाषा बोली (Language उसको कहते हैं जिसे कोई जाति बोलती हो। भारतमें कोई जाति उर्दू और अंग्रेजीको मातृभाषाके रूपमें नहीं बोलती। इसका ज्ञान केवल पढनेके अनन्तरही उनको होता है। ऐसा कहना कि उर्दू या अंग्रेजी भारतमें किसी भी प्रान्तकी मातृभाषा है, एक असंगतसी बात है। दूसरी बात देशकी भाषाका निर्णय करनेके लिये यह आवश्यक है कि वह देशकी किस पूर्ववर्तिनी भाषासे उद्धृत की गई है? वह अपनी वाक्य वल्लरी vocabulary, अपना व्याकरण, अपनी लिपि किस भारतीय भाषासे लेती है? और यदि वह विदेशी भाषांतर है तो किस मात्रातक उन भाषाओंका शब्दकोष राष्ट्रीयताके दृष्टिकोनसे ग्राह्य हो सकता है। उर्दू और रोमनमें हर प्रकारके वैज्ञानिक साहित्यिक शब्दकोष अरबी, फारसी तथा विदेशी हैं। यही दशा आधुनिक हिंदुस्तानी कही जानेवाली भाषाकी हो रही है। ऐसी भाषा भारतवर्षकी राष्ट्रभाषा कदापि नहीं हो सकती। देशके कई कर्णधारोंका मत है कि हिन्दी हिन्दुओंकी भाषा है, मुसलमानोंकी उर्दू, और भारतमें रहनेवाले अंग्रेज और ईसाइयोंकी रोमन लिपी बनती जाती है ऐसी धारणा अत्यन्त हानिकर है। एक देशमें तीन राष्ट्रभाषाओंका तांता भावी अमिट वैमनस्यका मूलाधार होगा। अंजीलमें भाषाओंकी विभिन्नताका कुपरिणाम स्पष्ट रूपसे वर्णित है। किसी विदेशी भाषाको एक देशके गले मढना कहांतक युक्तिसंगत है आप स्वयं विचार कर सकते हैं।

आजकल कहा जाता है कि हम स्वातंत्र्यकी दह-लीजपर बैठे हैं। इसमें कहांतक तथ्य है? एक महापुरुषका वचन है कि—

'No nation is ever conquered so long as it is politically conquered alone but when it is socialy conquered it is conquered indeed.'

जबतक हम दास थे, हम विदेशी भाषामें शिक्षा पाते थे। आज यह चर्चा सब ओरसे हो रही है कि भविष्यमें विश्वविद्यालयोंमें देसी भाषाओंका प्रचार बढाया जावे। प्रत्येक विषयका माध्यम देशी भाषा हो। इसपर भी हम देखते हैं कि मुसलमान और अंग्रेजोंको प्रसन्न करनेके लिये हिन्दीको तीन लिपियोंमें लिखनेकी नीतिको स्वीकार कर रहे हैं। मेरी तुच्छ बुद्धिमें इसके द्वारा भावी वर्षोंमें Communal award से भी कहीं बढकर इन जातियोंमें वैमनस्य हो जावेगा और ऐसा स्थाई होगा कि इसका हटना भी दुष्कर होगा। दूसरे उर्दूके साहित्यमें वैज्ञानिक तथा साहित्यिक शब्दोंका भण्डार अरबी-फारसीसे लिया जावेगा और रोमन लिपिमें वही शब्द आप यूरपकी विदेशी भाषाओंसे लेंगे। ऐसी दशामें आप उस भाषाको अपनी मातृभाषा कहांतक

कह सकेंगे, आप स्वयंही विचारिये। इस बातको दर्शानेके लिये मैं आपकी सेवामें ३१ मार्चको छपे हुवे 'वीर अर्जुन' साप्ताहिक पत्रके विलायती-हिन्दुस्तानी शीर्षक नामसे छपी हुई कुछ पंक्तियां भेज रहा हूं। यह १३ फरवरीको माल मंत्री माननीय ठाकुर हुक्मसिंह-जीके भाषण अथवा उसके अनुवादसे संग्रहीत है जो कि सरकारी पाक्षिक पत्र ' समाचार ' में देव-नागरी लिपिमें छपा। "सिलैक्ट कमेटीने इस बिलके मुताल्लिक गौर खोज करनेके बाद कुछ तरमीमात की है, सिर्फ वर्बल एमैंडमैंट किये हैं, सैल्फ एक्स्प्लेनेटरी और सैल्फ कंटेण्ड (self explanatory & self contained) की तजवीज हो जावे। क्लाज १५,१८ डिलीट delete कर दिया जावे" ऐसी भाषाका प्रचार करना क्या अंग्रेजोंके चले जानेके अनन्तर भी अंग्रेजी दासताकी दृढ भूमि नहीं है? और इसके होते हुवे केवल राजनैतिक परिवर्तनसे हम किस प्रकार अपने आपको स्वतंत्र कह सकते हैं ?

हमारी राष्ट्रभाषाका नाम हिन्दी और लिपिका नाम देवनागरी है। हिन्दी तो इसका इसलिए नाम है कि यह सारे हिन्दकी राष्ट्रभाषा है। प्रत्येक भाषाका नाम और उसकी जातिका नाम बहुधा एकही होता है। यथा पंजाबी, बंगाली, मराठी, इंग्लिश, फ्रेंच, फारसी, अरबी आदि। उर्दू किसी भी जातिका नाम नहीं है। इसको भारतमें कोई जाति मातृभाषाके रूपमें नहीं बोल-ती। केवल स्कूलों और कालेजोंमें पढनेके अनन्तरही उसके समझनेकी क्षमता प्राप्त होती है। जिस उर्दूमेंसे फारसी और अरबीके शब्द निकाल दिये जावें वह शुद्ध हिन्दी बन जाती है यदि एक हिन्दू यह कहता है कि "मैं पानी पीना चाहता हूँ," तो मुसलमान भी यही कहता है। पानी और चाहना शुद्ध हिंदी संस्कृतसे उद्धृत किये हुवे हैं। कोई भारतीय मुसलमान भी यह नहीं समझेगा कि "मैं आब नोश करना दवाहता हूं," जबतक उसके मस्तिष्कपर फ़ारसी अरबीका रोगन न चढा हो। एक देशमें दो भाषाएं नहीं हो सकतीं। केवल मत-परिवर्तनसे भाषा नहीं बदला करती। संसारमें ऐसा कोई भी देश नहीं जहांकी मातृभाषा उर्दू हो। उर्दू कोई भी पृथक् भाषा नहीं है। इसमें केवल विदेशी शब्दोंका बाहुल्यही है। यह एक प्रकारकी भाषा है जैसी कि नये बने हुवे अशिक्षित ईसाई बोला करते हैं, 'मिस मागन' मैंने बेबी धेलेका मिल्क पिलाया, मिस फत्तो, मैंने लस्सीके कप और सरसोंके सागसे ब्रेकफास्ट किया" क्या इस प्रकारकी भाषा जिसमें विदेशी शब्दोंकी खिचडी हो मातृभाषा बननेका अधिकार रखती है ? यह कहना कि उर्दू मुसलमानोंकी भाषा है, एक झूटा ढकोंसला है। क्या मुसलमानोंने हिन्दकी भाषाका यशोगान नहीं किया ? क्या-रहीम-रसखान खुसरोने हिन्दीमें अपनी कला नहीं दिखाई ? क्या शुद्ध हिन्दीके प्रचारके लिये सर्वप्रथम सैयद इंशा अल्लाहने अपनी रानी केतकीकी कहानीमें इन शब्दोंके साथ ' हिन्दीकी छुट न दूसरी बोलीकी पुट ' सूत्रपात नहीं किया ?

मेरी सम्मतिमें इस लिपिका नाम देवनागरी इस-लिये है कि यह लिपि परमात्मासे उत्पन्न हुई है और सारे भारतके नागरिकोंकी भाषा है। संस्कृत भाषासे उद्धृत होनेके कारण और संस्कृत वेदोंकी भाषा होनेके कारण यह परमात्मासे उत्पन्न हुई है। पर ऐसी युक्ति दूसरे मतवाले क्यों मानने लगे ? इसमें कुछ विशेष-ताएं भी हैं। इसकी वर्णमाला पूर्ण है। व्यंजन और स्वरोंका पृथक् वर्गीकरण है और व्यंजनोंका स्थान और प्रयत्न आदि भेदसे क्रमबद्धता है। किसी दूसरी भाषामें ऐसा क्रम नहीं है। दूसरे इसके सारे अक्षर उच्चारणानुसारी phonetic हैं और भाषा-विज्ञानमें phonetics का सिद्धान्त सर्वोत्तम माना जाता है। उर्दूमें पहला अक्षर अलफ है, दूसरा बे। इसी प्रकार जीम दाल इत्यादि। अलफकी ध्वनि अ की है, ल और फ नहीं बोला जाता। बे में एका उच्चारण निरर्थक है। इसी प्रकार जीममें ई और म नहीं बोलते; डेमें आ और

ल नहीं बोलते। बच्चोंको पढानेमें इसलिए उनको हिज्जे रटने पडते हैं। यही दोष अंग्रेजीमें भी है हिन्दीमें स्वरोंके अनन्तर 'क' से लेकर 'ह' तक केवल एक स्वर 'अ' की सहायतासे सारे व्यंजनोंका उच्चारण हो जाता है यह वैज्ञानिक सिद्धान्तकी पराकाष्ठा है। यह अ परमात्माका वैश्वानर रूप है। जैसा कि मांडूक्योपनिषदूमें लिखा है– "जागरितस्थानो वैश्वानरो अकारः प्रथमा मात्रा आप्तेः आदिमत्त्वात् वा आप्नोति ह वै सर्वान् कामान् आदिश्च भवति। (माण्डूक्यो० ९)" इसपर भाष्य करते हुवे श्रीमान् शंकराचार्यजी लिखते हैं 'अकारः वै सर्वा वाक्।'

यह अकार ओंकारकी पहली मात्रा परमात्माका वैश्वानर रूप है। इसी प्रकार महाभाष्यकारने लिखा है, 'सर्वमुखमवर्णस्थ इत्येके' अर्थात् कईयोंके मतमें अकार हर उच्चारण स्थानसे बोला जाता है। अर्थात् यह कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ आदि सब स्थानोंसे बोला जा सकता है। यही कारण है कि इस स्वरको वर्णमालामें प्रत्येक व्यंजनके साथ मिलाया गया है। इसका उच्चारण बहुत सरल होता है। आप किसी भी जातिके बालकोंको देखें। सबसे पहले वे आकारान्त शब्दोंकाही उच्चारण करते हैं; यथा चाचा, बाबा, काका; अंग्रेजोंमें पापा, मामा और अरबवालोंमें भी अघा आदि। ई, उ आदि स्वरोंका उच्चारण उतना सरल नहीं है, यह इसकी वैज्ञानिकता है। दूसरे हिन्दी भाषाकी द्वादशाक्षरी प्रसिद्ध है। इनके साथ यदि संस्कृत शब्दोंकी ऋ, ॠ और ऌ की मात्राएं भी मिला दें तो १५ मात्राएं बन जाती हैं। १६ वा व्यंजनका प्रखर अमात्रिकरूप है। क्या इस प्रकार प्रत्येक अक्षरमें १६ कला संपूर्ण शब्दब्रह्मका रूप निहित नहीं? उर्दूमें बालकको 'अब' शब्द पढानेके लिए समझाना पडेगा कि अलफमें ला और फ नहीं बोले जाते और बे में ए। पर ऐसी दुरूह कल्पना छोटे बालकोंको देवनागरीमें नहीं करनी पडती, दूसरे उर्दूके अक्षरोंमें रूपभेद बहुत थोडा है। बे, पे, ते, टे, से, ये, नून, आदि अक्षरोंका द्योतक केवल एकही चिन्ह है। इसमें केवल भिन्न भिन्न स्थानोंपर नुक्तोंके लगानेसेही अक्षर बदल जाते हैं और अच्छे लेखक नुक्तोंका लगाना जरूरी नहीं समझते। इसी प्रकार उर्दूमें शुद्ध स्वर तो कोई भी नहीं है, अलिफादिही स्वर कहे जाते ह यह कभी स्वर बनते हैं, कभी व्यंजन हो जाते हैं यहांतक कि, अलिफ, ' जिसको कि स्वर केवल कहा जाता है वह भी अरबी शब्दोंमें जाकर नकारकी आवाज देता है, जो फौरन, आननफा जैसे आदि उर्दूमें स्वरोंको समझानेके लिए जबर जेर पेश हरकतें मात्राएं लगाई जाती हैं पर नुक्तोंकी तरह अच्छे लेखक इन हरकतोंकी भी उपेक्षाही करते हैं, जिससे कुछका कुछ पढा जाता है। मेरी बुद्धिमें उर्दूके लेखकोंको यह तीन अक्षय्य भूषण हैं। बेनुक्तगी, बेहरकती और शिकस्तगी। अर्थात् अच्छे लेखक सदा शिकस्ता लिखा करते हैं। इसी कारण कई बार उर्दूके पढनेमें बडी दुविधा होती है, जिसके कुछ उदाहरण नीचे देता हूँ।

खतमें लिखा "था वालिद अजमेर गये हैं।"

मुनशीजीने पढा "वालिद आज मर गये हैं।" एकने लिखा, 'जाता हूं नहाने।' पढे दूसरा, 'जाता हूं थाने, दो आने।' छजको पढा ह्वाचज। इसी प्रकार किश्तीको कुश्ती, सुईको सोई, ताऊको नाऊ, आदि अनेकों उदाहरण हैं। एक बार रेलकी यात्रा करते हुवे एक स्टेशनपर पहुंचे। स्टेशनपर उर्दूमें समरहिल लिखा था एकने पढा 'सिमरहुल,' दूसरेने 'सुमरहल,' आदि कई रूपसे पढा जाने लगा, पास एक मुसलमान सज्जनको चिढ आई। और कहने लगे। बेवकूफकी तरह क्यों पढते हो? समरहिल क्यों नहीं पढते? जब कहा कि जबर जेर कहां है, तो बोले अपनी अकलसे पढा जाता है। वह बोले ऐसी भाषासे परमेश्वर बचावे, जिसके अक्षर पढनेमें भी इतने बेढबी हैं। ऐसे ही दोष अंग्रेजी भाषामें भी पाये जाते हैं। एक अक्षरकी कई आवाज हैं और एक आवाजके लिए कई अक्षर हैं। इस तरह इसके पढनेमें भी असमंजस

पडती । कई अक्षर अनुच्चारित होते हैं often में टी, rough में रफ्, but बट् put पुट् इत्यादि । मथुराको मुटरा लिखा जाता है ।

संसारकी भाषाओंकी पंक्तियोंको दृष्टिगोचर करके जब हम बिचारते हैं, तो हम संकारकी भाषाओंको ३ भागोंमें बांट सकते हैं। कई भाषाओंकी पंक्तियां ——> दिशामें चलती हैं, जैसे हिन्दी, मराठी, संस्कृत, अंग्रेजी जरमन आदि। कई भाषा <—इस रूपमें लिखी जाती हैं यथा उर्दू, अरबी, फारसी, तुरानी, तुरकी आदि । और कइयोंकी पंक्तियां ऊपरसे नीचेको चलती हैं । जैसे जापानी, चीनी । अब विचारणीय यह है कि इन तीन शैलियोंमें कौनसी शैली वैज्ञानिक है ? इस बातके निर्णयके लिए यदि आप किसी भी जातिके मनुष्यको कहें कि एक कागजपर लकीर खींचे, तो वह स्वभावत: —> दिशामें खींचेगा । यह नहीं हो सकता कि हिन्दी अंग्रेजी पढा हुआ—> खींचे, और उर्दू फारसी पढा हुआ <—! ड्राइंगमें सर्वप्रथम—> इसी दिशामें रेखा खींचना सिखाया जाता है। इसके अनन्तर ऊपरसे नीचे और सबके बाद <—दिशामें । क्योंकि यह सबसे कठिन अस्वाभाविक है । हां ! वामहस्तक इस दिशामें रेखा आसानीसे खींचे ! सम्भव है कि उर्दू फारसी लिपि बनानेवाला कोई वामहस्तक left handed हो ! यह आश्चर्य है कि इतने दोषोंसे दूषित होनेपर भी उर्दूके पक्षपाती उर्दूको राष्ट्रभाषा बनानेका हठ किये चले जा रहे हैं, जब कि दूसरे मुसलमान स्वतंत्र देश टरकी और फारसकी भान्ति अरबीकी दासताको छोड रहे हैं ! उर्दू और हिन्दी तुलना कहीं हो सकती है ? कहा भी है—

क्व देवप्रभवा भाषा क्वचोर्दू लष्करोद्भवा ।
क्व चेयं स्वर्गजा भाषा क्व चासौ वर्णसंकरा ॥
अपेक्षत्वं कथं वा स्यादेतयोरतुलोद्भवोः ।
क्व सूर्यप्रभवा ज्योतिः क्व तिमिरोद्भवश्यामता॥
ज्योतिरेव प्रिया लोकः श्यामता कस्य वा प्रिया ।
सर्वैस्संस्तूयते चेयं श्यामता केन मन्यते ॥
चौरोलूकादयाः सर्वे तथा हि रजनीचराः ।
तमः केवलमिच्छन्ति न तु केचन साधवः ॥

—————

अमर रहे हिन्दुराष्ट्रका जीवन-दीप

(लेखक- पं० **वेदप्रकाश शर्मा** ' काष्ठपाल ' एफ्. ए. स्टुडेण्ट, गवर्नमेंट कालेज; डेरा गाजी खां; पञ्जाब)

आज हिन्दुओंकी दशाको देखकर रोना आता है। वे मातृभूमिको निज माता नहीं मानते – उस मातृभूमिको जो वास्तवमें मातासे भी बढकर है । माता तो स्वबालकको केवल नौ मासके लिए धारण करती है। और पुनः मृत्युके पश्चात् जब कि माता रो पीटकर मौन धारण कर लेती है – जब सारे सांसारिक जन उससे तिरस्कार करने लग पडते ह और उससे दूर भागते हैं । तब भी एक यही मातृभूमि है जो उसको भी गोदमें ले लेती है। इतना प्रेम है उसका निज सेवकोंसे ।

एक संस्कृतके प्रेमीने

" **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी** ।

यह लिखकर मातृभूमिका स्वमाताके साथ मुकाबला किया है और उसके समान ही बताया है। इसके लिए कई तो उदाहरण देते हैं कि माताका पुत्रके साथ असीम स्नेह है। वह स्वयं कुछ न खाकर निज पुत्रको प्रसन्न रखनेका प्रयत्न करती है। वह स्वयं दुःखोंको अनुभव करके भी अपने पुत्रको सुखी देखना चाहती है। मातृभूमि भी तो कितने दुख धारण करती है। उस पर हल चलाये जाते हैं – कुयें खोदे जाते हैं– नहरें बनाई जाती हैं– किस लिए ? केवल इस लिए कि उसके सेवक सुखी रहें। उसीका ही अन्न और जल खाकर हम अब तक जीवित हैं। सारोंका जीवन इसीपर निर्धारित है। यदि एक वर्ष यह अपना अन्न न दे तो सारे भारतवासी ' त्राहि ', ' त्राहि ' कर उठें । उनके जीवन भी नष्ट हो जायें। आज वही कुछ दिखाई दे रहा है। प्यारे भारतवासी आज अन्नके लिए तरस रहे हैं। ऐसी मातृभूमिसे जो भी स्नेह नहीं करता उसको धिक्कार और कोटिवार धिक्कार है ।

इतिहासके पन्ने उलटनेसे हमें ज्ञात होता है कि पूर्वजोंका भारतमातासे असीम स्नेह था। वे निज तन, मन तथा धन इसपर न्योछावर करनेके लिए सर्वदा तत्पर रहते थे। उनके नाम आजतक अमर रहे हैं और सृष्टि-काल तक अमर रहेंगे। कौन है जो शिवाजी मरहट्टा, महाराणा प्रताप, लक्ष्मीबाइ, दुर्गावती, महाराणी पद्मिनी, बन्दा बैरागी, हरिसिंह नलवा और वीर हकीकत इत्यादिको भूल गया हो ? इनके स्मरणमात्रसे ही नस नसमें नये खूनका सञ्चार हो आता है। इनका त्याग एक महान् त्याग था। उन्होंने हिंन्दु दीपको अमरता देनेके लिए बलिदानोंके तेलसे प्रज्वलित ही रखा। परन्तु बलिदानोंकी माला अभी पूरी नहीं हुई और उसमें अभी तक गांठ भी नहीं आई । यदि उठाकर माताके गलेमें पहना दें तो सारे बलिदान व्यर्थ ही चले जायें। इस लिए उसके सेवकोंसे विनम्र प्रार्थना है कि वे उतावले न हों। बलिदानोंकी मालाको पूरी होने दें। तब स्वयं ही माला माताके गलेमें पड जायगी और फिर उसके गिरनेका भय नहीं रहेगा। तब दीप बलिदानोंके तेलसे पूर्व प्रकारसे प्रज्वलित होकर सर्वदाके लिए अमरताके पदको पालेगा।

परन्तु आंख जब हिन्दुराष्ट्रकी ओर जाती है तो रोना सा आ जाता है। कोई भी ऐसा व्यक्ति दिखाई नहीं देता जो निज बलिदान देकर बलिदानोंकी मालाको पूर्ण करनेका, तथा अमरताका सन्देश दे। सारे निज कार्योंमें विलग्न हैं। उनको तो मानो यह भी

विचार नहीं कि उनका भारतमाताके प्रति कोई कर्तव्य है। दुकानदार दुकान तथा ग्राहकोंमें मस्त है। व्यापारी निज व्यापारमें मग्न है। छात्र निज पढाईमें तल्लीन हैं। इत्यादि।

सारे स्वार्थपरायणतामें लगे हुवे हैं। कोई भी अपने पूर्वजोंकी ओर देखकर लेशमात्र भी त्याग नहीं कर सकता। वे चाहते हैं कि हम नेता बन जायें। एक कविने अपनी कवितामें ठीक वर्णन किया है-

" ....

पर स्वदेशके कच्चे सेवक हिन्दुसंगठन वादी।
कच्ची आग तुम्हारे मनकी अभी स्वार्थ है बाकी॥
चाह लीडरीकी है दिलमें इज्जतके हो भूखे।
अखबारोंमें नाम छपे इस शोहरतेके हो भूखे॥
नातेदारों और मित्रोंका प्रेम अभी है भारी।
घोर दुखोंसे भय लगता है जान अभी है प्यारी॥
ऐसे रेतके टीलोंमें बाग लगेंगे कैसे?।
हिन्दूपथके सुन्दर सुन्दर फूल खिलेंगे कैसे?

अभी तक भी उनपर नातेकी मस्ती चढी हुई है। उनको अपने नातेदार और बन्धु छोडनेमें अभी भी हृदय नहीं करता। वे यह नहीं जानते कि हमें अपनी मातृभूमिका कार्य करते हुवे निज बन्धुओंकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। वे नहीं जानते कि हमने देश-सेवा करनी है और उसके लिए हमें चाहे निज प्राणों को भी त्यागना पडे तो भी कोई परवाह नहीं।

खडा हुवा हिमालय बता रहा है कि घोर दुःखोंसे मत डरो और अपने ध्येयपर अटल रहो। यह दुःख तो आने जाने वाली वस्तुएं हैं। आज आए हैं तो कल अवश्यही चले जायेंगे। एक कवि ठीक ही वर्णन करता है, कि प्रत्येक हिन्दूको कैसा होना चाहिए—

" वृत्तपत्रके नाम छपेगा पहनूंगा स्वागतसुमहार।
छोड चलो यह क्षुद्रभावना हिन्दुराष्ट्रके तारनहार॥
कङ्कर पत्थर बनकर तुमको राष्ट्र नींवको भरना है।
ब्रह्म-तेजके क्षात्र-तेजके अमर पुजारी बनना है॥"

अब समय आगया है कि हम निज स्वार्थको छोड-कर मातृभूमिकी ओर ध्यान दें और उसके निमित्त अपना तन, मन तथा धन अर्पण कर दें। यह हमारी माता है। यह ही हमारी पुण्यभूमि है। उसके एक कोणसे लेकर दूसरे कोणतक हमारे तीर्थ तथा यात्रा-प्रदेश हैं। यह हमारी मातृभूमि तथा पितृभूमि है। यही हमारे पूर्वजोंकी जन्मदात्री है तथा इसने ही अन्तमें पूर्वजोंको गोदमें लिया।

ऐसे पवित्र प्रदेशकी भी उसके सेवक परवाह नहीं करते। प्रत्येकके मनमें यही चाह है कि वह नेता बन जाए। उनके मनमें यह विचार लेशमात्र भी नहीं आता कि यदि सारी ईंटें छतपर चढनेकी इच्छा करें तो नींवमें कौन लगेगी। नींवके बिना इमारत खडी भी नहीं हो सकती। ठीक ही इसी प्रकार यदि प्रत्येक हिन्दू नेता बननेकी इच्छा करे तो बलिदान शिलापर कौन चढेगा।

यदि हम चाहते हैं कि हमारा राष्ट्र उन्नत हो तो स्वार्थको छोडकर हमें अपने आपको समाजहितमें लीन करनेका प्रयत्न करना चाहिए।

" बीज धूलमें मिलकर पहले अपना आप छिपाते।
फुलते फलते टुकडे होकर सड जाते गल जाते॥
मिट्टीमें मिट्टी होकर वे सर्वनाश कर लेते।
ऐसे मिटते दुनियासे फिर दिखलाई नहीं देते॥
इस बलिदानसे उगती जाकर सब यह खेती बाढी॥
.................."

प्रिय बन्धुओं! निज स्वार्थको छोड दो। इसी स्वार्थनेही तो हमें ऐसी नीच स्थितिपर पहुंचा दिया है। त्यागके विना कोई वस्तुभी प्राप्त नहीं होती। प्रत्येक वस्तुकी कीमत अवश्य ही देनी पडती है। उसके लिए हम सबको उद्यत रहना चाहिए।

— जय अखण्ड भारतवर्ष—

सत्यार्थ-प्रकाश

प्रवासी भवन
आदर्शनगर, अजमेर
तारीख ———— ———१९४

प्रिय बन्धु !

वैदिक धर्म और आर्य-संस्कृतिके पुनरुद्धारक ऋषि दयानन्दका निर्वाण हुआ था—सन् १८८३ ई० में दिवालीके दिन। इस प्रकार सन् १९४५ ई० तक ६२ दिवाली-दिन आये और चले गये। महर्षिने केवल स्वदेशकेही नहीं प्रत्युत अखिल विश्वके मनुष्योंके कल्याण एवं उत्थानके लिये वेदभाष्यके अतिरिक्त अन्य अनेक ग्रन्थोंकी रचना की, जिनमें "सत्यार्थ-प्रकाश" मुख्य है। उन्होंने अपने ग्रन्थोंके मुद्रण एवं प्रचारके निमित्त परोपकारिणी सभाकी स्थापना की थी। इस ६२ वर्षके दीर्घकालमें जहाँ आर्य्यजनताने महर्षिके उद्देश्योंकी पूर्तिके लिये गुरुकुल, कॉलेज, कन्याविद्यालय, अनाथालय, औषधालय आदि आदि संस्थाएँ खोलीं वहाँ परोपकारिणी सभाभी महर्षिकृत ग्रन्थोंको सुरक्षित रखने और उसके प्रकाशनमें सन्नद्ध रही, परन्तु सार्वजनिक सहायता लिये बिना प्रकाशनके लाभसेही उनके ग्रन्थोंके प्रचारकी प्रगति आजकलके बायबिल-सोसायटी आदि अन्य धर्मावलम्बियोंके ग्रन्थोंके प्रचारके सम्मुख ऐसी मन्द रही जैसी डाकगाडीकी दौडके सामने छकडेकी चाल।

बायबिलके प्रचारके लिये एक नहीं, अनेकों सोसायटियाँ हैं जो संसारकी भिन्न-भिन्न भाषाओंमें अनूदित बायबिलकी लाखों प्रतियाँ प्रतिवर्ष प्रचारित करती हैं। इसी प्रकार कुर्आन आदिका जितना प्रचार हो रहा है, उसको देखते हुए यह स्वीकार करनाही पडेगा कि उनके मुकाबलेमें सत्यार्थप्रकाशका प्रचार बहुत कम हो सका है।

जिस कार्यको बडे-बडे आर्य-नेता वर्षोंसे सोच रहे थे और जो अबसे बहुत पहले हो जाना आवश्यक था उसकी उपयोगिता और आवश्यकताका अनुभव कर हम आप महानुभावोंके भरोसे यह कार्य प्रारम्भ कर रहे हैं। हमारे अन्दर इस कार्यकी पूर्तिके लिये न यथेष्ट योग्यता है, न शक्ति है और न सम्पत्ति, पर ईश्वर और आर्य जनताकी सहायताके भरोसे हम इस कार्यमें अग्रसर हो रहे हैं। "सत्यार्थ-प्रकाश सोसायटी" की बुनियाद ऋषिके ६२ वें निर्वाणदिवस—दिवाली १९४५—पर डाली जा रही है। आशाही नहीं वरन् विश्वास है कि ऋषिके अनुयायी और वैदिकधर्मके प्रेमी इस महान् यज्ञमें अपनी आहुति डालकर सोसायटीको सफलीभूत बनानेमें सहयोग देंगे। सोसायटीके सदस्य बनकर इसके कोषकी पूर्ति करना तो परमावश्यक है ही, परन्तु जो महर्षिके प्रेमी सज्जन न्यूनसे न्यून धन देकर सोसायटीको दृढ बनानेका प्रयत्न करेंगे वह भी सोसायटीके धन्यवादके भाजक बनेंगे।

यहाँ यह कह देना भी आवश्यक प्रतीत होता है कि इस समय सिन्धकी मुस्लिम लीगी सरकारने "सत्यार्थ-प्रकाश" का प्रचार सिन्धप्रान्तमें बर्जित कर हमें जो चुनौती दी है, उसका क्रियात्मक उत्तर देना हमारा कर्तव्य है। मुस्लिम लीगके प्रस्ताव और सिन्धकी लीगी सरकारकी करतूतसे इधर "सत्यार्थ-प्रकाश" की इतनी चर्चा और माँग हो रही है कि इस अवसरको हाथसे निकल जाने देना बुद्धिमानी न होगी। "आर्य्यसाहित्य मंडल" महायुद्धसे पहले चार आनेमें सत्यार्थ-प्रकाश दे रहा था और उसने दो आनेमें भी सत्यार्थ-प्रकाश देनेकी घोषणा करदी थी, पर विश्वयुद्धके कारण स्थिति बदल गई। आज तो मण्डलका चार आनावाला सत्यार्थप्रकाश एक रुपयामें भी अप्राप्य हो रहा है। यदि "सत्यार्थप्रकाश सोसायटी" को जनताकी सहायता मिली तो एक बहुत बडे कार्यकी पूर्ति हो जायगी। आशा है कि आप इस कार्यमें अपना आशीर्वाद सहायता और सहयोग देकर हमें अनुगृहीत करेंगे।

सोसायटीके उद्देश्य तथा सदस्य बननेके नियम और आवेदन पत्र सेवामें भेजकर पुनः निवेदन है कि आवेदन पत्र भरकर शीघ्र लौटानेकी कृपा करें। सोसायटीकी रजिस्ट्री हो जानेपर उसके नियम जो सज्जन मंगावेंगे, भेज दिये जावेंगे।

आपका शुभाकांक्षी—

भवानीदयाल संन्यासी

पूर्व प्रधान, नेटाल (दक्षिण) अफ्रीका आर्यप्रतिनिधि सभा

मथुराप्रसाद शिवहरे

मैनेजिंग डाइरेक्टर, आर्यसाहित्य मं० लि०, अजमेर.

(सोसायटी ऐक्ट ता०२१ सन् १८६० गवर्नमेन्ट आफ इन्डियाद्वारा रजिस्टर्ड)

सत्यार्थप्रकाश सोसायटीके उद्देश्य और सदस्य बननेके नियम

(१) नाम—इस संस्थाका नाम ' सत्यार्थ-प्रकाश सोसायटी ' होगा।

(२) हेड ऑफिस—इसका हेड ऑफिस, अजमेरमें होगा। शाखायें तथा एजेन्सियां—दिल्ली, लाहोर, बम्बई, मद्रास आदि अनेक स्थानोंमें आवश्यकतानुसार खुलेंगी।

(३) उद्देश्य— इस सोसायटी के उद्देश्य निम्नलिखित होंगे।

(क) हिन्दी सत्यार्थप्रकाशको छोटे, बडे अनेक साइज तथा पतले, मोटे भिन्न भिन्न अनेक टाइपोंमें मुद्रण करना और सस्तेसे सस्ते मूल्यमें प्रचारित करना।

(ख) बंगला, मराठी, गुजराती, तामिल, नैपाली, सिन्धी, गुरुमुखी, उर्दू आदि आदि भारतवर्षीय प्रान्तिक भाषाओंमें उसके उत्तम, सुलभ, सस्ते संस्करण मुद्रित, प्रकाशित तथा प्रचारित करना।

(ग) विदेशी भाषाओं जैसे अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, चीनी, जपानी, फारसी, अर्बी आदिमें अनुवाद कराना तथा मुद्रित, प्रकाशित और प्रचारित करना।

(घ) सत्यार्थप्रकाशका एक " कोष " बनाना, जिसमें सत्यार्थ-प्रकाशमें आये समस्त कठिन शब्दोंके सरल अर्थ हों।

(ङ) सत्यार्थप्रकाशके जटिल गंभीर स्थलोंको सरल रूपमें लिखवाकर प्रकाशित करना।

(च) सत्यार्थप्रकाशमें जिन जिन ग्रन्थोंके उद्धरण दिये हैं, उनके प्रकाशित वा अप्रकाशित हस्त लेख और उनकी प्रतिलिपियाँ संग्रह करना। उनको सुरक्षित रूपमें स्थिर रखना और आवश्यकता पडनेपर उनकी परिमित प्रतियाँ छपवाना।

(छ) एक ऐसा पुस्तकालय बनाना, जिसमें " सत्यार्थ-प्रकाश " के अबतकके प्रकाशित समस्त संस्करण विद्यमान हों और उसमें जिन ग्रन्थोंके उद्धरण उद्धृत हैं, उनके संस्करण व हस्तलेख संगृहीत हों।

(ज) सत्यार्थप्रकाशके प्रचारके निमित्त देश विदेशके मुख्य मुख्य स्थानोंपर ' सोसायटी ' के ऑफिस और एजेंसियां खोलना तथा सारे भूमण्डलमें इसका प्रचार करना।

(झ) एक उत्तम कोटिका मुद्रणालय (प्रेस) सत्यार्थप्रकाश तथा उसके अनुवादोंको छापनेके निमित्त खोलना।

(ञ) शनैः शनैः कार्य अधिक बढ जानेपर " सत्यार्थ-प्रकाश "के निमित्त विशेष प्रकारका कागज बनवाना।

(ट) लायब्रेरी, अनुसन्धान कार्यालय तथा प्रेस आदिके निमित्त " सत्यार्थ-प्रकाश भवन " निर्माण करना।

(ठ) अनुसन्धान तथा अनुवाद कार्यालय खोलना।

(ड) उपरोक्त कार्योंके निमित्त जनतासे चन्दा व दान प्राप्त करना।

(ढ) उपरोक्त वर्णित उद्देश्योंकी पूर्तिके निमित्ति अन्य उपयोगी कार्य करना।

(४) कोष—उपरोक्त कार्योंके निमित्त " १० लाख रुपये " का एक कोष दान तथा चन्देसे बनाना (बायबिल सोसायटी-के सामने यह कोष नहीं के समान है, तो भी यदि आर्य जनताने इतना धन एकत्र कर दिया तो जो कार्य यह संस्था अपने हाथमें ले रही है, उसकी पूर्ति बहुत कुछ हो सकेगी।)

(५) सदस्य—सोसायटीके सदस्य निम्न-लिखित प्रकारसे होंगेः—

(क) ३ आर्य संन्यासी, वा विद्वान् जिनको "सत्यार्थप्रकाश सोसायटी" अपनी जनरल मीटिंगमें ३ वर्षके लिये निर्वाचित करेगी।

(ख) जो सज्जन ५०००) पांच सहस्र रुपया एक मुश्त देवें (ऐसे महानुभाव सोसायटीके संरक्षक होंगे।)

(ग) जो सज्जन एक सहस्र रुपया एक मुश्त देंगे (ऐसे सज्जन आजीवन सदस्य कहलावेंगे।)

(घ) सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा और प्रादेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभाके प्रधान।

(ङ) जो सज्जन २५) रु० प्रति वर्ष देंगे।

ओ३म्

सेवामें,

श्री स्वामी भवानीदयालजी संन्यासी

प्रधान

सत्यार्थप्रकाश सोसायटी,

अजमेर.

श्रीमान्‌जी, नमस्ते,

आपने सत्यार्थप्रकाश सोसायटी बनाकर एक बहुत बडी आवश्यकताकी पूर्ति की है, आपकी योजनासे मैं सहमत हूँ, मैं योजनाको कार्यान्वित करनेमें आपका साथ दूंगा और यथाशक्ति सहायता करूँगा।

कृपा कर आप मेरा नाम सोसायटीके सदस्योंमें लिख लें। मैं सोसायटीके नियमोंकी पाबन्दी करूँगा और निम्नलिखित नियम सं० के अनुसार रु० देना स्वीकार करता हूँ, जो इस आवेदन पत्रके साथ भेजे जाते हैं। कृपया पहुँच-से सूचित करें—

नाम ———————

तारीख ——— पता ———————

———————

नियम—५(ख) ५०००) रु० या अधिक देनेवाले सज्जन संरक्षक होंगे।

(ग) १०००) रु० या अधिक देनेवाले सज्जन आजीवन सदस्य होंगे।

(ङ) २५) रु० प्रतिवर्ष देनेवाले साधारण सदस्य होंगे।

राज-आर्य-सभा

१. **नाम**-' राज आर्य सभा ' होगा।

२. **उद्देश**-(१) आर्य हिंदुओंको राजनीतिक तौर पर बलवान्, सामाजिक तौर पर संगठित और धार्मिक तौर पर उन्नत करना। (२) आर्य हिन्दुओंके धार्मिक, सामाजिक, नागरिक तथा राजनीतिक अधिकारोंकी रक्षा करना (३) वैदिक राष्ट्रीयताका प्रचार करके वैदिक स्वराज्य स्थापित कर, हिन्दुस्थानको फिर से आर्य्यावर्त बनाना और चक्रवर्तीय राज्यके लिये आर्यस्थान आन्दोलन जारी रखना।

३. **आवश्यकता**- भारतही नहीं समस्त संसार दुःखी और अशान्त है। इसका मूल कारण बलवानका निर्धन और धनवानका निर्धनके अधिकार छीनना व मनुष्यताकी अवहेलना है। यह भावना मानवताहीन, तथा स्वार्थमयी पश्चिमीय राष्ट्रीयताके प्रभावका परिणाम है। जिसको दूर करनेके लिये वैदिक राष्ट्रीयताके प्रचारकी नितान्त आवश्यकता है। इसके बिना भारतमें सच्चा स्वराज्य तथा संसारमें स्थायी शान्ति नहीं हो सकती, इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये ऋग्वेद मण्डल ३ सूक्त ३८ मंत्र ६ के अनुसार, जो यह है " त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथ सदांसि ॥" इस सभाकी स्थापना-सम्बन्धी ईश्वरीय आज्ञाका पालन आवश्यक है।

आदर्श- मनुष्यमात्रको स्वतंत्र, समान और सुखी देखनेके लिए श्रेष्ठ बनाना, अर्थात् " कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। " वेद आज्ञाका पालन।

५ **साधन**- प्रेम, सहयोग, सेवा तथा त्याग।

६. **आन्दोलन**- 'आर्यस्थान'।

७. **झंडा**- भगवे रंगका ॐ अंकित।

८. **सदस्य**-- वह व्यक्ति बन सकता है, जो 'वैदिक राष्ट्रीयतामें' विश्वास रखता हो और वैदिक स्वराज्यकी स्थापनाके लिए सभाके नियमों और समय पर दी जानेवाली आज्ञाओंके पालनके लिए हर प्रकारका त्याग करने तथा न्यूनसे न्यून १) वार्षिक शुल्क देनेको उद्यत हो। आयु १८ वर्षसे न्यून न हो। अन्य किसी राजनीतिक सभाका सदस्य न हो और न किसी अन्य राजनीतिक आन्दोलनमें भाग ले।

(ख) विशेष अवस्थाओंमें निःशुल्क सदस्य भी बनाए जा सकेंगे और वे केवल वही व्यक्ति होंगे जो शुल्क न दे सकें परन्तु तन व मनसे सेवा करनेको उद्यत हों।

(ग) न्यूनसे न्यून १०० रु. एकबार देकर आजीवन सदस्य भी बना जा सकता है।

९. **अधिकारी**- उद्देशोंकी पूर्तिके लिए सभाके कार्यको नियमित संगठनमें चलानेके लिए प्रति तीसरे वर्ष सभासदोंमें-से ही केवल उन्हें अधिकारी चुना जाएगा जो अधिकार शासन या ख्यातिके लिए धनके बलसे नहीं अपितु सेवाके भावसे त्याग और पुरुषार्थ द्वारा ग्रहण करें। निम्न १२ अधिकारी निर्वाचित होंगे:—

(१) प्रधान (२) उपप्रधान (३) १ मंत्री (४) २ उपमंत्री (५) कोषाध्यक्ष (६) निरीक्षक (७) १ भण्डारी, (८) आर्य-वीर-दल सेनापति। (९) वैधानिक सम्मतिकार

इनके अधिकार और कर्तव्य अन्तरंग सभा निर्धारित करेगी

१०. **मत**- प्रत्येक व्यक्ति जो न्यूनसे न्यून एक वर्षतक नियमानुसार सभासद रहा हो अधिकारियोंके निर्वाचनके लिए दे सकता है। यह प्रतिबन्ध (१ वर्षतक मेम्बर रहनेकी पाबन्दी) पहले निर्वाचन पर लागू न होगा।

११. **अन्तरंग सभा**- साधारण सभाके निश्चयोंको कार्यरूपमें लानेके लिए २१ मैम्बरोंकी अन्तरंग सभा होगी जिसमें ११ अधिकारी, ७ निर्वाचित तथा ३ प्रतिष्ठित सदस्य होंगे।

१२. **कार्यकारिणी समिति**- प्रधान, मंत्री, तथा ३ अन्य सदस्यों की एक कार्यकारिणी समिति होगी जो कार्यको अविलम्ब करनेके लिए होगी। यह अन्तरंग सभाके आदेशानुसार कार्य करेगी।

१३. **अधिवेशन**- साधारण सभा का प्रतिवर्ष, अन्तरंग का प्रति तीसरे मास और कार्यकारिणी समिति का मासमें २या आवश्यकतानुसार अधिक बार हो सकेगा, असाधारण अधिवेशन भी $\frac{१}{२}$ सदस्योंसे अधिक की लिखित प्रार्थना पर प्रधानकी आज्ञासे बुलाया जा सकेगा, (केवल विशेष अवस्थामें)।

१४. **कोरम**- साधारण सभाके अधिवेशनके लिए सदस्योंकी $\frac{१}{३}$ उपस्थिति अन्तरंगमें ९ और कार्य कारिणीमें ३ की आवश्यक होगी।

१५. **कार्यालय-** केन्द्रीय कार्यालय सम्प्रति जालंधरमें रहेगा। आवश्यकता तथा सुविधा होने पर किसी अन्य केन्द्रिय स्थान पर ले जाया जा सकेगा, इसके लिए साधारण सभा की स्वीकृति आवश्यक होगी, (सब निश्चय सर्व सम्मति या बहुमतसे होंगे)

१६. **शाखाएं-** सारे भारत और विदेशोंमें शाखाएं खाली जा सकेंगी उनका सम्बन्ध केन्द्रसे आवश्यक होगा। शाखा किसी स्थानपर खोलनेपर केन्द्रीय सभा का सदस्य शाखाके संचालकको बनना होगा। वही एक वर्षतक अपनी शाखाका केन्द्रमें प्रतिनिधि समझा जायगा। शाखाओंका चुनाव प्रतिवर्ष होगा।

१७. **कार्यक्रम-** (१) जिन सरकारी विभागोंमें हिंदुओंसे अन्याय किया जा रहा है और उचित अधिकार प्राप्त न हो, वह अन्यायको दूर करने और अधिकार दिलानेका प्रयत्न करना। (२) लोकल बॉडीज तथा धारा सभाओंके निर्वाचनोंमें भाग लेना। (३) प्रान्तीय तथा केंद्रीय सभाओं और विधान निर्मातृसभामें आर्य सदस्योंको संगठित कर उनकी पृथक राजीय पार्टी बनाना, (४) हिंदु राजाओंका एक दृढ संघ बनाना और उन्हें अपनी प्रजाके लिए वैदिक स्वराज्य पद्धति प्रचलित करने के लिए तैयार करना, (५) मुस्लिम रियासतोंमें हिन्दुओंके अधिकारोंकी रक्षा करना। (६) हिन्दीको राष्ट्रभाषा का पद दिलाना, (७) वेद का विभिन्न भाषाओंमें भाष्य तैयार कर प्रकाशित व प्रचारित करना, (८) आश्रम-मर्यादा तथा वर्ण व्यवस्था का पुनः प्रचलन करना (९) आर्य वीर दल स्थापित करना (१०) इन तथा अन्य सब साधनों द्वारा 'आर्यस्थान' आन्दोलन चलाकर वैदिक स्वराज्य स्थापित कर चक्रवर्तीय राज्यके लिए प्रयत्न करना।

प्रारम्भिक- (क) इस संकेतीय कार्यक्रमको अपनेके लिए स्थान स्थान पर राजार्यसभाकी शाखाएं स्थापित करना। प्रत्येक प्रान्तमें प्रान्तीय और सब प्रान्तोंके प्रतिनिधियोंका एक अखिल भारतीय संगठन बनाना। प्रत्येक प्रान्तमें पहले जिलोंमें शाखा खोलना और जिला सभाओं द्वारा प्रत्येक तहसील, नगर व ग्राममें। (ख) प्रत्येक शाखाके साथ आर्यवीर दल स्थापित करना। (ग) वैदिक राष्ट्रीयता, वैदिक स्वराज्य और वैदिक सोलिज्म सम्बन्धी साहित्य प्रकाशित करना। (घ) प्रत्येक शाखाके साथ पुस्तकालय और वाचनालय खोलना (ङ) आर्य संस्थाओंमें वेदपाठ, सन्ध्या, हवनका प्रचलन तथा ओमूका झण्डा लहराए जानेका प्रबन्ध करना। इत्यादि

साधन- इस कार्य को क्रियात्मक रूप देनेके लिए अवैतनिक तथा आवश्यकतानुसार वैतनिक कार्यकर्ता रखे जाएंगे, प्रचारके लिए पुस्तिकाएं और समाचार पत्र हिंदी, उर्दू, तथा अंग्रेजीमें प्रकाशित किए जाएंगे। जब तक सभा अपने पत्र प्रकाशित नहीं करती, 'प्रकाश' साप्ताहिक सभाका मुखपत्र रहेगा और शीघ्र इसका हिन्दी संस्करण जारी किया जायगा।

प्रान्तीय-सभा-संघटन

शाखाएं- प्रत्येक स्थानपर सभी प्रान्तों और रियासतोंमें नियमावलीके अनुसार खोल ली जावें। सम्प्रति उनका सम्बन्ध केन्द्रीय सभासे कर लिया जाए, जब किसी प्रान्तमें पर्याप्त शाखाएं हो जावें तो पहले वे जिलासभाएं और फिर प्रान्तीय संगठन बना लें जिसका सम्बन्ध केंद्रसे हो। प्रान्तीय संगठनमें प्रत्येक जिलेसे जहां शाखाएं हों, न्यूनसे न्यून एक प्रतिनिधि या १० सभासदोंके पीछे एकके हिसाबसे भेजकर उसका चुनाव कर लिया जाए। जिला सभाओंमें भी इसी तरह प्रतिनिधित्व होना चाहिए।

शाखाएं अपनी आयका २५ प्रतिशत जिला सभाओंको, जिला सभाएं ४० प्रतिशत प्रान्तीय सभाओंको और प्रान्तीय सभाएं ७५ प्रतिशत केन्द्रीय सभाको शुल्क भेजें। जब तक प्रान्तीय संगठन नहीं बनते तबतक शाखाएं अपनी आयका ३/२ भाग केन्द्रीय सभाको भेजें।

फार्म मैम्बरी, नियमावली, ट्रैक्ट, पोस्टर, रसीद बुक, लैटर फार्म आदि स्वयं न छपवाकर केन्द्रीय कार्यालयसे मंगवाए जाएं, ओमूके झण्डे भी। अथवा आदेशानुसार अपने यहां स्वीकृति लेकर छपवालें।

अखिल भारतीय संगठन योजना

(१) अखिल भारतीय राजार्य सभाके आर्यावर्तीय प्रतिनिधित्वके लिये देशके सभी आर्य हिंदू नेताओंसे राजार्य सभामें सम्मिलित होने, संचालन, संगठन व नेतृत्व करनेकी प्रार्थना की जाएगी। यदि उनमेंसे कोई या सभी अन्य राजनीतिक संस्थाओंसे पृथक् होना पसंद न करें और इसीलिए सम्मिलित भी न हों तो, उनके बिना भी कार्य जारी रखा जायगा।

(२) सार्वदेशिक सभासे सम्बन्ध किए जानेकी प्रार्थना और प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओंसे सहयोगके लिए प्रेरणा की जायगी। किसी कारणवश ऐसा न होनेपर भी कार्य चालू रहेगा।

आवश्यक

(३) राजार्य सभा पार्टीबाजी और झगडोंसे कोई सरोकार न रखेगी। अपितु इनको समाप्त करनेका यत्न करेगी।

(४) प्रान्तीय सभाओंके संगठन होने और उनके निर्वाचित प्रतिनिधियोंके सम्मिलित होने एक स्थानीय सभा ही (जिसमें बाहरके सदस्य भी होंगे) केन्द्रीय सभाके अधिकार रखेगी।

(५) प्रान्तीय सभाओंके प्रतिनिधियोंके अतिरिक्त (लाईफ मैंबर) आजीवन सदस्य १००) रु० देनेवाले या जीवन-दान देनेवाले कार्यकर्ता भी सदस्य बनाए जा सकेंगे। केन्द्रीय सभाका हर सदस्य न्यूनसे न्यून १०) वार्षिक शुल्क (अपनी शाखाको दिये जानेवाले शुल्कके अतिरिक्त) देगा। (अस्थायी निर्वाचन तक शुल्क साधारण १) ही होगा)

(६) संयोजकको अस्थायी निर्वाचन तक सदस्य बनाने, शुल्क तथा दान (यदि कोई देना चाहे) प्राप्त करने, और आवश्यकता अनुसार उचित व्यय करने तथा कार्य संचालनका अधिकार होगा।

(७) ये नियम (Provisional) हैं और स्थायी संगठन व निर्वाचन होने तकके लिए हैं। प्रत्येक हितचिन्तक व्यक्ति प्रस्ताव (तजावीज: Suggestions) और मैंबर नियमोंमें लाभप्रद संशोधन संयोजकको भेज सकता है।

(८) केन्द्रीय सभाका अस्थायी निर्वाचन १३ अप्रैल १९४८ तदनुसार वैशाखीके दिन दोपहर २ बजे 'प्रकाश' कार्यालयमें होगा तब संयोजक आयव्ययका हिसाब पेश करेगा और स्थायी निर्वाचनकी तिथि भी निश्चित की जायगी। १३ अप्रैल १९४८ तक स्थानीय व बाहिरके व्यक्ति नियमानुसार प्रवेश पत्र भरकर १)के साथ, संयोजक राजार्य सभा, चहार बाग जालन्धर नगरको भेज दें और निर्वाचनमें भाग लेना चाहें तो पहुंच जाएं। (शुल्क संयोजकके नामसे भेजें)

(९) राजार्य सभाकी रजिस्ट्री नियमके अनुसार भारतीय सरकारसे करवा ली जायगी।

(१०) किसी बैंकमें सभाका हिसाब नियमित निर्वाचनके बाद खोला जायगा।

(११) सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओंसे प्रार्थना की जायगी कि अपना अपना आर्य-वीर-दल-विभाग सभाके सुपुर्द कर दें। न करनेपर प्रत्येक स्थानीयदलके सदस्योंको प्रार्थना की जायगी कि सभाके आधीन उसका अंग बन जाएं। पूरी कोशिश की जायगी कि किसी स्थानीय आर्य समाज, आर्य संस्था, दल या सभा व सार्वदेशिक सभासे किसी भी कारणसे किसी अवसरपर संघर्ष न हो।

नोट- (१) संशोधित और Authoritatiuc नियमावली सुंदर आकर्षक और उर्दू अंग्रेजीमें भी छपेगी। यह नियमावली उर्दूमें पृथक् या 'प्रकाश' में छपेगी।

(२) पत्र व्यवहार करने, मैंबरीके फार्म भरकर भेजने, और शुल्क भेजनेका पता निम्न है:--

हितैषी अलावलपुरी, संयोजक 'राजार्य सभा' चहार-बाग (प्रकाश कार्यालय) जालन्धर नगर।

(३) राजार्य सभा सम्बन्धी समाचार, सूचनाएं, आदेश, प्रस्ताव जनताके सुझाव आदि 'प्रकाश' में पढें।

प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र

सेवामें:-

मंत्रीजी, राजार्य सभा,

(शाखा)

श्रीमान्जी, नमस्ते।

मैं वैदिक स्वराज्यमें पूर्ण विश्वास रखता हूं। इसकी स्थापनाके लिए 'आर्यस्थान-आन्दोलन' में सम्मिलित होना चाहता हूं। मैंने सभाके उद्देश्यों तथा नियमोंको पढ और समझ लिया है। सर्वथा उनसे सहमत हूं और उन्हें पालन करूंगा। कृपया मुझे राजार्य सभाका सभासद बना लें।

नाम — आयु
पिता। पतिका नाम
वर्ण — शिक्षा
वार्षिक आय — शुल्क वार्षिक
तिथि — हस्ताक्षर

राज आर्य सभा

सं०

श्रीमन्नमस्ते। आपको सभासद बना लिया गया है। आपको आपके कर्तव्यका आदेश शीघ्र भेजा जायगा।

आपका) रु० वार्षिक शुल्क-चालू वर्षके लिए प्राप्त हो गया है। धन्यवाद!

मंत्री

ति० शाखा

कुशलतासेही सब कर्म सिद्ध होते हैं।

५ घोडोंको सिखाया

'इन्द्रवाहा: हरी वृषणवसू तक्षन्।' (मं. १)— इन्द्रके रथके घोडे उत्तम सिखाकर तैयार किये और बलिष्ठ और हृष्टपुष्ट बनाये। यह अश्वविद्याका विषय है। इन्द्रके घोडे ऋभुओंके द्वारा सिखाये गये थे।

६ प्रजा देनेवाला अन्न

'दक्षाय सुप्रजावतो इषं (तक्षन्)।' (मं. २)- बल बढानेवाला अन्न, और जिससे सुसन्तान हो सकता है ऐसा अन्न ये ऋभु तैयार करके देते थे। जिसका सेवन करनेसे निर्बल मानव बलवान् हो जाते और जिनको संतान नहीं होता था उनको इस अन्नके सेवनसे संतान हो जाता था।

ये ऋभुओंके कौशलके कार्य थे। इससे पता चल सकता है कि कितने कौशलके कर्मोंमें ऋभु प्रवीण थे। इन्हीं कुशल कर्मोंके कारण ये मर्त्य होनेपर भी इनको देवत्व मिल गया था, देखो—

मर्त्योंको देवत्व-प्राप्ति

'वाघतः मर्तासः अमृतत्वं आनशुः ऋभवः संवत्सरे धीतिभिः समपृच्यन्त।' (११०।४)- स्तुति करनेवाले ऋभु मनुष्य होते हुए भी वे अमरत्वको-देवत्वको-प्राप्त हुए और एकही वर्षके अन्दर अन्दर उनकी स्तुतियां भी होने लगीं। इस तरह मनुष्य देवत्व प्राप्त करते थे। यह देवजातिके राज्यमें रहनेका अधिकार है। देवजाति तिब्बतमें रहती थी और मानवजाति आर्यावर्तमें रहती थी। आवश्यकतानुसार वीर तथा कुशल मानवोंको देवराष्ट्रमें रहनेका अधिकार मिलता था। इसी तरह ऋभु, मरुत ये मानव होते हुए देवराष्ट्रमें रहनेके अधिकारी बने थे। यह अधिकार बडे प्रयत्नसे प्राप्त होता था और कई देव इसका विरोध भी करते थे। इस विषयमें ऐतरेय ब्राह्मणमें कथा है—

ऋभुओंकी देवत्व-प्राप्ति

ऐतरेय ब्राह्मण (३।३०) में निम्नलिखित कथा आ गयी है— (ऋभवो वै देवेषु तपसा सोमपीथं अभ्यजयन्) ऋभुओंने तप करके देवोंमें बैठकर सोमपान करनेका अधिकार प्राप्त किया। प्रजापति और दूसरे कई देवोंने इसकी शिफारस की कि ऋभुओंको देवत्व मिले और वे देवोंमें बैठकर सोमपान करें। परन्तु प्रातःसवनकी अग्नि देवताने वसुओंको साथ लेकर अपनेमेंसे ऋभुओं- (अग्निः वसुभिः प्रातःसवनादनुदत) को बाहर निकाल दिया।

पश्चात् प्रजापतिने उनको माध्यंदिन-सवनमें बैठकर सोमपान करानेकी योजना की। पर वहां भी (इन्द्रो रुद्रैः मध्यंदिनसवनादनुदत) इन्द्रने रुद्रोंकी सहायतासे उनको वहां बैठने नहीं दिया। बिचारे ऋभु वहांसे भी बहिष्कृत होकर बाहर निकाले गये।

फिर प्रजापतिने ऋभुओंको तृतीय सवनमें बिठलाकर सोमपान करानेका विचार किया। पर वहां विश्वे देव बैठे थे, (तान् विश्वे देवा अनोनुद्यन्त, नेह पास्यन्ति नेह इति) उन्होंने उसका विरोध किया कि यहां ये नहीं बैठकर सोमपान करेंगे, कदापि यहां ये नहीं बैठ सकेंगे।

पश्चात् प्रजापतिने सवितासे कहा कि (स प्रजापतिरब्रवीत् सवितारं, तव वा इमे अन्तेवासाः, त्वमेव एभिः सं पिबस्वेति, स तथेत्यब्रवीत्) हे सविता! तुम्हारे ये ऋभु पडोसी हैं, अतः इनके साथ तू सोमपान कर। तब सविताने प्रजापतिका विचार मान लिया।

पर सविताने प्रजापतिसे कहा कि (त्वं उभयतः परिपिबेति) हे प्रजापति! तू ऋभुओंके पूर्व और पश्चात् सोमपान कर, बीचमें ऋभु सोमपान करेंगे। सविताका विचार यहां ऐसा था कि मनुष्य-जातिके ऋभुओंके साथ सोमपान करनेका दोष केवल मुझेही न लगे, मेरे साथ प्रजापति रहे, जिससे दोष बांटा जायगा।

इस तरह बडे यत्नसे ऋभुओंको देवोंमें बैठनेका अधिकार प्राप्त हुआ। और वे सोमपानके अधिकारी बने। वसु, रुद्र आदि देव प्रथमसे इनको अपने साथ बिठलानेके लिये भी तैयार नहीं थे। प्रजापति तैयार था। प्रजापति सबका पालक राजा था। वह चाहता था कि ऋभुकों देवत्वके अधिकार मिले और वे देवराष्ट्रमें रहें। पर कई देव जातियाँ प्रथम तैयार नहीं थी। पश्चात् तैयार हुई। एक वर्षतक यह छुआछूतको हटानेका विचार चल रहा था। पश्चात् अन्य देवोंके समान उनको देवत्व दिया गया और वे पूर्णतया देव बन गये।

यह इतिहास ऐतरेय ब्राह्मणमें है और इसका निर्देश इन सूक्तोंमें भी है। (मं. ४)

अब इस सूक्तके कुछ उपदेशोंका विचार करते हैं—

उपदेश

१ मे अपः ततं, तत् उ पुनः तायते : (११०।१)- मेरा यह व्यापक कर्म फैल गया है, मैं वही कर्म पुनः फैलाऊंगा। 'अपस्'का अर्थ सार्वदेशिक हितका कर्म है, वह कर्म कि जिसका परिणाम सब मनुष्यजातितक अच्छी तरह पहुंचता है, जिससे जनताका हित होता है ऐसा यज्ञकर्म। यह कर्म मैंने अब किया है और फिर भी ऐसाही कर्म करूंगा। मनुष्य वारंवार शुभ कर्म करते रहें।

२ मर्तासः अमृतत्वं आनशुः ।(मं. ४)— मर्त्य मानव अमरत्व—देवत्व— प्राप्त करते हैं। प्रयत्नसे देवत्व प्राप्त करना मानवोंका कर्तव्य है।

३ असुन्वतां पृत्सुतीः अभि तिष्ठेम । (मं. ७)— अयाजकोंकी सेनाओंका हम पराभव करेंगे। हम याजक होनेसे हमाराही सर्वत्र विजय होगा।

४ यथा सर्ववीरया विशा क्षयाम, तत् इन्द्रियं नः शर्धाय सु धासथ (१।१११।२)- जिस तरह हम सब वीर प्रजाजनोंके साथ निवास कर सकेंगे, उस तरहका बल हमारें संघके लिये (हम सबमें) स्थापन करो। अर्थात् हमारे चारों ओर वीरोंका निवास हो, हम भी वीर बनेंगे। इसलिये हम सबमें संघका बल स्थापन हो और बढे। (नः शर्धाय इन्द्रियं) हमारे संगठनके लिये हमारा बल बढ जाय। हममें वैसा बल बढ जाय जिससे हमारी संगठना उत्तम रीतिसे बन सके।

५ नः जैत्रीं सातिं सं महेत । (मं. ३)- हमारे विजय देनेवाले वैभवका सम्मान होता रहे।

६ विश्वहा पृतनासु जामिं अजामिं सक्षणिम् । (मं. ३)— सर्वदा युद्धोंमें हमारा संबंधी हो वा परकीय शत्रु हो उन सबका हम पूर्ण पराभव करेंगे और हम नित्य विजय प्राप्त करेंगे।

७ समर्यजित् वाजः अस्मान् आविष्टु । (मं. ५)— सब शत्रुओंपर विजय प्राप्त करनेवाला बल हम सबमें बढे। हमारा बल ऐसा हो कि जिससे हम सदा विजयी होते रहें।

इस प्रकार इन सूक्तोंमें विजयके निर्देश हैं जो पाठक स्मरणमें रखे। इन दोनों सूक्तोंमें ऋभुओंका वर्णन है और उनका संबंध ऐतरेय ब्राह्मणकी कथाके साथ दीखता है। सविता देवने इनकी उन्नति करनेमें सहायता दी इत्यादि बातें उक्त कथाके साथ देखनेयोग्य है।

यहां ऋभु-प्रकरण समाप्त हुआ है।

---

[६] अश्वि-प्रकरण

(१६) अश्विदेवोंके प्रशंसनीय कार्य

(ऋ. १।११२) कुत्स आङ्गिरसः। १ (आद्यपादस्य) द्यावापृथिव्यौ, १ (द्वितीयपादस्य) अग्निः, १ (उत्तरार्धस्य) अश्विनौ; २-२५ अश्विनौ। जगती; २४-२५ त्रिष्टुप्।

ईळे द्यावापृथिवी पूर्वचित्तयेऽग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये।
याभिर्भरे कारमंशाय जिन्वथस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १

अन्वयः- १ यामन् इष्टये, पूर्वचित्तये, सुरुचं घर्मं अग्निं द्यावापृथिवी ईळे। हे अश्विना ! याभिः कारं भरे अंशाय जिन्वथः, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ॥

अर्थ-१ पहिले प्रहरमें यज्ञ करनेके लिये, तथा अपना चित्त स्थिर करनेके लिये, अच्छी दीप्तिवाले यज्ञस्वरूप अग्निकी और द्यावापृथिवीकी मैं स्तुति करता हूँ। हें अश्विदेवो ! जिनसे कुशल पुरुषको संग्राममें अपना धनविभाग पानेके लिये साहाय्य करते हो, उन रक्षासाधनोंके साथ तुम दोनों यहां पधारो॥

युवोर्दानाय सुभरा असश्चतो रथमा तस्थुर्वचसं न मन्तवे ।
याभिर्धियोऽवथः कर्मन्निष्टये ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २ ॥
युवं तासां दिव्यस्य प्रशासने विशां क्षयथो अमृतस्य मज्मना ।
याभिर्धेनुमस्वं१ पिन्वथो नरा ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ३ ॥
याभिः परिज्मा तनयस्य मज्मना द्विमाता तूर्षु तरणिर्विभूषति ।
याभिस्त्रिमन्तुरभवद् विचक्षणस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ४ ॥
याभी रेभं निवृतं सितमद्भ्य उद्वन्दनमैरयतं स्वर्दृशे ।
याभिः कण्वं प्र सिषासन्तमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ५ ॥
याभिरन्तकं जसमानमारणे भुज्युं याभिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः ।
याभिः कर्कन्धुं वय्यं च जिन्वथस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ६ ॥

---

२ हे अश्विना ! सुभराः असश्चतः, वचसं मन्तवे न, युवोः रथं दानाय आ तस्थुः । कर्मन् इष्टये याभिः धियः अवथः ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

३ हे अश्विना नरा ! युवं, दिव्यस्य अमृतस्य मज्मना, तासां विशां प्रशासने क्षयथः । याभिः अस्वं धेनुं पिन्वथः, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

४ परिज्मा द्विमाता तनयस्य, मज्मना याभिः तूर्षु तरणिः वि भूषति; त्रिमन्तुः याभिः विचक्षणः अभवत्, ताभिः ऊतिभिः, हे अश्विना ! सु आगतं उ ॥

५ हे अश्विना! निवृतं सितं रेभं वन्दनं च याभिः अद्भ्यः स्वः दृशे उत् ऐरयतं; सिषासन्तं कण्वं याभिः प्र आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

६ हे अश्विना ! आरणे जसमानं अन्तकं याभिः; अव्यथिभिः याभिः भुज्युं जिजिन्वथुः, कर्कन्धुं वय्यं च याभिः जिन्वथः, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

२ हे अश्विदेवो ! उत्तम ढंगसे भरण-पोषण करनेके इच्छुक अतएव इधर उधर भ्रमण न करनेवाले, लोग, विद्वान्के पास उसकी संमतिके लिये जानेके समान, तुम्हारे रथके पास तुमसे दान प्राप्त करनेके लिये खडे होते हैं। कर्मसे इष्ट प्राप्त करनेके लिये जिन साधनों द्वारा तुम सुरक्षा करते हो, उन सुरक्षाओंसे तुम दोनों यहां पधारो ॥

३ हे अश्विदेवो । हे नेताओं ! तुम दोनों, द्युलोकमें उत्पन्न सोमके अमृतरूप रसके बलसे, उन प्रजाओंका राज्यशासन चलानेके लिये उनमें निवास करते हो । जिनसे प्रसूत न हुई गौको पुष्ट करके दुधारू बनाया, उन सुरक्षाओंके साथ तुम दोनों यहां पधारो ।

४ चारों ओर घूमनेवाले दो माताओंके पुत्रको बलके द्वारा जिनसे त्वराके साथ अधिक तैरनेवाला अर्थात् अग्रगामी बनाया, तथा जो तीनगुणा मनन करनेसे जिन साधनोंसे अधिक विद्वान् होगया, उन सुरक्षाओंके साथ हे अश्विदेवो ! तुम दोनों यहां आओ ॥

५ हे अश्विदेवों ! पूर्णतया जलमें डुबे हुए और बंधे हुए रेभ और वन्दनको जिन साधनोंसे जलोंके ऊपर प्रकाश दिखानेके लिए तुम दोनोंने ऊपर उठाया, तथा भक्त कण्वको जिनसे सुरक्षित किया, उन रक्षासाधनोंके साथ तुम दोनों यहां पधारो ॥

६ हे अश्विदेवो ! गढेमें पडे अन्तकको जिन साधनोंसे छुडाया, जिन अन्तक रक्षासाधनोंसे तुमने भुज्युको सुरक्षित रखा, कर्कन्धुको और वय्यको जिनसे सुरक्षित रखा उनके साथ तुम दोनों यहां पधारो ॥

*

याभिः शुचन्तिं धनसां सुषंसदं तप्तं घर्ममोम्यावन्तमत्रये ।
याभिः पृश्निगुं पुरुकुत्समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ७

याभिः शचीभिर्वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृथः ।
याभिर्वर्तिकां ग्रसिताममुञ्चतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ८

याभिः सिन्धुं मधुमन्तमसश्चतं वसिष्ठं याभिरजरावजिन्वतम् ।
याभिः कुत्सं श्रुतर्यं नर्यमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ९

याभिर्विश्पलां धनसामथर्व्यं सहस्रमीळ्ह आजावजिन्वतम् ।
याभिर्वशमश्व्यं प्रेणिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १०

याभिः सुदानू औशिजाय वणिजे दीर्घश्रवसे मधु कोशो अक्षरत् ।
कक्षीवन्तं स्तोतारं याभिरावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ११

---

७ हे अश्विना ! याभिः धनसां शुचन्तिं सुसंसदं, तप्तं घर्मं अत्रये ओम्यावन्तं; पृश्निगुं पुरुकुत्सं याभिः आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

८ हे वृषणा अश्विना ! याभिः शचीभिः अन्धं परावृजं चक्षसे, श्रोणं एतवे प्र कृथः, ग्रसितां वर्तिकां याभिः अमुञ्चतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

९ हे अजरौ अश्विना ! मधुमन्तं सिन्धुं याभिः असश्चतं, याभिः वसिष्ठं अजिन्वतं; याभिः कुत्सं श्रुतर्यं नर्यं आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

१० हे अश्विना ! सहस्रमीळ्हे आजौ याभिः धनसां अथर्व्यं विश्पलां अजिन्वतं, याभिः प्रेणिं अश्व्यं वशं आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

११ हे सुदानू अश्विना ! औशिजाय दीर्घश्रवसे वणिजे याभिः कोशः मधु अक्षरत्, स्तोतारं कक्षीवन्तं याभिः आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

७ हे अश्विदेवो ! जिनसे धनदान करनेवाले शुचन्तिको उत्तम घर दिया; तपे हुए कारागृहको अत्रिके लिये शान्त कर दिया; पृश्निगु और पुरुकुत्सको जिनसे सुरक्षित किया, उन रक्षा-साधनोंसे तुम यहां पधारो ॥

८ हे बलवान् अश्विदेवो! जिन शक्तियोंसे तुमने अन्धे ऋषि परावृक्को दृष्टिसंपन्न किया, लंगडे लूलेको चलने फिरनेयोग्य बनाया, तथा (भेडियेके मुखसे) ग्रस्त चिडियाको जिनसे मुक्त किया, उन रक्षासाधनोंसे तुम यहां पधारो ॥

९ हे जरारहित अश्विदेवो ! मीठे जलवाले नदीको जिनसे तुमने प्रवाहित किया, जिनसे वसिष्ठको सन्तुष्ट किया, जिनसे कुत्स, श्रुतर्य तथा नर्यका संरक्षण किया, उन रक्षासाधनोंसे तुम यहां पधारो ॥

१० हे अश्विदेवो ! सहस्रों सैनिकोंकी लडाईमें जिन शक्तियोंसे धनदान करनेवाली अथर्वकुलमें उत्पन्न विश्पलाको तुमने सहायता की, जिनसे प्रेरक अश्वपुत्र वशको सुरक्षित किया, उन रक्षासाधनोंके साथ तुम यहां पधारो ॥

११ अच्छे दान देनेवाले अश्विदेवो ! उशिक् पुत्र दीर्घश्रवा नामक वणिक्के लिये जिनसे तुमने मधुका भण्डार दिया, भक्त कक्षीवान्को जिनसे सुरक्षित किया, उन शक्तियोंसे तुम यहां पधारो ॥

याभी रसां क्षोदसोद्नः पिपिन्वथु रनश्वं याभी रथमावतं जिषे ।
याभिस्त्रिशोक उस्रिया उदाजत ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १२

याभिः सूर्यं परियाथः परावति मन्धातारं क्षैत्रपत्येष्वावतम् ।
याभिर्विप्रं प्र भरद्वाजमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १३

याभिर्महामतिथिग्वं कशोजुवं दिवोदासं शम्बरहत्य आवतम् ।
याभिः पूर्भिद्ये त्रसदस्युमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १४

याभिर्वम्रं विपिपानमुपस्तुतं कलिं याभिर्वित्तजानिं दुवस्यथः ।
याभिर्व्यश्वमुत पृथिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १५

याभिर्नरा शयवे याभिरत्रये याभिः पुरा मनवे गातुमीषथुः ।
याभिः शारीराजतं स्यूमरश्मये ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १६

याभिः पठर्वा जठरस्य मज्मनाग्निर्नादीदेच्चित इद्धो अज्मन्ना ।
याभिः शर्यातमवथो महाधने ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १७

---

१२ हे अश्विना ! रसां याभिः क्षोदसा उद्नः पिपिन्वथः, याभिः अनश्वं रथं जिषे आवतं, त्रिशोकः याभिः उस्त्रियाः उदाजत, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

१३ हे अश्विना ! परावति सूर्यं याभिः परियाथः, क्षैत्रपत्येषु मन्धातारं आवतं, याभिः विप्रं भरद्वाजं प्र आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

१४ हे अश्विना ! शम्बरहत्ये याभिः अतिथिग्वं, कशोजुवं, महां दिवोदासं आवतं, याभिः त्रसदस्युं पूर्भिद्ये आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

१५ हे अश्विना ! याभिः विपिपानं उपस्तुतं वम्रं, याभिः वित्तजानिं कलिं दुवस्यथः, उत याभिः व्यश्वं पृथिं आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

१६ नरा अश्विना ! याभिः शयवे, याभिः अत्रये, याभिः मनवे पुरा गातुं ईषथुः, स्यूमरश्मये याभिः शारीः आजतं, ताभिः ऊतिभिः आगतं उ ॥

१७ हे अश्विना ! इद्धः चितः अग्निः न, पठर्वा याभिः अज्मन् जठरस्य मज्मना आ अदीदेत्, महाधने याभिः शर्यातं अवथः, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

१२ हे अश्विदेवो ! तुमने जिनसे नदीको जलसे किनारोंको तोडनेवाली बना दिया, जिनसे घोडेरहित रथको विजय पानेयोग्य सुरक्षित बना दिया, त्रिशोक जिनसे गौवें पासका, उन शक्तियोंसे तुम यहां पधारो ॥

१३ हे अश्विदेवो ! दूर गये सूर्यके चारों ओर जिनसे तुम जाते हैं, क्षेत्रोंका संरक्षण करनेके कार्यमें मन्धाताको तुमने सुरक्षित रखा, जिनसे ज्ञानी भरद्वाजकी तुमने रक्षा की, उन शक्तियोंसे तुम यहां पधारो ॥

१४ हे अश्विदेवो ! शंबरका वध करनेके युद्धमें जिनसे अतिथिग्व कशोजुव, और बडे दिवोदासकी तुमने रक्षा की, जिनसे त्रसदस्युकी शत्रुके नगर तोडनेके युद्धमें सहायता की, उन शक्तियोंके साथ तुम यहां पधारो ॥

१५ हे अश्विदेवो ! जिनसे सोम पीनेवाले स्तुत्य वम्रको, जिनसे विवाहित कलिको तुमने सुरक्षित रखा और जिनसे घोडोंसे बिछुडे पृथिकी रक्षा की, उन शक्तियोंके साथ तुम यहां पधारो॥

१६ हे नेता अश्विदेवो ! जिनसे शयुको, जिनसे अत्रिको, जिनसे मनुको, पूर्व समयमें तुमने मार्ग बताया, जिनसे स्यूमरश्मिको शत्रुपर बाणोंके साथ प्रेरित किया, उन शक्तियोंके साथ तुम यहां आओ ॥

१७ हे अश्विदेवो ! प्रदीप्त अग्निके समान, राजा पठर्वा जिनसे गतिशील अतएव समर्थ होकर अपने शारीरिक बलसे युद्धमें अधिक तेजस्वी सिद्ध हुआ; महायुद्धमें जिनसे शर्यातकी रक्षा की, उन रक्षा-शक्तियोंके साथ तुम यहां पधारो ॥

याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यथोऽग्रं गच्छथो विवरे गोअर्णसः ।
याभिर्मनुं शूरमिषा समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १८

याभिः पत्नीर्विमदाय न्यूहथुरा घ वा याभिररुणीरशिक्षतम् ।
याभिः सुदास ऊहथुः सुदेव्यं१ ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १९

याभिः शंताती भवथो ददाशुषे भुज्युं याभिरवथो याभिरध्रिगुम् ।
ओम्यावतीं सुभरामृतस्तुभं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २०

याभिः कृशानुमसने दुवस्यथो जवे याभिर्यूनो अर्वन्तमावतम् ।
मधु प्रियं भरथो यत् सरड्भ्यस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २१

याभिर्नरं गोषुयुधं नृषाह्ये क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः ।
याभी रथाँ अवथो याभिरर्वतस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २२

---

१८ हे अश्विना ! याभिः मनसा अंगिरः निरण्यथः गोअर्णसः विवरे अग्रं गच्छथः, शूरं मनुं याभिः इषा सं आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

१९ हे अश्विना ! याभिः विमदाय पत्नीः नि ऊहथुः, याभिः वा अरुणीः घ आ अशिक्षतं, याभिः सुदासे सुदेव्यं ऊहथुः, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

२० हे अश्विना ! ददाशुषे याभिः शन्ताती भवथः, याभिः भुज्युं, याभिः अधिगुं अवथः, सुभरां ओम्यावतीं ऋतस्तुभं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

२१ हे अश्विना! असने कृशानुं याभिः दुवस्यथः याभिः यूनः अर्वन्तं जवे आवतं, यत् सरड्भ्यः प्रियं मधु भरथः, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

२२ हे अश्विना ! याभिः गोषु-युधं नरं नृषाह्ये, क्षेत्रस्य तनयस्य साता जिन्वथः, याभिः रथान्, याभिः अर्वतः अवथः, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

१८ हे अश्विदेवो! तुम दोनों मनसे किये अङ्गिराके स्तोत्रोंसे सन्तुष्ट हुए, और जिनसे तुम बंद रखे गौओंके झुण्डको पानेके लिये शत्रुकी गुंफामें जानेके लिये आगे बढने लगे, और शूर मनुको जिन शक्तियोंसे अन्न प्राप्त कराके सुरक्षित रख चुके, उन शक्तियोंके साथ तुम यहां पधारो ॥

१९ हे अश्विदेवो ! विमदके लिये उसके घर जिन शक्तियोंसे तुम उसकी धर्मपत्नीको पहुंचा दिया, जिनसे तुमने अरुण रंगवाली घोडियोंको सिखाया, जिनसे सुदासके घर दिव्य धन तुमने पहुंचाया, उन रक्षाशक्तियोंके साथ तुम दोनों यहां पधारो ॥

२० हे अश्विदेवो ! दाता पुरुषको जिनसे तुम सुख देते हो, जिनसे भुज्युकी, जिनसे अध्रिगुकी रक्षा करते हो, जिनसे पुष्टिकारक और सुखदायक अन्नसामग्री ऋतस्तुभको तुमने दी, उन शक्तियोंके साथ तुम यहां आओ ॥

२१ हे अश्विदेवो ! युद्धमें कृशानुकी जिनसे सहायता की, जिनसे तरुण घोडोंको अति वेगवान् बनकर सुरक्षित किया, जिनसे प्रिय मधु- मधुमक्षिकाओंके लिये तुमने भर दिया, उन शक्तियोंके साथ तुम यहां पधारो ॥

२२ हे अश्विदेवो ! जिनसे गौओंके लिये लडनेवाले नेताको युद्धमें तथा क्षेत्रकी उपजका बंटवारा करनेके समय वीरोंको सुरक्षित रखते हो, जिनसे रथों और जिनसे घोडोंको सुरक्षित रखते हो, उन शक्तियोंके साथ तुम यहां पधारो ॥

याभिः कुत्समार्जुनेयं शतक्रतू प्र तुर्वीतिं प्र च दभीतिमावतम्।
याभिर्ध्वसन्तिं पुरुषन्तिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २३ ॥
अप्नस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतं नो दस्रा वृषणा मनीषाम्।
अद्यूत्येऽवसे नि ह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ ॥ २४ ॥
द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ २५ ॥

२३ हे शतक्रतू अश्विना ! याभिः आर्जुनेयं कुत्सं, तुर्वीतिं दभीतिं च प्र आवतं, याभिः ध्वसन्तिं पुरुषन्तिं आवतं, ताभिः ऊतिभिः सु आगतं उ ॥

२४ हे दस्रा वृषणा अश्विना ! नः मनीषां अस्मे अप्नस्वतीं वाचं कृतं, वां अद्यूत्ये अवसे निह्वये, वाजसातौ च नः वृधे भवतम् ॥

२५ हे अश्विना ! द्युभिः अक्तुभिः अरिष्टेभिः अस्मान् परि पातं, नः तत् मित्रः वरुणः अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ममहन्ताम् ॥

२३ हे सैकडों कार्य करनेवाले अश्विदेवो ! जिनसे तुमने अर्जुनीके पुत्र कुत्सकी तथा तुर्वीति दभीतिकी रक्षा की, जिनसे ध्वंसन्ति और पुरुषन्तिकी रक्षा की, उन शक्तियोंके साथ तुम यहा आओ ॥

२४ हे शत्रुनाशक बलवान् अश्विदेवो ! हमारी इच्छाको पूर्ण करो, हमारी वाणीको प्रयत्न युक्त करो, तुम दोनोंको मैं अन्धकारके मार्गमें सुरक्षाके लिये बुलाता हूं। अन्नके दान करनेके समय हमारी वृद्धि करनेवाले बनो ॥

२५ हे अश्विदेवो ! दिन और रात, क्षीण न हुए ऐश्वर्योंसे हमें सुरक्षित रखो। इस हमारी इच्छाकी सहायता मित्र आदि देव करें ॥

अश्विदेवोंके कार्य

इस सूक्तमें २५ मंत्र हैं और इनमें अश्विदेवोंके शुभकार्योंका वर्णन है। ''जिन रक्षाकी शक्तियोंसे अश्विदेवोंनें रेभ कण्व आदिकोंकी रक्षा की थी, उन संरक्षक साधनोंके साथ ये अश्विदेव हमारे पास आजांय और हमारी सुरक्षा करें।'' इतनीही मुख्य प्रार्थना इस संपूर्ण सूक्तमें है।

१ **अ-स्वं धेनुं पिन्वथ** (मं. ३)— प्रसूत न होनेवाली गौको पुष्ट किया, फिर वह गर्भधारणक्षम हुई, पश्चात् अच्छी तरह दुधारू बन गयी। ऋभुओंके सूक्तमें भी कृश गौको दुधारू बनानेका वर्णन है। अश्विदेव और ऋभुदेव इन दोनोंकी इसमें समानता है।

२ इसके बाद रेभ, वंदन, कण्व (मं- ५), अन्तक, भुज्यु, कर्कन्धु, वय्य (मं ६), शुचन्ति, अत्रि, पृश्निगु, पुरुकुत्स (मं. ७), परावृज्, श्रोण, वर्तिका (चिडिया) (मं. ८), वसिष्ठ, कुत्स, श्रुतर्य, नर्य (मं. ९), विश्पला, अश्व्य वश, (मं. १०), औशिज् दीर्घश्रवा वणिक् कक्षीवान् (मं. ११), त्रिशोक (मं. १२), मन्धाता, भरद्वाज (मं. १३), अतिथिग्व, कशोजुव, दिवोदास, त्रसदस्यु (मं. १४), उपस्तुत, वम्र, व्यश्व पृथि (मं. १५) शयु, अत्रि, मनु, स्यूमरश्मी (मं. १६), पठर्वा, शर्यात (मं. १७), अङ्गिरा, मनु, (मं. १८), विमद, सुदास (मं. १९), भुज्यु, अध्रिगु, ऋतस्तुभ (मं. २०), कृशानु (मं. २१); आर्जुनेय कुत्स, तुर्वीति, दभीति, ध्वसन्ति, पुरुषन्ति (मं. २३), इनकी सहायता अश्विदेवोंने की ऐसा यहां इस सूक्तमें कहा है। यहां अत्रि, भुज्यु ये नाम दो वार आगये हैं। ये नाम दो वार क्यों आगये हैं इसका पता नहीं लगता। इन नामोंमें कई ब्राह्मण हैं, कई क्षत्रिय हैं, कई वणिक् वैश्य भी हैं, वर्तिका (चिडिया) भी इसमें है। इनमें शूद्रका नाम हो तो ढूंढना चाहिये।

भुज्यु जलमें डूब रहा था, उसको बचाया। **रेभ** और

वंदन जलप्रवाहमें या कूवेमें मर रहा था, इसको बचाया। **अत्रि**को स्वराज्यकी हलचल करनेके कारण कारागृहमें असुरोंने डाला था, वहां उसकी सहायता की। **चिडिया**को भेडिया खाना चाहता था, वह भेडियाके मुखमें पहुंची थी, उस समय उसका बचाव किया। **विश्पला**की टांग युद्धमें कट गयी थी, उसको लोहेकी टांग लगाकर युद्ध करनेयोग्य बनाया। इस तरह अश्विदेवोंकी सहायताके वर्णन हैं। ऐसे सामर्थ्यवान् अश्विदेव हमारे सहायक हों, हमें धन दें, अन्न दें, वीरता हममें बढावें और इन गुणोंसे संपन्न होकर हम सुखी बनें, यह इस सूक्तका तात्पर्य है।

---

[७] उषा-प्रकरण

(१७) उषाका काव्य

(ऋ. १।११३) कुत्स आङ्गिरसः। १ (उत्तरार्धस्य) रात्रिश्च; २-२० उषाः। त्रिष्टुप्।

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिराऽगाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा।
यथा प्रसूता सवितुः सवायँ एवा रात्र्युषसे योनिमारैक् ॥ १ ॥
रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागादारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः।
समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं चरत आमिनाने ॥ २ ॥
समानो अध्वा स्वस्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे।
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे ॥ ३ ॥

अन्वयः- १ ज्योतिषां इदं ज्योतिः श्रेष्ठं आ अगात्। चित्रः विभ्वा प्रकेतः अजनिष्ट। यथा रात्री प्रसूता, उषसे, सवितुः सवाय, (च) योनिं अरैक्।

२ रुशती श्वेत्या रुशद्वत्सा आ अगात्। अस्याः कृष्णा सदनानि अरैक् उ। समानबन्धू अमृते अनूची वर्णं आमिनाने द्यावा चरतः॥

३ स्वस्रोः अध्वा समानः अनन्तः। तं देवशिष्टे अन्या-अन्या चरतः। सुमेके विरूपे नक्तोषासा समनसा न मेथेते, न तस्थतुः॥

अर्थ- १ तेजोंमें यह श्रेष्ठ तेज अब प्रकट हुआ है। देखो! यह आश्चर्यकारक सर्वत्र फैलनेवाला प्रकाश अब उत्पन्न हुआ है। जैसी रात्रिसे (उषा) उत्पन्न हुई, (वैसीही) उषाको, सूर्यकी उत्पत्ति करनेके लिये भी अब स्थान होगया है।

२ यह तेजस्विनी गौरी (उषा अपने) तेजस्वी बालक (सूर्य) को धारण करके आगयी है। इसके लिये काले रंगवाली (रात्रि) सब स्थान खुले कर रही है। ये सहोदर बहिनें अमर हैं और परस्पर साथ रहनेवाली, जगत्का रंग बदलती हुई आकाशमार्गसे संचार करती हैं॥

३ इन दोनों बहिनोंका मार्ग एकही है और उसका अन्त नहीं है। उसपरसे ईश्वरकी आज्ञानुसार एकके पीछे एक ऐसी वे संचार करती हैं। सुन्दर अवयववाली परंतु विरुद्ध रूपवाली ये रात्रि और उषा एक मनसे रहती हुई परस्परका घात नहीं करती और नाही बीचमें कभी ये ठहरती हैं।

भास्वती नेत्री सूनृतानामचेति चित्रा वि दुरो न आवः ।
प्रार्प्या जगद्व्यु नो रायो अख्यदुषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ४
जिह्मश्ये३ चरितवे मघोन्याभोगय इष्टये राय उ त्वम् ।
दभ्रं पश्यद्भ्य उर्विया विचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ५
क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै ।
विसदृशा जीविताभिप्रचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ६
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः ।
विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ ७
परायतीनामन्वेति पाथ आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् ।
व्युच्छन्ती जीवमुदीरयन्त्युषा मृतं कं चन बोधयन्ती ८

---

४ भास्वती सूनृतानां नेत्री अचेति । चित्रा नः दुरः वि आवः । जगत् प्रार्प्य नः रायः अख्यत् उ । उषाः विश्वा भुवनानि अजीगः ॥

५ जिह्मश्ये चरितवे, त्वं आभोगये इष्टये राये उ, दभ्रं पश्यद्भ्यः विचक्षे, उर्विया मघोनी उषाः विश्वा भुवनानि अजीगः ॥

६ क्षत्राय त्वं, श्रवसे त्वं, महीयै इष्टये त्वं, अर्थं इव इत्यै त्वं, विसदृशा जीविता अभिचक्षे, उषाः विश्वा भुवनानि अजीगः ॥

७ दिवः दुहिता युवतिः शुक्रवासाः विश्वस्य पार्थिवस्य वस्वः ईशाना एषा व्युच्छन्ती प्रत्यदर्शि । हे सुभगे उषः ! अद्य इह वि उच्छ ॥

८ परायतीनां पाथः अनु एति । आयतीनां शश्वतीनां प्रथमा व्युच्छन्ती, जीवं उदीरयन्ती, उषाः मृतं कं चन बोधयन्ती ॥

४ तेजस्विनी और सत्य धर्मोंको चलानेवाली (उषा) दीखने लगी है । इस चित्रविचित्र रंगवालीने हमारे घरोंके द्वार खोल दिये हैं । सब जगत्को (उद्यमके लिये) प्रवृत्त करके हमें धनोंका (मार्ग) बताया है । उषाने सर्व भुवनोंको जागृत किया है ॥

५ सोनेवाले चलने लगें, कोई भोग प्राप्त करें, कोई इष्ट वस्तु प्राप्त करें, कोई धन प्राप्त करें, थोडासा देखनेवालोंको बहुत दूरका भी दीखे, इसलिये यह बडी वैभववाली उषा सब भुवनोंको जगा रही है ॥

६ शौर्यके लिये कोई, यशके लिये कोई, महत्त्वके इष्ट वस्तुके लिये कोई, धनके लिये कोई (यत्न करें, इसलिये) और विविध प्रकारके जीवनमार्ग सबको दीखें, इसलिये यह उषा सब भुवनोंको जगा रही है ॥

७ स्वर्गकी पुत्रि, तरुणी, शुभ्रवस्त्रधारिणी, सब पृथ्वीपरके धनोंकी स्वामिनी यह (उषा) अन्धकारको दूर करती हुई (यहां) दीख रही है । हे भाग्यवती उषे ! आज यहां प्रकाश कर ॥

८ गत उषाओंके मार्गसेही यह जा रही है। आनेवाली शाश्वत उषाओंमें यह पहिली प्रकाश देनेवाली है, जागृत मानवोंको (कर्ममें) प्रवृत्त करती है, यह उषा मृत जैसे सोनेवालोंको भी जगा रही है ॥

उषो यदग्निं समिधे चकर्थ वि यदावश्चक्षसा सूर्यस्य ।
यन्मानुषान् यक्ष्यमाणाँ अजीगस्तद् देवेषु चकृषे भद्रमप्नः ॥ ९ ॥

कियात्या यत् समया भवाति या व्यूषुर्याश्च नूनं व्युच्छान् ।
अनु पूर्वाः कृपते वावशाना प्रदीध्याना जोषमन्याभिरेति ॥ १० ॥

ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् व्युच्छन्तीमुषसं मर्त्यासः ।
अस्माभिरू नु प्रतिचक्ष्याभूदो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान् ॥ ११ ॥

यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती ।
सुमङ्गलीर्बिभ्रती देववीतिमिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ ॥ १२ ॥

शश्वत् पुरोषा व्युवास देव्यथो अद्येदं व्यावो मघोनी ।
अथो व्युच्छादुत्तराँ अनु द्यूनजरामृता चरति स्वधाभिः ॥ १३ ॥

---

९ हे उषः ! त्वं अग्निं समिधे यत् चकर्थ । सूर्यस्य चक्षसा यत् वि आवः । मानुषान् यक्ष्यमाणान् यत् अजीगः, देवेषु भद्रं तत् अप्नः चकृषे ॥

१० याः व्यूषुः, नूनं याः च व्युच्छान् यत् समया कियति भवाति ? पूर्वाः वावशाना अनु कृपते । प्रदीध्याना अन्याभिः जोषं एति ॥

११ ये मर्त्यासः व्युच्छन्तीं पूर्वतरां उषसं अपश्यन्, ते ईयुः । अस्माभिः नु प्रतिचक्ष्या अभूत् उ । अपरीषु ये पश्यान् ते आ उ यन्ति ॥

१२ हे उषः ! यावयद् द्वेषाः ऋतपाः ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती सुमङ्गलीः देववीतिं बिभ्रती, श्रेष्ठतमा इह अद्य व्युच्छ ॥

१३ उषाः देवी पुरा शश्वत् व्युवास । अथो अद्य मघोनी इदं व्यावः । अथो उत्तरान् द्यून् अनु व्युच्छात् । अजरा अमृता स्वधाभिः चरति ॥

९ हे उषा ! तूने अग्निको प्रदीप्त किया है । सूर्यकी आंखसे (तूने) प्रकाश किया है । मानवोंको यज्ञकर्मके लिये जग दिया है, यह देवोंमें अत्यंतही कल्याण करनेवाला कर्म (तूने) किया है ।

१० जो उषाएं चलीं गयीं, और जो सचमुच आनेवालीं हैं, उनमें हमारे साथ (रहनेवाली यह आजकी उषा) कितनी (थोडीसी) है ? पूर्व उषाओंका स्मरण करानेवाली (यह आजकी उषा हमारे लिये) अनुकूल होकर हमें सामर्थ्य दे रही है । और प्रकाशती हुई अन्य (गत उषाओंके साथही अपना) प्रेमसंबंध जोडती हुई जाती है ॥

११ जिन मानवोंने प्रकाशनेवाली प्राचीन उषाओंको देखा था, वे चल बसे । हमने तो यह उषा देखी है (हम भी वैसेही चले जायँगे ।) आनेवाली उषाओंको जो देखेंगे, वे भी ऐसेही जायँगे ॥

१२ हे उषा ! तू शत्रुका नाश करनेवाली, सत्यका पालन करनेवाली, सरल व्यवहारके लियेही उत्पन्न हुई, वैभवयुक्त, सत्यभाषणी, सत्कर्मकी प्रेरणा करनेवाली, मंगलकारिणी, देवोंके लिये हविर्भाग लेनेवाली अत्यंत श्रेष्ठ है, (ऐसी तू) आज यहां प्रकाश कर ॥

१३ यह उषादेवी पहिले शाश्वत कालसे प्रकाशती है और आज भी उस वैभवशालिनी (उषा) ने प्रकाश किया है । और वैसाही भविष्यके दिनोंमें भी वह प्रकाश देगी । यह जरारहित और मरणरहित (उषादेवी) अपनी शक्तियोंके साथ संचार करती है ॥

व्य१ञ्जिभिर्दिव आतास्वद्यौदप कृष्णां निर्णिजं देव्यावः ।
प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वैरोषा याति सुयुजा रथेन १४

आवहन्ती पोष्या वार्याणि चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना ।
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्वैत् १५

उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आऽगादप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति ।
आऽरैक् पन्थां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः १६

स्यूमना वाच उदियर्ति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातीः ।
अद्या तदुच्छ गृणते मघोन्यस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् १७

या गोमतीरुषसः सर्ववीरा व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय ।
वायोरिव सूनृतानामुदर्के ता अश्वदा अश्नवत् सोमसुत्वा १८

---

१४ दिवः आतासु अञ्जिभिः वि अद्यौत् । देवी कृष्णां निर्णिजं अप आवः । अरुणेभिः अश्वैः सुयुजा रथेन उषाः प्रबोधयन्ती आ याति ॥

१५ पोष्या, वार्याणि आवहन्ती, चेकिताना उषाः चित्रं केतुं कृणुते । ईयुषीणां शश्वतीनां उपमा, विभातीनां प्रथमा, वि अश्वैत् ॥

१६ उत् ईर्ध्वं, नः असुः जीवः आ अगात् । तमः अप प्र अगात् । ज्योतिः आ एति । सूर्याय यातवे पन्थां आ अरैक् । (तस्मिन्) अगन्म, यत्र आयुः प्रतिरन्ते ॥

१७ वह्निः रेभः विभातीः उषसः स्तवानः वाचः स्यूमना उत् इयर्ति । हे मघोनि ! अद्य गृणते तत् उच्छ । अस्मे प्रजावत् आयुः नि दिदीहि ॥

१८ दाशुषे मर्त्याय गोमतीः सर्ववीराः याः उषसः वि उच्छन्ति । वायोः इव सूनृतानां उदर्के, अश्वदाः ताः सोमसुत्वा अश्नवत् ॥

१४ आकाशकी सब दिशाओंमें आभूषणोंसे शोभित होकर (यह उषा) प्रकाश रही है । इस देवीने (विश्वके ऊपरका) काला वस्त्र दूर किया है। और आरक्त रंगके घोडोंसे जुडे रथपर बैठकर यह उषा (जगत्को) जगाती हुई आ रही है ॥

१५ पोषण करनेवाली, स्वीकारके योग्य धनोंको लानेवाली, ज्ञानसंपन्न उषा चित्रविचित्र तेज प्रकट करती है । जानेवाली शाश्वत (उषाओंमें) अन्तिम, प्रकाशित होनेवालियोंमें प्रथम (यह उषा यहां) प्रकाशित हो गयी है ॥

१६ उठो, हमारा चैतन्य देनेवाला प्राण आ रहा है । अन्धकार दूर हुआ है । प्रकाश आ रहा है । सूर्यके गमनके लिये मार्ग खुला हुआ है । (वहां) हम पहुंचे हैं, कि जहां आयुष्य दीर्घ होता है ॥

१७ तेजस्वी उपासक देदीप्यमान उषाओंकी स्तुति गाता हुआ अपनी वाणीको उत्तम, भक्ति-भावनाके साथ प्रेरित करता है । हे ऐश्वर्यवाली देवी ! आज भक्तके लिये तू प्रकाशित हो । हमें सन्तति और दीर्घ आयुष्य देदो ॥

१८ दाता मानवके हितके लिये गौओंसे युक्त तथा सब वीरोंसे युक्त ये सब उषाएं प्रकाशती हैं । वायुके (वेगके) समान स्तोत्रपाठोंकी गर्जना (होनेके समय), घोडे देनेवाली वे उषाएं सोमयागीके (हितके) लिये प्राप्त हों ॥

*

माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्बृहती वि भाहि ।
प्रशस्तिकृद् ब्रह्मणे नो व्यु१च्छा नो जने जनय विश्ववारे ॥ १९ ॥
यच्चित्रमप्न उषसो वहन्तीजानाय शशमानाय भद्रम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ २० ॥

१९ देवानां माता, अदितेः अनीकं, यज्ञस्य केतुः बृहती वि भाहि । नः ब्रह्मणे प्रशस्तिकृत् व्युच्छ । हे विश्ववारे ! नः जने आ जनय ॥

२० यत् चित्रं अप्नः उषसः ईजानाय शशमानाय भद्रं वहन्ति । नः तत् मित्रः वरुणः अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ममहन्ताम् ॥

१९ देवोंकी माता, अदितिका बल, यज्ञका ध्वज जैसी विशाल होकर तूं प्रकाशित हो । हमारे स्तोत्रकी प्रशंसा करती हुई प्रकाशित हो । हे सबके प्यारी (उषा) ! हमारे लोगोंमें नवजीवन उत्पन्न कर ॥

२० जो विलक्षण ऐश्वर्य उषाएं याजक और स्तोताके कल्याण करनेके लिये लाती हैं, हमारे उस ऐश्वर्यके लिये मित्र आदि देव अनुमोदन दें ॥

यह उषाका काव्य बडाही मनोरंजक और उत्साह बढानेवाला है । पाठक इसका पाठ वारंवार और काव्यरसका स्वाद लेते हुए करें । मनमें उत्साहका स्फुरण देनेवाला यह काव्य है, इसका बोध वारंवार पाठ करनेवालोंके मनमें स्वयं स्फुरित हो सकता है । इसलिये इसका विवरण करनेकी आवश्यकता नहीं है ।

---

[८] रुद्र-प्रकरण

(१८) शत्रुको रुलानेवाला महावीर

(ऋ. १।११४) कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः । जगती; १०-११ त्रिष्टुप् ।

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ १ ॥
मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु ॥ २ ॥

अन्वयः— १ यथा अस्मिन् ग्रामे विश्वं पुष्टं अनातुरं असत्, तथा द्विपदे चतुष्पदे शं, तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय रुद्राय इमाः मतीः प्रभरामहे ॥

२ हे रुद्र ! नः मृळ, उत नः मयः कृधि । क्षयद्वीराय ते नमसा विधेम । हे रुद्र ! मनुः पिता यत् शं च योः च आयेजे । तव प्रणीतिषु तत् अश्याम ॥

अर्थ— १ जिस प्रकार इस गांवमें सब प्राणिमात्र हृष्टपुष्ट और नीरोग रहें, तथा द्विपाद और चतुष्पादके लिये शांति प्राप्त हो, उस प्रकार बलवान् जटाधारी, वीरोंके आश्रय देनेवाले रुद्रके लिये ये मंत्र हम गाते हैं ॥

२ हे रुद्र ! हम सबको सुखी कर, और हम सबको नीरोग कर । वीरोंको आश्रय देनेवाले तेरा हम सब नमस्कारसे सत्कार करते हैं। मनुष्योंका पालक यह वीर शांति और रोगनिवारक शक्ति देता है। हे रुद्र! तेरी विशेष नीतिसे उसको हम सब प्राप्त करेंगे॥

अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः ।
सुम्नायन्निद् विशो अस्माकमा चरारिष्टवीरा जुहवाम ते हविः　　३
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं वङ्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे ।
आरे अस्मद् दैव्यं हेळो अस्यतु सुमतिमिद् वयमस्या वृणीमहे　　४
दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं त्वेषं रूपं नमसा नि ह्वयामहे ।
हस्ते बिभ्रद् भेषजा वार्याणि शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यंसत्　　५
इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।
रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृळ　　६
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः　　७
मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे　　८

३ हे मीढ्व रुद्र ! क्षयद्वीरस्य ते सुमतिं अश्याम । अस्माकं विशः ते देवयज्यया सुम्नायन् इत् आचर। अरिष्टवीराः ते हविः जुहवाम ॥

४ त्वेषं यज्ञसाधं वङ्कुं कविं रुद्रं वयं अवसे नि ह्वयामहे। दैव्यं हेळः अस्मत् आरे अस्यतु । अस्य सुमतिं इत् वृणीमहे ॥

५ वराहं अरुषं त्वेषं रूपं कपर्दिनं दिवः नमसा नि ह्वयामहे । हस्ते वार्याणि भेषजा बिभ्रत्, अस्मभ्यं शर्म वर्म छर्दिः यंसत् ॥

६ मरुतां पित्रे रुद्राय स्वादोः स्वादीयः वर्धनं इदं वचः उच्यते । हे अमृत ! नः मर्तभोजनं रास्व । त्मने तोकाय तनयाय मृळ ॥

७ हे रुद्र ! नः महान्तं मा वधीः, नो अर्भकं मा, नः उक्षन्तं मा, उत नः उक्षितं मा, नः पितरं मा, उत नः मातरं मा । नः प्रियाः तन्वः मा रीरिषः ॥

८ हे रुद्र ! नः तोके तनये आयौ गोषु अश्वेषु मा रीरिषः । भामितः मा वधीः । त्वा हविष्मन्तः सदं हवामहे ॥

३ हे सुखदायक रुद्रदेव वीरोंको आश्रय देनेवाले तेरी उत्तम बुद्धि को हम सब प्राप्त हों, हमारी प्रजाओंको अपने देव-यजनसे सुख देता हुआ तूं हमारे लिये अनुकूल आचरण कर। हमारे वीरोंका नाश न हो और हम सब तुम्हारे लिये अन्न अथवा दान अर्पण करेंगे।

४ तेजस्वी, सत्कर्मसाधक, चपल, स्फूर्तियुक्त, ज्ञानी, रुद्रकी हम सब संरक्षणके लिये प्रार्थना करते हैं । देवोंके संबंधी क्रोध हम सबसे दूर हो । हम इसके उत्तम मतिको प्राप्त करेंगे ॥

५ उत्तम आहार लेनेवाले, तेजस्वी, सुंदर रूपयुक्त, जटाधारी वीरको द्युलोकसे सत्कारपूर्वक हम सब बुलाते हैं । वह अपने हाथोंमें रोगनिवारक औषधियां धारण करता है और हम सबको आंतरिक स्वास्थ्य, बाह्य दोषोंका प्रतिबंध तथा वमन विरेचन आदि देता है।

६ मरणके लिये सिद्ध हुए वीरोंके संरक्षक महावीरके लिये मीठेसे मीठा और बधाई देनेवाला यह स्तोत्र गाया जाता है कि, हे अमर ! तूं हम सबके लिये मनुष्योंका भोजन दे, तथा मुझे तथा बालबच्चोंको सुखी रख ।।

७ हे रुद्र ! हमारेंमेंसे बडोंका वध न कर, हमारे छोटोंका वध न कर। हमारे बढनेवालेका वध न कर और हमारे बढे हुएका वध न कर । हमारे पिताका वध न कर और हमारी माताका वध न कर। हम सबके प्रिय शरीरोंको कृश मत कर॥

८ हे रुद्र ! हम सबके बालबच्चोंमें मनुष्य, गाय और घोडोंमें कृशता न कर । क्रोधके कारण हमारे वीरोंका वध न कर । तुझे अन्न दान करनेके लिए हम अपने घरमें बुलाते हैं ॥

उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकरं रास्वा पितर्मरुतां सुम्नमस्मे ।
भद्रा हि ते सुमतिर्मृळयत्तमाथा वयमव इत् ते वृणीमहे ९
आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं क्षयद्वीर सुम्नमस्मे ते अस्तु ।
मृळा च नो अधि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः १०
अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृणोतु नो हवं रुद्रो मरुत्वान् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ११

९ हे मरुतां पितः ! पशुपा इव अस्मे सुम्नं रास्व । ते स्तोमान् उप अकरं । हि ते सुमतिः मृळयत्तमा । अथ वयं ते अवः इत् वृणीमहे ॥

१० हे क्षयद्वीर ! ते गोघ्नं उत पुरुषघ्नं आरे । अस्मे ते सुम्नं अस्तु । नः मृळ च । हे देव ! च अधि ब्रूहि । द्विबर्हाः शर्म यच्छ ॥

११ अवस्यवः अवोचाम । अस्मै नमः । मरुत्वान् रुद्रः नः हवं शृणोतु । नः तत् मित्रः वरुणः अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ममहन्ताम् ॥

९ हे मरनेके लिये सिद्ध हुए वीरोंके संरक्षक वीर! पशुओंके पालक गवालियेके समान हम सबके लिये उत्तम सुख दे। हम सब तेरी प्रशंसा करते हैं। क्योंकि तेरी उत्तम सम्मति अत्यंत सुख देनेवाली है। इसलिये हम सब तेरेसे संरक्षण प्राप्त करते हैं॥

१० हे वीरोंके आश्रय देनेवाले! तेरा गायका घातक और मनुष्यका घातक शस्त्र हमसे दूर रहे। हम सबके लिये तेरा उत्तम मन प्राप्त हो। और हम सबको सुखी कर। हे देव! हमें और उपदेश कर तथा दो तुरोंवाला तू हम सबके लिये शांति प्रदान कर ॥

११ रक्षाकी इच्छा करनेवाले हम सब कहते हैं कि इस प्रकारके वीरके लिये हमारा नमस्कार है। मरनेतक लडनेवाले वीरोंके साथ रहनेवाला यह महावीर हमारी प्रार्थना सुने। मित्र, वरुण, अदिति, सिंधु, पृथिवी और द्युलोक हम सबको उस प्रकार हमारी उस इच्छाका अनुमोदन करें ॥

रुद्र सूक्तकी व्याख्या

१।११४ सूक्तमें 'रुद्र' शब्दके अनेक अर्थोंमें एक अर्थ 'वैद्य' है। क्योंकि इस सूक्तके मंत्र ५ में लिखा है कि "रुद्र हाथमें रोग-निवारक औषधियां धारण करता हुआ, मनुष्योंको आंतरिक शांति, बाह्य संरक्षण और प्राप्त रोगोंका वमनविरेचनादिद्वारा निवारण करता है।"

इस सूक्तकी 'रुद्र' मुख्य देवता है, परंतु अंतिम मंत्रमें मित्र, वरुण, अदिति, सिंधु, पृथिवी और द्यौ ये देवताओंके नाम आये हैं। इनका विचार अंतिम मंत्रके विचारके समय किया जायगा।

मंत्र १- नगरका आरोग्य- ग्राम, नगर, पत्तन, पुरी आदिमें रहनेवाले मनुष्योंको तथा इतर प्राणिमात्रोंको आरोग्य-संपन्न रखकर, हृष्टपुष्ट, सुदृढ और उत्साही रखना राज्यके आरोग्यविभागका कर्तव्य है। यह बात इस प्रथम मंत्रमें स्पष्टतासे कही है। जो इस प्रकार नागरिक आरोग्यकी व्यवस्था उत्तम प्रकारसे करता है, अथवा नागरिक आरोग्य ठीक करनेके प्रबंधोंका उपदेश नगरवासियोंको करता है, उसीकी प्रशंसा करना योग्य है, यह इस मंत्रका तात्पर्य है। नगरवासियोंको उचित है कि वे इस प्रकारके प्रबंधकर्ताको नागरिक स्वास्थ्य-विभागकी व्यवस्थापर नियुक्त करें और उसकी संमतिके अनुसार नगरवासियोंके स्वास्थ्यकी रक्षा करें।

नागरिक स्वास्थ्यकी परीक्षा

नागरिक आरोग्यकी परीक्षा नगरवासियोंके आयुर्मर्यादासे होती है। सवा सौ वर्षतक आयुवाले मनुष्य जिस नगरमें अधिक रहते हैं, उस नगरका आरोग्य उत्तम है। सौ सौ वर्षके करीब आयुवाले मनुष्य जिस नगरमें रहते हैं, उस नगरका आरोग्य मध्यम समझना उचित है, तथा इससे अल्प आयुमें जिस नगरमें मृत्यु होती है, उस नगरका आरोग्य निकृष्ट है, ऐसा

मानना उचित है।

इस प्रथम मंत्रमें कई शब्दोंका विशेष मनन करना आवश्यक है। देखिये निम्न शब्द—

(१) तवस्— वृद्ध, बलवान्, शक्तिशाली; बडा, महान्। वैद्य वृद्ध और धैर्यवान् होना चाहिए। वृद्ध होनेका तात्पर्य अनुभव प्राप्त होनेमें है। जिसको अधिक अनुभव होता है, वही अच्छा वैद्य होता है। वही नागरिक-स्वास्थ्य-विभागमें कार्य करनेके लिये योग्य है।

(२) क-पर्दिन्— (कुत्सितं पर्दयति गमयति) 'पर्द्' धातुका अर्थ 'पेटकी हवामें गति उत्पन्न करके उस बुरी हवाको अपानरूपमें परिणत करके नीचे फेंकना' है। 'क' शब्दका अर्थ 'बुराई' है। पेटमें जो बुरी हवा होती है, उसको अपानवायुके रूपमें बाहेर निकालना 'क-पर्दिन्' का कार्य है। बुरा वायु भरनेसे पेट फूल जाता है, और रोगीको बडा कष्ट होता है। इसलिये औषधियोजनाद्वारा अपानवायुको ठीक प्रकार रखनेका कार्य वैद्यका है। इस अर्थसे यह नाम वैद्यके लिये आता है।

'कपर्द' का दूसरा अर्थ शिखा है। जो शिखा धारण करता है उसको भी 'कपर्दिन्' कहते हैं। जटाधारी, शिखाधारी, बडी शिखावाला।

'पृथ्, पृद्' धातुका अर्थ 'गति देना, फेंकना' है। बुरी अवस्थामें रहे बीमारको भी जो औषधोंद्वारा हलचल करनेकी शक्ति देता है। अथवा शरीरके अंदर प्राप्त हुए विषम पदार्थोंको अथवा कुत्सित पदार्थोंको बाहेर फेंकता है। उसका भी नाम 'क-पर्द' होता है।

'पर्द्' धातुका लंघन करना अर्थ है। बुरी अवस्थामें पडे हुए बीमारको लंघनद्वारा जो ठीक करता है उसका 'कपर्द, कपर्दिन्' नाम होता है। इस शब्दके विविध अर्थ हैं इसलिये पाठकोंको विचार करना चाहिए कि यहां कौनसा विवक्षित है।

(३) क्षयद्-वीर- 'क्षय, क्षयत्,' आदिका अर्थ निवास करनेवाला, आश्रय देनेवाला है। 'वीर' शब्दका अर्थ शत्रुका निवारण करनेवाला प्रतिबंधक, अथवा निवारक है। जो वीरोंको आश्रय देता है, वह क्षयद्वीर है।

'**क्षयद्वीर**' शब्दके अनेक अर्थ हैं। '**क्षयत्**' शब्दका '**निवासक**' ऐसा अर्थ होता है। '**क्षि**' धातुका 'निवास करना, रखना, रहना' यह अर्थ है। 'वीरोंका निवासक' ऐसा इसका आशय होता है। मनुष्यों पर शासन करनेवाला, वीरोंका नायक, शूरोंका सेनापति आदि अर्थ इसके होते हैं।

श्री सायणाचार्यजी इसका अर्थ निम्न प्रकार करते हैं।

(१) '**निवसद्भिः......वीरैः पुत्रादिभिरुपेतः**।' (ऋ. ८।१९।१०) वीर अथवा पुत्रोंके साथ रहनेवाला। (२) '**यस्मिन्त्सर्वे वीराः क्षीयन्ते**। (ऋ. १।१०६।४)जिसमें सब वीर होते हैं। (३) '**क्षयन्तो विनश्यन्तो वीरा यस्मिन्......। यद्वा क्षयतिरैश्वर्यकर्मा। क्षयन्तः प्राप्तैश्वर्या वीराः ...पुत्राः......यस्य**।' (ऋ. १।११४।१) जिसमें वीर नष्ट होते हैं। अथवा 'क्षि' धातुका अर्थ ऐश्वर्यवान् होना है। जिसके वीर पुत्र ऐश्वर्यवान् हुए हैं।

श्री महीधराचार्य '**क्षयन्तो निवसन्तो वीरा यत्र**।' (वा. य. १६।४८) जिसके साथ शूर रहते हैं। किंवा '**क्षयन्तो नश्यन्तो वीरा रिपवो यस्मात्**।'(वा.य.१६।४८)जिसके कारण शत्रु नाशको प्राप्त होते हैं, ऐसा अर्थ करते हैं।

'शत्रुका नाश करनेवाला' यह अर्थ वैद्यके विषयमें भी ठीक लग सकता है। रोगरूपी शत्रुओंका नाश करनेवाला वैद्य होता है। शत्रुका निवारण करनेवालेको भी वीर करते हैं।

श्री० स्वा० दयानंद सरस्वतीजी निम्नप्रकार अर्थ करते हैं।

'**क्षयन्तो दोषनाशका वीरा यस्य**।' (ऋ. १।११४।१) जिसके दोषोंके नाश करनेवाले वीर पुरुष विद्यमान हैं।

पाठकोंको उचित है, कि वे इन सब अर्थोंका मनन करके संपूर्ण मंत्रका आशय समझ लें।

मंत्र २- स्वास्थ्य और व्याधि-निवारण— इस मंत्रमें '**शं**' और '**योः**' ये दो शब्द मुख्य हैं। '**शं**' शब्द स्वास्थ्य, नीरोगता, मानसिक शांति आदि भाव बताता है और '**योः**' शब्द बाहेरसे आनेवाले आपत्तियोंको रोकना बताता है।

शं-रोगाणां शमनं,
योः-भयानां यावनं। } इति सायणाचार्यः।(ऋ. १।११४।२)

पहिला शब्द नीरोगताकी अवस्था बताता है और दूसरा शब्द आनेवाले आपत्तिका प्रतिबंध बताता है। मनुष्यको अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करना उचित है तथा भविष्यकालमें रोगोंका उपद्रव न होनेकी व्यवस्था करना भी उचित है। शांति और रोगप्रतिरोधक शक्ति हरएक मनुष्यको प्राप्त करना उचित है।

पिता मनुः— शब्द विशेष महत्त्वपूर्ण है। 'मनु' शब्द मननशील मनुष्यका वाचक है। संरक्षण करनेवालेका

नाम पिता है । अपनी रक्षा करनेवाला तथा विचारपूर्वक अपना व्यवहार करनेवाला मनुष्य अपना स्वास्थ्य ठीक रख सकता है । यह भाव इन शब्दोंद्वारा इस मंत्रमें सूचित किया है । मनुका मनुष्यमात्र ऐसा अर्थ कोशोंमें है । विचारशक्ति भी इसका एक अर्थ है ।

नीति- मार्ग बताना। **प्रणीति** (प्र- नीति) विशेष प्रकारसे व्यवहार करना । आचार व्यवहार विशेष रीतिसे विधिनियमपूर्वक करनेका तात्पर्य इस शब्दसे बोधित होता है । स्वास्थ्य-रक्षाके विशेष तत्त्वोंका शास्त्र इस शब्दसे सूचित होता है । वैद्यको उचित है कि वह सबको स्वास्थ्य-नीतिका उपदेश करे और लोगोंको उचित है कि वे स्वास्थ्य-नीतिके अनुसार अपना आचारव्यवहार करते रहें ।

मंत्र ३- सब प्रजाका आरोग्य- उदार वैद्यकी संमतिके अनुसार सब लोक आचरण करें । यह सूचना इस मंत्रके, पूर्वार्धमें है । उदार वैद्यही योग्य सूचना कर सकता है । स्वार्थी वैद्य अपने स्वार्थके कारण लोगोंको ठीक उपदेश नहीं देगा । इसलिये उदार परोपकारी वैद्यका उपदेशही सबको सुनना उचित है ।

देव-यज्या— इस मंत्रमें यह शब्द विशेष अर्थसे प्रयुक्त किया है । '**देव**' शब्दका 'इंद्रिय' अर्थ है । 'यज्' का अर्थ 'सत्कार-संगति-दान' है । इंद्रियोंका सत्कार करना अर्थात् इंद्रियोंकी प्रसन्नता रखना । विद्वानोंका सत्कार, तथा पृथिवी जल, वायु आदिकी प्रसन्नता रखना भी इसका अर्थ है । वास्तविक मनुष्योंका कल्याण इंद्रियों, विद्वानों तथा जलवायु आदिकोंकी प्रसन्नतापर निर्भर है । यही देवयजन है ।

अरिष्टवीर— 'अरिष्ट-वीर' का अर्थ दुःखोंका निवारण करना है । तथा 'अ-रिष्ट-वीर' का अर्थ जिसके शूरवीरोंका नाश नहीं हुआ है । दोनों अर्थोंके साथ इस मंत्रका विचार करना चाहिए ।

हविः— हविका मुख्य यौगिक धात्वर्थ 'दान' है क्योंकि दान अर्थके 'हु' धातुसे यह शब्द बनता है । (हु-दान-आदानयोः) इसलिये 'दान' ऐसा इसका मुख्य अर्थ है, और यज्ञ, जल, घी, हवनसामग्री आदि अर्थ लाक्षणिक हैं । वैद्यकी सहायताके लिए उसको उचित दान देना सबको योग्य है, यह आशय मंत्रके अंतिम भागका है ।

मंत्र ४- क्रोधादि विकारोंको दूर रखो— आरोग्यके लिये क्रोध, द्वेष आदि विकारोंको दूर रखना उचित है । क्रोध आदि दुष्ट मनोविकार आरोग्यका सर्वथा घात करते हैं । क्रोधके कारण शीघ्रही, तारुण्यमेंही वृद्ध अवस्था प्राप्त होती है । इसलिये इन सब मनोविकारोंको दूर करना उचित है । यही भाव-

आरे अस्मद्दैव्यं हेळो अस्यतु ।

'दूर हमारेसे इंद्रियोंका क्रोध फेंका जावे ।' ऐसा इस मंत्र-भागमें कहा है । हेळ, हेड, द्वेषका भाव यहां हैं ।

हेड— शब्दका अर्थ अनादर, अपमान; भूल, चूक, निर्बलता; भूल जाना, अधुरा छोडना । ये सब भाव बुरे हैं, इसलिये इन सब भावोंको दूर करना चाहिए, तभी स्वास्थ्य ठीक हो सकता है । मनकी शुद्ध अवस्थापर स्वास्थ्य निर्भर है । इसलिये बुरे भावोंको दूर करके मनको शुद्ध करना आवश्यक है ।

द्वेष आदि बुरे भावोंको दूर करना और '**सुमति**' को मनमें स्थापन करना, यही आरोग्यका मुख्य साधन है, जो इस मंत्रके उत्तर अर्धने बताया है ।

मंत्रके प्रथम अर्धमें वैद्यके कई गुण वर्णन किये हैं । तेजस्वी, सत्कर्मका साधन करनेवाला, फुर्तिला ज्ञानी वैद्य चाहिए । निस्तेज, मरियल, दुराचारी, आलसी, अनपढ जो होगा उसके पास कोई भी न जायँ, क्योंकि उससे सच्चा आरोग्य प्राप्त नहीं हो सकता ।

मंत्र ५- औषधियोंकी योजना— इस मंत्रका अर्थ युरोपीयन पंडित बडा विलक्षण करते हैं । '**दिवो वराहं**' ये दो पद अलग मानकर उन्हींका अर्थ आकाशका जंगली सूवर, ऐसा करते हैं । (देखिए म. ग्रिफिथ साहबका अंग्रेजी भाषांतर ऋ. १।११४।५) डा. मूर साहब आकाशका लाल सूवर, ऐसा अर्थ करते हैं । परंतु यहां '**वराह**' का अर्थ सूवर नहीं है ।

श्री सायणाचार्य '**वराह**' का अर्थ (१) '**वराहं वराहारं उत्कृष्ट-भोजनं**' उत्तम भोजन करनेवाला, ऐसा करते हैं । और (२) '**वराहवद् दृढांगं**' सूवरके समान जिसका बलवान् शरीर है, ऐसा भी करते हैं ।

'वर+आहार' शब्दोंसे 'वराह' शब्द बनाया जाता है, इसलिये यही अर्थ इस स्थानपर उचित है । वैद्यप्रकरणमें योग्य, पथ्य और उत्तम श्रेष्ठ भोजनका संबंध प्रकरणानुकूलही है ।

इस मंत्रके पूर्वार्धमें तेजस्वी और सुंदर वैद्यकोही बुलानेको कहा है । वैद्य यदि कुरूप, मरियल, बीमार, अशक्त, दुर्मुख हुआ तो उसके व्यक्तित्वका असर रोगीपर क्या हो सकता है ?

वैद्यके सुंदर और प्रसन्न मूर्तिको देखकर रोगीके मनमें यह भाव आ सकता है कि, 'हां, यह वैद्य मुझे नीरोग बना सकता है।' इसलिये मंत्रमें जो कहा है कि सुंदर और तेजस्वी वैद्यकोही बुलाओ, वह बिलकुल योग्य है। वैद्यके सुंदर मूर्तिका तथा प्रसन्नवदनका परिणाम रोगीके मनपर निश्चयसे अच्छा हो सकता है।

'वैद्य अपने हाथमें रोगनिवारक औषधियां लेकर आता है।' यह बात मंत्रमें आगे कही है। जिस समय वैद्य बीमारके पास जाता है उस समय उसके साथ थोडीसी उत्कृष्ट औषधियाँ अवश्य रहनी चाहिए। रोगीकी अवस्थाके अनुकूल यदि कोई औषधि वैद्यके प्रेममय हाथसे रोगीको प्राप्त होगी, तो उसका परिणाम बहुतही अच्छा हो सकता है। रोग दूर करनेमें मनकी अवस्थाका विचार करना वैद्यका मुख्य कार्य है। यदि रोगीका निश्चय हो जायगा, कि 'अब मैं अच्छा हो रहा हूं,' तो उस मानसिक अवस्थासे ठीक होनेका मार्ग सुगम हो जाता है।

'शर्म' नाम उस अवस्थाका है कि, जो आरोग्यसे मानसिक शांति प्राप्त होती है। **'वर्म'** नाम उस शक्तिका है कि जो बाहरसे आनेवाले बीमारीको रोकती है। वीरोंके कवचका नाम **वर्म'** होता है, इसलिये कि उससे शत्रुके शस्त्रोंका आघात शरीर-पर नहीं होता और शरीरका बचाव उससे होता है। शरीरकी **'वर्म'** शक्ति भी वही है कि जो रोगोंके आक्रमणसे शरीरका बचाव करती है। वमन विरेचन स्वेदन आदिको **'छर्दि'** कहते हैं। शरीरमें प्रविष्ट हुए विषको बाहर निकालना 'छर्दि' का तात्पर्य है। (छर्द्- वमने) वमन अर्थात् कय करना, (छृद्- संदीपने) संदीपन और दीप्ति अर्थात् भूख प्रदीप्त करना तथा इन दो कर्मोंद्वारा शरीरके सब व्यवहार ठीक करना 'छर्दि' का तात्पर्य है। मनको शांत रखना, बाहरसे आनेवाले विषोंका प्रति-बंध करना तथा शरीरमें प्राप्त हुए विषोंको बाहर निकालना और इन तीन प्रकारोंसे प्राणिमात्रका स्वास्थ्य ठीक रखना वैद्यका कर्तव्य है।

मंत्र ६ — मनुष्योंके लिये योग्य अन्न— 'मरुत, मर्त्य, मर्य, मर्त' आदि शब्द एकही गोत्रके हैं और इनका अर्थ 'मरणधर्मवाला मनुष्य' ऐसा है। **'मरुतां पिता'** इन शब्दोंका अर्थ 'मनुष्योंका संरक्षक' इतनाही यहां है। वैद्य मनुष्योंका संरक्षण करता है, इस विषयमें किसीको शंका नहीं हो सकती। क्योंकि मनुष्योंका आरोग्य वैद्यके उपदेशपर बहुत अंशमें निर्भर है।

इस मंत्रके पूर्वार्धमें 'वैद्यको सबसे मीठा उपदेश' किया है और सूचित किया है, कि वैद्यकी भलाई अथवा उन्नति इसी बातसे होगी। वह मीठा उपदेश यही है कि 'रोगी मनुष्योंके लिये मनुष्योंके योग्य अन्न (मर्त-भोजनं) ही दिया जावे।' कई वैद्य रोगीको हिंस्र पशुके योग्य अन्न देते हैं। ऐसा करना योग्य नहीं है। मनुष्य फलभोजी, शाकाहारी तथा धान्यभोजी प्राणी है, इसलिये उसको पथ्य ऐसाही कहना चाहिए कि जो उसके लिये योग्य हो। और इस प्रकारके योग्य अन्नद्वारा बालबच्चोंको तथा बडे मनुष्योंको भी आरोग्य प्राप्त कराके सुखी करना चाहिए।

मंत्रके उत्तरार्धमें **'अ-मृत'** शब्दसे वैद्यको संबोधित किया है। लोगोंको मृत्युसे दूर रखनेका कार्य वैद्यका है, यह बात इस शब्दसे सूचित होती है।

मरुत्‌का अर्थ मरनेतक उठकर लडनेवाला वीर भी है। यह अर्थ लेकर इसका वीरोचित अर्थ भी पाठक देखें।

मंत्र ७-८- वैद्य प्रमाद न करे— वैद्यके भूल अथवा दोषसे, आलस्यसे, क्रोध और अज्ञानसे रोगी मर जाते हैं। इस-लिये सदा सावध रहनेकी जिम्मेवारी वैद्यपर है। इन दोषोंके कारण यदि किसीकी मृत्यु हो गई, तो उसका उत्तरदाता वैद्य होगा। यह बात अष्टम मंत्रके उत्तरार्धसे सूचित की है।

मंत्र सातमें यह आशय है, कि वैद्य अपनी असावधानताके कारण न किसीको कृश करे तथा न किसीका घात करे। वैद्यकी थोडीसी भूलके कारण दूसरोंके बालबच्चे अथवा मातापिता मृत्युके वशमें होना कोई अशक्य बात नहीं है। इसलिये वैद्यको उचित है कि वह सदा सावध रहे।

न केवल मनुष्यों परंतु पशुओंके विषयमें भी वैद्यको बडी दक्षता धारण करना चाहिए। दक्षता और सावधानता न रख-नेके कारणही वैद्य बडेबडे प्रमाद कर सकता है और वैद्यके दोषके कारण दूसरोंको मरना पडता होता है।

'भामितो मा वधीः'। ' अर्थात् मनके दोषोंके कारण दूसरोंका वध न कर। यह वाक्य यहां मुख्य है। क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, चित्तका वेग अथवा क्षोभ आदिके कारण किसीका वध नहीं होना चाहिए। सब वैद्योंको उचित है कि वे इस उप-देशकी ओर अपना विशेष ध्यान देदें। अपने पास जितना समय हो उतनेही बीमार देखें। पैसेके लालचसे रोगियोंका घातपात न करें॥

मंत्र ९-१०— वैद्यकी संमति— मंत्र ९ में गवालिया की उपमा वैद्यके लिये दी है। गौवोंकी रक्षा करता हुआ गवालिआ जिस प्रकार गौवोंको बुरे मार्गसे बचाता है, उस प्रकार वैद्य सब जनताको बीमारियोंसे योग्य उपदेशद्वारा बचावे। वैद्यकी संमतिही सच्चा कल्याण करनेवाली है। वैद्यकी संमतिसे संरक्षित होते हुए मनुष्य रोगोंसे बच सकते हैं। वैद्यको उचित है, कि वह सबको आरोग्यके मार्गका उपदेश करे और लोगोंको भी उचित है, कि वे वैद्यके उपदेशके अनुसार अपना व्यवहार करें।

मंत्र ११— जनताकी उन्नति- 'नः ममहन्तां' हम सबकी उन्नति होवे। सब मनुष्योंके मनमें यही भाव रहना चाहिए। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक, आरोग्यविषयक, आयुष्यके संबंधमें तथा अन्य सब प्रकारसे मनुष्यमात्रकी उन्नति होना चाहिए। उत्तम नियमोंका आचरण करता हुआ मैं हरएक प्रकारकी उन्नति अवश्य प्राप्त करूंगा, ऐसाही विचार हरएकको अपने मनमें धारण करना चाहिए। दोषोंके कारण अवनति और निर्दोषतासे उन्नति होती है। इसलिये जहांकी उन्नति प्राप्त करना है वहां पूर्णताकी स्थापना करके वहांके दोषोंको दूर रखना सबको उचित है।

उन्नति करनेवाले मित्र, वरुण, अदिति, सिंधु, पृथिवी और द्यौः ये देव हैं। (१) **पृथिवी-** शब्दसे भूमि, मातृभूमी, अपना देश, राष्ट्र, अपनी जमीन आदि भाव व्यक्त होता है। (२) **सिंधु—** शब्दसे नदी, जल, समुद्र आदि पदार्थ बोधित होते हैं। (३) **द्यौ—** शब्दसे आकाश, वायु, सूर्य आदि पदार्थ ध्वनित होते हैं। (४) **अ-दिति-** शब्दसे बुद्धि, स्वातंत्र्य, स्वाधीनता, पवित्रता, नीरोगता, वक्तृत्व, गाय, दूध आदि पदार्थ सूचित होते हैं। (५) **मित्र—** शब्दसे मित्र, हित करनेवाला, प्राण आदिका बोध होता है। (६) **वरुण—** शब्दसे वरिष्ठ, श्रेष्ठ, समुद्र, जल, अंतरिक्ष, सूर्य आदिका बोध होता है॥

ये सब पदार्थ मनुष्यमात्रकी उन्नति करनेमें सहायता देते हैं। मनुष्यको चाहिए कि वह इन पदार्थोंद्वारा अपनी उन्नतिका साधन करे। पुरुषार्थ करनेवाला उन्नति प्राप्त कर सकता है। पुरुषार्थके विना उन्नति प्राप्त होना असंभव है। उक्त पृथिवीआदि शब्दोंके प्रत्येक शब्दसे एकएक पदार्थ सूचित होता है, अथवा अनेक पदार्थ सूचित होते हैं. इसका विचार इस समयतक निश्चित नहीं हुआ। इस मंत्रका उत्तरार्ध ऋग्वेदमें २० वार, और वा० यजुर्वेदमें दो वार आया है। इतने वार आनेके कारण इसका महत्त्व विशेष है। इसलिये इसपर विशेष विचार होना चाहिए। आशा है कि पाठक भी विचार करेंगे।

इस स्थानपर रुद्रदेवताका एकही भाव लेकर विवरण किया है। नागरिकोंका स्वास्थ्य, रोगनाश, आरोग्यप्राप्ति, बलप्राप्ति, पोषण, आदिका भाव प्रथम मंत्रमें स्पष्टही है। नगरके आरोग्यरक्षक वैद्यका भाव यहां प्रतीत होता है। रुद्रके अनेक अर्थोंमें एक यह अर्थ है। परंतु रुद्रके अनेक भाव हैं। शत्रुओंको (रोदयति अमित्रान्) रुलानेवाला महावीर रुद्र है। ये महावीर भी शत्रुओंको दूर रखकर नागरिक जनोंको शान्तिके साथ रहनेमें सहायक होते हैं। रक्षक वीर न रहे तो आततायी खडे होंगे और सर्व साधारण जनतापर आतंककी वृष्टि करेंगे, इसलिये राज्यशासनमें दण्ड अत्यन्त आवश्यक है। दण्डके विना कोई राज्यशासन नहीं चल सकता और जनता शान्त और स्वस्थ भी नहीं रह सकती।

पञ्चम मंत्रमें (भेषजा) औषधियोंका वर्णन नागरिक अरोगताकोही बता रहा है। सातवें और आठवें मंत्रमें कोई कृश न हो, कोई अकाल मृत्युसे न मरे आदि जो कहा है, वह नागरिकोंके उत्तम स्वास्थ्यका आदर्श है। प्रयत्नसेही यह हो सकता है।

यह सूक्त सब प्रकारके नागरिक स्वास्थ्यका वर्णन करता है। वैद्यसे रोग-निवारण, रक्षकोंसे दुष्टोंका निवारण, उपदेशकोंसे वैयक्तिक दुष्ट-विचारोंका निर्मूलन करनेसे सर्वत्र शान्ति सुख स्थापित हो सकता है। यही इस सूक्तका ध्येय है। पाठक इस सूक्तका सर्व अंगोंसे मनन करें और बोध प्राप्त करें॥

॥ यहां रुद्र-प्रकरण समाप्त हुआ॥

[१] सूर्य-प्रकरण

(१९) जगत्प्रदीप सूर्य

(ऋ. १।११५) कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः । त्रिष्टुप् ।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आऽप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ×१
सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात् ।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम् +२
भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः ।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः ३
तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार ।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ❀४

अन्वयः— १ देवानां अनीकं, मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः चित्रं चक्षुः उदगात् । (तत्) द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं आ अप्राः । सूर्यः जगतः तस्थुषः च आत्मा ॥

२ सूर्यः देवीं रोचमानां उषसं, मर्यो योषां न, पश्चात् अभ्येति । यत्र देवयन्तः नरः युगानि (तत्र) वितन्वते भद्रं प्रति भद्राय ॥

३ सूर्यस्य अश्वाः भद्राः हरितः चित्राः अनुमाद्यासः एतग्वाः । नमस्यन्तः दिवः पृष्ठं आ अस्थुः । द्यावापृथिवी सद्यः परि यन्ति ॥

४ सूर्यस्य तत् देवत्वं । तत् महित्वं । कर्तोः मध्या विततं सं जभार । यदा इत् हरितः सधस्थात् अयुक्त, आत् रात्री वासः सिमस्मै तनुते ॥

अर्थ— १ देवोंका मुख्य तेज, मित्र वरुण और अग्निका विलक्षण नेत्र (ऐसा यह सूर्य अब) उदय हुआ है । (इसने) द्युलोक, पृथ्वीलोक और अन्तरिक्षलोकको (प्रकाशद्वारा) भरपूर व्याप लिया है । सचमुच सूर्य जंगम और स्थावरका आत्माही है ।।

२ सूर्य प्रकाशमान् उषादेवीके पीछेसे जाता है, जिस तरह (युवा) पुरुष (युवती) स्त्रीके (पीछेसे जाता है)। जहां देवत्व-प्राप्तिके इच्छुक मनुष्य योग्य कर्म (करते हैं, वहां) उनका एक कल्याणसे दूसरा अधिक कल्याण करनेके लिये (यह सूर्य प्रकाशता है) ॥

३ सूर्यके अश्व (किरण) कल्याण करनेवाले, जलहरण करनेवाले, आनंद देनेवाले और सतत गतिमान् हैं । नमस्कार लेते हुए वे द्युलोकके पृष्ठपर फैलते हैं । ये द्युलोक और पृथ्वीलोकपर तत्कालही फैलते हैं ।।

४ सूर्यका वह देवपन है और वही महत्त्व है । (मनुष्य का) कार्य मध्यमें रहते (हुए भी) अपने फैले हुए किरण (वह) इकट्ठे करता है (और अस्तको जाता है)। जब इसके किरण (घोडे) भूलोकसे वह (अपने रथको) जोडता है, तब रात्रि अपना काला वस्त्र सब (विश्व) पर फैलाती है ॥

× अथर्व. १३,२,३५, २०,१०७,१४ ।
+ ,, २०,१०७,१५ ।
❀ ,, २०,१२३,१ ।

*

तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे ।
अनन्तमन्यद् रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ×५
अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरंहसः पिपृता निरवद्यात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ६

५ तत् मित्रस्य वरुणस्य अभिचक्षे द्योः उपस्थे सूर्यः रूपं कृणुते । अस्य हरितः अनन्तं रुशत् अन्यत् पाजः सं भरन्ति, कृष्णं अन्यत् ॥

६ हे देवाः ! अद्य सूर्यस्य उदिता अवद्यात् अंहसः निः निः पिपृत । नः तत् मित्रः वरुणः अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ममहन्ताम् ॥

५ वह मित्र और वरुणका रूप दीखे, इसलिये द्युलोकके समीप सूर्य अपना रूप प्रकट करता है । इसके किरण (घोडे) अनंत तेजस्वी ऐसा एक प्रकारका रूप (दिनके समय) धारण करते हैं और दूसरा काला (रूप रात्रिके समय धारण करते हैं)।

६ हे देवो ! आज सूर्यके उदयके समयही आप संकटसे और पापसे हमारी सुरक्षा कीजिये और यह हमारी इच्छा मित्र आदि देवोंद्वारा अनुमोदित हो जावे ॥

उषाके पश्चात् सूर्य

उषाके पश्चात् सूर्यका उदय होता है । इस सूक्तमें सूर्यका वर्णन है । सूर्यका उदय हुआ है, सबके आंखोंको प्रकाशका मार्ग दीखने लगा है । सूर्य स्थावर जंगम वस्तु जातका आत्माही है । सूर्य न रहा तो कुछ भी नहीं रहेगा ।

सब प्रकारका जीवन सूर्यसेही मिल रहा है मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, वनस्पति, औषधि, तृण आदि सबका जीवन सूर्यके प्रकाशपरही अवलंबित है ।

प्रथम उषा देवी आती है, उसके पश्चात् सूर्य आता है । इसलिये कविने रूपक किया कि तरुणीके पीछे तरुण भाग रहा है । ब्रह्माका अपनी पुत्रीके पीछे भागनेकी कथा भी इसी दृश्य-पर रची है । सूर्यप्रकाशसेही सब मानवोंके उत्तमसे उत्तम कल्याणकारी यज्ञ सिद्ध होते हैं । इसीलिये कहते हैं कि 'यह सूर्य मनुष्योंके कल्याणके कर्म कराता है ।'

सूर्यके किरण रोगबीजोंका नाश करके मानवोंको आरोग्य देते हैं, इसलिये कल्याणकारी हैं, जलका हरण करके अन्तरिक्ष-में बादलोंको निर्माण करते और वृष्टि भी कराते हैं । येही सब शुभ कर्मोंके प्रेरक हैं ।

सूर्यप्रकाशमें मनुष्य सब अच्छे कर्म करते हैं, पर यह सूर्य किसीके लिये ठहरता नहीं । समयपर अपने किरण समेटता है और चला जाता है और लोगोंको अपने कर्म बंद करके चुप रहना पडता है । इसलिये वे सूर्यका उदय होनेतक विश्राम करते हैं ।

सूर्य द्युलोकपर आगया तो सबके लिये प्रकाश होता है और अस्तको गया तो रात्रि होती है । प्रकाशमय दिन और अंध-कारमयी रात्रि ये दोनों रूप सूर्यकेही दो रूप हैं । सूर्यसे होने-वाले ये कालखण्ड हैं ।

यह सूर्य मानवोंका संरक्षक है । वह संकटों, आपत्तियों और रोगोंसे मानवोंकी सुरक्षा करता है । इसीलिये वह सबका उपास्य है ।

सूर्य जैसा सबको प्रकाशका मार्ग दिखाता है, वैसाही विद्वान् सबको सच्चा उन्नतिका मार्ग दिखावे । मानवके सम्मुख सूर्यका आदर्श वेदने रखा है । सावित्रीकी उपासनाका तत्त्व यही है । यही सूर्य उपासना है । गायत्रीमंत्रका रहस्य भी सूर्यभक्ति-ही है । श्रेष्ठ ब्रह्मचारी 'आदित्य ब्रह्मचारी' ही कहलाता है । अस्तु । इस तरह यह सूक्त बडा बोध दे सकता है । पाठक इसका मनन करें और बोध अपना लें ॥

॥ यहां सूर्य-प्रकरण समाप्त हुआ ॥

× अथर्व. २०,१२३,२ ।

[१०] सोम-प्रकरण

(नवम मण्डल)

(२०) सोम

(ऋ. ९।९७ ४५-५८) पवमानः सोमः । कुत्स आङ्गिरसः । त्रिष्टुप्।

१ सोमः सुतो धारयात्यो न हित्वा सिन्धुर्न निम्नमभि वाज्यक्षाः ।
आ योनिं वन्यमसदत्पुनानः समिन्दुर्गोभिरसरत्समद्भिः ४५

२ एष स्य ते पवत इन्द्र सोमश्चमूषु धीर उशते तवस्वान् ।
स्वर्चक्षा रथिरः सत्यशुष्मः कामो न यो देवयतामसर्जि ४६

३ एष प्रत्नेन वयसा पुनानस्तिरो वर्पांसि दुहितुर्दधानः
वसानः शर्म त्रिवरूथमप्सु होतेव याति समनेषु रेभन् ४७

४ नू नस्त्वं रथिरो देव सोम परि स्रव चम्वोः पूयमानः ।
अप्सु स्वादिष्ठो मधुमाँ ऋतावा देवो न यः सविता सत्यमन्मा ४८

अन्वयः— १ सुतः वाजी सोमः धारया, अत्यः न, हित्वा सिन्धुः न, निम्नं अभि अक्षाः । पुनानः वन्यं योनिं आ असदत् । इन्दुः गोभिः सं, सं अद्भिः असरत् ॥४५॥

२ हे इन्द्र ! उशते ते धीरः तवस्वान् स्यः एषः सोमः चमूषु पवते । स्वर्चक्षाः रथिरः सत्यशुष्मः यः देवयतां कामः न असर्जि ॥४६॥

३ प्रत्नेन वयसा पुनानः, दुहितुः वर्पांसि तिरः दधानः, त्रिवरूथं शर्म वसानः, एषः अप्सु, होता इव, रेभन्, समनेषु याति ॥४७॥

४ हे देव सोम ! रथिरः त्वं नः चम्वोः पूयमानः अप्सु नु परि स्रव । स्वादिष्ठः मधुमान् ऋतावा सविता यः देवः न सत्यमन्मा ॥४८॥

अर्थ— १ निचोडा हुआ बलवर्धक सोमरस धारासे, घोडेके समान और उतारपरसे चलनेवाली नदीके समान, वेगसे चलता है । छाना जानेपर काष्ठके पात्रमें जाकर रहता है । यह सोमरस गोदुग्धके साथ, तथा जलके साथ, मिलता है ॥ ४५ ॥

२ हे इन्द्र ! इच्छा करनेवाले तेरे लिये यह बुद्धिवर्धक और बलवर्धक सोमरस पात्रोंमें छाना जाता है। तेजस्वी दृष्टि-वाला, रथवान्, सत्त्व-सामर्थ्यसे युक्त और देवत्व-प्राप्तिके इच्छुकोंकी कामनाके अनुसार जो (यह सोम) बनाया गया है ॥ ४६ ॥

३ प्राचीन अन्नरसके साथ छाना जानेवाला, द्युलोककी पुत्री (उषा)के आभूषणोंको भी आच्छादित करनेवाला, तीनों स्थानोंमें शान्ति रखनेवाला, यह जलोंमें (मिलाया जाता है) और स्तोताके समान शब्द करता हुआ, जलोंमेंही संचार करता है ॥ ४७ ॥

४ हे सोम देव ! रथमेंसे आनेवाला तू हमारे पात्रोंमें छाना जाता हुआ जलोंमें मिल जा । रुचिकर, मधुर, सत्यपालक और प्रेरक ऐसा जो तू देव है, वही तू अपना सत्यपूर्ण विचार (हमारे पास आने दे) ॥ ४८ ॥

५ अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि मित्रावरुणा पूयमानः ।
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठामभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम् ४९

६ अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः ।
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्याऽभ्यश्वान् रथिनो देव सोम ५०

७ अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः ।
अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यार्षेयं जमदग्निवन्नः ५१

८ अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।
ब्रध्नश्चिदत्र वातो न जूतः पुरुमेधश्चित्तकवे नरं दात् ५२

९ उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे ।
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद्रणाय ५३

---

५ गृणानः वीती वायुं अभि अर्ष । पूयमानः मित्रावरुणा अभि । नरं धीजवनं रथेष्ठां अभि (अर्ष) । वृषणं वज्रबाहुं इन्द्रं अभि (अर्ष) ॥४९॥

६ हे सोम ! सुवसनानि वस्त्रा अभि अर्ष । पूयमानः सुदुघाः धेनूः अभि । चन्द्रा हिरण्या भर्तवे नः अभि । हे देव सोम ! रथिनः अश्वान् अभि (अर्ष) ॥५०॥

७ पूयमानः दिव्या वसूनि नः अभि अर्ष । पार्थिवा विश्वा अभि । येन द्रविणं अभि अश्नवाम । आर्षेयं जमदग्निवत् नः अभि (अर्ष) ॥५१॥

८ हे इन्दो ! अया पवा एना वसूनि पवस्व । मांश्चत्वे सरसि प्र धन्व । अत्र ब्रध्नः चित्, वातः न, जूतः पुरुमेधः चित् नरं तकवे दात् ॥५२॥

९ उत श्रवाय्यस्य श्रुते तीर्थे नः एना पवया अधि पवस्व । नैगुतः षष्टिं सहस्रा वसूनि, रणाय, वृक्षं न पक्वं धूनवत् ॥५३॥

५ स्तुति होनेपर पीनेके पूर्व वायुके साथ मिल जा । शुद्ध होनेपर मित्रावरुणोंके पास जा। नेता बुद्धिमान् और रथमें बैठनेवाले वीरके पास जा और बलिष्ठ वज्रबाहु इन्द्रके पास जा ॥ ४९ ॥

६ हे सोम ! उत्तम पहननेयोग्य वस्त्र हमें दे । छाना जानेपर उत्तम दूध देनेवाली गौवोंके पास जा । उत्तम तेजस्वी सुवर्ण हमारे पोषणके लिये हमें मिले । हे देव सोम ! रथयुक्त घोडे हमें दे ॥ ५० ॥

७ छाना जाता हुआ तू दिव्य धन हमें ला दे। सब पृथ्वीपरकी संपत्ति हमें दे, जिससे हम सब धनका उपभोग लेंगे । ऋषियोंका तेज जमदग्निके समान हमें प्राप्त हो ॥ ५१ ॥

८ हे सोम ! इस शुद्ध धाराके साथ सब धन हमें दे। आह्लाददायक सरोवरमें (रहकर तू) धन्य हो। यहां (सबका) मूल आधार, वायुके समान (वेगवान्), पूजनीय, इन्द्रके समान वीर नेता (पुत्र) प्रगतिशीलको प्राप्त हो ॥ ५२ ॥

९ (हे सोम !) कीर्तिमान् सोमके प्रसिद्ध यज्ञमें हमारे समीप इस शुद्ध धारासे छाना जा । शत्रुओंका नाश करनेवाला (सोम) साठ सहस्र प्रकारके धन, युद्धमें विजयप्राप्तिके लिये, पक्व फलवाला वृक्ष हिलाते हैं उस तरह, हिलाकर हमें देदो ॥५३॥

१० महीमे अस्य वृषनाम शूषे माँश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे।
अस्वापयन्निगुतः स्नेहयच्चापामित्राँ अपाचितो अचेतः ५४

११ सं त्री पवित्रा विततान्येष्यन्वेकं धावसि पूयमानः।
असि भगो असि दात्रस्य दाताऽसि मघवा मघवद्भ्य इन्दो ५५

१२ एष विश्ववित्पवते मनीषी सोमो विश्वस्य भुवनस्य राजा।
द्रप्साँ ईरयन्विदथेष्विन्दुर्वि वारमव्यं समयाति याति ५६

१३ इन्दुं रिहन्ति महिषा अदब्धाः पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः।
हिन्वन्ति धीरा दशभिः क्षिपाभिः समञ्जते रूपमपां रसेन ५७

१४ त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ५८

---

१० इमे अस्य महि वृषनाम शूषे। मांश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे। निगुतः अस्वापयत्, स्नेहयत् च। अमित्रान् अप अच। अचितः इतः अप ॥५४॥

११ हे इन्दो! विततानि त्री पवित्रा सं एषि। पूयमानः एकं अनु धावसि। भगः असि। दात्रस्य दाता असि। मघवद्भ्यः मघवा असि ॥

१२ विश्ववित् मनीषी विश्वस्य भुवनस्य राजा एषः सोमः पवते। विदथेषु द्रप्सान् ईरयन् इन्दुः अव्यं वारं समया वि अति याति ॥५६॥

१३ महिषाः अदब्धाः इन्दुं रिहन्ति। कवयो न गृध्राः पदे रेभन्ति। धीराः दशभिः क्षिपाभिः हिन्वन्ति। रूपं अपां रसेन सं अञ्जन्ते ॥५७॥

१४ हे सोम! पवमानेन त्वया भरे शश्वत् कृतं, वयं वि चिनुयाम। तत् नः मित्रः वरुणः अदितिः सिंधुः पृथिवी उत द्यौः ममहन्ताम् ॥५८॥

१० ये इसके दो बडे (कर्म हैं, एक शत्रुपर बाणोंका) वर्षण (करना और दूसरा शत्रुको) नम्र (करना, ये प्रजाको) सुख देनेवाले हैं। अश्वयुद्धमें तथा बाहुयुद्धमें (शत्रुका) वधही (होता है)। शत्रुओंको (मारकर यह सोम उनको) सुलाता है, अथवा भगाता है। शत्रुओंको भगा दो। अयाजकों-को यहांसे दूर करो ॥५४॥

११ हे सोम! विस्तृत तीन छाननियोंपर तू चढता है। शुद्ध होनेवाला तू एक छाननीपर दौडता है। तू ऐश्वर्यवान् है। तू धनका दाता है। धनवानोंसे भी ऐश्वर्यवान् है ॥५५॥

१२ सर्वज्ञ, मननशील, सब भुवनोंका राजा यह सोम छान जाता है। यज्ञोंमें बूंदोंसे गिरनेवाला सोम, उनकी छाननीमेंसे सब ओरसे टपक रहा है ॥५६॥

१३ महान् अहिंसनीय सोमका स्वाद (देव) लेते हैं। कवि लोग लुब्ध जनोंके समान पदका गान करते हैं। ज्ञानी लोग दसों अंगुलियोंसे रस निकालते हैं। वह सुंदर (रस) जलके रसके साथ मिला देते हैं ॥५७॥

१४ हे सोम! छाने गये तुझके द्वारा युद्धमें सदाही (हमने बडे पराक्रम) किये, (उस यशोधनको) हम संगृहीत करके रखेंगे। यह हमारी इच्छा सफल करनेके लिये मित्र आदि देव अनुमोदन करें ॥५८॥

सोमरसका पान

सोमरसका पान करनेके विषयमें इस सूक्तमें निम्नलिखित निर्देश हैं—

१ रथिरः । (मं. २, ४) सोमवल्लीको रथमें रखकर यज्ञ-स्थानतक बडे समारोहसे लाते हैं ।

पश्चात् इस सोमवल्लीको फट्टेपर रखकर पत्थरोंसे कूटते हैं, अच्छी तरह कुटा जानेपर—

२ धीराः दक्षभिः क्षिपाभिः हिन्वन्ति । (१३)— ज्ञानी लोग उस कूटे हुए सोमको दोनों हाथोंकी दसों अंगुलियोंसे अच्छी तरह दबाते और उससे रस निकाल लेते हैं ।

३ इन्दुः द्रप्सान् ईरयन् । (१२)- सोमसे इस समय रसकी बूंदें नीचे टपकने लगती हैं । इन बूंदोंकी आगे धारा बनती है—

४ अया पवा पवस्व । (८)- इस धारासे नीचे जा—

५ एना पवया अधिपवस्व । (९) ,, ,,

६ सुतः सोमः धारया निम्नं अभि अक्षाः (१)- सोमसे रस निचोडकर धारासे वह नीचे उतरता है, (**सिन्धुः न**) जैसी नदी नीचे आती है ।

७ पुनानः वन्यं योनिं आसदत् । (१)- छाना जाकर लकडीके पात्रमें वह रहता है, रखा जाता है ।

८ एषः सोमः चमूषु पवते (२)- यह सोम पात्रोंमें छाना जाता है ।

९ चम्वोः पूयमानः (४)- पात्रोंमें छाना जाता है, इस तरह छाननेके लिये यह—

१० इन्दुः अव्यं वारं वि अति याति । (१२)— सोमरस ऊनकी छाननीपरसे नीचे आता है, ऊनकी छननीसे, कंबलमेंसे छाना जाता है ।

११ पूयमानः एकं अनु धावसि वितता त्री पवित्रा सं एषि । (११) छाननेके समय एक छाननीसे यह रस नीचे दौडता है, और फैलाये तीन छाननियोंसे छाना जाता है । इस समय यह—

१२ इन्दुः आद्भिः सं असरत् । (१)- सोमरस जलके साथ मिलाया जाता है ।

१३ हे सोम ! अप्सु परि स्रव । (४) हे सोम ! जलके साथ मिल । सोम जलके साथ मिलाया जावे । इस तरह यह सोमरस जलके साथ मिलाया जाता है ।

१४ रूपं अपां रसेन सं अञ्जते (१३)— सोमका रूप जलोंके रसके साथ मिल जाता है, रसमें जल मिलाया जाता है पश्चात्—

१५ इन्दुः गोभिः सं असरत् । (१)— सोमरस गौओंके साथ मिलकर चलता है, गौके दूधसे मिलाया जाता है ।

१६ पूयमानः सुदुघाः धेनूः अभि अर्ष । (६)— छाना जानेवाला सोम उत्तम दूध देनेवाली गौओंके पास जाता है, गौओंके दूधसे मिलाया जाता है ।

इस तरह जल और गोदुग्धके साथ सोमरस मिलनेके बाद वह–

१७ वीती वायुं अभि अर्ष । (५)- पीनेके पूर्व वायुमें उसे उण्डेला जाय । एक पात्रसे दूसरे पात्रमें सोमरस उण्डेल गया तो उसमें वायु मिलती है और पीनेके लिये स्वादु बनती है । पश्चात् यह मित्रावरुण, नेता अश्विदेव, बलिष्ठ इन्द्र आदि देवताओंको अर्पण किया जाता है और इसके पश्चात् ऋत्विज् इसका पान करते हैं ।

१८ यह सोम (**धीरः** २) बुद्धिवर्धक, (**तवस्वान्** २) शक्ति बढानेवाला, (**स्वः-चक्षाः** २) दृष्टि-शक्ति बढानेवाला, (**सत्य-शुष्मः**) स्थिर बलवाला, स्थायी बल देनेवाला, (**स्वादिष्ठः** ४) रुचिकर, स्वादु, (**मधुमान्**) मीठा, (**ऋतावा** ४) सरल भाव बढानेवाला, (**ब्रध्नः** ८) मूल आधार, बलका आधारस्तंभ, (**नैगुतः** ९, **निगुतः** १०) शत्रुओंका नाश करनेवाला, (**विश्ववित् मनीषी** १२) सर्वज्ञ ज्ञानी, बुद्धिवर्धक ये सोमके गुण इस सूक्तमें वर्णन किये हैं ।

१९ त्रिवरूथं शर्म वसानः । (३)- स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीरोंमें शान्ति सुस्थिर करनेवाला है ।

इसके पीनेसे शक्ति बढती है, शत्रुसे युद्ध किये जाते हैं और शत्रु परास्त किये जाते हैं–

२० नैगुतः षष्टिं सहस्रा वसूनि धूनवत् । (९)— शत्रुके साठ हजार प्रकारके धन बलसे प्राप्त किये, जिस तरह (**वृक्षं न पक्वं**) पक्व फलवाले वृक्षको हिलाकर फल प्राप्त किये जाते हैं, उस तरह शत्रुको हिलाकर उससे सब धन लाये गये ।

२१ पवमानेन भरे कृतं, वयं चिनुयाम (१४)= सोम रसने युद्धमें बडा शौर्य दिखाया, उसके फलोंको हम इकट्ठा करके अपने पास रखते हैं।

२२ अस्य महि वृष-नाम (१०) = इस सोमके दो बडे कार्य हैं, एक (वृष) शत्रुपर बाणोंका वर्षण करना और (नाम) दूसरा शत्रुको नम्र करना। ये सोम पीनेसे होते हैं ये दोनों (वृषे) सुखदायी हैं, जनताका सुख बढाते हैं।

२३ माँश्चत्वे, पृशने वा वधत्रे (१०) = अश्वयुद्धमें, बाहुयुद्धमें (मल्लयुद्धमें), तथा वध करनेके अन्य प्रकारके साधनोंमें सोमपानसे बल बढता है। और—

२४ निगुतः अस्वापयत् (१०)= सोम शत्रु-सैनिकोंका वध करके उनको सुलाता है,

२५ अमित्रान् अप अच (१०)= शत्रुको दूर भगाता है,

२६ अचितः इतः अप अच (१०)= अयाजकों, नास्तिकोंको भगा देता है,

२७ अमित्रान् स्नेहयत् (१०)= शत्रुओंका वध करता है (स्निह्–वध करना)

सोमके वर्णनमें जो अन्य मंत्रभाग हैं, वे पाठक अर्थोंके मननसे समझ सकते हैं, इसलिये उनका अधिक विवरण करनेकी आवश्यकता नहीं है।

॥ यहां सोम-प्रकरण समाप्त हुआ ॥

---

(११) ब्रह्म-विद्या

(२१) ज्येष्ठब्रह्मवर्णनम्।

१-४४ कुत्सः। आत्मा। त्रिष्टुप्; १ उपरिष्टाद्विराड्बृहती २ बृहतीगर्भानुष्टुप्; ५ भुरिगनुष्टुप्; ६, १४, १९-२१, २३, २५, २९, ३१-३४, ३७-३८, ४१, ४३ अनुष्टुप्; ७ पराबृहती; १० अनुष्टुब्गर्भा; ११ जगती; १२ पुरोबृहती त्रिष्टुब्गर्भार्षी पङ्क्तिः, १५, २७ भुरिग्बृहती; २२ पुरउष्णिक्; २६ त्र्यनुष्टुब्गर्भानुष्टुप्; ३० भुरिक्; ३९ बृहतीगर्भा; ४२ विराड् गायत्री।

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति। स्व१र्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः १

स्कम्भेनेमे विष्टभिते द्यौश्च भूमिश्च तिष्ठतः। स्कम्भ इदं सर्वमात्मन्वद्यत्प्राणन्निमिषच्च यत् २

अन्वयः- १ यः भूतं च भव्यं च यः च सर्वं अधितिष्ठति। यस्य च केवलं स्वः, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥१॥

२ इमे स्कंभेन वि-स्तभिते द्यौः च भूमिः च तिष्ठतः। यत् प्राणत् यत् निमिषत् च इदं सर्वं आत्मन्वत् स्कंभे॥२॥

अर्थ- १ जो भूत कालके और भविष्य कालके तथा वर्तमान कालके भी, सबपर आधिष्ठाता होकर रहता है, जिसका स्वरूप केवल प्रकाशमय है, उस श्रेष्ठ ब्रह्मके लिये नमस्कार है॥ १॥

२ इस सर्वाधार परमात्माने थांमे हुए द्युलोक और भूमि ये ठहरे हैं, जो प्राण धारण करता है और जो आंखें झपकता है, यह सब आत्मासे युक्त विश्व स्कंभमें है॥ २॥

तिस्रो ह प्रजा अत्यायमायन्न्य१न्या अर्कमभितोऽविशन्त ।
बृहन्ह तस्थौ रजसो विमानो हरितो हरिणीरा विवेश ॥ ३ ॥
द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत ।
तत्राहतास्त्रीणि शतानि शङ्कवः षष्टिश्च खीला अविचाचला ये ॥ ४ ॥
इदं सवितर्वि जानीहि षड्यमा एक एकजः ।
तस्मिन्हापित्वमिच्छन्ते य एषामेक एकजः ॥ ५ ॥
आविः सन्निहितं गुहा जरन्नाम महत्पदम् ।
तत्रेदं सर्वमार्पितमेजत्प्राणत्प्रतिष्ठितम् ॥ ६ ॥
एकचक्रं वर्तत एकनेमि सहस्राक्षरं प्र पुरो नि पश्चा ।
अर्धेन विश्वं भुवनं जजान यदस्यार्धं क्व१ तद् बभूव ॥ ७ ॥
पञ्चवाही वहत्यग्रमेषां प्रष्टयो युक्ता अनुसंवहन्ति ।
अयातमस्य ददृशे न यातं परं नेदीयोऽवरं दवीयः ॥ ८ ॥

---

३ तिस्रः ह प्रजा अत्यायं आयन् अन्या अर्कं अभितः नि आविशन्त । बृहन् ह रजसः विमानः तस्थौ हरिणीः हरितः आविवेश ॥ ३ ॥

४ द्वादश प्रधयः, एकं चक्रं, त्रीणि नभ्यानि, कः ऊं तत् चिकेत । तत्र त्रीणि शतानि षष्टिः च शङ्कवः आहताः खीलाः ये अविचाचलाः ॥ ४ ॥

५ सवितः इदं विजानीहि, षट् यमा एकः एकजः । यः एषां एकजः एकः तस्मिन् ह आपित्वं इच्छन्ते ॥ ५ ॥

६ गुहा जरन् नाम महत्, पदं आविः संनिहितं । एजत् प्राणत् तत्र इदं सर्वं अर्पितं प्रतिष्ठितम् ॥ ६ ॥

७ एकचक्रं एकनेमि वर्तते सहस्र-आरं प्र पुरः नि पश्चा । अर्धेन विश्वं भुवनं जजान यत् अस्य अर्धं क तत् बभूव ॥ ७ ॥

८ एषां पञ्चवाहि, अग्रं वहति, प्रष्टयः युक्ताः अनुसंवहन्ति। अस्य अयातं ददृशे, न यातं, परं नेदीयः, अवरं दवीयः ॥ ८ ॥

३ तीन प्रकारकी प्रजाएं अतिक्रमणको प्राप्त होती हैं, एक प्रकारकी सूर्यको प्राप्त होती है, दूसरी बडे रजोलोकको मापती हुए रहती है, और तीसरी हरण करनेवाली हरिद्वर्ण-भूमिको प्रविष्ट होती है ॥ ३ ॥

४ बारह प्रधियां हैं, एक चक्र है, तीन नाभियां हैं, कौन भला इसे जानता है ? इस चक्रमें तीन सौ साठ खूटियां लगायीं हैं और इतने ही खील लगाये हैं, जो हिलनेवाले नहीं हैं ॥ ४ ॥

५ हे सविता! यह तू जान, कि यहां छः जोडे हैं और एक अकेला है । जो इनमें अकेला एक है उसमें निश्चयसे अपना सम्बन्ध जोडनेकी इच्छा अन्य करते हैं ॥ ५ ॥

६ गुहामें संचार करनेवाला जो बडा प्रसिद्ध स्थान है, वह प्रकट होने योग्य संनिध भी है, जो कांपनेवाला और प्राण-वाला है, वह वहीं इस गुहामें समर्पित और प्रतिष्ठित है ॥ ६ ॥

७ एक चक्र एकही मध्यनाभीवाला है, जो हजारों आरोंसे युक्त आगे और पीछे होता है । आधेसे सब भुवन बनाये हैं और जो इसका आधा भाग है, वह कहां रहा है? ॥ ७ ॥

८ इनमें जो पांचोंसे उठायी जानेवाली है, वह अन्त तक पहुंचती है । जो घोडे जोते हैं, वे ठीक प्रकार उठा रहे हैं। इनका 'न चलना' ही दीखता है, परन्तु चलना नहीं दीखता। तथा बहुत दूरका बहुत समीप है और जो पास है, वही अति दूर है ॥ ८ ॥

तिर्यग्बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्नस्तस्मिन्यशो निहितं विश्वरूपम् ।
तदासत ऋषयः सप्त साकं ये अस्य गोपा महतो बभूवुः ॥ ९ ॥
या पुरस्ताद्युज्यते या च पश्चाद्या विश्वतो युज्यते या च सर्वतः ।
यया यज्ञः प्राङ् तायते तां त्वा पृच्छामि कतमा सर्चाम् ॥ १० ॥
यदेजति पतति यच्च तिष्ठति प्राणदप्राणन्निमिषच्च यद्भुवत् ।
तद्दाधार पृथिवीं विश्वरूपं तत्संभूय भवत्येकमेव ॥ ११ ॥
अनन्तं विततं पुरुत्रानन्तमन्तवच्चा समन्ते ।
ते नाकपालश्चरति विचिन्वन्विद्वान्भूतमुत भव्यमस्य ॥ १२ ॥
प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरदृश्यमानो बहुधा वि जायते ।
अर्धेन विश्वं भुवनं जजान यदस्यार्धं कतमः स केतुः ॥ १३ ॥
ऊर्ध्वं भरन्तमुदकं कुम्भेनेवोदहार्यम् ।
पश्यन्ति सर्वे चक्षुषा न सर्वे मनसा विदुः ॥ १४ ॥

---

९ तिर्यग्बिलः ऊर्ध्वबुध्नः चमसः, तस्मिन् विश्वरूपं यशः निहितं। तत् सप्त ऋषयः साकं आसत, ये अस्य महतः गोपाः बभूवुः ॥ ९ ॥

१० या पुरस्तात् युज्यते, या च पश्चात्, या विश्वतो युज्यते या च सर्वतः। यया यज्ञः प्राङ् तायते तां त्वा पृच्छामि ऋचां सा कतमा ? ॥ १० ॥

११ यत् एजति, पतति, यत् च तिष्ठति, यत् प्राणत् अप्राणत् निमिषत् च भुवत्, तत् विश्वरूपं पृथिवीं दाधार, तत् संभूय एकं एव भवति ॥ ११ ॥

१२ अनन्तं पुरुत्रा विततं, अनन्तं अन्तवत् च समन्ते। अस्य भूतं उत भव्यं ते विचिन्वन् विद्वान्, नाकपालः चरति ॥ १२ ॥

१३ प्रजापतिः अदृश्यमानः गर्भे अन्तः चरति, बहुधा विजायते, अर्धेन विश्वं भुवनं जजान, यत् अस्य अर्धं सः कतमः केतुः ? ॥ १३ ॥

१४ कुम्भेन उदकं ऊर्ध्वं भरन्तं उदहार्यं इव। सर्वे चक्षुषा पश्यन्ति, सर्वे मनसा न विदुः ॥ १४ ॥

९ तिरछे मुखवाला और ऊपर पृष्ठभागवाला एक पात्र है। उसमें नाना रूपवाला यश रखा है। वहां साथ साथ सात ऋषि बैठे हैं जो इस महानुभावके संरक्षक हैं ॥ ९ ॥

१० जो आगे और पीछे जुडी रहती है, जो चारों ओरसे सब प्रकार जुडी रहती है। जिससे यज्ञ पूर्वकी ओर फैलाया जाता है, इस विषयमें मैं तुझे पूछता हूं ऋचाओंमें वह कौनसी है? १०

११ जो कांपता है, गिरता है, और जो स्थिर रहता है, जो प्राण धारण करनेवाला, प्राणरहित और जो निमेषोन्मेष करता है और जो होता है, वह विश्वरूपी सत्त्व इस पृथ्वीका धारण करता है, वह सब मिलकर एक ही होता है ॥ ११ ॥

१२ अनन्त चारों ओर फैला है, अनन्त और अन्तवाला ये दोनों एक दूसरेसे मिले हैं। एकके भूतकालीन और भविष्य-कालीन तथा वर्तमानकालीन सब वस्तुमात्रके संबंधमें विवेक करता हुआ और पश्चात् सबको जानता हुआ, सुखपालक चलता है ॥ १२ ॥

१३ प्रजापति अदृश्य होता हुआ गर्भके अन्दर संचार करता है, और वह अनेक प्रकारसे उत्पन्न होता है। अर्ध भागसे सब भुवनोंको उत्पन्न करता है, जो इसका दूसरा आधा है, उसका चिह्न क्या है ! ॥ १३ ॥

१४ जैसा घडेसे जलको भरकर ऊपर लानेवाला कहार होता है। सब आंखसे देखते हैं, परन्तु सब मनसे नहीं जानते ॥ १४ ॥

*

दूरे पूर्णेन वसति दूर ऊनेन हीयते ।
महद्यक्षं भुवनस्य मध्ये तस्मै बलिं राष्ट्रभृतो भरन्ति १५
यतः सूर्य उदेत्यस्तं यत्र च गच्छति ।
तदेव मन्येऽहं ज्येष्ठं तदु नात्येति किं चन १६
ये अर्वाङ्मध्य उत वा पुराणं वेदं विद्वांसमभितो वदन्ति ।
आदित्यमेव ते परि वदन्ति सर्वे अग्निं द्वितीयं त्रिवृतं च हंसम् १७
सहस्राह्ण्यं वियतावस्य पक्षौ हरेर्हंसस्य पततः स्वर्गम् ।
स देवान्त्सर्वानुरस्युपदद्य संपश्यन्याति भुवनानि विश्वा १८
सत्येनोर्ध्वस्तपति ब्रह्मणार्वाङ् वि पश्यति ।
प्राणेन तिर्यङ् प्राणति यस्मिन् ज्येष्ठमधि श्रितम् १९
यो वै ते विद्यादरणी याभ्यां निर्मथ्यते वसु ।
स विद्वान् ज्येष्ठं मन्येत स विद्याद्ब्राह्मणं महत् २०
अपादग्रे समभवत्सो अग्रे स्व१राभरत् । चतुष्पाद्भूत्वा भोग्यः सर्वमादत्त भोजनम् २१

---

१५ पूर्णेन दूरे वसति, ऊनेन दूरे हीयते, भुवनस्य मध्ये महत् यक्षं, तस्मै राष्ट्रभृतः बलिं भरन्ति ॥ १५ ॥

१६ यतः सूर्यः उदेति, यत्र च अस्तं गच्छति, तत् एव अहं ज्येष्ठं मन्ये, तत् उ किं चन न अत्येति ॥ १६ ॥

१७ ये अर्वाङ् मध्ये उत वा पुराणं वेदं विद्वांसं अभितः वदन्ति, ते सर्वे आदित्यं एव परि वदन्ति, द्वितीयं अग्निं त्रिवृतं च हंसम् ॥ १७ ॥

१८ अस्य हरेः हंसस्य स्वर्गं पततः पक्षौ सहस्राह्ण्यं वियतौ, सः सर्वान् देवान् उरसि उपदद्य विश्वा भुवनानि संपश्यन् याति ॥ १८ ॥

१९ सत्येन ऊर्ध्वः तपति, ब्रह्मणा अर्वाङ् विपश्यति, प्राणेन तिर्यङ् प्राणति, यस्मिन् ज्येष्ठं अधि श्रितं ॥ १९ ॥

२० यः वै ते अरणी विद्यात्, याभ्यां वसु निर्मथ्यते, सः विद्वान् ज्येष्ठं मन्यते, सः महत् ब्राह्मणं विद्यात् ॥ २० ॥

२१ अग्रे अपात् सं अभवत्, सः अग्रे स्वः आभरत्, चतुष्पाद् भोग्यः भूत्वा सर्वं भोजनं आदत्त ॥ २१ ॥

१५ पूर्ण होने पर भी दूर रहता है, न्यून होनेपर भी दूर ही रहता है । विश्वके बीचमें बडा पूज्य देव है, इसके लिये राष्ट्रसेवक अपना बलिदान करते हैं ॥ १५ ॥

१६ जहांसे सूर्य उगता है, और जहां अस्तको जाता है, वही श्रेष्ठ है, ऐसा मैं मानता हूं, उसका अतिक्रमण कोई नहीं करता ॥ १६ ।

१७ जो उरेवाले बीचके अथवा पुराणे वेदवेत्ताकी चारों ओरसे प्रशंसा करते हैं, वे सब आदित्यकी ही प्रशंसा करते हैं, दूसरा अग्नि और त्रिवृत हंसकी ही प्रशंसा करते हैं ॥ १७ ॥

१८ इस हंसको स्वर्गको जाते हुए इसके दोनों पक्ष सहस्र दिनोंतक फैलाये रहते हैं । वह सब देवोंको अपनी छातीपर लेकर सब भुवनोंको देखता हुआ जाता है ॥ १८ ॥

१९ सत्यके साथ ऊपर तपता है, ज्ञानसे नीचे देखता है । प्राणसे तिरछा प्राण लेता है, जिसमें श्रेष्ठ ब्रह्म रहता है ।१९।

२० जो इन दोनों अरणियोंको जानता है, जिससे वसु निर्माण किया जाता है । वह ज्ञानी ज्येष्ठ ब्रह्मको जानता है और वह बडे ब्रह्मको भी जानता है ॥ २० ॥

२१ प्रारंभमें पादरहित आत्मा एकही था । वह प्रारंभमें स्वात्मानंद भरता रहा । वही चार पांववाला भोग्य होकर सब भोजनको प्राप्त करने लगा ॥ २१ ॥

भोग्यो भवदथो अन्नमदद्बहु । यो देवमुत्तरावन्तमुपासातै सनातनम् ॥ २२
सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात्पुनर्णवः ।
अहोरात्रे प्र जायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः ॥ २३
शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदमसंख्येयं स्वमस्मिन्निविष्टम् ।
तदस्य घ्नन्त्यभिपश्यत एव तस्माद्देवो रोचत एष एतत् ॥ २४
बालादेकमणीयस्कमुतैकं नेव दृश्यते । ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया ॥ २५
इयं कल्याण्य१जरा मर्त्यस्यामृता गृहे । यस्मै कृता शये स यश्चकार जजार सः ॥ २६
त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी ।
त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः ॥ २७
उतैषां पितोत वा पुत्र एषामुतैषां ज्येष्ठ उत वा कनिष्ठः ।
एको ह देवो मनसि प्रविष्टः प्रथमो जातः स उ गर्भे अन्तः ॥ २८
पूर्णात्पूर्णमुदचति पूर्णं पूर्णेन सिच्यते ।
उतो तदद्य विद्याम यतस्तत्परिषिच्यते ॥ २९

२२ भोग्यः अभवत्, अथो बहु अन्नं अदत्, यः सनातनं उत्तरावन्तं देवं उपासातै ॥ २२ ॥

२३ एनं सनातनं आहुः, उत अद्य पुनः नवः स्यात्, अन्यः अन्यस्य रूपयोः अहो-रात्रे प्रजायते ॥ २३ ॥

२४ शतं सहस्रं अयुतं न्यर्बुदं असंख्येयं स्वं अस्मिन् निविष्टम् । अस्य अभिपश्यतः एव तत् घ्नन्ति, तस्मात् एष देवः एतत् रोचते ॥ २४ ॥

२५ एकं बालात् अणीयस्कं उत एकं नेव दृश्यते, ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया ॥ २५ ॥

२६ इयं कल्याणी अजरा मर्त्यस्य गृहे अमृता, यस्मै कृता सः शये, यः चकार सः जजार ॥ २६ ॥

२७ त्वं स्त्री त्वं पुमान् असि, त्वं कुमारः उत वा कुमारी, त्वं जीर्णः दण्डेन वञ्चसि, त्वं जातः विश्वतो मुखः भवसि ॥२७

२८ उत एषां पिता उत वा एषां पुत्रः, एषां ज्येष्ठः उत वा कनिष्ठः, एकः ह देवः मनसि प्रविष्टः प्रथमः जात स उ गर्भे अन्तः ॥ २८ ॥

२९ पूर्णात् पूर्णं उदचति, पूर्णं पूर्णेन सिच्यते, उतो अद्य तत् विद्याम, यतः तत् परिषिच्यते ॥२९॥

२२ वह भोग्य हुआ, बहुत अन्न खाने लगा । जो सनातन और श्रेष्ठ देवकी उपासना करता है ॥ २२ ॥

२३ इसे सनातन कहते हैं, और वह आज ही फिर नया होता है । इससे परस्पर विरुद्ध रूपके दिन और रात्र होते हैं ॥२३॥

२४ सौ, हजार, दस हजार, लाख अथवा असंख्य स्वत्व इसमें है । इसके देखते देखते ही वह सत्व आघात करता है, इससे यह देव इसको प्रकाशित करता है ॥ २४ ॥

२५ एक बालसे भी सूक्ष्म है, और दूसरा दीखता ही नहीं । इससे जो दोनोंको आलिंगन देनेवाली देवता है, वह मुझे प्रिय है ॥ २५ ॥

२६ यह कल्याण करनेवाली अक्षय है, मरनेवालेके घरमें अमर है । जिसके लिये की जाती है, वह लेटता है, और जो करता है वह वृद्ध होता है ॥ २६ ॥

२७ तू स्त्री है और तू ही पुरुष है । तू लडका है और लडकी भी तूही है । तू वृद्ध होनेपर दण्डके सहारे चलता है, तू प्रकट होकर सब ओर मुखवाला होता है ॥२७॥

२८ इनका पिता, और इनका पुत्र इनमें ज्येष्ठ अथवा कनिष्ठ, यह सब एकही देव मनमें प्रविष्ट होकर पहिले जो हुआ था, वही फिर गर्भमें आता है ॥ २८ ॥

२९ पूर्णसे पूर्ण होता है, पूर्ण ही पूर्णके द्वारा सींचा जाता है, अब आज वह हम जानें, कि जहांसे वह सींचा जाता है ॥२९॥

एषा सनत्नी सनमेव जातैषा पुराणी परि सर्वं बभूव ।
मही देव्यु१षसो विभाती सैकेनैकेन मिषता वि चष्टे ॥ ३० ॥

अविर्वै नाम देवतर्तेनास्ते परीवृता ।
तस्या रूपेणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रजः ॥ ३१ ॥

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति ।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति ॥ ३२ ॥

अपूर्वेणेषिता वाचस्ता वदन्ति यथायथम् ।
वदन्तीर्यत्र गच्छन्ति तदाहुर्ब्राह्मणं महत् ॥ ३३ ॥

यत्र देवाश्च मनुष्याश्चारा नाभाविव श्रिताः ।
अपां त्वा पुष्पं पृच्छामि यत्र तन्मायया हितम् ॥ ३४ ॥

येभिर्वात इषितः प्रवाति ये ददन्ते पञ्च दिशः सध्रीचीः ।
य आहुतिमत्यमन्यन्त देवा अपां नेतारः कतमे त आसन् ॥ ३५ ॥

---

३० एषा सनत्नी, सनं एव जाता, एषा पुराणी सर्वं परि बभूव, मही देवी उषसः विभाति, सा एकेन-एकेन मिषता विचष्टे ॥३०॥

३१ अविः वै नाम देवता, ऋतेन परिवृता आस्ते, तस्याः रूपेण इमे वृक्षाः हरिताः हरितस्रजः ॥३१॥

३२ अन्ति सन्तं न जहाति, अन्ति सन्तं न पश्यति, देवस्य पश्य काव्यं, न ममार न जीर्यति ॥३२॥

३३ अपूर्वेण इषितः वाचः, ताः यथायथं वदन्ति, वदन्तीः यत्र गच्छन्ति, तत् महत् ब्राह्मणं आहुः ॥३४॥

३४ देवाः च मनुष्याः च, नाभौ आराः इव यत्र श्रिताः, अपां पुष्पं त्वा पृच्छामि, यत्र तत् मायया हितम् ॥३४॥

३५ येभिः इषितः वातः प्रवाति, ये सध्रीचीः पञ्च प्रदिशः ददन्ते, ये देवाः आहुतिं अति अमन्यन्त, ते अपां नेतारः कतमे आसन् ॥३५॥

३० यह सनातन शक्ति है, सनातन कालसे विद्यमान है। यही पुरानी शक्ति सब कुछ बनी है, यही बडी उषाओंको प्रकाशित करती है, वह अकेले अकेले प्राणीके साथ दीखती है।३०।

३१ रक्षणकर्त्री नामक एक देवता है, वह सत्यसे घेरी हुई है। उसके रूपसे ये सब वृक्ष हरे और हरे पत्तोंवाले हुए हैं ॥ ३१ ॥

३२ समीप होनेपर भी वह छोडता नहीं, और वह समीप होनेपर भी दीखता नहीं। इस देवका यह काव्य देखो, जो नहीं मरता और नहीं जीर्ण होता है ॥ ३२ ॥

३३ जिसके पूर्व कोई नहीं है, इस देवताने प्रेरित की ये वाचाएं हैं, वह वाणियां यथायोग्य वर्णन करती हैं। बोलती हुई जहां पहुंचती हैं, वह बडा ब्रह्म है, ऐसा कहते हैं। ३३।

३४ देव और मनुष्य नाभिमें आरे लगनेके समान जहां आश्रित हुए हैं, इस आप्‌तत्वके पुष्पको मैं तुझे पूछता हूं, कि जहां वह मायासे आच्छादित होकर रहता है ॥ ३४ ॥

३५ जिनसे प्रेरित हुआ वायु बहता है, जो मिली जुली पांचों दिशायें धारण करते हैं, जो देव आहुतिको अधिक मानते हैं, वे जलोंके नेता कौनसे हैं ? ॥ ३५ ॥

इमामेषां पृथिवीं वस्त एकोऽन्तरिक्षं पर्येको बभूव ।
दिवमेषां ददते यो विधर्ता विश्वा आशाः प्रति रक्षन्त्येके ३६
यो विद्यात्सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः ।
सूत्रं सूत्रस्य यो विद्यात्स विद्याद् ब्राह्मणं महत् ३७
वेदाहं सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः ।
सूत्रं सूत्रस्याहं वेदाथो यद् ब्राह्मणं महत् ३८
यदन्तरा द्यावापृथिवी अग्निरैत्प्रदहन्विश्वदाव्यः ।
यत्रातिष्ठन्नेकपत्नीः परस्तात्क्वेवासीन्मातरिश्वा तदानीम् ३९
अप्स्वासीन्मातरिश्वा प्रविष्टः प्रविष्टा देवाः सलिलान्यासन् ।
बृहन्ह तस्थौ रजसो विमानः पवमानो हरित आ विवेश ४०
उत्तरेणेव गायत्रीममृतेऽधि वि चक्रमे । साम्ना ये साम संविदुरजस्तद्ददृशे क्व ४१
निवेशनः संगमनो वसूनां देव इव सविता सत्यधर्मा ।
इन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम् ४२

---

३६ एषां एकः इमां पृथिवीं वस्ते, एकः अन्तरिक्षं परिबभूव, एषां यः विधर्ता दिवं ददते, एके विश्वाः आशाः प्रति रक्षति ॥३६॥

३७ यस्मिन् इमाः प्रजाः ओताः, यः विततं सूत्रं विद्यात्, सूत्रस्य सूत्रं यः विद्यात्, सः महत् ब्राह्मणं विद्यात् ॥३७॥

३८ यस्मिन् इमाः प्रजाः ओताः, अहं विततं सूत्रं वेद, सूत्रस्य सूत्रं अहं वेद, अथो यत् महत् ब्राह्मणम् ॥३८॥

३९ यत् द्यावापृथिवी अन्तरा विश्वदाव्यः प्रदहन् अग्निः ऐत्, यत्र परस्तात् एकपत्नीः अतिष्ठन्, तदानीं मातरिश्वा क्व इव आसीत् ॥३९॥

४० मातरिश्वा अप्सु प्रविष्टः आसीत्, देवाः सलिलानि प्रविष्टाः आसन् बृहन्, ह रजसः विमानः तस्थौ, पवमानः हरितः आविवेश ॥४०॥

४१ उत्तरेण इव अमृते अधि गायत्रीं अधिविचक्रमे ये साम्ना साम सं विदुः, तत् अजः क्व ददृशे ॥४१॥

४२ सत्यधर्मा सविता देवः इव वसूनां संगमनः निवेशनः, धनानां समरे इन्द्रः न तस्थौ ॥४२॥

३६ इनमेंसे एक इस पृथ्वीवर रहता है, एक अन्तरिक्षमें व्यापता है, इनमें जो धारक है. वह द्युलोकका धारण करता है और कुछ सब दिशाओंकी रक्षा करते हैं ॥ ३६ ॥

३७ जिसमें ये सब प्रजा पिरोयी है, जो इस फैले सूत्रको जानता है, और सूत्रके सूत्रको जो जानता है, वह बडे ब्रह्मको जानता है ॥ ३७ ॥

३८ जिसमें ये प्रजाएं पिरोयी हैं, मैं यह फैला हुआ सूत्र जानता हूं। सूत्रका सूत्र भी मैं जानता हूं और जो बडा ब्रह्म है, वह भी मैं जानता हूं ॥ ३८ ॥

३९ जो द्युलोक और पृथ्वीके बीचमें विश्वको जलानेवाला अग्नि होता है, जहां दूर तक एकपत्नीही रहती है, उस समय वायु कहां था ? ॥ ३९ ॥

४० वायु जलोंमें प्रविष्ट था, सब देव जलोंमें प्रविष्ट थे, उस समय बडा ही रजका विशेष प्रमाण था, और वायु सूर्य-किरणोंके साथ था ॥ ४० ॥

४१ उच्चतर रूपसे अमृतमें गायत्रीको विशेष रीतिसे प्राप्त करते हैं । जो सामसे साम जानते हैं, वह अजन्माने कहां देखा ? ॥ ४१ ॥

४२ सत्यके धर्मसे युक्त सवितादेवके समान सब धनोंका देनेवाला और निवासका हेतु है, वह धनोंके युद्धमें इन्द्रके समान स्थिर रहता है ॥ ४२ ॥

पुण्डरीकं नवद्वारं त्रिभिर्गुणेभिरावृतम्। तस्मिन्यद्यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः ४३
अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः।
तमेव विद्वान्न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम् ४४

४३ नवद्वारं पुण्डरीकं त्रिभिः गुणेभिः आवृतं, तस्मिन् यत् आत्मन्वत् यक्षं तत् वै ब्रह्मविदः विदुः ॥४३॥

४४ अकामः धीरः अमृतः स्वयंभूः रसेन तृप्तः न कुतश्चन ऊनः, तं एव विद्वान् मृत्योः न बिभाय, आत्मानं धीरं अजरं युवानं ॥४४॥

४३ नव द्वारवाला कमल सत्व-रज-तम इन तीन गुणोंसे घेरा हुआ है। उसमें जो आत्मावाला पूज्य देव है, उसे ब्रह्मज्ञानी जानते हैं ॥ ४३ ॥

४४ निष्काम, धीर, अमर, स्वयंभू, रससे सन्तुष्ट वह देव कहांसे भी न्यून नहीं है। उसे जाननेवाला ज्ञानी मृत्युसे डरता नहीं, क्योंकि वही धीर अजर युवा आत्मा है ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठ ब्रह्मका सम्यक् दर्शन

शौनकीय अथर्ववेदमें (काण्ड १०, सू० ८ में) तथा पिप्पलादीय अथर्ववेदमें (काण्ड १६, सूक्त १०१ से १०३ तीन सूक्तोंमें) ज्येष्ठ ब्रह्म का उत्तम वर्णन है। जिन को ज्येष्ठ ब्रह्मका दर्शन करना हो, उन को इस मन्त्रभाग का मनन करना उचित है। इस मन्त्रभागमें पाठकों को कई प्रकारके मन्त्रों को देखना होगा। कई मन्त्र तो सरल होनेपर भी भावार्थ की दृष्टिसे बडे ही गम्भीर प्रतीत होंगे, परन्तु कई मंत्रोंके शब्द और वाक्य कठिन और क्लिष्ट प्रतीत होने पर भी उन का आशय बिलकुलही सरल होगा। मंत्रोंसे अर्थ और आशय प्राप्त करके हम सब को ब्रह्म का दर्शन करने का यत्न करना चाहिये। देखिये; इस सूक्त का यह प्रारम्भ है-

ज्येष्ठ ब्रह्म

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वः यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥१

'(यः भूतं भव्यं च सर्वं) भूत और भविष्य तथा वर्तमान कालमें जो हैं, उस सबमें (अधितिष्ठति) अधिष्ठित होता है, (यस्य च केवलं स्वः) जिसका अपना निज तेज है, (तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः) उस श्रेष्ठ ब्रह्मके लिये हमारा प्रणाम है।' इसी ज्येष्ठ ब्रह्मका हमें इस लेखमें दर्शन करना है।

'**तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः**' यह चरण स्कम्भसूक्त में मन्त्र ३२-३४, ३६ इन चारों मंत्रोंमें है। इस चरणसे इस सूक्तके पूर्वके स्कम्भसूक्तके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध प्रतीत होता है। (स्कम्भ सूक्त, अथर्व० १०।७)

भूत कालमें जो हो चुका था, वर्तमान कालमें जो हो रहा है और भविष्य कालमें जो होगा, उन सबमें स्वयंप्रकाश ब्रह्म अधिष्ठित हुआ है। अधिष्ठित होनेका तात्पर्य अन्दर सर्वत्र पूर्णतया स्थित होना है, सर्वव्यापक होना है। पूर्व लेखमें बताया है कि, यहांकी व्यापकता घडेमें मिट्टीके समान अभिन्न-निमित्त-उपादान-कारणकी सर्वव्यापकता है।

इस विषयमें द्वितीय मन्त्र देखिये—

ब्रह्ममें सब समर्पित हैं

स्कम्भेन इमे विष्टभिते द्यौश्च भूमिश्च तिष्ठतः।
स्कंभ इदं सर्वं आत्मन्वत् यत् प्राणत् निमिषत् च यत्॥ २॥

'(स्कम्भेन वि-स्तभिते) सबके आधारस्तम्भने विशेष रीतिसे धारण किये ये द्युलोक और भूलोक (तिष्ठतः) अपने स्थानपर ठहरे हैं। (यत् प्राणत् निमिषत् सर्वं) जो प्राणधारी, निमेष उन्मेष करनेवाला तथा आत्मावाला है, वह यह सब (स्कम्भे) इस आधारस्तम्भमें ठहरा है।'

जो प्राण धारण करता है, आंखोंकी पलकें हिलाता है, जिसमें आत्मा है, वह सब इस श्रेष्ठ ब्रह्ममें है। जिस तरह घडा मिट्टीमें रहता है, जिस तरह जेवर सोनेमें रहते हैं, वैसा ही यह सब ब्रह्ममें रहा है। यहां प्राणधारी सजीव जगत् उस ब्रह्ममें है, ऐसा कहा है। यह कहनेका कारण यही है कि, 'जीव' ब्रह्मसे सर्वथा पृथक् सत्तावाला है, ऐसा कइयोंका मत है, उसके निराकरण करनेके लिये सब प्रकारका सजीव जगत् भी उसीमें समाविष्ट हुआ है, ऐसा यहां कहा है। शेष द्यावापृथिवीमें रहा सब विश्व उसीमें है, यह ऊपर कहा ही है।

वेद की संहिताएं

दैवतसंहिता

प्रथम और द्वितीय भाग तैयार हैं, तृतीय भाग छप रहा है।

आज वेद की जो संहिताएँ उपलब्ध हैं, उन में प्रत्येक देवता के मन्त्र इधरउधर बिखरे हुए पाये जाते हैं। एक ही जगह उन मंत्रों को इकट्ठा करके यह **दैवत-संहिता** बनवायी गयी है।

दैवत-संहिता-प्रथम भाग।

		मंत्र	पृष्ठसंख्या
१	अग्निदेवता	२४४३	३४६
२	इंद्रदेवता	३३६३	३७६
३	सोमदेवता	१२६२	१५०
४	मरुद्देवता	४६४	७२

दैवत-संहिता-द्वितीय भाग।

		मंत्र	पृष्ठसंख्या
५	अश्विनौ	६८९	११२
६	आयुर्वेद-प्रकरण	२३४५	२७२
७	रुद्र	२२७	६४
८	उषा	१९४	४०
९	अदिति-आदित्य	११३७	१५६
१०	विश्वे देवाः	२३२०	२२६

इन में प्रत्येक देवताके मूल मन्त्र, पुनरुक्त-मंत्रसूची, उपमासूची, विशेषणसूची तथा अकारानुक्रम से मंत्रोंकी अनुक्रमणिका का समावेश तो है, परंतु कभी कभी उत्तरपदसूची या निपातदेवतासूची इस भाँति अन्यभी सूचीयाँ दी गयी हैं। इन सभी सूचीयों से स्वाध्यायशील पाठकों को बडी भारी सुविधा होगी।

संपूर्ण दैवतसंहिताके इसी भाँति तीन विभाग होनेवाले हैं और प्रत्येक विभाग का मूल्य ६) रु. तथा डा. व्य. १॥) है। पाठक ऐसे दुर्लभ ग्रन्थ का संग्रह अवश्य करें।

चार वेद

१ ऋग्वेद (द्वितीय संस्करण) ६) डा०व्य० १॥)
२ यजुर्वेद (समाप्त)
३ सामवेद (समाप्त)
४ अथर्ववेद (,,)

इन ४ वेदोंकी संहिताओंमेंसे ३ समाप्त होनेसे उनके नये संस्करण छप रहे हैं।

यजुर्वेदकी संहिताएँ।

५ काण्व संहिता ४) डा. व्य. ॥)
६ मैत्रायणी संहिता ६) ,, १)
७ काठक संहिता ६) डा. व्य. १)
८ तैत्तिरीय संहिता (कृष्ण यजुर्वेद) ६) ,, १)

वेदकी इन चारों संहिताओंका मूल्य २२) है, डा.व्य.३॥) है अर्थात् २५॥) डा.व्य. समेत है। परंतु जो ग्राहक पेशगी मूल्य भेजकर ग्राहक बनेंगे, उनको ये चारों संहिताएं २२) रु० में दी जायगी। डाकव्यय माफ होगा।

९ यजुर्वेद- सर्वानुक्रम मू. १॥) डा. व्य. ।=)
१० यजुर्वेद- पादसूची १॥) डा. व्य. ।=)
११ ऋग्वेद परिशिष्ट (मंत्रसूची, सर्वानुक्रम इ.) २॥) ,, ॥)

मंत्री, स्वाध्याय-मण्डल, औंध. (जि० सातारा)

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवळेकर, भारत-मुद्रणालय, औंध.

वैदिक धर्म

संपादक
पं. श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

विषयसूची

वार्षिक मूल्य
म. ऑ. से ५) रु.; वी. पी. से ५।=) रु.
विदेशके लिये १५ शिलिंग।
इस अंकका मू. ॥) रु.

आश्विन सं. २००४
नवंबर १९४७

क्रमांक ३३५

वेद की संहिताएं

दैवतसंहिता

प्रथम भाग तैयार है और द्वितीय तथा, तृतीय भाग छप रहा है।

आज वेद की जो संहिताएँ उपलब्ध हैं, उन में प्रत्येक देवता के मन्त्र इधरउधर बिखरे हुए पाये जाते हैं। एक ही जगह उन मंत्रों को इकट्ठा करके यह **दैवत-संहिता** बनवायी गयी है।

दैवत-संहिता-प्रथम भाग।

		मंत्र		पृष्ठसंख्या
१	अग्निदेवता	२४४३		३४६
२	इंद्रदेवता	३३६३	,,	३७६
३	सोमदेवता	१२६१	,,	१५०
४	मरुद्देवता	४६४	,,	७२

दैवत-संहिता-द्वितीय भाग।

		मंत्र		पृष्ठसंख्या
५	अश्विनौ	६८९		११२
६	आयुर्वेद-प्रकरण	२३४५	,,	२७२
७	रुद्र	९२७	,,	६४
८	उषा	१९४	,,	४०
९	अदिति-आदित्य	११३७	,,	१५६
१०	विश्वे देवाः	२३२०	,,	२२६

इन में प्रत्येक देवताके मूल मन्त्र, पुनरुक्त-मंत्रसूची, उपमासूची, विशेषणसूची तथा अकारानुक्रम से मंत्रोंकी अनुक्रमणिका का समावेश तो है, परंतु कभी कभी उत्तरपदसूची या निपातदेवतासूची इस भाँति अन्यभी सूचीयाँ दी गयी हैं। इन सभी सूचीयों से स्वाध्यायशील पाठकों की बडी भारी सुविधा होगी।

संपूर्ण दैवतसंहिताके इसी भाँति तीन विभाग होनेवाले हैं और प्रत्येक विभाग का मूल्य ६) रु. तथा डा. व्य. १॥) है। पाठक ऐसे दुर्लभ ग्रन्थ का संग्रह अवश्य करें।

चार वेद

१ **ऋग्वेद** (द्वितीय संस्करण) ६) डा० व्य० १॥)
२ **यजुर्वेद** (समाप्त)
३ **सामवेद** (समाप्त)
४ **अथर्ववेद** (,,)

इन ४ वेदोंकी संहिताओंमेंसे ३ समाप्त होनेसे उनके नये संस्करण छप रहे हैं।

यजुर्वेदकी संहिताएँ।

५ **काण्व संहिता** ४) डा. व्य.॥)
६ **मैत्रायणी संहिता** ६) ,, १)
७ **काठक संहिता** ६) डा. व्य. १)
८ **तैत्तिरीय संहिता (कृष्ण यजुर्वेद)** ६) ,, १)

वेदकी इन चारों संहिताओंका मूल्य २२) हैं, डा.व्य.३॥) हैं अर्थात् २५॥) डा.व्य. समेत है। परंतु जो ग्राहक पेशगी मूल्य भेजकर ग्राहक बनेंगे, उनको ये चारों संहिताएं २२) रु० में दी जायंगी। डाकव्यय माफ होगा।

९ **यजुर्वेद- सर्वानुक्रम** मू. १॥) डा. व्य.।=)
१० **यजुर्वेद- पादसूची** १॥) डा. व्य.।=)
११ **ऋग्वेद परिशिष्ट** (मंत्रसूची, सर्वानुक्रम इ.) २॥) ,, ॥)

मंत्री, स्वाध्याय-मण्डल, औंध, (जि० सातारा)

वैदिकधर्म

क्रमांक ३३५

वर्ष २८ | आश्विन, विक्रम-संवत् २००४, नवंबर १९४७ | अङ्क ११

उसका कदापि नाश नहीं होगा ।

न स जीयते मरुतो, न हन्यते, न स्रेधति, न व्यथते, न रिष्यति ।
नास्य राय उपदस्यन्ति नोतय, ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ ॥

(ऋग्वेद ५।५४।७)

" हे वीरों ! जिस ऋषिके लिये, राजाके लिये अथवा जिस पुरुषके लिये आपकी सहायता प्राप्त होती है और आप जिसको सत्कर्मकी ओर प्रेरित करते हैं, वह कदापि पराभूत नहीं होता, कभी अपमृत्युसे नहीं मरता, कभी नष्ट नहीं होता, दुःखी नहीं होता, क्षीण नहीं होता, कभी उसका धन क्षीण नहीं होता, कभी उसकी संरक्षण-शक्ति विनष्ट नहीं होती । "

जिसको उत्तम वीरोंकी सहायता मिलती है, उसकी सतत उन्नति होती रहती है, उसका कभी विनाश नहीं होता । पर जिसको उत्तम वीरोंकी सहायता नहीं मिलती, वे पराभूत होते हैं, अपमृत्युसे मरते हैं, बीचमेंही संकटमें त्रस्त होते हैं, अनेक दुःखोंमें फंसते हैं, निर्धन बनते हैं, उनका धन गुण्ड चुरा लेते हैं, इसलिये उनकी सुरक्षा नहीं होती ।

इसलिये हरएक समाजको चाहिये कि वह अपने पास उत्तम वीरोंकी शक्ति रखे । वीर वे हैं कि जो मरनेतक उठ खडे होकर शत्रुसे लडते रहेंगे और शत्रुको उखाडकर फेंक देंगे । प्रत्येक राष्ट्रमें ऐसे वीरोंका ही स्वागत होना योग्य है ।

यम

[अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह]

मन वचन और कर्ममें
शुभ भावना धर कर सदा ।
सब जनोंके परम हितमें
मनुज तू नित यतन कर ॥

सत्य भगवत्के भरोसे
सत्यहीको पालकर ।
चौर-वृत्तिसे अलग होकर,
सदा तू यतन कर ॥

प्रेममय भगवान् जिससे
प्रकट होवे हृदयमें ।
सत् ज्ञानमें कर आचरण,
कल्याणमें तू यतन कर ॥

ऐश्वर्य अपना तू बढा
सुन्दर सुखद भावों भरा ।
उपयोगिता धनकी समझ
मत लोभ कर, तू यतन कर ॥

—लालचन्द्र

पैगम्बर साहबका सदा रहनेवाला करार

एक मुसलमान दोस्तने मौलाना अकरमकी बँगलामें लिखी हुई ' मुस्तफा-चरित ' नामकी किताबसे नीचे लिखा हिस्सा भेजा है । वे इसको एक इश्तहारकी शकलमें बाँट रहे हैं ।

" हजरत मुहम्मद साहबने मदीना पहुँचनेके बाद देशमें सुख और शान्ति फैलानेकी तरफ अपना ध्यान दिया । मदीना और उसके आसपासके हिस्सोंमें तीन आजाद कबीले बसे थे । यहूदियों, मूर्तियोंकी पूजा करनेवालों और मुसलमानोंके विचार, मजहब और आदतें एकदूसरेसे बिलकुल उलटी थीं । पैगम्बर साहबने उनको एक मिलीजुली योजनाके अन्दर लानेकी जरूरत महसूस की । उनको सियासी तौरपर इकट्ठा करके एक ' राष्ट्र ' बनाया था । उन्हें यह सिखाना था कि एक मुल्कमें रहने और अलग-अलग मजहबोंको माननेवाली जातें, अपनी मजहबी आजादीको पूरी तरह कायम रखते हुये भी, अपने वतनकी सेवा मिल-जुलकर कर सकती हैं । ऐसी सल्तनतका बनना मुमकिन था और पसन्दीदा भी ।

" दुनियाकी तारीखमें पहली बार हिजाजके रेगिस्तानके रहनेवाले उम्मी मुहम्मद मुस्तफाने इस आदर्शकी नहीहत की । मुहम्मद साहबने मदीनेके यहूदियों, मूर्ति-पूजकों और मुसलमानोंको जमा किया और एक अन्तर्राष्ट्रीय इकरारनामेपर दस्तखत करा कर अलग-अलग जातों और आपसमें दुश्मनी रखनेवाले जत्थोंको मिलाया और लोकशाहीकी नींव डाली । हम नीचे इस करारमेंसे कुछ बातें देते हैं--

१. यहूदियों और मूर्ति-पूजकोंका वही राष्ट्र है, जो मुसलमानोंका है ।

२. देशकी आजादीको बचानेके लिये वे मिलकर लड़ेंगे।

३. यहूदी, मुसलमान और दूसरे फिरकोंवाले अपने मजहबी रीतिरिवाजोंको माननेके लिये आजाद हैं और कोई किसी दूसरेकी मजहबी आजादीमें दखल नहीं देगा।

४. मुसलमानोंको आम तौरपर दूसरी जातोंके साथ मुहब्बतसे पेश आना चाहिये और उनकी भलाईके लिये कोशिश करनी चाहिये । मुसलमानोंको उन्हें किसी भी तरहकी तकलीफ पहुँचानेका खयाल नहीं करना चाहिये।

५. यह करार, जो कि खुदाका नाम लेकर किया गया है, हमेंशाके लिये है । जो कोई उसे तोडेगा, उसपर खुदाका कहर नाजिल होगा ।"

—(हरिजन सेवक)

ईश्वर-प्रदत्त शक्ति

(लेखक— श्री. पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार, मीमांसातीर्थ, अजमेर)

मैं शिक्षादीक्षासे आर्य-समाजके वातावरणमें पला हूं। मैं वर्तमानमें प्रचलित अनेक अन्ध विश्वासोंपर सर्वथा विश्वास नहीं करता हूं। भूतप्रेत, जादूटोना, टनमनपर भी विश्वास नहीं है। परन्तु आज मेरे ५ वर्षके जीवनमें मैंने अनुभव और साक्षात् किया उसको दृढतापूर्वक सत्य मानकर उसकी उपेक्षा भी नहीं कर सकता हूं।

बाइबलमें जब ईसाकी जीवनीका अध्ययन करता हूं तब विस्मय होता, सत्य श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती, तो भी ईसाकी महापुरुषतापर मुझे तनिक भी संदेह नहीं होता। क्योंकि आत्मिक शक्तिसे अनेक रोगोंको अच्छा कर देनेकी अनेक बातें सुनीही नहीं, साक्षात् कीं भी, और स्वयं भी उसका क्रियात्मक अनुभव किया है।

जब मैंने गुरुकुल कांगडीसे (१९१४ ई०) स्नातक होकर संसारमें पदार्पण किया, मेरा परिचय-प्रेम एक गुरुकुल-महाविद्यालयके एक प्रोफेसरसे जो एक सिन्धी महानुभाव थे, हो गया था, अनेक सम्पर्कमें मैंने स्पिरिच्युलिजम् और मेस्मेरिजम्का पर्याप्त परिचय प्राप्त किया था, मेस्मेरिजमका तो अभ्यास भी किया था। १९१५—१६ मैंने जयपुर स्टेटके एक ठिकानेमें हैड्मास्टरी की और उसके पश्चात् फिर गुरुकुल कांगडीमेंही साहित्यिक सेवा की। दो वर्षतक मैं वहां रहा और अनेक आध्यात्मिक साधनाओंकी योजनाएँ कीं। परन्तु सफलता मुझे कुछमेंही हुई।

मेस्मेरिजम् अर्थात् आध्यात्म मोहन-विद्यामें मुझे पर्याप्त सफलता मिली। हाथोंसे पास देकर पात्र व्यक्तिको सुलाना, केवल शब्द और विचारके मनोबलसे अविद्यमान पदार्थोंको दिखाना, अविद्यमान गन्धोंको सुंघाना आदि मेरे लिये एक सामान्य वस्तु थी। पात्र व्यक्ति सुलाना, उसे अनेक दृश्य दिखाना, अनेक गुप्त बातें पता लगाना ये प्रयोग भी करता था, परन्तु इनमें कभी असफलता भी होती थी। सर्वोपयोगी कार्य रोगियोंके रोगोंको मनोबलसे दूर करना मुझे बहुत अच्छा लगता था। बहुतोंके सिरदर्द दूर किये। आधासीसीका रोग भी शमन किया। बिहारमें सीतामढीमें एक देवीके हाथ तीव्र पीडा थी, १५ दिनसे वह निद्रा न पाती थी, और बहुत बकती झकती थी। वह एक आर्य पुरुषकी कन्या थी, मैं एक परिवारकी शुद्धिके लिये बिहार (सीतामढी) में गया था। वहां मैंने अपनी रोग दूर करनेवाली शक्तिका उपयोग ठीक जांचकर करनेकी सुझाई। मुझे अवसर मिला, प्रथम प्रयोगमेंही सफलता हुई। रोगिणीको खूब निद्रा मिली, और हाथमें फोडा था, आपसे आप फूट गया। और फिर वह रोगिणी बहुत शीघ्र अच्छी हो गई।

सिद्धान्तरूपसे वह एक अभ्यास-प्राप्त शक्ति थी, ईश्वरकी कृपासे प्राप्त थी। न उस समय कोई मेरे पास मन्त्र था, केवल मनोबल था, और प्रयोग करनेके कुछ शास्त्रीय नियम थे, शक्ति ईश्वरीय प्रदत्त ऐसेही थी जैसी ईश्वर शरीरमें शारीरिक बलकी देता है। परन्तु प्रश्न अब यह है, क्या बिना अभ्यासके भी किसीके पास ऐसी शक्ति होना सम्भव है कि स्पर्शमात्रसे रोग दूर हो जाया करें?

मेरे अनुभवमें इस दिशामें दो प्रयोग बहुतही ध्यान देनेयोग्य आये। पाठकोंकी जानकारी और विचार विमर्शके लिये मैं नीचे अंकित करता हूं।

मेरे गृहमें प्रथम एक कन्याने जन्म लिया। इस समय एकबार कन्याकी माताके स्तनमें अकस्मात् फोडेकीसी पीडा उत्पन्न हुई। डाक्टरोंका परामर्श लिया, औषधि, सेक और बाष्प-का गर्म उपचार भी लाभकारी न हुआ। जिस दायीने कन्या प्रसव कराया था, अकस्मात् उससे भेंट हुई, पीडाकी बात उससे भी कही गई, उसने उपचार बतलाया कि स्तनोंके कष्टका उपचार तो सन्तान (कन्या वा बालक) के चूतडोंमेंही रखा है। उसने कहा कि बालकको पकडकर ७ वार उसके चूतडोंसे स्तनोंपर मेस्मेरिजम्के समानही स्पर्श (पास) देनेसे रोग अच्छा हो जावेगा। उसने करके भी बतलाया। दो बार करनेसे रोग शान्त हो गया।

उक्त कन्याके पश्चात् मेरे गृहमें एकके बाद एक करके छः बालक-बालिकाओंका जन्म हुआ। और प्रत्येक सन्तानके मौकेपर कभी न कभी उसी प्रकार स्तनपीडाका कष्ट भी होता, मैं तो वही उपचार करता, और मुझे कभी विफलता न हुई, और परिचित गृहोंमें भी जब इस प्रकारकी पीडाकी शिकायत सुननेमें आती तोभी इसी प्रकारका उपचार कभी विफल नहीं हुआ। मैं तो इसी परिणामपर पहुंचा हूं कि बालकोंके शरीर (विशेषकर चूतड भाग) में यह ईश्वर-प्रदत्त शक्ति है कि वह स्त्रियोंके स्तनोंमें उत्पन्न कष्टोंको स्पर्शमात्रसे दूर करता है। इस शक्तिका उपयोग अन्य भी कष्टोंपर सफल हो सकता है या नहीं, यह तो परीक्षणोंके बाद जाना जा सकता है।

अब दूसरा प्रयोग लिखता हूं। मेरी धर्मपत्नी मुझसे अनेक बार कहा करती थीं कि बचपनसेही उनके पैरके अंगूठेका प्रयोग शरीरमें हुक उठ जानेके कष्टको दूर करनेके लिये किया जाता था। मैंने कभी विश्वास नहीं किया, इन २२ वर्षोंमें भी कभी इस बातको देख लेनेका अवसर नहीं आया।

इस वर्ष यह अवसर भी आया। मेरी द्वितीय कन्या, आयु १६ वर्ष, इसी (१९४७ ई०) वर्षके मई मासमें अकस्मात् खसरा रोगसे पीडित हुई। ३-४ दिनके तीव्र ज्वरके पश्चात् खसराके लाल दाने शरीरपर निकल आये। परन्तु रात्रिके प्रारम्भमें कन्याने शिकायत की, उसे श्वास लेनेमें बहुत कष्ट हो रहा है, सांस लिया नहीं जाता, सांस समाता नहीं है। रातभर कष्ट सताता रहा, अनेक उपचार किये, आशाजनक कोई लाभ नहीं हुआ। अगले दिन भी यही कष्ट रहा, समझदार कन्याको अपने जीवनकी आशा छूटती जा रही थी, बहुत आग्रहपूर्वक उसने अपनी मातासे अपने चरणके अंगूठेके स्पर्शसे रोग दूर करनेका आग्रह किया, तो भी माता दो कारणोंसे संकोचमें रही, एक तो कन्या है, उसको पैर कैसे छुआया जा सकता है? दूसरा चेचक (माता) निकली है, उसे पैर कैसे लगाना, इससे बडी दुविधा अनुभव हुई। दवाइयां बीसों कर लीं परन्तु एक भी उपचार सफल न हो रहा था। आखिर, मैंने आग्रह किया कि माताको चरणका अंगूठा स्पर्श करानाही होगा।

कन्याको करवट देकर कमरकी ओर पार्श्वस्थलमें जहां श्वास नहीं समा रहा था, वहां कन्याकी माताने चरणके अंगूठा स्पर्श कराया। चुम्बकके समान स्पर्श करतेही, श्वास-कष्ट दूर हो गया। और फिर वह श्वास-कष्ट लौटकर नहीं हुआ। रोगी अच्छा हो गया। जो मैं बीसों वर्षोंसे सुन रहा था, वे अपने चरणस्पर्शमात्रसे श्वास-कष्ट दूर कर सकती हैं, वह मैंने उस दिन प्रत्यक्ष देख लिया। मुझे विश्वास हो गया कि उनके पैरमें भी ईश्वरीय प्रदत्त शक्ति है जो श्वास-कष्टको दूर करती है।

इस शक्तिके आगे परीक्षण किये जाने चाहिये कि यह शक्ति किन किन रोगोंको दूर कर सकती है। क्या इसी प्रकारकी ईश्वरप्रदत्त शक्ति महापुरुषोंमें होनी सम्भव नहीं है? मुझे तो विश्वास होता जाता है कि ईसामें भी ऐसीही कोई ईश्वरीय शक्ति थी, जिसने उसे महापुरुष बना दिया।

हिन्दुओंकी जनसंख्यामें कमी क्यों ?

(ले०—श्री० म० लि० भूषणसिंह)

मुसलमान भारतमें दस-बारह सौ आये और बढते बढ़ते आठ करोड हो गये । किन्तु हिन्दू इस तेजीसे नहीं बढे, बल्कि कहीं कहीं, जैसे बंगाल, पंजाब और कुछ देशी रियासतोंमें घटतेही गये । इसका कारण क्या है? एक तरफ हम अपनी संख्या घटाते जा रहे हैं और दूसरी तरफ हमारी कमजोरीसे लाभ उठाकर, वे अपनी संख्या दिन दूनी, रात चौगुनी करते जा रहे हैं। क्या कुछही वर्षोंमें इसका परिणाम यह न होगा कि हम अल्पमत हो जायं और वे बहुमत ? अगर आप चाहते हैं कि ऐसा न हो तो आप अपनी कमजोरीको देखिये, उन घुनोंको पहिचानिये जो आपके अन्दर घुसे हुए हैं और आपको खोखला कर रहे हैं । अगर आप समय रहते न सुधरे तो जिंदा नहीं रह सकते ।

हमारी जनसंख्या घटनेका सबसे बडा कारण हमारी सामाजिक दुरवस्था है । हम छूताछूतको अब भी प्रोत्साहन दे रहे हैं । मुसलमानके साथ हम खाटपर बैठकर गपों लडा सकते हैं किन्तु किसी चमार या भंगीको हम छूना नहीं चाहते । पर जब वही चमार या भंगी हमारे सामने ईसाई या मुसलमान होकर आता है, तब हम उसकी अपने आपसे भी ज्यादा इज्जत करनेको तैयार रहते हैं। यह हमारा व्यवहार है जो अछूतोंको हमसे दूर भगा रहा है। आप बंगालमें जाइये, आप दक्खिनमें जाइये, जहां ब्राह्मण अछूतसे दस गज दूरीसे बात करता है ! आप देखेंगे कि हमारे भाई धडाधड मुसलमान हो रहे हैं। निजामी रियासत हैद्राबादमें पहिले मुसलमान चार फी सदी थे किन्तु पिछले तीस वर्षोंमें सतरा फी सदी हो गये। ऐसा क्यों हुआ ? जाकर देखिये, कितनी तेजीसे अब भी अछूत मुसलमान बन रहे हैं। अभी इसी साल २७ जूनको बीदरमें चार गांव मुसलमान बना लिये गये हैं और हम उसी तरह सो रहे हैं जैसे कुछ हुआही नहीं, जैसे हमसे कुछ मतलबही नहीं !

सामाजिक दुर्व्यवहारकी वजहसे अछूत तो हमसे भाग ही रहे हैं, हमारी स्त्रियां भी तेजीसे विधर्मी होती जा रही हैं । कुछ पढे लिखे सम्पन्न घरोंको छोडकर देहातके गरीब घरोंको अगर देखा जाय तो उनमें गृह-कलह, कुछ न कुछ मात्रामें, जरूर दिखाई देगा । वहां कुछ स्त्रियोंके प्रति जानवरसे बतर व्यवहार होता आप देखेंगे । सासें बहुओं-को जानवरही समझती हैं, जानवरोंकी तरहही उन्हें घरके कामोंमें जोते रखना चाहती हैं। बंगालमें तो नौजवान विधवाओंका सर घुटाकर, सफेद धोती पहनाकर उन्हें भूतकी शक्ल दे देते हैं। ये कुचली हुई आत्माएं जब दूसरी तरफसे कुछ सहानुभूति पाती हैं तब उधरही क्यों न झुक जायं ? इसमें उनका दोष क्या ? यह तो हमारे समाजका दोष है, यह तो हमारा दोष है कि हम अपनी बहिनोंपर अत्याचार होते देखते हैं, खुद अत्याचार करते हैं ।

राजपूतानेके राजपूतोंमें एक अजीब कुरीति अब भी प्रच-लित है । वे अपनी कन्याओंका पैदा होतेही वध कर डालते हैं । वधका उद्देश्य होता है दहेजका रुपया बचाना और यह भी कि दामादका पैर पूजना और उसके सामने सर झुकाना न पडे, वरना इज्जत और शानमें बट्टा लग जायगा। राजपूतानेको छोडकर अन्य स्थानोंमें भी अगर लडकी पैदा हुई तो कुटुम्बपर वज्र पड जाता है ! सब जगह रंजीदगी छा जाती है । कन्या क्या हुई कोई आफत घरमें आ गयी ! क्या पता कि कुछ घरोंमें कन्याकी बेकदरी इस कदर होती हो कि वह अकालहीमें कालका ग्रास हो जाती हो।

एक तरफ कन्याएं जल्दी मर जाती हैं, दूसरी तरफ विधवाओंको आज्ञा नहीं कि शादी करें । नतीजा यह होता है कि हिन्दुओंकी जनन-शक्ति कम होती जाती है । जो विधवाएं अपने जीवनमें चार पांच बच्चे पैदा कर सकती थीं वे ऊसर जमीनकी तरह छोड दी जाती हैं, जिसमें विधर्मी चरें, फूलें और फलें ।

गुप्त व्यभिचार पाश्चिमी सभ्यताकी देन है। हिन्दुओंमेंही क्या यह भारतकी सब कौमोंमें आजकल दिखाई देता है। किन्तु इसकी वजहसे कितने गर्भ-पात, कितनी भ्रूण-हत्याएं होती हैं इसका अंदाजा हम नहीं लगा सकते। रोजही पत्रोंमें पढनेको मिलता है कि कहीं किसी नालेमें, कहीं किसी कूडेके ढेरमें, कहीं किसी पार्कके कोनेमें नवजात शिशु पडे मिले ! ये शिशु अगर पैदा होतेही किसी मातृ-मंदिरमें भेज दिये जायँ तो क्या अच्छा हो। गुप्त व्यभिचार करते समाजका डर नहीं किन्तु जब बच्चा पैदा हो जाय तो उसे मातृ-मंदिरतक पहुंचानेमें शर्म लगती है, समाजका डर लगता है। छोटी छोटी बातोंमें हम ईश्वरसे डरते रहते हैं किन्तु नवजात शिशुकी गर्दन ऐंठ देनेमें हमारे भाइयों या बहिनोंको डर नहीं लगता। पाप तो तुमने किया है, उस बेचारे शिशुने नहीं जिसको सूर्यका उजाला भी देखने नहीं देते।

अभी कुछ दिन हुए लखनऊके एक अस्पतालमें दो हिन्दू स्त्रियां दाखिल हुई थीं। बच्चा पैदा होनेके बाद वे बच्चोंको छोडकर भाग गईं। प्रयागमें कमला अस्पतालमें आये दिन ऐसी घटनाएं होती रहती हैं। यह सब है क्या ? कलकत्ते-के एक ईसाई मिशनने ऐसे चार सौ बच्चे एक सालमें इकट्ठे किये थे। यह मानी हुई बात है कि वे सब बच्चे ईसाई ढंगसे पले होंगे और आज ईसाई होंगे। हम इन सब खबरोंको पढते हैं, यह सब बातें जानते हैं किन्तु जानकर भी अनजान बन जाते हैं। हम सोचते हैं कि दूसरे लोग भी इन बातोंको सोचतेही होंगे, तब हम क्यों अपने दिमागको तकलीफ दें ?

शुद्धि-आन्दोलन जो किसी समय बडी तेजीपर था, आजकल बिल्कुल शिथिल पड गया है। इस शिथिलताके कारण भी हमारी संख्या घटती जा रही है। इस शिथिलता-का एक खास कारण था। देशको आजाद करनेके लिये शुद्धि-के सब कार्यकर्ता कांग्रेसमें चले गये थे। उन्हें पहिले अपना देश स्वतंत्र करना था। किन्तु अब तो देश स्वतंत्र हो गया है। इसलिये अब पुराने कार्यकर्ता फिर अपने क्षेत्रमें चले जायँ, तो अच्छा हो।

आजकल ईसाइयोंका मजहबी प्रचार कम पड गया है किन्तु मुसलमानोंका बहुत बढ गया है। उनके इक्केवाले, तांगेवाले, फेरीवाले, मुल्ला, मौलवी, फकीर, यहांतक कि उनकी वेश्याएं और गुंडेतक एकही धारामें बह रहे हैं। सबके सामने एकही तस्वीर है और वह यही कि सारे भारतको मुसलमान बनाया जाय और भारतमें इस्लामी हुकूमत कायम की जाय। इन इक्के-तांगेवालोंके घरोंसे कितनी हिन्दू स्त्रियां बरामद होती रहती हैं। ये खबरें अखबारोंमें कम आती हैं, किन्तु हर शहरके रहनेवाले अपने शहरका हाल जरूर जानतेही होंगे।

हमारे-पढे लिखे कुछ नौजवान स्त्री-पुरुष अविवाहित रहना पसन्द करते हैं। यह इसलिये नहीं कि गरीब हैं, खाने पीनेका ठिकाना नहीं है, बल्कि इस लिये कि विवा-हित जीवनकी जिम्मेवारी लेनेसे डरते हैं। इसका भी असर हमारी जन-संख्यापर पडता है। उधर मुसलमानोंके लिये कुरानकी शिक्षा है कि अविवाहित नहीं रहना चाहिये। अरब और ईरानमें साधारण व्यक्ति तो क्या मुल्ला और फकीर भी शादी करते हैं। भारतके मुसलमान इक्के-तांगे-वाले, जिनका चूल्हा शामको जलता है तो सबेरेका कुछ ठिकाना नहीं, वे भी हौसला रखते हैं चार चार शादियां करनेका और इनको स्त्रियां मिलती हैं हिन्दू जातिसेही।

ऐसी परिस्थितिमें अब आप सोचिये कि आपको क्या करना है। अगर आपको जिन्दा रहना है तो हाथ पैर हिलाना होगा, सोचना होगा, कुछ करना होगा। यह ख्याल दिलसे हटा देना होगा कि ऊपरसे कोई नेता बोले, आपका कदम उठे। नेता आप खुद हैं, आपमें भी उतनीही बुद्धि है जितनी आपके नेताओंमें। पाकिस्तानके बहुतसे हिन्दू तो पार डाले गये, जो बच गये उनकी जानका भरोसा क्या ? अगर उन्हें जिन्दा रहना है तो वे मुसलमान होकरही वहां जिन्दा रह सकेंगे। अब आप यहां भारतमें क्या होकर जिंदा रहेंगे, यह आपही सोचिये।

(विचार-प्रवर्तक-मंडलद्वारा)

कुर्आन तथा बाईबलमें पर्वतरूपी सूर्योपासना

(ले०— पं० गणपतराव बा० गोरे, २१५८ बी मंगलवार, कोल्हापूर)

[**परिचय**- इस लेखका संबंध ' वैदिक धर्म ' के जनवरी १९४७ में छपे हुए लेखसे है। इस लेखके विषय हैं— कुर्आनद्वारा होमका समर्थन; अल्लाहका अग्निमेंसे बोलना कि ' मैं ही अल्लाह हूं अन्य नहीं; ' मुसलमानोंकी नमाज और कलमेमें सूर्योपासना; उक्त वाक्यका वेद, पारसी धर्म ग्रंथ, तथा बाईबलमेंसे घूमते हुए कुर्आनमें प्रकट होना; यहूदियोंका यहोवा-सूर्य वा ओ३म्; तूर तथा सिनाई शब्दोंके वैदिक अर्थ; JAH [याह] से JEHOVAH [येहोवह] तकके २४ बाईबलके नामोंकी व्युत्पत्ति वेदसे है; Mount of God- यहोवा [सूर्य] पर्वतके बाईबलमें आठ नाम **सीनै, हर, ओरोस, अलह, होर, होरेब,** होरं तथा **सिय्योन**; ये आठों नाम भी वेदोक्त शब्दोंके बिगडे रूप हैं; कुर्आनकी ५२ सुरत तूरके विषयोंका वर्णन सिद्ध करता है कि **तूर** शब्दका अर्थ **सूर्य** है, अरबस्थानका पर्वत सिनाई नहीं !]

खण्ड ९, धारा २५

कुर्आनकी ५२ सूरत ' तूर ' पर विचार

१. मुस्लिम भाष्यकारोंका मत

प्रश्न- ५० वीं सूरतके काफको आपने पर्वत—सूर्य सिद्ध किया। ८५ वीं सूरतके बुरुज शब्दको आपने सूर्य-किरणें, स्कम्भ आदि सिद्ध किया। यहांतक आपने कुर्आनकी उक्त दोनों सूरतोंके वैदिक सिद्धान्तोंसे सुसंगत होनेवाले कुछेक अर्थ बताये हैं। अब शंका ऐसी उपस्थित होती है, कि यदि कुर्आन वस्तुतः पर्वत-रूपी सूर्योपासना सिखाता है, तो कुर्आनकी कोई ऐसी सूरत बताइये कि जिसमें स्वयं मुसलमान भाष्यकारोंने सूर्यको पर्वत बताया हो।

उत्तर- वह कुर्आनकी ५२ सूरत अल् तूर- The Mountain- वह पर्वत है। यहां ' अल्- The वह ' शब्द निश्चित रूपसे किसी पर्वतविशेषकी ओर संकेत कर रहा है, इतना तो स्पष्टही है। परंतु वह पर्वत सूर्यही है, इस बातको हम कई प्रकारोंसे सिद्ध करेंगे, यथा-

मौ० मुहम्मद अलीजी कुर्आनके आंग्ल भाष्यकार तथा मौ० मीर मोहंमद याकूबखान मराठी भाष्यकार आदि अनेकोंका मत है कि, कुर्आनकी ५२ सूरतका नाम ' तूर ' इसलिए पडा कि ' तूरे सीनीना ' का अर्थ ' सिनाई पर्वत ' होता है। वे बाईबलके अनुसार यह भी मानते हैं कि इसी सिनाई पर्वतपर ह० मूसाको अग्नि देवने ज्ञान दिया था। स्वयं कुर्आनका वर्णन देखो—

' मूसाने अपने कुटुंबियोंसे कहा, ' मुझे अग्निका प्रात्यक्ष हो रहा है। मैं उसमेंसे आपके लिये कुछ समाचार लाऊंगा, अथवा मैं आपके लिये उसमेंसे एक जलती लकडी उठा लाऊंगा, इसलिए कि आप अपने शरीर सेंक लो(७)।' अतः जब वह अग्निके समीप पहुंचा, उसे शब्द सुनाया गया कि धन्य है वह जो अग्नि तथा जो कुछ अग्निके पास है उसके पीछे चलता [उसकी खोजमें रहता] है + और [कि यह उसी] अल्लाहका प्रताप है, जो कि लोक-परलोकका स्वामी है (८)। [और कि] हे मूसा ! निस्संदेह मैंही [वह] अल्लाह हूं जो शक्तिसम्पन्न तथा बुद्धिमान् है (९) (सूरत सं० २७ नम्ल)

कुर्आन २०।१०-१४ में लगभग यही वर्णन पुनः आया है। १४ वीं आयतका मौ० मुहम्मद अलीजीका आंग्ल भाषान्तर ऐसा है—

Surely I am Allah, there is no god but I, therefore serve Me and keep up prayer for my remembrance.

पाठको ! अग्निदेव मूसाको समझा रहे हैं कि " निः-संदेह मैंही अल्लाह हूं। मेरे सिवा अन्य कोई [भी पूज्य]

+ मौ० शाह रफीउद्दीनका उर्दू अनुवाद— ' बरकत दिया गया है, जो कोई कि बीच आगके है और जो कोई कि गिर्द उसके है ' इन वाक्योंद्वारा आर्योंके अग्नि-उपासना तथा हवनका समर्थन स्वयं कुर्आन कर रहा है !!!

देव नहीं है। अतः मेरी सेवा कर तथा मेरा स्मरण करनेके लिये सतत प्रार्थना किया कर। " (२०।१४)

अब पाठक विचारें कि क्या कुर्आन २७।७-९ तथा २०।१०-१४ तक स्वयं कुर्आनके मुस्लिम-भाष्यकारोंके अर्थोंको लेकर भी कुर्आनमें अग्नि वा सूर्योपासना सिद्ध हो रही है वा नहीं ? क्या स्वयं अग्निदेवही मूसासे बोल रहा है वा नहीं कि ' **मैंही अल्लाह हूं, मेरे सिवा अन्य कोई भी पूज्य देव नहीं ?** '

प्रश्न– आज तो आप बडे ही अकाट्य प्रमाण दे रहे हैं ! क्या आप २७।७-९ तकका मौ० मुहम्मद अलीकृत आंग्ल भाषान्तर भी बताएंगे कि उक्त आर्य-भाषान्तरसे मिलान करके शंका मिटाई जा सके ?

उत्तर– लीजिए— " When Moses said to his family; Surely I see fire. I will bring to you from it some news, or I will bring to you therefrom a burning firebrand so that you may warm yourselves (7). So when he came to it a voice was uttered, saying: ' Blessed is he who is after the fire and whatever is about it; and glory be to Allah, the Lord of the worlds (8). O Moses ! surely I am Allah, the mighty, the wise. (9)" (27 NAML)

यह है आंग्ल अनुवाद, इन [ ] कंसोंमें आए शब्द अर्थ खोलनेके उद्देश्यसे ही हमने भाषा अनुवादमें डाले हैं। अब सुविज्ञ पाठकही कुर्आन २०।१४ तथा २७-८-९ का मिलान करके निश्चय करें कि जिसे कुर्आनमें ' अल्लाह ' वा ' रब्बि ' कहा गया है, वह स्वयं कुर्आनकेही प्रमाणसे अग्नि-तत्त्व सिद्ध होता है वा नहीं ?

प्रश्न— यह तो स्वयं कुर्आनके प्रमाणोंसे अग्नि-पूजा सिद्ध हो रही है ! क्या कोई और प्रमाण भी हैं ?

उत्तर— अनेकों हैं, परंतु विस्तारमें जानेसे ' पर्वतरूपी सूर्योपासना ' की सिद्धि दूर जा पडेगी। अतः यही वाक्य जिज्ञासु कुर्आन ५।७३, २७।२६, ३५।३ में स्वयं देखनेकी कृपा करें।

२. मुसलमानोंकी नमाज और कलमामें सूर्योपासना

प्रश्न– अब तो ऐसा सिद्ध हो रहा है कि स्वयं कुर्आनने इस वाक्यका बडा महत्त्व समझा है ! फिर तो मुसलमानोंकी नमाजमें भी यह वाक्य आना चाहिए।

उत्तर— मुसलमानोंकी प्रत्येक नमाजमें यह वाक्य कि ' मैं ही पूज्य देव हूं अन्य नहीं ' पांच बार पढा जाता है। इतनाही नहीं, यही वाक्य मुसलमानोंके कलमेमें भी आया है, और अरबीमें ' **ला इलाह इल् अल्लाह** ' ऐसा पढा जाता है।

प्रश्न— अब तो यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। क्या इसका संबंध भी किसी वेदादि शास्त्र-वचनसे है ?

उत्तर—१... **भुवनस्य यस्पतिरेक एव नमस्यः॥** (अ० २।२।२)

अर्थ— (यः भुवनस्य पतिः) जो जगत्‌का पालक तथा (नमस्यः) नमस्कार करनेयोग्य है, सो (एकः एव) अकेला [इन्द्र = अग्नि वा विद्युत् तत्त्व] ही है ॥२॥ और देखो (ऋग्वेद ८।५८।२)

२. इस वेदवचनको ईरानके पारसियोंने सर्वप्रथम ' **नेस्त् एजद् मगर यजदान्** ' कहकर अपनाया. इसका साधारण अर्थ यही है कि " ईश्वरके सिवा और कोई पूज्य देव नहीं है। " परंतु यदि वेदकी दृष्टिकोणसे अर्थ किया जाय तो ' न अस्ति एजतः ऋते यज्ञदानः' अर्थात् '[सृष्टि-रूपी] यज्ञके दान करनेवाले [सूर्य] के अतिरिक्त [सृष्टिमें] हलचल वा क्रिया करनेवाला और कोई नहीं है,' ऐसा अर्थ होगा। ' तत् एजति ' शब्द वा० य० ४०।५ में आये हैं।

३. पारसियोंकी धर्मपुस्तकसे उक्त वाक्य बाइबलके पुराने धर्म-नियममें यहूदियोंने अनुवाद किया। (Isaiah) [हिन्दी-यशायाह] के अध्याय ४५ आयत १८ में आंग्ल अनुवाद है– " I am the Lord and there is none else. " वै० धर्मके पूर्वके किसी अंकमें हम **लार्डको** लाट, स्कम्भ, शिवलिंग तथा सूर्यकिरण सिद्ध कर चुके हैं। अतः यहांतकके कुर्आनसमेत चारों अर्थ ठीक प्रकारसे अग्नितत्त्वसे लगते आए हैं।

४. उक्त यशायाह ४५।१८ का पूरा अर्थ १९१९ में अल्लाहाबाद मिशन प्रेसमें छपे बाइबलके ' धर्मशास्त्र ' नामक हिंदी संस्करणमें ऐसा है–

"क्योंकि यहोवा जो आकाशका सिरजनहार है सोई परमेश्वर है, जिसने पृथिवीको रचा और बनाया। उसीने उसको स्थिर भी किया, और सुनसान होनेके लिए नहीं सिरजापर बसनेके लिए उसे रचा। वही यों कहता है कि मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं है।"(१८)

अब द्युलोक तथा पृथिवीको बनाने तथा बसानेवाला, उसे अपनी किरणोंद्वारा सुस्थिर रखनेवाला सूर्यके अतिरिक्त और कौन है? वही सूर्य कह रहा है कि यहूदियोंका यहोवा नामक परमेश्वर मैंही हूं! यहांतक ५ वार अत्युत्तम प्रकारसे सिद्ध हो चुका कि पारसी धर्म, बाइबल तथा कुर्आन ये सभी वेदकी शिक्षाको क्रमशः ग्रहण करते आये हैं, और कुर्आनने उक्त वाक्य बाइबलसे ग्रहण किया गया है! साथही वेदसे लेकर कुर्आनतक सभी एकवाक्यतासे कह रहे हैं कि इन्द्र, यजदान, यहोवाह, लार्ड, अल्लाह, अग्नितत्त्व = सूर्यकाही नाम है और वही एक पूजनीय परमेश्वर है!।

३. यहोवा भी सूर्य वा ओ३म् है!

प्रश्न— जिस प्रकार पारसियोंके **यजदान**को आपने वेदका **यज्ञदान** बताया, क्या उसी प्रकार यहूदियोंका **यहोवा** भी वैदिक शब्द है?

उत्तर— जी हां! आपटेके कोशमें अर्थ हैं—

यह्व = 1 Great, Powerful [महान् शक्तिवान्]। 2 Active, Restless, Continunally moving, (चपल, अविरामी, सदा गतिमान्)

यह्वी = पृथिवी--द्यु; रात्रि--दिवस; सायं--प्रातः।

अब पाठकही विचारें कि ये सब अर्थ सूर्यसे संबंध रखनेवाले हैं वा नहीं? इससे छटी बार सिद्ध हुआ कि जिसे हम परमेश्वर, यहोवा, (Lord) लार्ड वा अल्लाह कहते हैं, वह सूर्यही है!

प्रश्न-- बाइबलका कन्कार्डेन्स भी आपके कथनका समर्थन करता है क्या?

उत्तर-- जी हां! भाषाओंमें 'य' और 'ज' स्थान बदलते हैं, यथा संस्कृत 'यजमान' का हिंदीमें 'जजमान' कहलाना, 'याजक' का सिंधीमें 'जाजक' तथा 'जार' का फारसीमें 'यार' बन जाना। इसी प्रकार हिंदी बाइबलका यहोवा आंग्ल बाइबलमें JAH [जह] अथवा JEHOVAH [जेहोवह] लिखा गया है। जह तथा इससे बने शब्दोंके अर्थ कन्कार्डेन्समें निम्न प्रकार हैं—

JA'H = [याह] यहोवहका संक्षिप्त रूप है।

JA'-HATH (याहथ) = Comfort; revival [धैर्य; पुनर्जीवन]

JA'-HAZ-IAH (यहाजियः) Jah reveals, जह (सूर्य) प्रकट करता है।

JA-HA-ZI-EL (यहजीएल् =) God reveals, परमात्मा प्रकट करता है। (वेदादिको)

JAH'-DAI (यहदै) = Leader; guide (नेता, मार्ग-दर्शक)

JAH-DI'-EL (यहदी-एल्) = Union of God = परमात्मा (सूर्य) से संबंध वा ऐक्य।

JAH'-MAI (यहमाई) = Jah protects = परमात्मा (सूर्य) रक्षक है।

JA'-IR (याइर) = Jah enlightens = परमात्मा (सूर्य) प्रकाशित करता है।

JAM'-LECH (यामलेक्) Jah rules = (परमात्मा सूर्य) राज करता है।

JAPH'-LET (याफ्लेट्) Jah causes to escape = परमात्मा (सूर्य) भगा ले जाता है।

JA'-PHO (याफो) High = ऊंचा।

JA'-RAH (यारह) Unveiler = बुर्का उतारने वा प्रकट करनेवाला (सूर्य)

JA'-REH (या-रेह) Descending = नीचे उतरता हुआ (सूर्य)।

JA'-SHEN (याशेन्) Shining चमकीता (सूर्य)

JA'-SHER (याशेर) Upright = धर्म-परायण, सीधा, सच्चा (सूर्य)

JA'-SON (यासन्) Healing = निरोगी बनानेवाला (सूर्य)

JATH-NI'-EL (यठनीएल) God is giving = परमात्मा (सूर्य) दाता है।

JE-HI-EL (येहीएल्) God is living = परमात्मा जीता है।

JE-HO-AD'-DAN (येहो आद दन) Jah gives delight = परमात्मा (सूर्य) आनंद दाता है।

JE-HO'-ASH (येहोअश्) Jah supports = परमेश्वर (सूर्य) आधार देता है, स्कम्भ है।

JE-HO'-RAM (येहोरम्) = Jah is high = परमेश्वर (सूर्य) ऊंचा है।

JE-HO-SHA'-PHAT (येहोशा फट) = Jah is judge = परमेश्वर (सूर्य) न्यायाधीश है।

JE-HO'-VAH (येहोवह) The existing one = सदा वर्तमान, नित्य (सूर्य)

The incommunicable name of the God of Israel, In the common version of the English Bible it is generally, though improperly, transferred by ' the Lord '

अर्थ– येहोवह यहूदियोंके अनिर्वचनीय परमेश्वरका नाम है। आंग्ल भाषाके साधारण अनुवादोंमें प्रायः इसका अनुवाद ' लार्ड ' किया जाता है, यद्यपि ऐसा अनुवाद करना अयोग्य है।

(Lord = लार्ड शब्द संस्कृतका **लाट** = स्कम्भ = सूर्य है, अतः येहोवह का **लाट** अर्थ करना वैदिक दृष्टिकोणसे युक्तियुक्त है। अनिर्वचनीय ही मानना हो तो वैदिक दृष्टिसे **ओ३म्** अर्थ करना सुसंगत होगा– ले.)

प्रश्न– उक्त २४ नामोंमें आपने सर्वत्र ज का उच्चार य से किस आधारपर किया है?

उत्तर– कन्कार्डन्सके अन्तमें बाईबलमें आए हुए नामोंके उच्चारकी यादि दी हुई है, उसमें सर्वत्र ज का उच्चार य से ही किया गया है। भाषाओंमें य तथा ज एक दूसरेका स्थान लेते हैं, यह हमने ऊपर दिखाया ही है।

परन्तु इन २४ नामोंके उच्चार हमारी इस धारणाका बलपूर्वक समर्थन कर रहे हैं कि बाइबलका **यहोवा** शब्द संस्कृतके यह्व धातुसे बना है, और कि यह इब्रानी, यूनानी, वा अरामी भाषाका शब्द नहीं हैं! यही नहीं अपितु उक्त २४ के २४ शब्द भी संस्कृत भाषामें अपना मूल रखते हैं!

प्रश्न– दावा तो बडा भारी किया परंतु प्रमाण क्या है?

उत्तर– प्रमाण भी बडा है! कन्कार्डन्स के अंतमें जो बाईबलमें आए हुए इब्रानी, यूनानी तथा अरामी भाषाके नामोंकी शब्दसूची है, उसमें उक्त २४ नामोंमेंसे एक भी नाम नहीं है !!! अर्थात् ये वैदिक नाम हैं।

४. कुर्आनकी ५२ सूरत तूरपर वैदिक दृष्टिकोण (क) 'तूर' के अर्थ।

प्रश्न– मुस्लिम विद्वानोंका कथन है कि कुर्आनकी ५२ सूरतका नाम तूर = पर्वत इसलिये पडा कि सिनाई पर्वतपर ह० मूसाको अग्निदेवके सच्चे परमेश्वरके होनेका साक्षात्कार हुआ था। क्या इस विषयको आप वेदादि शास्त्रोंके आधारपर कुछ अधिक खोल सकते हैं?

उत्तर– वेदने गायत्री आदि अनेक मंत्रोंद्वारा सूर्यको ज्ञान दाता माना हुआ है, अतः यदि बाईबल तथा कुर्आन भी सिनाई पर्वत वा तूर सीनापर ह० मूसाको ईश्वर–साक्षात्कारका होना मानते हैं, तो वह पर्वत ' सूर्य ' भी हो सकता है, और अरबस्थानका सिनाई पर्वत (Mount Sinai) भी। परन्तु हमारा विचार ऐसा है कि मूलतः तूर् नामक पर्वत सूर्य ही हैं, कारण यह शब्द वेदका होनेसे अत्यंत प्राचीन है, और वेदसे बाईबलमें और बाईबलसे कुर्आनमें आया हुआ प्रतीत होता हैं।

तुरीय = जीवकी उस चतुर्थ अवस्थाका नाम है, जिसमें कि वह परमात्म–तत्त्व वा ब्रह्ममें लीन हो जाता है। (मुक्त अवस्थामें जीव सूर्यमें स्थान पाता है।)

तुर्व् = वेदमें To Injure दुःख देना; To kill मार डालना, यथा वृत्रं यदिन्द्रतुर्वसि ॥ ऋ. ८।९९।६; To excel = उत्कृष्ट होना To overpower = नीचे गिराना; Te save = रक्षा करना। (ये सब कार्य सूर्य-किरणों द्वारा कियेजाते हैं)।

तुर्वणि = वेदमें Acting or moviug quickly = वेगसे क्रिया करना वा हिलना; × Injuring or destroying enemies = शत्रुओंको सताना वा उन्हें नाश करना; Victorious (विजयी)। ये सब कार्य सूर्य = इंद्र = अग्नि करता है)

तूर् = (तूर्यते, तूर्ण) To go quickly; make haste = जलदी चलना; शीघ्रता करना × to hurt; to kill = दुखाना, सताना, वा मार डालना (ये सब कुछ सूर्य किरणें करती हैं)

तूर— Hastenig— शीघ्रता; Acowrier- हतकारा ×

तूरा— Speed— तेजी, शीघ्रता, तीव्रता ×

तूर्ण--Quick, Speedy, Rapid- त्वरित, शीघ्र×

तूर्ण- Quicrly, Speedily- शीघ्रतासे, जलदीसे× (आपटेका संस्कृत-आंग्ल कोश)

सुविज्ञ पाठको ! शब्द-कोशके अर्थ बताते हुए हमने [ ] इस प्रकारके कँसोंमें बताया है कि ये सब अर्थ सूर्यसे लगते हैं, अतः अधिक विस्तारसे लिखना व्यर्थ हैं,

वेदके अनुसार सूर्य पर्वत है, यह बात पूर्वके लेखोंमें सिद्ध हो चुकी है. उक्त शब्द उस पर्वतके गुणोंका बोध करा रहे हैं कि पर्वत कहलाते हुए भी वह बडाही शीघ्र-गामी है, इत्यादि ! पाश्चत्य ज्योतिषके उदाहरणसे सिद्ध होता है कि वह सूर्यरूपी पर्वत अपनी ग्रहमालाको अपने साथ घसीटते हुए एक वर्षमें अब्जों मील एक स्थानसे दूसरे स्थानपर निकल जाता है ! इसी कारण वह मानसिक आत्मिक शारीरिक शक्तियोंका प्रेरक, शिष्टोंको सुखदायी तथा दुष्टोंका दण्डदाता भी है। ऋग्वेद ६।१४।३ में तूर्वन्तो शब्द द्वारा अग्निको शत्रुनाशक कहा गया है। अतः सिद्ध हुआ कि तूर मूलतः वैदिक शब्द है, अरबीमें पर्वत अर्थमें उपयुक्त हुआ है, परंतु वह पर्वत सूर्य है, यह साक्षात्कार गत १३६६ वर्षोंके पश्चात् वेदकी कृपासे आज हो रहा है !!

प्रश्न— वेदमें सूर्यको 'पर्वत' करके संबोधन करनेका प्रयोजन क्या ?

उत्तर— सभी भाषाओंमें किसी भी महान् वा ऊंचे पदार्थको 'पर्वत' कहते हैं। यथा आंग्ल भाषामें ऊंची लहरोंको Mountain-high waves = पर्वतके समान ऊंची लहरें कहते हैं। फरसी भाषामें 'कोहे रवाँ' [शब्दार्थ 'चलता पर्वत'] हाथीका नाम है। वेदने सूर्यको पर्वत इस लिए कहा है कि वह पृथिवीसे ९,२८,४०००० मील ऊपर वा दूर है और साथ ही वह पृथिवीसे लगभग दस लाख गुना बडा भी है !

(ख) 'सिनाई' शब्दके वैदिक अर्थ।

प्रश्न— 'तूर' शब्दको तो आपने वेद तथा कुर्आनसे ढूंढ निकाला, और उसके 'पर्वत' अर्थको भी आपने स्थिर रखा। अब बताइये कि मुस्लिम भाष्यकारोंका यह मत कहांतक ठीक है कि सूरत ५२ का तूर नाम अरबस्थानके सिनाई पर्वतसे संबंध रखता है ?

उत्तर- सूरत ५२ का तूर अरबस्थानके सिनाई पर्वत-से उतना ही संबंध रखता है, जितना कि हिसारका त्वशाम पर्वत जगद्वीज-पुरुष सूर्यके साथ ! + अर्थात् कुर्आनके 'तूर' का मूलतः अर्बस्थानके पर्वतसे कोई संबंध नहीं, परंतु जिस प्रकार वेदकी कई बातें पुराणोंमें कथाका रूप धारण कर चकी हैं, इसी प्रकार तूर शब्दका संबंध अरबस्थानके सिनाई पर्वतसे मुस्लिम मौलावियोंने मान लिया ! स्वयं कुर्आन इस बातको नहीं मानता है ! मानता होता तो सूरत तूरका वर्णन अरबस्थानके

× इन सब शब्दोंसे सूर्यके शीघ्रगामी होनेकी ध्वनि निकल रही है। इस संबंधमें एक पाश्चात्य वैज्ञानिकका मत ऐसा है- ' When the earth has completed one circuit of the Sun, it is only back in the same place IN RELATION to the Sun; for the Sun itself is speeding through space at a terrific Speed, and when one of our human years has passed, it has traversed such on enormous distance that the earth is many thousands of millions of miles away from where it was a year before.' ONCE ROUND the SUN by K. L. Clissold, in Great thoughts of December 1938.

+ देखो 'जगद्बीज पुरुष त्वशाम' लेख वैदिक धर्म मई १९४६ के अंकमें।

❀

सिनाई पर्वत पर घटता, और न सूर्यरूपी पर्वत पर जैसा कि हम आगे सिद्ध करेंगे।

प्रश्न-- तो क्या सिनाई शब्द भी वेदसे संबंध रखता है ?

उत्तर- जी हां ! सिना शब्दका अर्थ आपटेके कोशमें इस प्रकार हैं-

सिना = White = श्वेत [अब, तूर सिन का संस्कृत अर्थ होगा ' श्वेत-शीघ्रगामी ' अथवा ' श्वेत हलकारा ' = सूर्य]

सिन = one-eyed एक आंखवाला [जो सब प्राणियोंको एक आंखसे* समानतयी देखता है और भेद-भाव नहीं रखता, अर्थात् सूर्य]

सिनः = The body = शरीर

सिनः = In Ved ' Food ' = वेदमें ' अन्न ' [**अद्यते, अत्ति च भूतानि तस्मात् अन्नं तदुच्यते** ॥ तैत्ति० उ० ब्रह्मा. अनुवाद २]

अर्थ— सूर्य प्राणियोंको खा जाता है, इसलिए उसे अन्न कहते हैं। इसी प्रकार सूर्यको वेदान्त दर्शन १।२,।९ में ' **अत्ता चरचरग्रहणात्** ' कहकर ' चराचर जगत्को खा जानेवाला भी कहा है। अब तूर-सिनः के संस्कृत अर्थ होंगे—

(कः) शीघ्रगामी शरीर = सूर्य, जैसा कि पाश्चात्य ज्योतिषिके प्रमाणसे ऊपर बताया है।

(ख) मारनेवाला अन्न; खा जानेवाला अन्न, अर्थात् सूर्य।

सिनीवाली- चंद्रदर्शनके पूर्वका दिन, वा वह चंद्रदर्शन-का जबकी चंद्र रेखा अत्यंत सूक्ष्म दीखती है। [आपटे-का कोष]

इस अर्थमें भी अग्नि वा सूर्य-प्रकाश झलक रहा है। यह शब्द ऋग्वेद २।३२।६, अथर्ववेद ७।४६।१ तथा वा० यजुर्वेद ३४।१० में आया है। अथर्ववेदके पूरे मंत्रका अर्थ श्री पं० श्री० दा० सातवलेकर कृत इस प्रकार है—

' हे (सिनीवाली) अन्नयुक्त और बहुतों द्वारा प्रशंसित देवी ! तू जो देवोंकी है भगिनी । देवी ! तू हवन किए आहूतियोंका स्वीकार कर और हमें उत्तम सन्तान दे ॥१॥

यहां ' सिनीवाली ' शब्द 'अन्नयुक्त' अर्थोंमें आया है, और वह अन्नयुक्त देवी = सूर्यादिकी बहिन उषादेवी ही है जो कि धुंधले सूर्यप्रकाशका ही नाम है। अतः तूर **सिनीवाली** = ' बडी ' शीघ्र चलनेवाली अन्नदात्री उषा देवी ऐसा अर्थ होगा।

श्री पं० जयदेव शर्माने यजुर्वेदके मंत्रमें '(सिनीवाली) समस्त प्रजाओंको अपने पालन और रक्षण, भक्षण, और पोषणके ' सामर्थ्यसे बांधनेवाली ' ऐसा अर्थ किया है। इस अर्थसे भी ' सिनीवाली ' उषा = सूर्यकी धुंधली ज्योति ' ही सिद्ध होती है।

सिन् धातुका ' बांधना ' अर्थ भी होता है और इसीलिए श्री जयदेवजीने ' सिनीवाली ' का ' सामर्थ्योंसे बांधनेवाली देवी ' ऐसा अर्थ किया है। स्वयं श्री पं० सातवलेकरजी भी अथर्ववेद ३।६।५ में **सिनातु**- ' बांध दे ' ऐसा अर्थ करते हैं, तथा-

' हे अश्वत्थ ! आपत्ति मृत्युके न टूटनेवाले पाशोंसे- (एनान् मामकान् शत्रून् सिनातु) इन मेरे शत्रुओंको बांध दे... ॥५॥

पाठको ! शत्रुओंको बांधनेवाली भी वही उषारूपी शक्ति वा सूर्य-तेज है। अतः जिस दृष्टि-कोणसे देखो कुर्आनका **सिनाई पर्वत** वेदके भीतर सूर्य-शक्तिही सिद्ध हो रहा है।

५. ' तूर ' शब्द बाइबलमें

प्रश्न-- क्या ' तूर ' शब्द वेदसे सीधा कुर्आनमें आया है ?

उत्तर— ' तूर ' शब्द कतार = पंक्ति = Row के अर्थोंमें इब्रानी भाषासे बाइबल निर्गमनके २८ वें अध्यायमें ५ वार, ३९ वें अध्यायमें ५ वार, १ राजाओंके अध्याय ७ में ८ वार प्रयुक्त हुआ है। बाइबलके कन्कार्डन्समें दी हुई शब्द-सूचिके अनुसार तूर शब्द अरामी [Aramaic] भाषाका शब्द भी है, और यहां Mountain = पर्वत

* वेदमें सूर्यको चक्षुः = ' एक आंख ' सर्वत्र कहा है यथा, ऋग्वेद १।११५।१ तथा १०।१५८। ३-५; यजुर्वेद ७।४२ तथा ३६।२४; अथर्ववेद २।१७।६ इत्यादि.

अर्थ रखता है, और पर्वत अर्थमें दो बार बाइबलके पुराने धर्मशास्त्रमें आया है।

अतः हमें ऐसा प्रतीत होता है कि अरामी भाषासे अथवा बाइबलसे 'तूर' शब्द कुर्आनमें उतरा है।

प्रश्न— क्या 'तूर' शब्दका संबंध कुर्आनके मुस्लिम भाष्यकारोंनेही सिनाई पर्वतसे जोडा है, बाइबलने नहीं?

उत्तर- हमारा विचार ऐसा ही है। प्रमाण लीजिये-

(क) ऊपर हमने बताया है कि बाइबलके तीन मुख्य अध्यायोंमें 'तूर' शब्द १८ बार पंक्ति Row के अर्थोंमें आया है। परंतु इनमें कहीं भी यह शब्द अरबस्थानके सिनाई पर्वतसे संबंध नहीं रखता।

(ख) 'तूर' शब्द आरामी भाषाका दो बार पर्वत–Mountain के अर्थोंमें दानियेल २।३५ तथा २।४५ में प्रयुक्त हुआ है, परंतु यहाँ भी वह अरबस्थानके सिनाई पर्वतसे लागू नहीं होता। उलटे २।३५ के अंतिम शब्द तो सूर्यकी ओरही संकेत करते प्रतीत होते हैं, यथा– 'वह पत्थर जो मूरतपर लगा था, सो बडा पहाड बनकर सारी पृथिवीमें भर गया' आंग्ल भाष्य है—

The stone that smote the image became a great mountain and filled the whole earth. Daniel (2 35)

अब पाठकही विचारें कि क्या यह सूर्य-रूपी पर्वतही नहीं, क्या यह अग्नि-तत्वही नहीं जो कि सारी पृथिवीमें भरा हुआ है?

अतः सिद्ध हुआ कि बाइबलका 'तूर' शब्द 'पर्वत, पंक्ति' आदि अर्थ रखनेवाला एक साधारण शब्द, है और उसका अरबस्थानके सिनाई पर्वतसे कोई विशेष संबंध नहीं है।

(ग) इसका एक अकाट्य प्रमाण यह भी है कि स्वयं कन्कार्डन्सके कर्ता श्रीयुत राबर्ट यंग (Robert Youug LL. D,) ने माऊंट Mount' शब्दके अंतमें एक नोट लिखा है जिसमें Sinai सिनाई पर्वतके साथ अन्य ३५ ऐसे पर्वतों आदिके नाम भी दिए हैं, जिनसे इब्रानी आदि भाषाओंके अनेकों शब्द 'पर्वत' के अर्थोंमें समानततया लागू होते हैं।

इससे फिर सिद्ध हुआ कि 'तूर' शब्दका अरबस्तानके सिनाई पर्वतसे बाइबलमें कोई विशेष संबंध नहीं है, और कुर्आनकी सूरत ५२ के 'तूर' नामका संबंध सिनाई पर्वतसे विशेषतः जोडना मुसलमान विद्वानोंकी कल्पना है!

(घ) कुर्आनकी ५२ सूरतका वर्णन भी यही बात सिद्ध करता है, जैसा कि हम आगे चलकर दिखाएंगे।

६. यहोवा पर्वतके बाइबलमें आठ नाम। सीनै, हर, ओरोस, अलह, होर, होरं, होरब तथा सिय्योन

प्रश्न- वेदके अनुसार आपने सिन्, सिन, सिनः, सिनीवाली इन शब्दों द्वारा कुर्आन तथा बाइबलके सिनाई पर्वतपर प्रकाश डालते हुए, उसे सूर्य वा उषा वा अग्नि-तत्व सिद्ध किया है। अब बताइए कि बाईबल आपके इस विचारका कहां तक समर्थन करता है?

उत्तर- बाइबलके कन्कार्डन्सके अनुसार 'Si-na (सीन) अथवा Si-nai (सीनै) एक पर्वत है जो कि Suez and Akaba स्वेज तथा अकबाके आखातके बीचमें है।' इस पर्वतपर यहोवाने ह० मूसाको धर्मके १० लक्षण (Commandments) सिखाए थे, ऐसा बाईबलका कथन है। आर्य लोग मानते हैं कि चारों वेदोंका ज्ञान उच्छिष्ट, स्कम्भ, पुरुष,-सूर्यरूपी पर्वत वा अग्नि तत्वसे प्राप्त हुआ है। अब देखना यह है कि बाईबलके वर्णनसे यहोवा भी अग्नि तत्व सिद्ध होता है वा नहीं। सीनै पर्वतपर यहोवाके उतरनेका वर्णन बाइबलके धर्मशास्त्र नामक हिन्दी अनुवादमें इस प्रकार दिया है—

(क) निर्गमन १९।१६-१८ में- तब भोर होते होते बादल गरजने और बिजली चमकने लगी और पर्वतपर काली घटा छा गई... (१६) तब मूसा लोगोंको परमेश्वरसे भेंट करनेके लिए छावनीसे निकाल ले गया, और वे पर्वतके नीचे खडे हुए (१७) और यहोवा जो आगमें होकर सीनै पर्वत पर उत्तरा था, ※ सो सारा पर्वत

※ And Mount Sinai was altogether on a smoke, because the Lord descended upon it in fire: (Exodus 19: 18) The Holy Bible, printed at the University Press, Oxford.

धुंएंसे भर गया, और उसका धुंआं भट्टेका सा उठ रहा था, और सारा पर्वत बहुत कांप रहा था (१८)।

सुविज्ञ पाठको! बादल गरजना, बिजली चमकना, काली घटाका आना, धुंआं (तुषार mist) का उत्पन्न होना, क्या यही सूचना नहीं दे रहे थे कि इन्द्र देव द्युलोकसे पृथिवी पर उतर रहे थे? क्या यहोवाका अग्निरूपमें सीनै पर्वतपर उत्तरना सिद्ध नहीं करता कि यहोवा इन्द्र-सूर्य-अग्नितत्व ॐ है? और देखिए—

(ख) निर्गमन ३।२-३— और परमेश्वरके दूतने एक कटीली झाडीके बीच आगकी लौमें उसको दर्शन दिया, और उसने दृष्टि करके देखा कि झाडी जल रही है, पर भस्म नहीं होती (२) × तब मूसाने सोचा कि मैं इधर फिरके इस बडे अचंभेको देखूंगा कि वह झाडी क्यों नहीं जल जाती? (३)

पाठको! वेदोंमें अग्निको ६० से अधिक स्थानोंपर दूत कहा गया है! [देखो **दैवत-संहिता** में अग्निदेवताके गुण-बोधक पदोंकी सूची श्री० पं० श्री० दा० सातवळेकर कृत] क्या आगकी लौ [flame] में दर्शन देनेवाला स्वयं अग्नि देवही नहीं है? यही परमेश्वर है! झाडी जल रही है पर भस्म नहीं होती यह अचंभा तो अग्निदेवकी सर्वव्यापकता सिद्ध कर रहा है! अग्निकी व्यापताके कारण ही प्राणियोंके शरीर जलते [उष्ण] रहते हैं, परंतु भस्म नहीं होते! भाईयों! बाईबल तो वेदकी कथा कर रहा, पर कोई समझे तो सही! और देखिए--

(ग) निर्गमन २४।१६।१७– तब यहोवाके तेजने * सीनै पर्वत पर निवास किया और वह बादल उस पर छः दिन लों छाया रहा, और सातवें दिन उसने मूसाको बादल के बीचसे बुलाया (१६) और इस्राएलियों (यहूदियों) की दृष्टिमें यहोवाका तेज पर्वतकी चोटी पर प्रचण्ड आग सा देख पडता था (१७)

पाठको! वैदिक धर्म कहता है कि निराकार परमात्माका तेज सूर्य-रूपी पर्वत पर निवास करता है! यहोवाके तेजका बादलोंमें रहना, उसका बादलोंमेंसे मूसाको बुलाना और उसका प्रचण्ड अग्निरूप ये सब कुछ यहोवाको इन्द्र सूर्य सिद्ध करनेके लिए बाइबलके पर्याप्त प्रमाण हैं। यह सूर्य-तेज सूर्य-भक्तमें किस प्रकार उतरा सो अब देखिए–

(घ) निर्गमन ३४।२९-३०– जब मूसा साक्षीकी दोनों पाटियां हाथमें लिए हुए सीनै पर्वतसे उतरा आता था, तब यहोवाके साथ बातें करनेके कारण उसके चिहरेसे किरणें निकल रही थीं; पर वह न जानता था कि मेरे चिहरेसे किरणें निकल रही हैं (२९) जब हारून और अन्य सब इस्राएलियोंने मूसाको देखा कि उसके चिहरेसे किरणें निकलती हैं, तब वे उसके पास जानेसे डर गए (३०)

पाठको! यह वा० य० ३४।९ में आए प्रार्थना मंत्रकी सिद्धि है वा नहीं? बाइबलके इस कथनसे भी यहोवा अग्नि-तत्व वा सूर्य सिद्ध हो रहा है। परंतु और देखिए—

(ङ)– यहोवाका मूसाके साथ अग्निमेंसे बोलनेका उल्लेख बाईबलमें अनेकों स्थानोंपर आया है, यथा **व्यवस्था विवरण** = (Deuteronomy) ४।१२,३६;५।४; ९-१०;१०।४ **भजन-संहिता** १४७।८--९,१६--१८ तो पुनः **यहोवाको** इन्द्र सिद्ध करते हैं!

लेख बढ जानेके भयसे हम इनका उल्लेख नहीं कर सकते, परंतु जिज्ञासुओंसे प्रार्थना हैं, कि वे स्वयंही बाईबलमें देखें।

प्रश्न– अब तो आपने ऐसा आभास उत्पन्न कर दिया है, मानो सीनै पर्वत मूलतः सूर्य ही था, जिसे कि अंतमें लोगोंने अर्बस्थानका पर्वत समझ लिया, अथवा जान बूझकर यह पवित्र नाम उस पर्वतको दिया, जैसे कि प्राचीन भारतीयोंने **तोशाम** पर्वतकी आसपासकी जगहोंको वैदिक नामोंसे सुशोभित किया है। अब शंका यह उत्पन्न

× And the angel of the Lord appeared unto him in a flame of fire out of the midst of a bush: and he looked and behold, the bush burned with fire, and the bush was not consumed. (Exodus 3: 2)

* वेदमें प्रार्थना है— **तेजोऽसि तेजो मयि धेहि** (वा० य० १९।९) हे सूर्य! तू तेजस्वरूप है, मुझमें तेज स्थापन कर ॥९॥ इससे भी यहोवा सूर्य सिद्ध होता है।

होती है कि यदि बाईबलका उद्देश्य सूर्योपासना सिखानेका होता, तो वेदके अनुसार बाईबलमें सूर्य वा इन्द्रके घोडों रथों = सूर्यकिरणोंका उल्लेख भी वश्यअ आता !

उत्तर— आया है, परंतु वेदके ज्ञान न होनेसे ईसाई पंडितोंने समझा नहीं, यथा–

(क)–... हे यहोवा ! तू अत्यन्त महान् है। तू वैभव और ऐश्वर्यका वस्त्र पहिने है। वह उजियालेको चादरकी नाई ओढे रहता... और मेघोंको अपना रथ बनाता और पवनके पंखोंपर चलता है। (भजनसं-हिता १०४।१-३)

(ख)—... उस (यहोवाह) के घोडे उकाबों (गरुडों) से अधिक वेगसे चलते हैं–(यिर्मयाह ४।१३)

(ग) पर हे शिखरवाले पहाडो ! तुम क्यों उस पर्वतको घूरते हो, जिसे परमेश्वरने अपने वासके लिए चाहा है ? परमेश्वरके रथ हजारों वरन हजारों हजार हैं। प्रभु उनके बीच है। सीनै पवित्र स्थानमें है (भजन-संहिता ६८।१६-१७).

पाठको ! ' परमेश्वरके रथ हजारों हजार ' का अर्थ ' सूर्यकी असंख्य किरणें ' ही हैं। प्रभु = सूर्य उनके बीच रहता है। यही सीनै = सूर्य-लोक पवित्र स्थान है ! यदि यह अर्थ कोई न माने तो वह अरबस्थानके सीनै पर्वत पर यहोवाके हजारों हजार रथ दिखनेकी कृपा करें.

(घ)– अचानक एक अग्निमय रथ और अग्निमय घोडोंने उनको अलग अलग किया और एलिय्याद (Whirl-wind) में होकर स्वर्ग पर चढ गया। (२ राजा २।११)

पाठको ! ये अग्निमय रथ और घोडे सूर्य-किरणें ही हैं।

प्रश्न– वेदोंमें तो इन्द्रका रथमें बैठकर शत्रुओंको मारनेका वर्णन भी आता है !

उत्तर– बाइबलमें भी है, यथा–

... यहोवाका हाथ उसके दासोंपर और उसके शत्रुओंके ऊपर उसका क्रोध प्रकट होगा (१४) सुनो ! यहोवा आगके साथ आएगा, और उसके रथ बवंडरके समान होंगे, जिससे वह भडके हुए कोपके साथ दण्ड और भस्म करनेहारी लौके साथ घुडकी दे (१५) क्योंकि यहोवा सारे प्राणियोंके साथ आग और अपनी तलवार लिए हुए न्याय चुकाएगा ... (१६ यशायाह ६६).

प्रश्न– क्या बाइबलमें कहीं सूर्यपूजाका स्पष्ट विधान भी है ?

उत्तर– है, यथा–

(क)– २ राजा २३।५ से पता लगता है कि किसी समय " बाल, सूर्य, चंद्रमा, राशि-चक्र और आकाशके सारे गणको धूप जलाया जाता था ' जो फिर बंद कर दिया गया २३।११ से पता लगता है कि उस समय " यहुदाके राजाओंने जो घोडे सूर्यको अर्पण करके यहोवाके भवनके द्वार पर नमन्मेलेक नाम खोजेकी बाहरकी कोठडीमें रखे थे, उनको उसने दूर किया और सूर्यके रथोंको आगमें फूंक दिया' यह आजकलके हिन्दुओंकी पूजाका नमूना था, जो बंद कराया गया।

(ख)— दुष्टोंके डेरोंमें वास करनेसे, अपने परमेश्वरके भवनकी डेवढी पर खडा रहना ही मुझे अधिक भावता है। क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है। (भजन-संहिता ८५।१०,११)

पाठको ! यहां यहोवा स्वयमेव सूर्य सिद्ध हो रहे हैं ! अब सूर्योपासनामें क्या संदेह ? अतः सूर्योपासना ऐसे ऐसे वचनोंके आधार पर बराबर होती रही। एक उदाहरण और लीजिए—

(ग)–' सो वह मुझे यहोवाके भवनके भीतरी आंगनमें ले गया और वहां यहोवाके मंदिरके द्वारके पास ओसारे और वेदीके बीच कोई पचीस पुरुष अपनी पीठ यहोवाके मंदिरकी ओर और अपने मुख पूरब की ओर किए हुए थे, और वे पूरब दिशाकी ओर सूर्यको दण्डवत कर रहे थे। (यहेजकेल ८।१६)

पाठको ! यह आर्योंका प्रातःकालका सूर्य-नमस्कारही तो था ! यहोवाके मंदिरकी ओर पीठ करके सूर्य-नमस्कार करना सिद्ध करता है कि ईसाई मतके प्रचलित होने के पश्चात् तक भी उन देशोंमें सूर्योपासना होती थी ! और यदि धर्मांधता छोडी जाय तो स्वयं बाइबलके आधार पर ही फिरसे आरंभ हो जानी चाहिएं !

प्रश्न— यदि स्वयं बाईबल सूर्योपासना वा अग्नि उपा-

सिखाता होता, तो यहूदियों और ईसाइयोंमें ये उपासनाएं प्रचलित न हो जातीं ?

उत्तर— हम संक्षेपसे बाईबलके प्रमाण बताते हैं। पाठक सत्यासत्यका निर्णय स्वयं ही करें—

(क)— तब तुम तो अपने देवतासे प्रार्थना करना और मैं यहोवासे प्रार्थना करूंगा, और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे ॥२४॥ तब यहोवाकी आग आकाशसे पडी और होमबलीको लकडी और पत्थरों और धूली समेत भस्म कर दिया ॥३९॥ (१ राजा)

(पाठको ! यहोवाके अग्निमेंसे बोलनेके प्रमाण आप इससे पूर्व देख चुके हैं, यहां वह अग्निमें प्रकट होकर होम बलिको खा रहा है ! यह बात और है कि यहूदी लोग मांसका हवन करते थे, जैसे कि कई पौराणिक लोग भी करते हैं। परंतु हमारा अभिप्राय तो केवल यहूदियोंमें अग्नि-पूजा सिद्ध करनेका है। ऐसे उदाहरण बाइबलमें अन्यत्र भी अनेकों हैं ! वेदमें भी क्रव्याद अग्नि = कच्चा मांस-भक्षक अग्निका वर्णन है]

(ख)— ईश्वर ज्योति है, और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं है ॥ (१ योहन १।५)

(ग)— यहोवाका तेज पर्वतकी चोटी पर प्रचंड आगसा देख पडता था ॥ (निर्गमन २४।१७)

(घ)— यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है = For the Lord God is a Sun and Shield ॥ (भजन संहिता ८४।११)

(ङ)— जो तेरे आगे भस्म करनेहारी आगके नाईं पार जानेहारा है, वह तेरा परमेश्वर यहोवा है ॥ (व्यवस्था विवरण ९।३)

(च)— क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा भस्म करनेहारी आगसा जल उठनेहारा परमेश्वर है ॥ (व्यवस्था विवरण ४।२४)

(छ)— क्योंकि हमारा ईश्वर भस्म करनेहारी अग्नि है = For our God is a cousuming fire ॥ (इब्रियोंको १२।२९)

(ज)— अतः अग्निमें यहोवाकी महिमा गाओ = Wherefore glorify ye the Lord in the fires (यशायाह २४।१५)

पाठको ! ये आठ प्रमाण बाइबलके यहोवा= Jehovah= Lord का साक्षात्कार कराते हुए अत्यंत स्पष्ट रीतिसे उसे अग्नितत्व ही सिद्ध करते हैं। अन्तिम प्रमाणमें तो स्पष्ट बता दिया है कि यहोवाकी पूजा अग्निमें होम करके करना चाहिये, जो कि एक वैदिक सिद्धान्तही है !

प्रश्न— बाईबलसे आपने सूर्य वा अग्नि उपासना तो सिद्ध की, परंतु क्या बाइबलमें यहोवाको पर्वत भी कहीं माना गया है ?

उत्तर— १. हमारा निजी मत ऐसा है कि सीनै पर्वत मूलतः सूर्यका ही नाम था, और बादमें वही नाम अर्बस्थान-के पर्वतको दिया गया। भजन संहिता ६८।१६-१७ का संकेत कदाचित् इसी सूर्यरूपी पर्वतकी ओर हो। हमने धारा ४ के क तथा ख में क्रमशः तूर तथा सिनाई शब्दके जो वैदिक अर्थ दर्शाए हैं, उनसे भी हमारे इस मतको बहुत पुष्टि मिलती है। परंतु अब कुछ नये प्रमाण भी देते हैं।

(क) हरः नाम है शिव वा अग्निका। हरिः- विष्णु, इन्द्र, शिव, ब्रह्मन्, यम, सूर्य, चंद्र, प्रकाश-किरण, अग्नि, वायु, सिंह तथा घोडा (देखो आपटेका कोश)।

उत्तर भारतमें प्रायः हर ही बोला जाता है, हरि नहीं, यथा—

> 'हर हर करें तो हारे क्यों ? हरका नाम बिसारे क्यों ?' जब मैं था तब हर नहीं, अब हर है मैं नहीं। कबीरा नगरी एकमें राजा दो न समाहिं।'

बाइबलके कन्कार्डन्समें यही 'हर-सूर्य-अग्नि' शब्द इब्रानी (Hebrew) भाषामें पर्वतके अर्थोंमें आया है, यह एक बडेही आश्चर्यकी बात है ! यथा—

Mount, hill = HAR (पर्वत-शिखर वा टेकडीको इब्रानीमें हर कहते हैं) Mountain, hill HERER or HARAR (पर्वत वा टेकडीको इब्रानीमें 'हेरर' वा 'हरर' कहते हैं। क्या यह 'हरीहर' वा 'हरहर' का बिगडा रूप नहीं ?)

(ख) Mount; Mountain; hill- OROS (पर्वत शिखर, पर्वत, वा टेकडीको इब्रानीमें ओरोस कहते हैं। यह कदाचित् वेदकी उर्वशी नामक इन्द्र-शक्तिका बिगडा रूप है।)

(ग) Mount, to go up-ALAM. [माउंट शब्दका अर्थ ऊपर चढना भी है। इस अर्थको दिखानेवाला इब्रानी भाषाका शब्द अलह है। सूर्य सदा पृथिवीपर चढता-ही रहता है, कभी उतरता नहीं! सायंकालको जब वह पृथिवीके किसी एक भागमें उतरता प्रतीत होता हैं, उस समय भी वह दूसरे भागमें उदय होता वा चढताही जाता है!! पिछले लेखोंमें हमने अरबी शब्द अल्लाहको 'सूर्य' सिद्ध किया था। अब पता पडा कि यह शब्द इब्रानी वा यूनानी (Hebrew or Greek) भाषाओंसे गुजरता हुआ अरबीतक पहुँचा है!]

पाठको! वेदादिमें सूर्य वा अग्निको 'हर' कहा गया, और बाईबलने 'हर' का लुप्त अर्थ पर्वत बताया! क्या इससे बाईबलमें पर्वतरूपी सूर्योपासना सिद्ध नहीं होती?

(घ) 'हर' के समान इब्रानी भाषाका HOR [होर] शब्द भी Mountian [पर्वत] का अर्थ रखता है। कन्कार्डेन्समें HOR होरको "The Mountain of Mountains" 'पर्वतोंका पर्वत' कहा है। इस नामसे इसकी महानता टपकती है; अतः यह पृथिवीपरका पर्वत तो हो नहीं सकता। संस्कृतमें होरा कहते हैं 'राशिके उदय होने' को। ज्योतिषि लोगोंकी उपाधि है "होरा-भूषण' अब फिर सिद्ध हुआ कि इब्रानी होर शब्द भी मूलतः संस्कृतका है, और सूर्यरूपी पर्वतका मार्ग बता रहा है! सूर्यही 'पर्वतोंका पर्वत' कहला सकता है।

(ङ) इब्रानीके HO'-RAM [होरं] शब्दका अर्थ है Elevated ऊंचा। 'ऊंचा' शब्द भी सूर्यकी ओर ही संकेत कर रहा है! आपटेके कोशमें भी उत्तरः = ऊंचा शब्दके अर्थ 'शिव और विष्णु' हैं!

(च) अतः बाईबलके कई स्थानोंमें यथा निर्गमन ३।१, ४।२७, १८।५, गिनती १०।३३, १ राजा १९।८ आदिमें जिस HOREB [होर+इव] The mountain of God = 'परमेश्वरके पर्वत' का वर्णन आता है, सो मूलतः सूर्य-पर्वतही था, ऐसा हमारा विश्वास है और वही सबसे अधिक बोझल होनेके कारण HOR = 'होर' 'पर्वतोंका पर्वत' भी कहला सकता है।

(छ) इसी प्रकार बाईबलमें एक ZION [सिय्योन] नामक पर्वतका उल्लेख आता है। कन्कार्डेन्समें इसका इब्रानी अर्थ है Fortress किला = गढी। हिंदी बाईबलमें इसका वर्णन निम्न प्रकार है-

सिय्योन पर्वत ऊंचाईमें सुन्दर और सारी पृथिवीके हर्षका कारण है ॥ भजन संहिता ४८।२ ॥ [श्येन संस्कृतमें White 'शुभ्र' वा 'श्वेत' को कहते हैं। अतः श्येन-पर्वत= श्वेत पर्वत = सूर्य! सूर्यही पृथिवीके हर्षका कारण है, वही ऊंचाईमें सुन्दर है, वही सब पृथिवीपर देखा जा सकता है। आंग्ल अर्थ है- Generation to generation joy of the whole earth is mount ZION.]

जो यहोयापर भरोसा रखते हैं, वे सिय्योन [श्येनः] पर्वतके समान हैं, जो टलता नहीं, सदा बना रहता है ॥ भजन स० १२५।१ ॥ [सूर्यही अटल और नित्य पर्वत है]

Who will give salvations of Israel out of Zion ॥ भजन संहिता ५३।६ ॥ हमारा अर्थ- श्येन-पर्वत = सूर्यमेंसे यहूदियोंको मुक्तियां कौन देगा? ॥६॥

[पाठको! मुक्ति देनेवाला श्वेत पर्वत सूर्यके अतिरिक्त और कौन हो सकता है?]

यहोवा सिय्योन [श्येनः] में महान् है ॥ भजन सं.९९।२॥ [परमेश्वरकी महानता सूर्यसेही प्रकट होती है]

यहोवाह जिसकी अग्नि सिय्योन [श्येनः] में है... ॥ यशायाह ३१।९ ॥ [श्येनः = श्वेत पर्वत = ही अग्निका केन्द्रस्थान है]

सो तुम जानोगे कि यहोवा जो अपने पवित्र पर्वत सिय्योनपर बास किए रहता है, सोही हमारा परमेश्वर है...॥ योएल ३।१७ ॥

So shall ye know that I am the Lord your God dwelling in Zion my holy mountain. (Joel 3:17)

हमारा अर्थ— अतः आप जान लोगे कि मैं यहोवा अपने श्वेन = श्वेत पवित्र पर्वतमें सदा वसनेवाला परमेश्वरही तुम्हारी लाट = स्कंभ हूं ॥ १७ ॥

[सूर्यद्वारा परमेश्वर-प्राप्ति, सूर्यकिरणोंद्वारा मुक्ति तथा सूर्यलोकको मुक्तिस्थान वेदने भी माना है। सूर्यसे ही जगदुत्पत्ति तथा जीवन है। आपटेके कोशमें जीवनका अर्थ Life, existeuce, supreme Being अर्थात् 'आयु, सत्ता, परमेश्वर' ऐसे आये हैं। बाईबलका ZION = जीअन शब्द वेदके जीवन शब्दका बिगडा रूप भी हो सकता है! सूर्य-जीवन-पर्वत भी तो है! इसी जीवन पर्वतपर यहोवा रहते हैं! इस प्रकार बाईबलमें पर्वतरूपी सूर्योपासना स्वयं बाईबलके प्रमाणोंसे सिद्ध हो रही है!]

पाठको! कुर्आनकी ५२ सूरत तूर पर बडा लंबा चौडा विचार इसलिए ही किया गया है, कि पर्वतरूपी सूर्योपासना पर न कुर्आनवालोंको शंका शेष रहे और न बाइबलवालोंको।

७. कुर्आनकी सूरत सं० ५२ 'तूर' से सूर्योपासना सिद्धि

प्रश्न— तूर शब्दको स्वयं मुस्लिम विद्वान् सिनाई पर्वत समझते हैं, वैदिक साहित्यमें तूर तथा सिनाई दोनों सूर्यकी ओर संकेत करते हैं। बाईबल भी हूर, ओरोस, अलह, सीनै, होर, होरेब, सिय्योन [श्येन] पर्वतों द्वारा सूर्योपासना वा गरुड उपासना सिखाता है, ये सब तो सिद्ध हो चुका। अब अंतिम शंका यह है, कि यदि वस्तुतः कुर्आन सूर्योपासना सिखाता है, तो सूरत तूरमें ऐसे विषयोंका वर्णन आना चाहिए, जो कि वैदिक सिद्धान्तोंके अनुसार सूर्यसे ही संबंध रखनेवाले हों! क्या सूरत तूरमें इस प्रकारके वर्णन उपस्थित हैं?

उत्तर— जी हां! देखिए!

(क)– [हे पैगम्बर! हमें] तूर (पर्वत) की शपथ और लिखी हुई पुस्तक (लौहे महफूज) [वेद] की (१-२) कि तेरे पालनकर्ताकी शिक्षा [नास्तिकोंपर] अवश्य आकर उतरेगी। (७) ×

[उक्त तीन आयतोंमें कुर्आनका कर्ता तूर [सूर्य] पर्वत तथा वेदकी शपथ खाकर कह रहा है कि नास्तिकों पर तेरे रब्बि [रवी = सूर्य] की शिक्षा अवश्य उतरेगी। सूर्यसे वेदका प्रकट होना, और सूर्यद्वारा कर्मफलका भुगताए जाना वैदिक सिद्धान्तही है।]

(ख)– जिस दिन इन लोगोंको जहन्नम (दोजख = नरक) की अग्निकी ओर धकेला जायगा (१३) (तब उन्हें बताया जायगा कि) जिसे तुम पाखण्ड समझते थे वह नरकाग्नि यही है (१४) +

(यहां भी इहलोकमें किए गए पापोंको परलोकमें अग्निद्वारा भुगतवानेके वैदिक सिद्धान्तकाही वर्णन कुर्आनकी ५२ सूरतमें हो रहा है। स्मरण रहे कि कर्म--फल अग्निद्वाराही भुगताए जाते है।)

(ग)— निस्संदेह, दुराचारसे दूर रहनेवाले ※ (स्वर्गके उद्यानोंमें) और सुख चैनमें रहेंगे (१७) (आगे १८ से २८ तक श्रद्धा, स्वर्ग सुख तथा ईश्वरकी दयाका वर्णन है, जो सभी वैदिक मन्तव्यानुसार भी सूर्यसेही संबंध रखते हैं।)

(घ)— वे (नास्तिक) कहते हैं कि इस (ह० मुहम्मद सा०) ने कुर्आन स्वयंही बनाया है, अतः वे उसपर श्रद्धा नहीं ला सकते (३३) उन्हें भी एक ऐसीही बात बना

× वेद वा लौहेमहफूजको हिंदू तो मानतेही नहीं। अतः जो यातनाएं १६।८।४६ से हिन्दुओंपर उतरी हैं, वे इनके वैदिक धर्मसे विमुख होनेके ही फल हैं।

+ परमात्मा यूं ही किसी व्यक्ति वा जातिको दुःख नहीं दिया करते। अतः इहलोकमें भी जो दुःख हिंदुओंको मिल रहा है, वह उनके वैदिक धर्मसे विमुख होनेके कारणही है। स्वयं कुर्आनने भी आयत ४७ में इस बातको स्पष्ट किया है।

※ १६।८।४६ के दिनसे मुस्लिम लीगने जो दुराचारका बर्ताव हिंदुओंके विरुद्ध आरंभ किया है, उसके अनुसार तो वे स्वर्ग-सुखके अधिकारी कदापि नहीं ठहराए जा सकते।

लानी चाहिए (३४) (आगे ३५-४२ में सृष्टि निर्माण व परमात्मासे ज्ञान-प्राप्तिकाही वर्णन है। ये वेदोत्पत्ति आदिके विषय भी सूर्यसे ही संबंध रखते हैं।)

(ङ)— यदि अल्लाहके सिवा उनका कोई (और) उपास्य ❀ (देव) है, तो अल्लाह ऐसे जोडीदारोंसे अधिक पवित्र है (४३) अतः (हे पैगम्बर !) उन्हें तबतक छोड दे, जबतक कि उन्हें वह दिन न आए, जिस दिन वे मूर्च्छित होकर गिर पडेंगे (४५) और उस दिन उनके मकर (दांव पेच) उनके किसी काम न आवेंगे और न उन्हें कहींसे सहायता मिलेगी (४६) और जो लोग जुल्म (अत्याचार) करते हैं उन्हें इस (पुनरुत्थानकी शिक्षाके) के सिवा (इहलोकमें और भी) शिक्षा (होनी) है, परंतु उनमेंसे बहुत लोग इस बातको नहीं समझते + (४७) अतः (हे पैगम्बर !) तू अपने रब्बि (रवि = सूर्य) की आज्ञाकी प्रतीक्षा करते रह... और सोकर उठनेके बाद (प्रातःकालको) रातके एक भागमें तथा नक्षत्रोंके डूब जानेके पश्चात् अपने रब्बिका स्तवन किया कर (४८-९) सूरत तूर।

टीप— ऐसे ( ) कँस कुर्आनके मराठी अनुवादकके हैं और ऐसे [ ] हमारे हैं। पाठको ! कुर्आनकी सूरत ५२ तूर में कुल ४९ आयतें ही हैं, जिनमेंसे कइयोंका पूरा अनुवाद और कितेकोंका सारांश हमने ऊपर बताया है। इनके पढनेसे तुरंतही एक साधारण मनुष्य भी समझ सकता है कि इस सूरतका नाम तूर इसलिए रखा गया है कि इसमें सूर्य पर्वतका वर्णन आना था ! जो लोग 'तूर' के अर्थ सिनाई पर्वत लेते हैं, वे भी यदि सूर्यको सिनाई पर्वत मानें तो ठीक संगति लगाते हैं। परंतु जो 'तूर' को अर्बस्थानका पर्वत मानते हैं वे कृपया बताएं कि सूरते तूर का वर्णन उक्त पर्वतसे किस प्रकार लागू होता है ?

जो सज्जन इन लेखोंका मनन करेंगे, उनपर इस नवीन (परंतु अत्यंत प्राचीन) ज्ञानका प्रकटीकरण होगा, कि जिसे लोग यहोवा, लार्ड, अल्लाह, ईश्वर, परमेश्वर आदि नामोंसे पुकारते हैं, वह वास्तवमें अग्नि-तत्त्व वा सूर्यके सिवा और कुछ नहीं है। आजतक आर्यजाति केवल वेदादि शास्त्रोंको पढकरही ईश्वर साक्षात्कारकी आशा करती आई है, परंतु अब उन्हें प्रतीत होगा कि बाईबल तथा कुर्आन भी उन्हें सान ग्रंथोंका काम दे सकते हैं। अलम्

❀ मूर्तिपूजक हिंदू-मुसलमान सावधान रहे !

+ इस ४७ वीं आयतकी आज्ञा अत्यंत स्पष्ट है कि जालिम = अत्याचारी लोगोंको इस लोकमें भी शिक्षा मिलेगी और परलोकमें भी ! औरंगजेबने हिंदुओंपर अत्याचार किया और मुस्लिम राज्यका नाश कराया। अब मुस्लिम लीग अत्याचार कर रही है ! आश्चर्य तो यह है कि औरंगजेब और मुस्लिम लीग दोनों कुर्आनके अनुयायी है !! कुर्आनका कथन पुनः सत्य सिद्ध होगा।

❀

स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि॰ सातारा) की पुस्तकें ।

पुस्तक	मूल्य	डा. व्य.
१ ऋग्वेद-संहिता	मू. ६)	डा.व्य. १।)
२ यजुर्वेद-संहिता	(समाप्त)	
३ सामवेद ”	(„)	
४ अथर्ववेद ”	(„)	
५ काण्व-संहिता	४)	॥=)
६ मैत्रायणी सं॰	६)	१)
७ काठक सं॰	६)	१)
८ तैत्तिरीय सं॰	६)	१)
९ दैवत-संहिता १ म भाग	६)	१॥)
१० „ „ २ य भाग	६)	१॥)
ऋग्वेदका सुबोध भाष्य		
१ मधुच्छन्दा ऋषिदर्शन	१)	।=)
२ मेधातिथि „	२)	॥=)
मरुद्देवता-(पदपाठ, अन्वय, अर्थ)		
१ मंत्र-संग्रह, समन्वय, मंत्रसूची, तथा हिंदी अनुवाद	मू. ७)	१॥)
२ मंत्र-संग्रह तथा हिंदी अनुवाद	५)	१)
३ हिंदी अनुवाद	४)	॥।)
४ मंत्रसमन्वय तथा मंत्रसूची	२)	॥)
संपूर्ण महाभारत	७५)	
महाभारतसमालोचना (१-२)	१॥)	॥)
संपूर्ण वाल्मीकि रामायण	३०)	६।)
भगवद्गीता (पुरुषार्थबोधिनी)	१०)	१॥)
गीता-समन्वय	२)	॥)
„ श्लोकार्धसूची	॥=)	=)
गीताका राजकीय तत्त्वालोचन	२)	॥)
Bhagavad Gita	Rs. 15/-	
अथर्ववेदका सुबोध भाष्य ।		
संस्कृतपाठमाला ।	७॥)	॥=)
वै. यज्ञसंस्था भाग १	१)	।)
छूत और अछूत (१-२ भाग)	२)	॥)
योगसाधनमाला ।		
१ योगके आसन । (सचित्र)	२॥)	।=)
२ ब्रह्मचर्य ।	१॥)	।-)
३ योगसाधनकी तैयारी ।	१)	।-)
४ सूर्यभेदन-व्यायाम	॥।)	=)

पुस्तक	मूल्य	डा. व्य.
देवतापरिचय-ग्रंथमाला		
१ रुद्रदेवतापरिचय	॥)	=)
२ ऋग्वेदमें रुद्रदेवता	॥=)	=)
३ देवताविचार	।)	-)
४ अग्निविद्या	२)	॥)
बालकधर्मशिक्षा		
१ भाग १ =) तथा भाग २ ≡)		=)
२ वैदिक पाठमाला प्रथम पुस्तक	।)	-)
आगमनिबंधमाला ।		
१ वैदिक राज्यपद्धति	।=)	-)
२ मानवी आयुष्य	।)	-)
३ वैदिक सभ्यता	।॥)	≡)
४ वैदिक स्वराज्यकी महिमा	॥=)	=)
५ वैदिक सर्पविद्या	॥=)	=)
६ शिवसंकल्पका विजय	॥=)	=)
७ वेदमें चर्खा	॥=)	=)
८ तर्कसे वेदका अर्थ	॥=)	=)
९ वेदमें रोगजंतुशास्त्र	।)	-)
१० वेदमें लोहेके कारखाने	॥)	-)
११ वेदमें कृषिविद्या	।)	-)
१२ ब्रह्मचर्यका विघ्न	=)	-)
१३ इंद्रशक्तिका विकास	॥।)	=)
उपनिषद्-माला ।		
१ केन उपनिषद्	१॥)	।-)
१ वेदपरिचय- (परीक्षाकी पाठविधि)		
१ भाग १ ला	१॥)	॥)
२ „ २ रा	१॥)	॥)
३ „ ३ रा	१॥)	॥)
२ वेदप्रवेश (परीक्षाकी पाठविधि)	५)	।॥)
३ गीता-लेखमाला ५ भाग	६)	१॥)
४ मायानन्दी भगवद्गीता १ भाग १)		।=)
५ सूर्य-नमस्कार	।॥)	=)
६ ऋगर्थ-दीपिका (पं. जयदेव शर्मा)	४)	॥)
शतपथबोधामृत	।=)	-)
अक्षरविज्ञान	१)	।=)
यजुर्वेद अ. ३६ शांतिका उपाय	॥।)	≡)

मुल्तानके बीभत्स दृश्य

[ले०- श्री. पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम्० ए०]

२२ मार्चको अमृतसरसे चलकर लाहौर आये । विचार था कि रातकी गाडीसे मुल्तान जावें। परन्तु लाहौरके मित्रों ने रातमें चलनेसे रोक दिया। एक मित्र तो इस बातपर भी हिचकिचाने लगे कि २३ मार्चको दिनमें भी मुल्तानकी ओर न जाया जाय। परंतु २३ को प्रातःकाल कराची एक्सप्रेससे चलही पडे । पं० धर्मदेवजी तो साथमें थे ही। लाहौरसे आचार्य प्रियव्रतजी तथा श्री यशपालजी भी साथ हो लिये । दो से चार हो गये । साहस भी बढ गया। ६ बजे सायंकाल मुलतान पहुँचे । पहले दिन तार दे दिया था। परन्तु ६ बजेसे करफ्यू था। अतः छावनी मुलतानके आर्य्य भाई आगये थे । उसी समाजमें ठहरे । २४ को १० बजेके पश्चात् मुलतान नगरको देखा । कितना बीभत्स दृश्य था ! अमृतसरकी गलियोंको भूल गये । जिधर देखा, तबाही-तबाही दृष्ट पडी । मकान जले हुए। बजारके बाजार जले पडे हैं । मुलतानकी दीवारोंके बाहर तो ५ मार्च से ७ मार्च तक मकानोंके मकान जलाये हुए हैं । सबजी मण्डी बिलकुल तबाह हो गई। शहरके भीतर तो केवल चार हिन्दू मरे हैं । परन्तु शहरके बाहर मृतकोंकी संख्या सैकडों है । अमृतसर धनाढ्य नगर है, वहाँ करोडों की हानि हुई है । और दोनों जातियोंकी । परन्तु मुलतानमें केवल हिन्दुओंकी ही हानि हुई है । और जिस क्रूरताका मुलतानमें प्रयोग हुआ है, उसने तो प्राचीन अत्याचारोंकी कथाओंको फीका कर दिया है । २० वी सदीमें १६ वी या १७ वी सदीके दृश्य याद आगये । नोवाखालीके विषयमें जो कुछ सुना था, मुलतानमें साक्षात् आँखोंसे देखा। यह दृश्य देखनेवालोंके हृदयोंमें क्या क्या भाव उत्पन्न करते हैं, यह वर्णन करना कठिन है। जो अत्याचार संभव थे, किये गये। स्त्रियोंके साथ क्या क्या अत्याचार किये गये, और उनको किस प्रकार मारा गया है, इसको सोंचनेसेही रोंगटे खडे होते हैं । शहरके भीतर आर्य्यसमाज मन्दिरके पासही श्रीनानकचन्दजी वकील जा रहे थे, कि उनको मारदिया गया । एक युवक मनोहरलाल पुलिसकी गोलीसे मारा गया। पहले एक गोली लगी, वह चोट खाकर चिल्लाया । पुलिसवाले ने दूसरी गोली मारकर उसको समाप्त कर दिया । शिकायत यह है कि पुलिसवालोंने मारनेवालोंकी मदद की । मुलतानके बाहर बडी क्रूरता की गई। सेठ कल्याणदासकी कोठीका दृश्य बडा दर्दनाक था। सेठ कल्याणदास खाकसारों का सालारजंग और मुसलमानोंका मित्र समझा जाता था । उसके और डाक्टर सैफुद्दीन किचलूके हाल पत्रोंमें आ चुके हैं। कहते हैं कि डाक्टर किचलूने नंगे होकर अपने मुसलमान होनेका प्रमाण दिया, तब बच सके। सेठ कल्याणदासका लडका पहलेसे बाहर गया हुआ था, वह तो बच गया । सेठ कल्याणदास मारा गया।

गांवोंमें मुसलमानोंने यह अफवाह फैला दी थी कि मुल्तान शहरकी मसजिद जला दी गई। यह सर्वथा झूठ था। मैंने पुलीस चौकीके पास जाकर मसजिदको देखा। उसको किसीने छुआतक नहीं; परन्तु झूठी अफवाहोंने गाँवोंके मुसलमानोंको भडका दिया। हजारों मुसलमानोंने गाँवोंपर हमला कर दिया, कहा जाता है कि एक मास पूर्वसे मुसलमानोंके जुलूस निकलते रहे और जोश दिलानेवाले नारे लगाते रहे; परन्तु किसीने रोकातक नहीं। उन्हीं दो-तीन दिनोंमें सब जगह एक-सी ही आग भभकने लगी, इससे पता चलता है कि मुसलमान तैयारियाँ कर रहे थे और केवल बहाना ढूँढ रहे थे। लोग जो हाल बताते हैं, उससे तो यह भी संदेश होता है कि जिलेके अफसरोंको कुछ-न-कुछ ज्ञात था; परन्तु किसीने कुछ न किया। पहले सुना था कि नगरके भीतर चारपाँच मरे हैं; परन्तु २५ ता० को जब हम मुलतानसे चलने लगे तो सुना कि दोतीन लडकोंकी लाशें कुएसे निकाली गईं। यह कई दिनसे गुम थे । अब दो एक घटनाएँ क्रूरताकी सुनिये—

मुलतानके बाहर क्षयरोगका हस्पताल है। वहाँ आक्रमण किया गया। १२ रोगी थे। ६ मार डाले गये। एक लडका बहुत बीमार था। उसने कहा— " मुझे मार डालो। रोग-के कष्टसे बच जाऊं।" उसे छोड दिया। कम्पौण्डर और उसकी लडकी को बुरी तरह मारा। किसी प्रकार उसकी स्त्री

जो गर्भवती थी बच गई है। यह घटना ५ मार्चको ११ बजे हुई। पीरागेब गाँवोंमें ७आदमी मारे गये। शुजाबादके निकट २३ गाँव जलाये गये। मिलिटरीकी सहायतासे कुछ लोग वापस लाये गये हैं। विशेष सहायका काम मुलतानकी सेवा-समितिने किया है। भक्त परमानन्दजी तथा उनके मित्र इस कामको करते हैं। आर्य्यसमाज बोहर दरवाजके पूर्व प्रधान श्री मलिक सोमनाथ कपूर एक धनाढ्य पुरुष हैं। उनकी बस-सर्विस है। उन्होंने अपनी बसें सेवासमितिको दे दी थीं। इनमें गाँवोंसे लोगोंको लाया गया। हमको भी कपूरजीने अपनी मोटरमें बिठालकर भिन्न-भिन्न स्थान दिखाये थे। हमने सेवा-समिति-सहायता-शिबिर भी देखा। उसमें हमारे जाने-तक ३०९२ आदमी आ चुके थे। यह लगभग ५० स्थानोंके हैं, जिनकी गाँववार सूचि मेरे पास है। इनमेंसे कुछ वापस जा रहे हैं। मुसलमानोंने श्मशानको भी जला दिया था कि मुर्दोंको जलाया न जा सके। फिर भी सेवासमितिने १०६ मुर्दे जलाये, जिनकी अलग--अलग (एक-एककी) फोटो सेवा-समितिके कार्यालयमें है। मैंने उन चित्रोंको अपनी आँख-से देखा है। गुरुकुल मुलतान दो तीन दिन बचा रहा। ८ ता० को ब्रह्मचारी वहाँसे हटा लिये गये। उसी रातको गुरुकुलपर आक्रमण हुआ। जो माल पाया ले गये। ब्रह्मचारी सुरक्षित रहे। केशवपुरी, रामतीर्थ, देवपुरा, जैनबाग सभीको बरबाद किया गया। कुछ ऐसे भी उदाहरण हैं जहाँ मुसलमानोंने हिन्दुओंको बचाया जैसे शेख अल्लादत्ताने २०० को, इसी प्रकार रावां और सरायसिद्धोके मुसलमानोंने भी हिन्दुओंकी रक्षा की। परन्तु ऐसे बहुत कम हैं। अधिक तो ऐसे हैं कि झूठा विश्वास दिलाकर लूट लिया या मार डाला। कुछ ऐसे भी हैं, जिन्होंने बहुतोंको मारा; परन्तु एक दो की रक्षा कर ली और उनके प्रमाण-पत्रोंके द्वारा अपनेको निर्दोष सिद्ध करने-की कोशिश कर रहे हैं। अभी विपत्ति गई नहीं। लोग का शंका और भय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

हिन्दू संगठित और सबल बनें

(श्री पुरुषोत्तमदासजी तण्डन)

मेरे जीवनका प्रधान लक्ष्य देशका उत्थान, संगठन और हिन्दू जातिको शक्तिशालि बनाना रहा है। मैं देख रहा हूँ कि हमारे देश और जातिपर महान् संकट है। संकटसे भयभीत होना कायरता है। संकटका वीरतासे सामना करना हम सबका कर्तव्य है।

सन् १९१६ से पृथक् निर्वाचन की विधिने हिन्दू-मुसलमानोंमें वैमनस्यका बीज बो दिया। ज्यों-ज्यों कांग्रेस मुसलमानोंकी माँगें स्वीकार करती गई, त्यों-त्यों उनकी इच्छाएँ और बढती चली गईं। मैं हिन्दू-मुस्लिम-एकताका बडा सम-र्थक हूँ। मेरे हृदयमें मनुष्य-मात्रके लिए प्रेम है। मैं अपने अनेक मुसलमान मित्रोंके साथ कांग्रेसमें काम कर चुका हूँ। मैं उनमें एक खास बात पाता हूँ। वे अपने विश्वासके बडे पक्के हैं। हममेंसे कुछ ऐसे भी है, जो अपने धर्म-शास्त्र और पुरानी पुस्तकोंके विरुद्ध भी कह सकते हैं, किन्तु मैंने एक भी मुसलमान ऐसा नहीं देखा, जो कुरानके खिलाफ अवाज उठा सकता हो। भारतके मुस-लमान तो इस विषयमें बहुतही कट्टर हैं। चाहे वे मुस्लिम लीगी हों चाहे राष्ट्रीय विचारोंके। कमाल अतातुर्कने एक बार कहा था, कि मैं १३०० वर्ष पूर्वकी लिखी हुई किसी पुस्तकपर आँखें मूँदकर चलनेके लिए तैयार नहीं हूँ। उसकी हिदायतें मुझे किसी बंधनमें बाँध नहीं सकतीं।

जिस कुरानमें हिन्दुओंको काफिर लिखा हो, इसके अनुसार मुसलमान हिन्दुओंके साथ कैसे मिल सकते हैं? मुसलमानोंके दिलमें हिन्दुओंके प्रति घृणाके भाव बहुत दिनोंसे भरे गये हैं। मुसलमान अपनी शरियतके खिलाफ चलनेवालेको खतम कर देना चाहते हैं और उनको हर तरीकेसे बरबाद देखना उन्हें पसन्द है। कहा जाता है कि हिन्दू लोग मुसलमानोंसे नफरत

करते हैं, किन्तु यह बात बिलकुल गलत है। हिन्दू-धर्म किसी-से घृणा नहीं करता। किसीसे द्वेष नहीं करता। वह तो सबके साथ प्रेम करता है।

भारतमें जितने लोग आये, सब हिन्दू सभ्यता और संस्कृति-में विलीन हो गये। मुसलमानोंमें उदारता नहीं थी। उनमें अपने मज़हबके विरुद्ध चलनेवाले लोगोंके लिए घृणा थी, द्वेष था और उनको बरबाद करनेकी भावना थी। मुसलमान जहाँ भी गये उन्होंने अपनी इस मनोवृत्तिका परिचय दिया, लूटा, मारकाट की और डरा-धमका कर लोगोंको अपने मजहब में मिला लेनेकी कोशिश की। कांग्रेसने हर तरीकेसे मुसलमानों को खुश करना चाहा। मेल-मोहब्बतकी बातें कीं, पर सारी कोशिशें बेकार गईं। हमसे कहा जाता है कि हम मेल-मिलापसे रहें, परन्तु हम रह कैसे सकते हैं? एक समुदाय तो मेलके लिए हाथ बढाता है, परन्तु दूसरा दूर हटता जा रहा है। मुसलमानोंने यह अच्छी तरह समझ लिया है कि हिन्दुओंसे मेल करनेमें हमें कोई लाभ नहीं है। हमने यह समझा था कि यदि हम मुसलमानोंकी माँगें स्वीकार कर लेंगे, तो शायद हत्या-कांड और आततायित्व खतम हो जायगा; किन्तु हम देख रहे हैं कि उनकी माँग मान लेनेके बाद भी देशमें पैशाचिक कांडोंकी कमी नहीं हुई।

सीमाप्रान्त तथा पंजाब- निवासियोंके साथ अब भी दुर्व्य-बहार किये जा रहे हैं। लीगके लोग अपनी बर्बरतापूर्ण नीति-को त्यागनेके लिये तैयार नहीं हैं। अल्प-संख्यक हिन्दुओंने भयङ्कर अत्याचार सहन किये हैं। मुसलमानोंके साथ सरकारी मदद भी हिन्दुओंको बरबाद करनेमें रही है। फौज और पुलिसके लोगोंने हिन्दुओंको गोलियोंसे मारा, और लूटा और उनके घरोंमें आग लगाई।

मुसलमानोंके ये अत्याचार कब तक सहन किये जा सकते हैं? मैं अहिंसाका पूर्ण समर्थक हूँ। राजनीतिमें सब बातोंका विचार करना पडता है। अहिंसाको हमने साधनके तौर पर स्वीकार किया था। दार्शनिक रीतिपर अहिंसाको हमने कभी स्वीकार नहीं किया। हम यह जानते हैं कि हिंसा बुरी चीज है, किन्तु समय-समय पर हमें उसका सहारा भी लेना पडता है। शासन करते समय अहिंसासे काम नहीं चल सकता। अपने दुश्मनको, अपने विरोधीको, और अपने देशमें अशान्ति फैलानेवालेको बिना हिंसाके हम दबा नहीं सकते। शासन-सत्ताको ग्रहण करनेपर हिंसा अनिवार्य हो जाती है। हमारे सामने बहुतसे ऐसे अवसर आ जाते है, जब हमे हिंसाके लिए उद्यत होना पडता है।

भगवान् कृष्णने गीतामें कहा है, "परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृतां।" दुष्टोंका दमन करनेके लिए अहिंसा काम नहीं दे सकती। यदि हम दुष्टोंका दमन नहीं कर सकते, तो साधुओंकी तथा देशकी रक्षा भी नहीं कर सकते। जब-तक हम अहिंसाका आश्रय लेते रहेंगे, हमारे काम पूरे न होंगे। मेरा यह अभिप्राय नहीं कि हम हिंसक बन जायँ, किन्तु हमें अपनी रक्षाके लिये तो सचेत और सजग होना ही चाहिए। हमारे सामने ऐसे भयंकर कृत्य हो रहे हैं, जिनको देखकर हृदयमें महान् पीडा होती है। मेरे पास ऐसे अनेक पुष्ट प्रमाण हैं, जिनसे सिद्ध है कि अब भी मुस्लिम-बहुल प्रान्तोंमे हिन्दुओंके साथ ज्यादतियाँ की जा रही हैं। ऐसे समाचारोंको सुनकर रोंगटे खडे हो जाते हैं और हिन्दुओंकी दशापर अत्यन्त दुःख होता है।

हम हिन्दुओंको शक्तिशाली बनना चाहिए। शक्ति कहीं बाहरसे नहीं आती, शक्ति अपने अन्दरसेही उत्पन्न होती है। देशके नवयुवकों, तुम शक्तिके पुंज बनो। आज लोग जगह-जगह दुर्गापाठका पाठ करते हैं और समझते हैं, कि इससे हममें शक्ति आजायगी। दूसरोंसे जप-तप या पूजा-पाठ कराकर शक्ति खरीदी नहीं जा सकती।

मैं भारतकी अखण्डतामें विश्वास रखता हूँ। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि हम शक्तिशाली बन जायँ, तो हमारा भारत फिर अखण्ड हो सकता है। उसके लिए हमें साहस और बलिदानकी आवश्यकता है। देशके नौजवान ही इस कार्यको पूरा कर सकते हैं। भारतकी रक्षाके लिए भारतीय रक्षा-दलकी आवश्यकता है। मैं चाहता हूँ, नगर-नगर और गाँव-गाँवमें अखाडे हों, उनमें लोग व्यायाम करें, अस्त्र चलाना सीखें। 'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रं प्रवर्तते।' शस्त्र चलाना सीखना और अपने चित्तको बलिष्ठ बनाना प्रत्येक हिन्दूका परम कर्तव्य होना चाहिये। हमें ५० लाख रक्षकोंकी जरूरत है। तब हम अपने राष्ट्रकी रक्षा कर सकेंगे। हमारे धर्म-शास्त्रोंमें आततायियोंका बध करनेका विधान है।

आततायियोंका हनन न करनेसे अराजकता बढती है। अपराधियोंको दण्ड न दिया जाना, पापकी वृद्धि करना है। वह राजा पापका भागी है, जो अपराधियोंको दण्ड नहीं देता, दुष्टोंका दमन नहीं करता।

मैं हिन्दीको देशकी सबसे प्रिय और व्यापक भाषा समझता हूँ। हिन्दीही राष्ट्रकी भाषा हो सकती है। देवनागरी लिपीही सब लिपियोंमें वैज्ञानिक और सुन्दर है। कांग्रेस-दलके के अधिकांश सदस्योंने हिन्दीको राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिया है, परन्तु कुछ लोग हिन्दुस्तानीको जबर्दस्ती भारतकी भाषा बनानेके पक्षमें हैं। उनका यह प्रयत्न कदापि सफल नहीं हो सकता और न होना चाहिए। महात्मा गांधीने हिन्दीको सबल बनाया और उसे देशकी भाषा बनानेमें उनका बहुत बडा हाथ है, किन्तु वे कुछ समयसे हिन्दुस्तानीके समर्थक हो गए हैं और उनकी आभिलाषा है कि हिन्दुस्तानी ही भारतकी राष्ट्रभाषा हो। लिपि देवनागरी और फारसी दोनोंही रहें; परन्तु मैं इससे सहमत नहीं हूँ।

मैं चाहता हूँ कि हिन्दी समस्त भारतकी राष्ट्रभाषा हो और देवनागरी लिपि हो, जो हम हिन्दुओंके लिए स्वाभाविक है। हमारे सामने और भी बहुत-सी समस्याएँ हैं, जिन्हें हमें सुलझाना है। हरिजनोंकी समस्या पर हमें गम्भीरता-पूर्वक विचार करना चाहिए। हमको पुरानी रूढियाँ त्याग देना चाहिए। जात-पाँतके बन्धनोंको तोड देना चाहिए। अपने शास्त्रोंको हमें यथारूपमें मानना चाहिए। चन्दन लगा कर उनकी पूजा करनेसे कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता हमारे शास्त्रोंमें जो युक्ति-संगत बातें हैं, उन्हें हमें अवश्य मानना चाहिए। सबको गुणकर्मकी योग्यतानुसार उन्नति करनेका अधिकार दीजिये। घृणा दूर करना चाहिए। सबसे प्रेम-पूर्वक बर्ताव करना आवश्यक है। समयकी गतिको पहचानिये।

हमारा कौन मित्र है, कौन शत्रु है, इस बातका हमें प्रत्येक क्षण चिन्तन करते रहना चाहिए। जो देश-कालको भूल जाता है, वह धोखा खाता है। मेरा आप लोगोंसे फिर यही अनुरोध है कि आप लोग अपने बलको बढावें, शक्तिको पैदा करें। देशमें ऐसा सुदृढ संगठन स्थापित करें कि आपको किसी बातकी कठिनाईका सामना न करना पडे। यह काम करनेसे होगा। दृढता और मनोयोगके साथ कार्यमें जुट जाइये और अपना शक्तिशाली राष्ट्र बनाइये।

फ्रेंच अफ्रीका तथा इस्लाम-संगठन

बर्बर—जातिका अभिमान

उत्तरी अफ्रीकाके मोरोक्को, ट्यूनीशिया तथा अल्जीरिया इन तीन विभागोंपर फ्रेंच सत्ता चला करती है। इन प्रदेशोंमें मुसलमान बहुसंख्य हैं। यह नहीं है कि इस सब मुसलमान जनताका वंश एकही है। इस विभागकी जनसंख्या करीब करीब तीन कोटि है, जिसमें अरब केवल ७५ से लेकर ८० लक्ष हैं। यह भी नहीं है कि अरब तथा अन्य मुसलमान जनतामें कोई वैसे मित्रताके सम्बन्ध हैं। इन तीन भागोंके बहुसंख्य बर्बर अपने स्वत्वको खोकर अरब जनतामें विलीन हो जानेको विरोध करने लग चुके हैं। अरबी विनाशात्मक आँधीसे बर्बर लोगोंकी भाषा, परम्परा, लोकगीत तथा आख्यायिका आदिका कोई सम्बन्ध नहीं है। अरब लोग तथा उनके शरियत् नामक विधानसे बर्बरोंकी सामाजिक, आर्थिक एवं पैतृक संपत्तिके अधिकार-विषयक रूढियाँ आदि सर्वथा भिन्न हैं। बर्बरोंका विधान-ग्रन्थ भी इस्लामसे असंबद्ध है।

बर्बर भाषा भी सम्पूर्णतया स्वतंत्र है। वे लोग अपना सब व्यवहार इसी भाषामें करते हैं। इस बर्बर भाषामें उच्च कोटिका साहित्य निर्माण हो चुका है, तथा हो रहा है। इस प्रकार अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखनेवाली बर्बर जनता एवं बर्बर राष्ट्र इस्लाममें विलीन होना पसन्द नहीं करता। स्वजाति, वंश, परम्परा, कुलाचार, रूढि आदिपर हिन्दु लज्जा करते हैं, और बर्बर अभिमान करते हैं, यह बात अत्यन्त महत्त्वकी है। यह बात सुनिश्चित है कि जिन लोगोंके मनमें अपनी परम्परा, संस्कृति तथा धर्मके विषयमें योग्य आदरका भाव होता है, जो लोग केवल किसी काल्पनिक ध्येयके लिये, शांतिका स्वांग सजनेवाले सन्तत्वके लिये निजी आचार-विचारोंका त्याग करना अमान्य करते हैं तथा उनकी संस्कृति तथा परम्पराकी वृद्धि एवं रक्षाके लिये अमर्याद यत्न करनेके लिये सर्वदा सिद्ध होते हैं, उनका भविष्यकाल अति दैदीप्यमान है। इसमें भी सन्देह करनेका कोई कारण नहीं कि, यदि स्वीय आचार-विचारोंके लिये लज्जा एवं घृणा प्रतीत होने लगी, तथा उसीके साथ मनमें उन परम्परा तथा आचार-विचारोंका नाश करनेकी भावना उद्भूत होने लगी, तो उन लोगोंका, उस राष्ट्रका एवं उस विशिष्ट संस्कृतिका भविष्य अन्धकारमय है।

पीछे कहा जा चुका है कि राष्ट्र अथवा जनता कदापि बाह्य आघातोंसे नष्ट नहीं होने पाती। मानवी इतिहासमें राष्ट्रोंके सर्वनाशका एकही कारण पाया जाता है। बाह्य शत्रु किसी राष्ट्रका बालतक बाँका नहीं कर सकते। किन्तु राष्ट्र स्वयं अपनी हत्या करवा लेते हैं। जयचंदी कटारको स्वजनद्रोहका पानी चढाकर उसे उरमें भोंक लेनेसेही कोई भी राष्ट्र मर जाता है। इस्लामके बाह्यावरणका स्वीकार करनेवाला बर्बर राष्ट्र अपने स्वत्वको भूलकर, उसे लत्ता-प्रहार कर आत्महत्या करनेके लिये कदापि सिद्ध नहीं है। इसमें कोई संशय नहीं कि यही स्वाभिमानका अमृतकवच उनकी रक्षा कर उन्नतिके पथपर उनका अग्रदूत बनकर चलेगा।

एक सहस्र वर्षोंके पूर्व ट्यूनीशिया, मोरोक्को तथा अल्जीरियाकी अति समृद्ध सुवर्ण भूमिपर इस्लामका आक्रमण हुवा। सर्व प्रकारकी लूटखसोटको ललचाये हुये बुभुक्षित तथा अस्थिर अरबोंने खलीफा वलीद (Walid) के नेतृत्वमें उत्तरी अफ्रीकामें उत्पात मचाना शुरू किया। चारों ओर विध्वंस तथा आतंकका साम्राज्य शुरू हुवा।

मुहम्मद पैगम्बरका कुरेशी प्रतिस्पर्धी "अबू सोफियन" जिसने अल्लाहके प्रेषितकी मिट्टी अच्छी तौरसे पलीत की, तथा जिसने मादिनाको घेरकर प्रेषित तथा उसके सहायकोंको रुलाया, उसीके पुत्र "सोआविया" ने अफ्रीकापर आक्रमण करनेको प्रारम्भ किया। अघोरकर्मा सेनापति "ओकबा बिन नाफ" के साथ सेना भेजकर उसने उत्तरी अफ्रीका विजयका काम इस सेनापतिके हाथ सौंप दिया। इस सेनापतिके बारेमें प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक Andre Servier ने अपना अभिमत निम्नलिखित शब्दोंमें प्रकट किया है—

"Impelled by proselytizing zeal, the latter overran 'North-Africa,' burning, slaughtering & pillage"

देखते देखते पेटके लिये दरदर भटकनेवाली यह अरबोंकी टोली लूट–खसोट, अग्निकाण्ड एवं हत्याकाण्ड करते हुवे अतलान्तिक महासागरकी सीमातक जा पहुंची। अत्याचारपटु ओकबा बिन नाफ अपने घोडेको दौडाते हुवे सागरमें घुस पडा। अपने वेगको न सम्हालते हुवे घोडेने समुद्रमें प्रवेश किया, परन्तु जब वह तैरने लगा, तब आगे बढनेमें असमर्थ होकर पीछे लौटा। घोडेके पीछे लौटते बराबर अफ्रीकामें चारों ओर आतंकका साम्राज्य मचानेवाले इस अघोरघंटने आकाशकी ओर देखते हुवे चिल्लाकर कहा, "ऐ मुहम्मद पैगम्बरके अल्लाह ! यदि मेरी गतिमें इन सागर–लहरोंकी रुकावट पैदा न होती, तो मैं इसी प्रकार आगे बढकर संसारके कोनेकोनेमें तेरे नामका डंका बजा देता !"

"God of Mahomet, if I were not held back, by these waves, I would go on, and carry the glory of thy name, to the confines of the universe." (Islam & Psychology of Musalmans, p. 110)

अरबोंके भयानक अत्याचार, लूटखसोट तथा अग्निकाण्डोंसे अफ्रीकाकी पराभूत जनता केवल त्रस्त हो गयी थी। किन्तु वन्य अरबोंकी झुण्डके सामने उनकी एक न चलती थी। ग्रीकोंसे स्वतंत्रता पानेकी इच्छासे अफ्रीकाकी जनताने अरबोंको ग्रीकोंके विरुद्ध मनःपूर्वक सहायता की, तथा इन उपद्रवकारी प्राणियोंको अपने घरमें आश्रय दिया। यह मान्य है कि ग्रीक जेताओंको पराजित किया गया। किन्तु सामान्य अफ्रीकन जनताकी स्वतंत्रताका भी सर्वदाके लिये नाश हो गया ! पुरोगामी ग्रीक राज्यसत्ता चली गई, और उसके स्थानपर क्रूर झुण्ड सिरपर चढ बैठी ! ग्रीक राज्यसत्ताकी अपेक्षा यह नूतन राज्यसत्ता अत्यन्त भयप्रद थी। इस राज्यसत्ताकी नींव थी लूटखसोट, हत्यायें तथा अग्निकाण्ड ! इन अत्याचारोंसे अफ्रीकाकी जनता पीडित हो गई। किसी नेताके अभावमें वह पहलेही निष्प्राण बन चुकी थी। उसीमें अरबी झुण्डके हमले बार-बार होने लगे, जिनसे उसका कोई संरक्षक तथा उद्धारकर्ताही न रहा।

जनताका प्रतिकार

क्रूरकर्मा ओकबाके बाद खलीफा वलीदने पुनश्च सेनापति हसनको ससैन्य अफ्रीकापर भेज दिया। हसनका भयानक आक्रमण ट्यूनिशियासेही प्रारंभ हुवा। इन लोगोंके ट्यूनीशियामें आतेबराबर फिरसे एकबार वेही हत्याकाण्ड, अग्निकाण्ड तथा लूटखसोट शुरू हुई। इस समय मात्र अफ्रीकन जनता जखमी शेरकी भाँति क्षुब्ध हो उठी, तथा उसने अरबी सेनाको जर्जर करनेको प्रारम्भ किया। इस क्षुब्ध तथा क्रुद्ध जनताका नेतृत्व एक शूर तथा साहसी अबलाकी ओर था। इस साहसी तथा युद्ध-विशारद स्त्रीका नाम था "काहिना"। यह मोरोक्को-ट्यूनीशियाकी स्वातंत्र्यलक्ष्मी अपनी छोटीसी परन्तु निष्ठावान् तथा कट्टर सेनाके साथ अरबोंका प्रतिकार करनेमें लग गई। उसके ध्यानमें आ चुका था कि अरबोंको लूटकी लालसा हुवा करती है, एवं उसके लिये वे बडेबडे वैभवसंपन्न नगरोंपर हमले किया करते हैं। इस बातको समझकर उसने अपनी संरक्षण–योजना निश्चित की। अरबी सेनासे आमनेसामने जूंझकर उससे टकरानेका आत्मघातकी प्रकार उसने कदापि नहीं किया।

उसे यह खबर मिल चुकी, कि अरबी सेना किसी नगरको लूटकर वापस लौट चुकी कि उसकी छिपी हुई सेना विद्युल्लताके वेग तथा आवेशके साथ उन अरबोंपर टूट पडा करती। और फिर अरब खूब मार खाया करते। इन गनीमी युद्ध पद्धतिके हमलोंके साथही उसने अरबोंके आवागमनके मार्गोंपर वेगपूर्ण हमलोंका सत्र जारी रखा। उसीके साथ चारों ओरका प्रदेश जला देनेकी दग्धभू नीति भी उसने कार्यान्वित की। 'काहिना" की इस अभिनव युद्धपद्धतिके कारण लूटखसोटको ललचाये हुवे अरबोंको अच्छा पाठ पढाया गया। आजिंक्य अरब "काहिना" से डरने लगे। काहिनाके स्वयंसेवकोंने इन विश्वविजयी अरबोंको अनेक बार परास्त किया !!! काहिनाकी इस अभूतपूर्व विजय–मालिकासे त्रस्त अफ्रीकन जनता फिरसे एक बार धीरज बांधकर खडी हो गई, तथा अनुशासन एवं कट्टरतासे उसने अरबोंका मुकाबला करना प्रारम्भ किया।

काहिनाका यह स्वातंत्र्ययुद्ध इसी तरह ४१५ साल और चलता तो उत्तरी अफ्रीकाका इतिहास कुछ औरही बन जाता । राष्ट्रघातक देशद्रोही–अफ्रीकाके चयचंद–ट्यूनिशियामें भी पैदा हुए । काहिनाकी सेनाके अवसरवादियोंने धोखा देकर काहिनाकी गातीवीधीकी सभी खबरें शत्रुको पहुंचा दीं । और तो और, इन बदमाशोंने कुछ अत्याचारी धर्मभ्रष्टोंकी सहायतासे एक भयंकर षयड्रंत्र रचा । काहिनाको इसकी भनक भी न मिली और सहसा एक दिन काहिना वह अफ्रीकाकी स्वातंत्र्य–लक्ष्मी हत्यारोंके छुरेका शिकार बनी !! और अफ्रीकापर इस्लामी चालढाल जबरदस्ती मढा गया । इस्लामके प्रचारमें अरबोंके शौर्य, धैर्य आदि गुणोंकी अपेक्षा विश्वासघातियों एवं देशद्रोहियोंने अधिकसे अधिक सहायता पहुंचायी है ।

साहस–मूर्ति काहिनाकी हत्याके बाद अरबोंने जो ऊधम मचाया और अत्याचार किये तथा जलाकर खंडहर बनानेका काण्ड उपस्थित किया उसका जोड इतिहासमें नहीं मिलता !!

सो बात नहीं, कि ट्यूनिस, अलजीरिया तथा मोरोक्कोमें इस्लामकी गहरी नींव पडी; मिस्रसे आकर बसीं अरब टोलियोंको छोड शेष जनतापर इस्लामका कोई प्रभाव न पडा । खिलाफतकी सनक भी अरबोंके बिना अन्य इस्लामी जनतामें प्रायः नहीं थी । ऐतिहासिक कालमें भी दमास्कस और बगदादके खलीफोंको इस टापूकी जनता नहीं मानती थी । स्पेनके खलीफाही उनपर सत्ता चलाते थे और जनता भी उन्हें सिर आँखोंपर रखती थी । आज भी वहाँके मसजिदोंमें जो खुतबा पढा जाता है उसमें खलिफाका नाम तक नहीं होता । उत्तरी अफ्रीकाके अरबोंको छोड शेष जनतामें जिस तरह इस्लामी कट्टरता तथा प्रतिगामित्व नहीं पाया जाता उसी तरह मक्काके हज यात्राका शौक भी नहीं मिलता । इस यात्राकी ओर वह जनता अनमनीसी रहती है । स० १९१० में फ्रेंच उत्तरी अफ्रीकासे मक्का जानेवाले यात्रियोंकी संख्या लगभग १८ सहस्र थी; स० १९२७ तक वह २५०० तक आ चुकी पायी जाती है । अब तक औरही घट गयी है । इस धार्मिक शिथिलताके साथ साथ अरब होनेका जो सन्मान प्राप्त था वह भी आज नहींके बराबर रहा है । अरब या तुर्क होनेके नाते उन्हें कोई सम्मान नहीं मिलता । अरबोंके लिये यह स्थिति असहनीय है, जिससे फिर एकबार अरबोंकी प्रभुता स्थापित करनेके कारनामें अब तूल पकड रहे हैं ।

अरब लीगकी आडमें अपने स्वार्थको आँखमें तेल डालकर सम्हालनेवाला ब्रिटिश–साम्राज्य, फ्रेंच अफ्रीकाके अरबोंकी इसप्रकारसे सहायता करता हो, तो इसमें क्या आश्चर्य ? अरबीभाषाके प्रचारके आंदोलनकी जडमें गोरोंकी कूटनीतिकाही हाथ होनेकी बात स्पष्टतया दीख पडती है । किन्तु मालूम होता है, कि अरबसे अन्य जनता पर अरबीभाषाको लादनेके जतन प्रायः सफल न हुए । फ्रेंच उत्तरी अफ्रीकाकी बहुसंख्य जनता अरबीकी अपेक्षा फ्रेंच तथा अन्य यूरोपीय भाषाओंके अध्ययनमें अधिक रस लेती दिखाती पडती है । आधुनिक शास्त्र तथा उनसे संबंधित नये नये विचारोंको सुस्पष्ट करनेमें अरबी भाषा अक्षम होती है । नया वैज्ञानिक ज्ञान प्रकट करनेकी क्षमता अरबीमें नहीं के बराबर है । कुरान, हदीस (पैगंबरके आदेश तथा सीखें) तथा प्रारंभिक रूपमें होनेवाले अन्य अरबी साहित्यके लिये वह भाषा उपयुक्त है; किन्तु आधुनिक शिक्षा प्राप्त करनेमें अरबोंसे अन्य लोगोंमें फ्रेंच भाषाका बोलबाला ही अधिक रहता है । अरबी कुरानकी अपेक्षा फ्रान्सीसी भाषामें अनुवादित कुरानही लोगोंको अधिक पसंद आता है । बहुतेरे जन उसीका पठन-पाठन करते हैं । उसी तरह इस्लामी संगठनके विचार तथा आयोजन साधारण जनताके पास फ्रान्सीसी भाषाद्वारा ही पहुँचते हैं । फ्रेंच उत्तरी अफ्रीकामें अरबीको त्याग कर मात्र फ्रान्सीसी भाषाको रखनेका पृष्ठपोषक दलही अधिक जनप्रिय पाया जाता है । इन सभी कारणोंसे अरबसे भिन्न जनतापर वह रेगिस्तानी भाषाका भूत सवार न हो पाया ।

बर्बरोंका इस्लाम–प्रेम

फ्रेंच उत्तरी अफ्रीकामें अरबोंसे अन्य इस्लामियोंकीही संख्या अधिक है । यह सभी–विशेषतः बर्बर–लोग राष्ट्रवादका मार्ग बहुत कुछ तै कर चुके हैं । बर्बर लोगोंका स्वदेशाभिमान, आत्माभिमान, स्वभाषाभिमान एवं अपनी सभ्यताका अभिमान बहुतही दैदीप्यमान तथा ज्वलन्त बना है । ' पॅन अरब ' आन्दोलनका समर्थन तो दूसरी बात है, सहानुभूति भी नहींके बराबर है । बर्बरोंका

अनुशासन जिन निर्बंधोंसे होता है, उसका आधार इस्लाम, कुरान तथा शरियत् नहीं। बर्बरोंकी अपनी परंपरा तथा रुढीके आधारपर ये निबंध बने हैं, जो रुढियाँ अब भी प्रचलित हैं और १९३० में आन्दोलन कर फ्रेंच सरकारकी सहानुभूति भी उन्हें प्राप्त की है। १९३० में पहले पहले प्राप्त सरकारी मान्यताके कारण प्रतिगामित्वका निचोड होनेवाले इस्लामी निर्बन्ध--शरियत्-के फँदेसे बर्बर जनता एकबारगी मुक्त हो गयी !!

बर्बर जनताके नहीं, राष्ट्रके पुनरुज्जीवनके आन्दोलनका विरोध फ्रेंच उत्तरी अफ्रीकाके अरबोंने बडे जोरोंसे किया। आज भी वह विरोध कम नहीं हुआ है। अंग्रेजी कूटनीतिके गर्भसे उत्पन्न अरब-लीग तथा सेंट जॉन फिल्बी नामक अंग्रेजी हेर द्वारा वितरित सोनेके बलपर यह विरोध इस्लामी पुनरुज्जीवनके बहाने बढही रहा है। स. १९३० में जब बर्बर राष्ट्रके परंपरागत तथा रूढ विधानको फ्रेंच-सरकार मान लिया तब अरबोंने उसकी घोर निंदा की। मिस्रमें इस विरोधका जोर सबसे अधिक तीव्र था। फ्रेंच अफ्रीकामें भी इस विरोधका प्रदर्शन हुआ। हर तरहसे बर्बर जनताको दबोचने, उसमें होनेवाले राष्ट्राभिमान तथा वंशाभिमानको जडसे काट देनेके उद्देश्यसे प्रेरित कट्टर तथा जंगली अरब जोरोंका यत्न करने लगे। बर्बर राष्ट्रको निकम्मा बनानेकी दृष्टिसेही अरबी आक्रमण दिनोदिन बढताही जाता रहा। यह आक्रमण तो मुसलमानोंकी घुट्टीमें पडे गुंडेपनके बलपर, बहुसंख्यकोंपर चढ बैठनेकी आक्रमक नीतिका नंगा प्रदर्शनही है। यही अत्याचारी वृत्ति धर्मभ्रष्ट भारतीय मुसलमानोंमें पायी जाती है। हिंदू जनताके समान बर्बर जनता भी अपनी परंपरा, राष्ट्र तथा पुराने आचार-विचारोंके लिये कटिबद्ध दीख पडती है।

अपनी परंपरापर गर्व करनेवाली बर्बर जनता अधार्मिक, काफिर है, उसे फिरसे इस्लामकी दीक्षा देनी चाहिये, अरबी कट्टरता फिरसे उसमें भिदा देनी चाहिये, इस एकमात्र महान् उद्देश्यकी पूर्तिके लिये उत्तरी अफ्रीकाके सब मुल्ला-मौलवी (जो बावन तोले एकरत्ती अरब हैं) कटिबद्ध होकर काम कर रहे हैं। मोरोक्को, अल्जेरिया, ट्यूनिसके मुसलमानोंके धार्मिक आंदोलनका केन्द्र मोरोक्कोके एक कोनेमें पडा था, जिसका नाम था 'सूस'। अलावा इसके फेजके अति प्रासिद्ध तथा पुरातन 'कारबिया' नामक मसजिदके कारण वहाँ एक, और ट्यूनिसके 'जैतुनाह' की प्रसिद्ध मसजिदके कारण दूसरा-इन तीन केंद्रोंसे इस्लामीकरणका चक्र फिरसे चला गया है। अन्य मुस्लिम देशोंमें इन तीनों केन्द्रोंके लिये कोई सम्मान नहीं है। आजकल ये तीनों धार्मिक केन्द्र इस्लामी संगठन-प्रचारका काम अधिक तन्मयतासे करते दिखायी पडते हैं।

इन तीन केन्द्रोंका पृष्ठपोषण काहिरासे होता है। अफ्रीकामें चलनेवाले संगठन, प्रचार तथा प्रसार-कार्य का मार्गदर्शन आजकल काहिरासे हुआ करता है। आज उसे मक्काके बराबर महत्त्व प्राप्त है। अफ्रीकामें फैली सब मुस्लिम जनता मार्गदर्शनके लिये काहिराका मुँह ताकती है और काहिरा भी बडे उमंगसे यह काम करता रहता है। अफ्रीकावाले मुस्लिमोंके लिये काहिरा विद्याभूमि है। वहाँसे प्रतिवर्ष कोनेकोपरेसे अरबी भाषा और इस्लाम धर्मकी शिक्षा प्राप्त करनेको सहस्रों मुस्लिम विद्यार्थी काहिरामें आया करते हैं। फ्रेंच अफ्रीकासे काहिरा जानेवाली संख्यामें दिनोदिन वृद्धि हो रही है। इसकी वृद्धिका वेग तथा विस्तार बढे, और उससे फ्रेंच अफ्रीकाका अरबीकरण पूरी तरह हो जाय इसलिये इस्लामी-संगठन-संस्थाएं डटकर काम करती पायी जाती हैं। फ्रान्सीसियोंमें इस्लामके प्रचार और प्रसारके विषयमें ये संस्थाएं सफल हुई हैं। कुछ फ्रान्सीसी इस्लामी गुटमें शामिल भी हो चुके हैं।

जिहादकी सिद्धताके प्रचारके साथ साथ, इस्लामके उद्धारार्थ एक महादी पैदा होनेवाला है— इस बातका विश्वास पैदा करनेका कार्य ये मुस्लिम-संगठन-संस्थाएं करती रहती हैं। अरबोंकी नीति यही है, कि अरबेतर (न अरब होनेवाले) का इस्लामीकरण कर उन्हें अरबोंका नेतृत्व मानने पर मजबूर करना। इसका विरोध करनेके लिये अरबेतर जनता-विशेष कर बर्बर-कटिबद्ध खडी है। इस तरह अरब तथा अरबेतर इस्लामी जनताका झगडा अफ्रीकाके रंगमंचपर तूल पकड रहा है। इस्लामकी भावीकी दृष्टिसे निर्णायक होनेवाले इस झगडेमें कई इस्लामी संस्थाएं, समाचारपत्र, प्रमुख मुसलमान व्यक्ति अपनी शक्तिभर लगनसे काम कर रहे हैं।

फ्रेंच आफ्रीकामें तो इस्लाम-प्रचार और उसके द्वारा पॅन-इस्लामके नमूनेपर पॅन-अरब आंदोलनके ध्येयबिंदुको सदा लक्ष कर काम करनेवाला एक दलही बना है। यह 'इस्लाही' नामसे प्रसिद्ध है। इस दलमें कई विद्वान् तथा लब्धप्रतिष्ठ लोग हैं। इस दलके तीन समाचार पत्र हैं, जिनके नाम तथा प्रकाशन स्थान क्रमसे La voir Indigen कॉन्स्टॅन्टाईन, La voir des humbles अल्जीयर्स और La voir du Tanision ट्यूनिस हैं। यह दल अरबीसे फ्रान्सीसी भाषाको अधिक महत्त्व तथा प्रधानता देता है। उपर्युक्त तीन समाचार पत्रोंके विद्वान् संपादक क्रमशः रहिब जैनाती, उमर गोंदूज और कादिरल्ला है। कभी यह सुधारवादी दल अरब जनतामें काफी जनप्रिय था, किन्तु आजकल यह दल पिछड-सा गया है। अरबस्तानके रेगिस्तानमें वहाबियोंके नेतृत्वमें शुरू होनेवाले इस्लामी पुनरुज्जीवनके आंदोलनकी प्रतिध्वनि सब ओर गूँज रही है। 'फिरसे कुरानकी ओर, पैगंबरकी ओर रुख करो' वाले नारे इस्लामी जनतामें गूँजने लगे तबसे उपर्युक्त दल पिछडने लगा। इस्लामियोंका संगठन कर उसके बलपर, फिर एक बार, बलिष्ठ इस्लामी साम्राज्यको खडा करनेकी धुन मुस्लीम संसारके समान फ्रेंच अफ्रीकाके अरबोंके मस्तिष्कको उभारने लगी और धार्मिक कट्टरताको समर्थ न पाकर नया आक्रमक दल बना, जिसने अरबी जनताको अपनी अनुयायिनी बनायी है। अरबेतर मुस्लिमों-खास कर बर्बरोंमें अब भी इस्लाही दलको पहलेकी तरह सम्मान प्राप्त है। साहित्यके क्षेत्रमें इस दलने प्रशंसापात्र काम किया है।

'इस्लाही' दलको मात कर फॅरेंच अफ्रीकामें, फिरसे कट्टर इस्लाम-कडुए इस्लामकी प्रस्थापना करनेके लिये तनतोड जतन करनेवाला दल है 'सलाफी'। इस दलमें विद्वत्तासे कट्टरता और कर्मठताकाही आधिक्य है। कट्टरता धर्मांधताका इस्लामी समाजपर अच्छा प्रभाव पड सकता है। फॅरेंच अफ्रीकाकी मुस्लिम जनतापर तो इस कट्टरता और कर्मठताका प्रभाव बडी मात्रामें पडा है। इस दलकी भाषा शुद्ध अरबी है। उसका कहना है, कि फरान्सीसी काफिरोंकी हीनोंकी अपवित्रोंकी भाषा है; अर्थात् त्याज्य है। अरबी तो प्रत्यक्ष अल्लाहकी बानी है। इस दलका अत्यंत कट्टर तथा जागरित केन्द्र 'रावात' में है। इसका प्रमुख मुख-पत्र 'अल् शिहाब' है, जिसका संपादन तथा प्रकाशन कॉन्स्टन्टाईनसे होता है। इसके संपादक अब्दुल हमीद बेंबादिल बडा कट्टर मुसलमान होनेकी बात सुप्रसिद्ध है। अरब जनतामें इस पत्रका बडा प्रभाव है। इसने मूर लोगोंमें भी पैर फैलाना प्रारंभ किया है। हां, बर्बर जनता इस कट्टर दलका खुल्लमखुल्ला विरोध करती है; इस दलको तथा इसकी विचारधाराको जगह नहीं है, न कभी मिल सकती है।

आधुनिक शिक्षासे अछूती साधारण जनतासे 'सलाफी' दलका प्रायः समर्थन नहीं होता। इन अनपढोंमें इस्लामका प्रचार, प्रसार तथा संगठन करनेके कार्यके लिये जीवन अर्पण करनेवाली इस्लामी संगठन-संस्थाओंकाही बोलबाला है। इन प्रमुख संस्थाओंसे 'अलविया' नामक संस्था बहुत बलवान् तथा प्रभावशील है। इसकी बुनियाद 'अलिवा' नामक एक धूर्तने डाली। यह ऊधमी व्यक्ति पश्चिमी अल्जेरियाके 'मोस्ता गानेम' का निवासी है।

'दरकावी' नामक इस्लामी-संगठन और प्रचार करनेवाली संस्थामें उसने शिक्षा पायी। इसी संस्थाकी एक स्वतंत्र शाखा अपने नामसे खोलकर इस्लाम-संगठन तथा प्रचारकी अपनी योजनाएं उसने कार्यान्वित की। इस संगठन-संस्थाके केन्द्र अल्जेरियाके कोनेकोनेमें खुले हैं; अलवियाके प्रचारकोंका सभी स्थानोंमें दौरा होता है। ईसाई धर्म-प्रचारकोंसे झगडे, विवाद करना; मूर, बर्बर तथा फूला आदि जमातोंके लोगोंको इकट्ठा कर इस्लामी संगठनका महत्त्व तथा उससे लाभ आदिको समझाना अलवियाके सदस्य बनाना; 'अरबी' ही मुसलमानोंकी धर्मभाषा होनेसे उसीका उपयोग तथा प्रचार हरएकको करना चाहिये इसको जँचा कर उसपर अमल करना; आदि महत्त्वपूर्ण बातें जनताके मनमें बसा देनेका सिलसिलेवार सफल प्रयत्न करना; अरबी भाषा तथा कुरानके वर्ग खोलना-इन सब कामोंसे इस्लामी जनताको उभारने का काम अलविया संस्था अत्यंत परिश्रमसे करती रहती है।

"इस्लाम संसारके सभी धर्मोंसे अधिक उदार तथा श्रेष्ठ धर्म है; अल्लाहतालाने सब धर्मोंके बाद इस धर्मकी स्थापना अपने मसीहके द्वारा की है; इस धर्मके बाद अन्य

किसी धर्मका उदय नहीं हुआ; इसलिये यही धर्म संसार-भरका धर्म होनेके योग्य है। राष्ट्रवाद जैसे संकीर्ण भावोंको रंच भी स्थान नहीं। मुसलमान, फिर चाहे वह तुर्क हो, अरब या बर्बर हो, मूर हो या नीग्रो, मुसलमानही है, वह इस्लाम और कुरानका एकनिष्ठ सैनिक तथा सेवक है। इस्लाम तुर्क, अरब आदि भेद नहीं मानता"। ऐसेही विचार जो अरब और इस्लामको सुविधाजनक हैं, 'शेख अलिवा' अपने समाचार पत्रद्वारा मुस्लिम जनताके आगे रखता है। और उसके ये विचार अल्जेरियाके मुस्लिमोंपर प्रभाव डाल चुके हैं। शेख अलिवाके महान् कार्यका वहित्र उसका समाचार पत्र है 'अल् बलघ' (संदेश), जो अरबीमें प्रसिद्ध होता है।

सेनूसियोंसे घोषित जिहाद

१९१४-१८ के यूरोपीय महासमरके समय सेनूसियोंने जिहादकी घोषणा की थी। उस समय प्रबल संगठन—संस्था—अलविया—का प्रसार बडे वेगसे हुआ। सेनूसियोंके जिहादमें अलवियाने बडे महत्त्वकी सहायता दी। इस संस्थाने अल्जेरियामें भी जिहादकी सब सिद्धता कर रखी थी। वर्दूनमें यदि मार्शल पेतें मटियामेट हो जाता, तो अल्जेरिया भरमें जिहादकी दाव यों फैल जाती और अफ्रीकासे फ्रेंच साम्राज्य जड-मूलसे उखाडा जाता। अरबीके अच्छे ज्ञाता होनेवाले तुर्क तथा जर्मन अधिकारी लिबिया तथा अल्जेरियामें जमकर बैठे थे; तुर्किस्तानके खलीफासे मुसलमान जनताके नाम, जिहाद घोषित करनेका आज्ञापत्र अल्जेरियामें पहुंच भी गया था और शेख अलिवाके धूर्त दूत मोरोक्कोके किनारोंपर आंखमें अंजन डालकर सावधानीसे धूम रहे थे। सुप्रसिद्ध जर्मन खुफिया 'माताहारी' मोरोक्कोके किनारेपर पाँवधर चुकी थी और उसने अलवियाको बढिया शस्त्र पहुंचाये थे। किन्तु...... !!

सन १९१४-१८ के महासमरमें प्राप्त सामग्रीका उपयोग 'अलविया'ने अपने संगठन और प्रचार कार्यमें बहुतही चतुरतासे किया। युद्ध-समाप्तिके बात अलवियाका एक केन्द्र पॅरिसहीमें खोला गया, जहां दूसरा मार्सेयीमें रहा। फ्रेंच उत्तरी अफ्रीकासे बहुत मुसलमान पॅरिस तथा मार्सेयमें जा बसे और वहां उन्होंने अपना एक उपनिवेश ही बना डाला। इन दो नगरोंमें दो लाखसे अधिक मुसलमान बस गये हैं। इनमें अलवियाके सदस्य बहुसंख्यक हैं। पॅरिस तथा मार्सेयके दो प्रमुख केन्द्रोंकी कक्षामें कई छोटे बडे केन्द्र खोले गये हैं। इन केन्द्रोंके द्वारा समूची मुसलमान जनताको कुरानकी शिक्षा दी जाती है और आगामी जिहाद के लिये उसे सिद्ध किया जाता है।

तिजानिया

अलवियाके समान मोरोक्कोमें इस्लामी संगठन तथा प्रचारकी एक प्रभावशील संस्था है, जिसका नाम है 'तिजानिया' और उसकी एक स्वतंत्र तथा स्वयंपूर्ण शाखा फेडामें है। इस संस्थामें धनियों तथा व्यापारियोंकी संख्या अधिक है। इन लोगोंके बलपर मुस्लिमोंकी आर्थिक दशा सुधारनेका जतन तिजानियाने सफलतापूर्वक चलाया है। मिस्रकी बैंकके नमूनेपर मात्र मुस्लिमोंके लिये एक अधिकोष (बैंक) स्थापित करनेका काम सफल हुआ है। तिजानियाके प्रयत्नोंसे ट्यूनिशिया तथा मोरोक्कोमें छोटे बडे, संपूर्णतया मुसलमानी, अधिकोष प्रस्थापित हो चुके हैं। अबतक मोरोक्कोका व्यापार यहुदियोंके हाथमें है, जिनको 'मुहाजरीन' कहा जाता है। तिजानियाके मुसलमान व्यापारकी बागडोर यहूदियोंसे छीन लेनेकी तनतोड मिहनत कर रहे हैं। वहांकी संगठन-संस्थाने मुस्लिम विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियां देकर भिन्न भिन्न धंधोंकी शिक्षा दी और फिर पूँजी लगाकर एक एक उद्योग शुरू करवाया। दरियां बनानेका उद्योग आजकल अधिकतर इस्लामीयोंके हाथमें है, अर्थात् अप्रत्यक्ष रूपसे इस्लामी-संगठनके हाथमें हैं, जिससे तिजानियाका वजन बढा है। अन्य उद्योगोंको भी पूरी तरह हथियानेके लिये यह संस्था अनथक शक्तिभर जतन कर रही है, ऐसा मालूम होता है। मुस्लिम वस्तुओंको प्रोत्साहन देनेका काम भी तूल पकड रहा है। तिजानियाके सदस्य तथा कार्यकर्ता तो केवल अफ्रीकी मुसलमानोंका बनाया मालही काममें लाते हैं। इस स्वदेशी व्रतके प्रचारमें उन्होंने अपना जोर केन्द्रित किया है।

रहमानिया और अहमानिया

उपर्युक्त दो संस्थाओंके अलावा और दो छोटी किन्तु आत्यंतिक निष्ठावंत संगठन-संस्थाएं जिहादकी सिद्धता

तथा इस्लामी संगठनका कार्य बडी लगनसे कर रही हैं। ये दो संस्थाएं हैं— 'कवतिया' की रहमानिया और गुलामकी 'अहमानिया' ये दोनों संस्थाएं कट्टर तथा धर्मान्ध होनेकी बात प्रसिद्ध है। जागरित फ्रान्सीसी शासक इस बातको जानते हैं, सो, इन संगठनोंको छेडा नहीं जाता। अभी समाप्त हुए युद्धके अन्तिम दिनोंमें इन संस्थाओंने मौका देखकर बलवा भी किया होगा। क्योंकि, फ्रेंच अफ्रीकामें बडे दंगे होनेके समाचार आ चुके थे, जिसमें सैंकडों अरब शामिल होनेकी बात भी आयी थी। जिहादकी ये सब प्रतिध्वनियाँ थीं, जिसका असफल संगठन इस्लामी संगठन-संस्थाओंने किया था।

फरेंच अफरीकामें पॅन इस्लामका प्रचार अबतक वर्णित इस्लामी संगठन संस्थाओंने केवल बोयाही नहीं, अब फूल फल कर लहालहाने लगा है। किसी समय प्रबल होनेवाला राष्ट्रवाद तथा दनदनाती प्रांतीयता अब ठंढी पड गयी है। चाहे जो हो, मुसलमान सब एक हैं, यह भाव जोरोंसे बढ रहा है। सभी इस्लामियोंको चंद्रमा-तारांकित झण्डेके नीचे इकट्ठा करनेका प्रयत्न बहुत जोरोंपर हैं। इस करतूतके प्रेरक हैं विशेषकर खारिजाइट पंथवाले। इनका मुख्य केन्द्र कार्यालय दक्षिण अल्जेरियाके 'मझब' स्थानमें है। अलावा इसके, जेबेल तथाने फूसाके केन्द्र भी बहुत पनप चुके हैं। इन खारिजोंने अफरीकाके सभी इस्लामियोंकी महासभा बनानेका सफल यत्न किया है। उपर्युक्त आदर्शका प्रचार तथा प्रसार करनेके लिये 'वादी मिजब' नामक समाचारपत्र भी प्रकाशित होता है; जिसका ब्रीदवाक्य है 'मुस्लिम सब एक हैं,' और इसका प्रचार भी बहुत जोशके साथ किया जाता है।

स. १९३६ में समूचे मुसलमानोंकी एक महासभा बुलायी गयी थी। इससे इस्लामके संगठन कार्यको बडा प्रोत्साहन मिला है। इस महासभाके नामपर मुस्लीमोंकी एक परिषद् भी हुई थी। अल्जेरियन मुस्लिम युवकोंका नेता 'मेसा अली हाजी' बडा धूर्त, कट्टर तथा पातालयंत्री है। यह प्रथम श्रेणीका इस्लाम-भक्त है। फ्रान्सीसी भाषाका वह बडा पंडित है। 'एल् आउमा' नामक पत्र वह फ्रान्सीसी भाषामें चलाता है जो युवक मुसलमानोंमें बडा प्रिय है। २ अप्रैल १९३६ को उसने जो आग बरसानेवाला भाषण दिया था, आश्चर्य नहीं, अबतक वहाँके नौजवानोंके कानोंमें गूँजता होगा। इस भाषणमें उसने नौजवानोंको 'पॅन अरब' का संदेश दिया था, जिसका प्रभाव इतना प्रखर पडा, कि उलेमाओंने तुरन्त 'पॅन अरब' का प्रचार करनेका प्रारंभ भी किया। अल्जेरियाके उलेमाओंकी संस्था बडी प्रभावशील है। उलेमाओंकी कट्टर तथा इस्लामनिष्ठ संस्थाएँ दो पत्रिकायें- 'आशा शिबाह' तथा 'अल् बाझेअर'- प्रकट करने लगी हैं। इस्लामका पुनरुज्जीवन कर, उसे फिर एक बार पहलेका सम्मानप्रद स्थान तथा 'शाही शान' प्राप्त करा देनेके ध्येयको न भूल कर, उपर्युक्त दो समाचार पत्रोंके संपादन-संचालनका पूरा दायित्व उलेमाओंकी कट्टर संस्थाने उठाया है और इस्लामके संगठन, प्रचार तथा प्रसारका काम धडल्लेके साथ जारी रखा है। ट्यूनिसमें 'पॅन अरब' का संगठन-कार्य 'अल्-हिज्ब अल् हुर- अल् दस्तूरी' नामक राजनैतिक दल चला रहा है।

फरेंच साम्राज्यके अंतर्गत अफरीकामें गोरे यूरोपीय लोग बहुत कम हैं। यूरोपीय निवासियोंकी जनसंख्या ८।९ लाखसे अधिक न होगी। फ्रान्सीसी रहन-सहनके लोग तीन लाखही है। शेष सब जनता कट्टर इस्लामी है, फ्रान्सीसीयोंको 'काफिर' मानती है और मौका पातेही यह चिडचिडी जनता जिहाद पुकारनेकी ताकमें होती है। धूर्त तथा कूटनीतिमें निपुण अंग्रेज, इस्लामकी धर्मांधताको भडकाने तथा जिहादकी चिनगारीमें फूँक लगाकर उसे चेतानेके काम समय समयपर करते रहते हैं। ब्रिटिश साम्राज्यको बलवान् बनानेके हेतु बनाया हुआ अरब राष्ट्रोंका गुट्ट, फरेंच साम्राज्यकी जड खोदने जा रहा है। उसके पास होनेवाले सोनेके बलपर समूचे संसारमें ऊधम मचानेवाला ब्रिटिश गुप्तचर-विभाग फरेंच अफरीकाके अरबोंको हर तरहकी सहायता बडी मात्रामें पहुँचाता है। प्रसिद्ध फरेंच लेखक "स्टीफान लौझाँ" ने अंग्रेजोंके इन करतूतोंके बारेमें यों लिखा है।

" Mais elle a lanci aussi contrenous, a cette heure son infernal " Intelligence service " qui nous dresse des pieges a chaque pas et tend ses collets sons les pieds de nos soldats Jusque dans lis montagnes de Syrie. Jusque sons les rochers du rif.' (Les dessous de L'espionnage Anglais by Robert Roucard प्रस्तावना पृ. ३-५)

अर्थात्– आजकल इंग्लैण्डने अपने दुष्ट, घातक गुप्तचर-विभागको हमारे विरुद्ध आक्रमण तथा विद्रोहको उभारनेको भडकाया है। और यह खुफिया विभाग सीरियाके पहाडोंसे रीफके चट्टानोंतकके सारे टापूमें हमारे सैनिकोंकी रेडमारने-बेकार करनेका जतन बडी लगनसे कर रहा है। "

फ्रेंच अफ्रीकामें अल्पसंख्य होनेवाले यूरोपियोंमें इस्लामका चंचुप्रवेश हो चुका है। अल्जेरिया तथा ट्यूनिसके कुछ फ्रेंच परिवार स्वेच्छासे इस्लामी बन चुके हैं और यूरोपीय लोगोंको इस्लामकी दीक्षा देनेका काम दिनोंदिन बढ रहा है। जे. डब्ल्यु. लवग्रोव यह यूरोपीय पंडित मुसलमान हो चुका है। उसकी लिखी पुस्तक 'इस्लाम क्या है?' जनप्रिय हो चुकी है। इसी तरह इस्लामीकरणसे फिर एक बार यूरोपके मुसलमान बनानेका आंदोलन धडल्लेसे बढ रहा है। मुसलमानोंके इस्लामीकरणके कारनामोंसे विशेषतः कुछ यूरोपीय पंडितोंके मुसलमान हो जानेसे ईसाई धर्मप्रचारकोंमें तहलका मचा है और इस्लामीकरणके भयंकर संकटसे यूरोपको बचानेके लिये वे कटिबद्ध भी हो चुके हैं। इस्लामके आक्रमणशील टिड्डी दलको रोकनेका काम केवल यूरोप तथा भारतवर्षनेही किया है। यूरोपवालों तथा हिन्दुओंका प्रबल विरोध तोड देनेके एकमेव उद्देशसे इस्लामका प्रचार, संगठन तथा प्रसारको अपना जीवनकार्य बनानेवाली संस्थाएं तथा उलेमा, मौलवी आदि अविराम यत्न कर रहे हैं। मिस्रमें इस यत्नको काफी सफलता प्राप्त है और आजकल सारे संसारकी आँख मिस्रपरही लगी है। मुस्लिमोंके आशास्थान मिस्रमें 'नौजवान् मुस्लिम संघ' और 'अल् अजहार' इस्लामी संसारमें लब्धप्रतिष्ठ ये संस्थाएंही इस्लामके संगठन, प्रचार तथा प्रसारका कार्य बडी तन्मयतासे कर रही हैं। उन्हींकी कार्यवाहीका विवरण अब आगामी अध्यायमें देंगे।

" जमियत्–अश्–शुब्बन–अल् मुस्लिमीन् "

अर्थात्

नौजवान् मुस्लिम संघ और उसकी करतूतें

अतलांतिक सागरसे फॅनिलातक फैले हुए मुस्लिम संसारको उत्तेजित और प्रक्षोभशील बनानेका कार्य जिन केन्द्रोंके द्वारा किया जाता है, वे हैं काहिरा, मक्का एवं फिलिस्तीनमें जेरूसलेम। इन केन्द्रस्थानोंमें रहकर भिन्न भिन्न चतुर इस्लामी नेता मुस्लिमोंमें होनेवाली कट्टरताके शैतानको बारबार बढावा देकर उठाते रहते हैं। उसी तरह, मुसलमानोंके मनमें धधकनेवाली धर्मान्धताकी आगमें नये नये कट्टर विचारों तथा आचारोंमें ईंधन डालकर उसे और प्रदीप्त करते जाते हैं। जेरूसलेमका पवित्र क्षेत्र तथा मक्काकी इस्लामकी जन्मभू तथा पूण्यभू-के नाते मुसलमानोंको आकर्षित तथा उत्तेजित करते हैं। काहिराका कट्टर विद्यापीठ, 'अल् अजहार' इस्लामी धर्मान्धताकी शिक्षा देकर इस्लामियोंको इस्लामके बंधनोंके बाहर न बढने देनेका यहांतक कि बिना इस्लामके, अन्य कोई विचार प्रकट भी न होने देनेका अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य, सदियोंसे करता आया है। फतीमी खलीफोंने मिस्रहीमें अपनी खिलाफत प्रस्थापित की थी और आज भी वहाँ कई पहलुओंसे स्वतंत्र तथा सामर्थ्य-संपन्न सुलतान राज करते होनेसे, संसारभरमें फैले हुए इस्लामियोंके लिये मक्काके बाद अधिकसे अधिक आकर्षक केन्द्र काहिराही रहा है।

आजकल इस्लामका पुनरुज्जीवन, खिलाफतकी स्थापना, मुस्लिमोंकी शिक्षा एवं मुसलमानोंका नये पायेपर संगठन आदि इस्लामी संसारमें होनेवाले रचनात्मक आंदोलनोंको एक पद्धतिमें बाँधकर सब दूर नये उमंगसे उनका प्रचार करनेवाली, उनका ठीक नियंत्रण तथा मार्गदर्शन कर इस्लामके पुनरुज्जीवनके लिये अनर्थक प्रयत्न करनेवाली प्रबल संस्थाका केन्द्रीय कार्यालय 'काहिरा' ही है। 'अल् अजहार' विद्यापीठके स्नातकोंके समान इस नयी प्रभावपूर्ण संस्थाके सदस्य सब दूर फैले हुए हैं। 'जमियत्–अश्–शुब्बन–अल्–मुस्लिमीन्=नौजवान मुस्लिम संघ' यह है उस प्रभावी संस्थाका नाम। उसकी शाखाएं और केन्द्र

इस्लामी संसारमें प्रायः सभी स्थानोंमें स्थापित हैं। उसका अपना झण्डा है। सदस्योंको तमगे भी दिये जाते हैं। इसका एक बडा ग्रंथालय है, जिसमें इस्लामके पुनरुज्जीवनके लिये आवश्यक साहित्यका संग्रह है। भिन्न भिन्न देशोंमें मुस्लिम संस्थाओं द्वारा प्रकाशित समाचार-पत्रों, पुस्तिकाओं, विवरणों एवं इस्लामसे सम्बन्धित पुस्तकोंका बडी सावधानतासे संग्रह किया गया है।

भिन्न भिन्न देशोंमें मुस्लिमोंकी स्थिति क्या है, उनकी प्रगति हो रही है या परागति, इस्लामी संगठनका प्रचार तथा प्रसारका कार्य कहाँ, किस तरह तथा कैसा चल रहा है, उसका ठीक विवरण देनेका काम इस केन्द्र-कार्यालयमें नियमित रूपसे होता है। ये परीक्षणात्मक विवरण नौजवान मुस्लिम संघके ग्रंथालयमें एक स्वतंत्र विभागके तौरपर सुरक्षित हैं। इस संघके चतुर सदस्य भिन्न भिन्न देशोंमें, बीच बीचमें, सैर कर आते हैं, जिसमें संघके ग्रंथालयका कार्य भी अपने आप हो जाता है। भिन्न भिन्न देशोंके मुस्लिम नेता जान बूझकर काहिरा जाकर इस संघकी कार्यपद्धतिका अध्ययन करते हैं तथा इस्लामके पुनरुज्जीवनके बारेमें परामर्ष करते हैं, नयी नयी योजनाएं बनाते हैं और नया संदेश तथा उत्साहके साथ अपने अपने देशोंको लौट जाते हैं।

भारतमें किसी समय राष्ट्रीय नेताके रूपमें प्रसिद्ध गांधीजीके सहयोगी मौलाना शौकतअली बहुत दिनोंतक काहिरामें जमकर बैठे थे। वहां इस्लामी संगठन तथा पुनरुज्जीवनके विषयपर काफी भाषण हुए थे। मौलाना शौकतअली नौजवान मुस्लिम संघके सभापतिके माननीय मेहमानके नाते, विशेष रूपसे रहे थे। पोलंडके ग्रँड मुफ्ती डॉ. शिंकिव्हिच तथा ट्यूनिसके गरमदली मुस्लिम नेता 'या अलबी' दोनों लम्बे अरसेतक काहिरामें बसे हुए थे और काहिरासे इस्लामी संगठनके नये तथा आक्रमक विचारोंको आत्मसात् कर अपने स्थानको लौट गये थे।

इस प्रकार, भिन्न भिन्न बहानोंसे, प्रक्षोभशील इस्लामी संसारमें, इस्लामी पुनरुज्जीवनके नामपर जिहाद, धर्मान्धता तथा इस्लाम-साम्राज्यकी फिरसे नींवके बीज तैमूरकी कट्टरता तथा आवेशसे फैलानेका काम 'काहिरा' सेही होता है।

इस 'जमियत्' की स्थापना होनेपर स. १९२८ जूनमें इस संस्थाका विधान, नियम, कार्यक्रम आदि बातोंपर विचार करनेके लिये, एक सभा हुई थी। असलमें १९२७ में नियमावली बन चुकी थी, उसमें सुधार करनेके लिये यह सभा थी। इस बैठकमें तथाकथित उदार तथा राष्ट्रीय दलके कुछ मिस्री सदस्योंने संस्थाके नाममें अल्प सुधार सूचित किया, कि संस्थाका नाम "जमियत् अश् शुब्बन अल् ईजिप्शियन मुस्लिमीन्' कहा जाय। अर्थात् 'नौजवान मिस्री मुस्लिम संघ' कहा जाय। बस! सुधार पेश होतेही सब ओरसे ही हल्ला मचा और राष्ट्रीय दलको तीव्र विरोधकी आगमें भुना गया। जिस महत्त्वपूर्ण तर्कके बलपर यह विरोध हुआ था, उसपर हमारे भारतीय भ्रान्त-राष्ट्रवादी हिन्दुओंको बहुत ध्यान देना चाहिये। 'मिस्री' मुस्लिम संघसे 'मिस्री' शब्दपर आपत्ति करनेवाले मुस्लिमोंका तर्क यों था— मुसलमान वही है, जो इस्लामपर ईमान लाता है, फिर चाहे वह तुर्क, मंगोला, चीनी, अरब, अफ्रीकी हो या मिस्री! मुसलमानका धर्म इस्लाम है और उसकी राष्ट्रीयता मुसलमान है। तुर्की, अरबी, मिस्री मुसलमान यह भेद इस्लामको बिलकुल सम्मत नहीं।' क्याही, कट्टर इस्लामियता।

भारतके हिंदु ऐसे भी हैं, जिन्हें अपने हिन्दुत्वपर लज्जा आती है और आक्रमक तथा गुंडोंकी राजनीतिके लालाचियोंको प्रसन्न करनेके लिये वे 'वन्दे मातरम्' के राष्ट्रगीतको भी छिन्न भिन्न कर सकते हैं। मुसलमानोंके कहनेपर सरस्वती तथा कमलके चिह्न कलकत्ता विद्यापीठसे ठुकराये जा सकते हैं, यहाँतक, कि अपनेही हिन्दी बान्धवोंको नष्ट करनेके लिये कुछ हिन्दू अहिन्दुओंकी सहायता लेते दिखायी पडते हैं। हिन्दूही अपने धर्मकी मनचाही टिंगल कर सकता है, और इस्लामकी सच्ची बातको जानते हुए भी उसके विषयमें गौरवयुक्त बातें अतिशयोक्तिसे कहता जाता है। हिन्दुराष्ट्रका इस तरह बात करनेवाली इस परानुनयी वृत्तिका नंगा प्रदर्शन करनेमें कुछ हिंदु शरमाते नहीं! अपने भायियोंके मन दुखे तो भी उसे ठुकराने वे सदा सिद्ध, किन्तु अहिंदुओंके-विशेष कर मुस्लिमोंके-आगे वे भींगी बिल्ली बन जाते हैं। बडा

चमत्कार है। हिन्दुत्वके विषयमें वे सकुचाते लजाते हैं! अधःपातकी भी कोई सीमा है ?

हाँ, तो १९२७ में बनी और १९२८ में सुधारी गयी नियमावलिमें २५ नियम हैं, जिनमें कुछ अपरिवर्तनीय करार दिये गये हैं। इनमें एक है संस्थाका नाम जो 'कयामत' तक वैसाही बना रहेगा। दूसरा अपरिवर्तनीय नियम हैं संस्थाका ध्येय। जमियत्‌का ध्येय यों है— इस्लामके मानवतामूल्यों तथा नीतिमूल्योंका प्रसार करना; मुस्लिमोंका मन आधुनिक युगके अनुकूल, ज्ञान-क्षम बनानेका अनथक प्रयत्न करना; इस्लाममें होनेवाले भिन्न भिन्न दलोंके आपसी द्वेष, मनमुटाव, विरोधका नाश करना; पूरबी तथा पश्चिमी सभ्यतामें जो कुछ अच्छा अंश हो उसे आत्मसात् कर इस्लामको बलिष्ठ तथा प्रभावपूर्ण बनाना,।

दूसरे एक नियमके द्वारा संस्थाके नेतृत्वमें एक 'मण्डल' खोला गया है। 'भिन्न भिन्न विषयोंपर इस्लामी विद्वानोंके भाषण करवाना; जमियत्‌का साहित्य कई भाषाओंमें छपवाकर इस्लामी संसारमें उसका बहुतायत्‌से प्रचार तथा प्रसार करना'— यह है मण्डलका काम। जमियत्‌के आदेशोंको सिर आंखोंपर रखकर यह मण्डल उत्साहसे काम करता है। जमियत्‌के केन्द्र-कार्यालयका कुछ भाग इस मण्डलको दिया गया है। उसी विशाल भवनमें मौलाना शौकतअली तथा पोलंडका मुफ्ती, डॉ. शिंकिव्हिच तथा अन्य कट्टर मुस्लिम नेता अपने भाषण दे चुके हैं। भाषणोंका सिलसिला आज भी जारी है। भिन्न भिन्न इस्लामी प्रदेशोंसे आनेवाले मुस्लिम कार्यकर्ताओंके रहनेका प्रबंध जमियत्‌के अभ्यागत-गृहमें होता है। इस्लामके अभ्यासकोंके लिये सब प्रकारकी सहायता और सुविधा होती है। और एक नियमके अनुसार नौजवान मुस्लिम संघको छूट मिली है, कि वह मिस्र तथा एशिया-अफ्रीकाके मुसलमानी प्रदेशोंमें चाहे वहां केन्द्र और शाखा खोल सकता है। इन नियमोंकी यही विशेषता है, कि ये सब अपरिवर्तनीय हैं।

'जमियत्' की नियामक-समितिमें कार्यकारिणीमें-बारह सदस्य हैं, जिनका चुनाव हर चौथे साल हुआ करता है। इन सदस्योंके आधे सदस्य हर दो वर्षोंके बाद तथा शेष और दो वर्षोंके बाद चुने जाते हैं; अर्थात् चार वर्षोंमें सबका फिरसे चुनाव होता है। चुनाव गुप्त-मतदान-पद्धतिसे होता है। नियामक-समितिमें चार पद अत्यंत महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं— वे हैं अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष तथा प्रधान मन्त्री। प्रारम्भमें इन पदोंपर लब्धप्रतिष्ठ राजनीतिज्ञ ये थे- अध्यक्ष- डॉ. अबदल हमीद बे सईद; उपाध्यक्ष— अबदल अजीज बे शौविश; कोषाध्यक्ष-अहमद तैमूरपाशा; एवं प्रधान मन्त्री- मुहिब-अद-दिन-अल् खातीय। ये चारों व्यक्ति मिस्रके राजनैतिक क्षेत्रमें सुविख्यात हैं, इन्होंनेही मिस्रकी नयी राजनीतिको मानवीय स्थान प्राप्त कर दिया है। इन्हींके परिश्रमोंके फलस्वरूप जमियत्‌को आजका महान् रूप मिला है।

फिर भी, इस्लामके पुनरुज्जीवनके कार्यपर तुली हुई इस कट्टर संस्थाके सब दूर प्रचार होनेका सबसे अधिक श्रेय डॉ. अबदल हमीद बे सईदहीको है। इस नेतासे उऋण होनेकी इच्छासे तथा उसी चतुर तथा सुयोग्य कर्णधारका सहयोग सदा बना रहे इस उद्देश्यसे संस्थाके सदस्योंने एक स्वरसे डॉ. अबदल हमीदको 'जमियत्' के आजीव सभापति रहनेकी प्रार्थना की थी। उपाध्यक्ष अबदल अजीज मिस्रके प्रारंभिक शिक्षाके संचालक रहे थे, किन्तु जमियत्‌के दुर्भाग्यसे स० १९२२ में उसकी असमय मृत्यु हुई। कोषाध्यक्ष अहमद तैमूरपाशा बडे विज्ञानशास्त्री थे। मिस्रमें आधुनिक वैज्ञातिक ज्ञानको बढाने और फैलानेमें इन्हींके विशेष परिश्रम लगे हुए हैं। बडे कर्मठ, जीवट तथा साहसपूर्ण नेताके रूपमें मिस्री जनता उन्हें जानती है। वे भी जमियत्‌के दुर्भाग्यसे २६अप्रैल १९३०को एकाएक चल बसे!

संस्थाके प्रधान मंत्री अल् खातीबका कार्य भी उसी तरह महत्त्वपूर्ण है, यद्यपि उसका स्वरूप भिन्न है। इस्लामके पुनरुज्जीवनका प्रचार यह व्यक्ति बडी लगनसे करता है। उसका दृढ विश्वास है, कि एक खलीफाके नेतृत्वमेंही फिरसे इस्लामी साम्राज्यकी स्थापना तथा पुनरुज्जीवन होगा, उसके द्वाराही इस्लामका श्रेष्ठत्व स्थापित होगा। इस्लामके पुनरुज्जीवनके बारेमें अपने विचारों, भिन्न भिन्न इस्लाम-प्रधान देशोंके पुनरुज्जीवनार्थ होनेवाले आन्दोलनोंकी ब्योरेबार जानकारी, कार्यपद्धति, प्रचार तथा प्रसारकी रूपरेखाएं-एवंच सांगोपांग इस्लाम-संसारके सामने रखनेका

काम यह सज्जन बडी लगनसे किया करता है। इससे संचालित ' अल् जहारा ' मासिक-पत्रिका तथा 'अल् फतह' साप्ताहिक पत्र इस्लामी संसारमें अतीव जनप्रिय है। ये दोनों पत्र इस्लामी संसारकी राजनीति, मिशनरियों तथा यहूदियोंकी करतूतें, यूरोपीय शासकों तथा साम्राज्यावादियोंके कुटिल दाँव-पेंच आदि बातोंपर विदारक प्रकाश डालनेका काम बडी प्रभाविततासे करते हैं।

सभापति, कोषाध्यक्ष, उप-सभापति एवं प्रधान मंत्री इन चार व्यक्तियोंके अलावा, शेष सदस्य भी बडे सुयोग्य तथा निष्ठावान् कार्यकर्ता हैं। उपर्युक्त चार अधिकारी तथा शेष आठ सदस्य हैं— इन्होंनेही संस्थाको, उसके प्रारंभिक समयमें बडी सावधानीसे बढाया, जिससे आज वह प्रभावशाली बन गयी है। शेष आठ सदस्य ये हैं—

१. प्रो. मुहम्मद कादिर हुसेन–'अल् अजहार' कट्टर अिस्लामी विद्यापीठमें 'स्पेशियल अिन्स्ट्रक्शन विभागके आचार्य।

२. प्रो. शेख अहमद अिब्राहीम ' स्कूल ऑफ लॉ.' में कानूनके प्राध्यापक।

३. मौ. मुहम्मद बे अहमद अल् घमरावी, लंदनके उपाधिधारी।

४. डॉ. याहया बे अहमद दरदीरी डॉक्टर ऑफ लॉज़्, जिनोव्हा का उपाधिधारी, राजनीतिशास्त्रके प्रकाण्ड पंडित; जमियतका मुखपत्र इसीके नेतृत्वमें चलता है।

५. डॉ. अली मजहर बे, विएन्नाका उपाधिधारी।

६. प्रो. महमूद बे अली फदली—हायर ट्रेनिंग कॉलेजका आचार्य।

७. मौ. मुहम्मद एफेन्डी एल हहयावी मिस्रके अेक नामी पत्रकार।

८. मौ. अली बे शौकी– मिस्रके शिक्षाविभागके उपमंत्री।

'जमियत् अश् शुब्बन अल् मुस्लिमीन्' के प्रभावी केन्द्र मिस्रके समान, फिलिस्तीन और इराकमें भी हैं। इनमें तथा सिरिया में तों प्रायः सभी बडे नागरोंमें जमियत्की शाखुओंका जाल-सा बुना हुआ है। भारतमें कराचीमें जमियत्का प्रभावी केन्द्र बन चुका है। स. १९२८ में सब अिस्लामी संगठन संस्थाओंका एक बडा सम्मेलन जाफा में हुआ था। न इमें सम्मिलित सभि संस्थाओंने जमियत्के नियम तथा कार्यनीतिको अपनाया। फिर फिलिस्तीनमें स्थानस्थान पर नये केन्द्र तथा नयी शखाएँ स्थापित हुईं उपर्युक्त सम्मेलनके प्रस्तावोंको देखनेसे जमियत् तथा सभी इस्लामी संस्थाओंका अंतरंग स्पष्ट हो जाता है। जाफा सम्मेलन के एक प्रस्तावमें अनुरोध किया गया है कि मुसलमानोंको चाहिये कि वे अपने बालकों को मिशनरी पाठशालाओंमें न भेज कर, मात्र इस्लामी पाठशालाओंमें भेजें। जहाँ मात्र मिशनरी पाठशालाएँ थीं, वहां इस्लामी पाठशालाएँ खोलनेका दायित्व सम्मेलनने उठाया और उसे अच्छी तहर निवाहा। दूसरे प्रस्तावसे 'मुस्लीम–बालवीर' दलका जोरदान संगठन, इस्लामकी सेवाके हेतु, करनेकी प्रतिज्ञा की गयी, जो पूरी भी की गयी।

जाफा सम्मेलनके बाद सीरिया तथा फिलिस्तीनकी भिन्नभिन्न संस्थाएं स्वेच्छासे जमियत्के साथ संबद्ध हुईं। साथ साथ जेरूशलेम, हैफा तथा एकरके महत्त्वपूर्ण इस्लामी स्थानोंमें नये केन्द्र तथा शाखाएं खुल गयीं। कुछ बूढोंने नूतन संस्था तथा उनसे संचालित इस्लाम–प्रचार तथा संगठनका कार्यके विषयमें कुछ विरोध तथा संदेह बताया; किन्तु उसपर ध्यान नहीं दिया गया। फिलिस्तीनमें आजकल नौजवान मुस्लिम संघकी २५।३० शाखाएं तथा केन्द्र इस्लामका प्रखर संघटन बनानेका कार्य दिनरात कर रहे हैं।

मुसलमानोंके लिये फिलिस्तीनकी समस्या ' एक दाहक ' समस्या बन बैठी है। यहूदी–विरोधी आंदोलनमें बार बार ज्वार आया करता है, यहूदियोंको वहाँसे जड–मूलसे उखाडनेके हेतु अरबोंके आंदोलन तथा आक्रमणोंकी बागडोर चलायी जाती है। गत १०।१५ वर्षोंमें फिलिस्तीनको यहूदियोंने बहुत बडी मात्रामें भर दिया है। वास्तवमें फिलिस्तीन यहूदियोंका ही टापू था; किन्तु अरबी आंधीके झपटमें, ऐतिहासिक कालमें, वे टिक न सके और उन्हें प्रदेश छोडना पडा। जेरूशलेममें यहूदियोंकी एक शोक दीवार (वेलिंग वॉल) है; अन्य धार्मिक स्थान भी वही पर हैं। गत महासमरमें ब्रिटिश सेनाध्यक्ष अलेनबीने यह इसाईयोंका धर्मक्षेत्र इस्लामके चंगुलसे मुक्त किया और तबसे यहूदियोंका मुँह उस ओर हुआ। जर्मनीके चलाये यहूदी–काण्डके कारण यहूदी भयत्रस्त हो गये और उन्होंने फिलिस्तीनमें आसरा पाया। इस भगदडके कारण फिलिस्तीनमें यहूदियोंकी बाढ आगयी; उनकी जनसंख्या काफी बढ गयी और तिसपर भिन्न भिन्न यहूदी—संस्थाओं तथा धनियोंसे प्राप्त आर्थिक सहायता ही से फिलिस्तीनमें यहूदियोंकी बस्ती पनप कर सुदृढ बनी।

यह यहूदियोंकी बस्ती बढती गयी, जैसे कि लच्छन दीख

पडते हैं, तो कुछ समयके बाद अरब अल्पसंख्य बन जायेंगे और फिर उन्हें अपने मूलस्थान रेगिस्तानमें आसरा ढूँढना पडेगा। इस संकटसे बचने केही लिये अरबोंका यत्न जारी है।

सीरिया, फिलिस्तीनमें अरबोंको बहुत बडी संख्यामें लाकर बसानेवाला था मुहम्मदका हरीफ खलीफामो आविया। उसीके कार्यकालसे अरबोंको फिलिस्तीन सीरियाका उपजाऊ टापू हथियानेका मौका मिला और वह पूरी तरह अरबी चंगुलमें फँस गया। जिस शस्त्रबलके बूतेपर सीरिया फिलिस्तीनका टापू अरबोंने ऐतिहासिक कालमें हथियाया वही शस्त्रबल-आधुनिक रूपमें-ब्रिटिश साम्राज्य तथा स्वार्थके बहाने यहूदियोंको सहायता पहुँचा रहा है; यहूदियोंको दबानेमें जिस शस्त्रसामर्थ काम आया था, उसीको आज अरबोंपर आजमाया जा रहा है। अरबोंने पुराने समयमें जिस प्रकारसे धींगाधींगी चलायी थी, आज ब्रिटिश साम्राज्यके बूतेपर तथा अपनी आर्थिक शक्तिके बलपर वही धींगाधींगी यहूदी कर रहे हैं। आक्रमणका अपराध दोनोंने एक-जैसा ही किया है। समय-असमय विश्वजेतृत्वकी शेखी बघारनेवाले आक्रमणशील इस्लामियोंको यहूदियोंके आक्रमणके बारेमें गिला करना तनिकभी शोभा नहीं देता। ' जो जैसा करे वैसा फल पावे ' यह तो इस कार्यभूमिका सनातन नियम है और वह सबपर लागू है। भारतके विदेशी तथा धर्मभ्रष्ट मुसलमान अपनेको एक स्वतंत्र राष्ट्र होनेका दावा कर भारतके टुकडे करते हैं, तब उसीके अनुसार फिलिस्तीनमें बसे यहूदी बँटवारेकी माँग करते हैं, इसमें अनुचित क्या है ? और यह माँग इस्लामियोंको इतनी चोट क्यों पहुँचाती है ? भारतकी इस्लामी जनता हिंदुओंकी इस पितृभू-पुण्यभूको दारूल हरब-(शत्रुभूमि)-मानती है, यहाँ इस्लामी राज स्थापन करनेके षड्यंत्र रचती है- और वहभी विदेशियोंकी सहायतासे-यहाँतक कि प्रार्थना करती है, ब्रिटिश सरकार भारतके टुकडे कर ' पाकिस्तानका एक टुकडा उसे दिलादे और उसकी रक्षाके लिये सेनासमेत उसमें रहे और उसमें सफल भी होती है; तथा साथ साथ, बीच बीचमें, क्रोधका नाटक तथा नाटकीय क्रोधका प्रदर्शन कर हमें डरानेका भी यत्न करती है।

फिलिस्तीनमें बसे हुए यहुदी ठीक वैसाही करते जाते हैं और अंग्रेजी सत्ता उन्हें सहायता भी पहुँचाती है। इसीकी पुकार फिलिस्तीनवाले समय कुसमय करते रहते हैं और लडाई झगडे की डाँटभी बताते हैं; क्या यह अचरजकी बात नहीं है ? भारतके मुसलमानोंको बख्शे हुए पाकिस्तानके नमूनेपर अंग्रेजोंने फिलिस्तीनवाले यहूदियोंको समर्पण किया है। अंग्रेजोंने फिलिस्तीनके तीन भाग बाँटे हैं। उत्तर तथा पश्चिमकी ओरका एक भाग ' यहूदिस्तान, ' दक्षिण तथा पूरबमें ' अरबीस्तान ' और इन दोनोंके बीच होनेवाले तंग टापूको, यहूदियों और अरबों तथा पेट्रोलके, नलोंकी रक्षाके बहाने 'अंग्रेजीस्तान' बना दिया है।

इस तरह फिलिस्तीन तीन भागोंमें बाँटा गया और इसी बँटवारेके विरुद्ध-जो पाकिस्तानके नमूने पर है-अरब और इस्लामी लोग आकाश सिर पर उठा रहे हैं। ऊपरसे कहा जाता है, कि संसारके किसी भी भागमें रहनेवाला मुसलमान अपनेको इस्लामका सैनिक मानता है और अपने सभी इस्लामी भाइयोंके कंधेसे कंधा भिडाकर फिलिस्तीनके अरबोंके अधिकारोंकी रक्षाके लिये लडनेको सिद्ध है। मुसलमान यहूदियों-जियानिस्टोंको कोई स्थान तबतक नहीं मिलेगा, जबतक कि मुसलमाक पाक देशमें आखरी मुसलमान जीवित होगा और उसकी नसनसमें इस्लामी खून भरा होगा! ऐसी धमकियाँ भी दी जा रही हैं। भारतमें ऊधम मचाने की ताकमें होनेवाले पाकिस्तानियोंके विरोधक भी और क्या कहते हैं ? यदि भारतके विदेशी मुसलमानोंको पाकिस्तान माँगनेका हक हो, तो उसी न्यायसे फिलिस्तीनमें बसे हुए यहूदियोंको भी है!!

जिस फिलिस्तीनको अरब अपना प्रदेश मानते हैं उसी फिलिस्तीनमें यहूदियोंके धर्मक्षेत्र हैं, जो इस्लामके जन्मके पूर्व बने हैं। मक्का, और मदीना के बाद इस्लामियोंका तीसरा पवित्र स्थान ' हरम-अश-शरीफ ' है। यह तो यहूदियोंकी शोक-दीवार (वेलिंग-वॉल) का ही एक भाग है। इसी स्थानमें यहूदियोंका इतिहास-प्रसिद्ध, पुराना तथा पवित्र मंदिर था, जो स० ७० में नष्ट-भ्रष्ट किया गया। बादमें इसी स्थानपर अरबी टिड्डिदलने अपना प्रभुत्व तथा वर्चस्व प्रस्थापित किया और तबसे वह इस्लामियोंका पवित्र स्थान माना जाने लगा। जहाँ यहूदियोंकी शोकदीवार है, वहीं इस्लामियोंका ' बुराक ' भी है।

इस स्थानके कारण ही सन् १९२९ में यहूदियों और अरबोंमें भीषण दंगा हुआ था, जिससे समूचे इस्लामी संसारमें बहुत खलबली मची थी। 'जमियत्-अश्-शुब्बन्-अल् मुस्लिमीनने ' नेतृत्व कर इस दंगेके विरुद्ध निंदाका होहल्ला मचा दिया था। जमियतके काहिरावाले केन्द्रीय कार्यालयसे राष्ट्र-संघ पर तार भेजा गया था। उसी तरह, ब्रिटिश विदेशी-विभाग तथा जेरूशलेमके ब्रिटिश हाइ कमिशनर पर निंदा तथा तहकिकात

की माँग करनेवाले तारोंकी बौछार हुई; सर्वत्र मुस्लिमोंकी विराट् सभाएँ हुई, जिनमें ब्रिटेनकी घोर निंदा की गयी और सब इस्लामी देशोंमें ब्रिटिश–विरोधकी आग भडका गयी। जिहादका प्रचार भी बहुत जोरोंसे चालू हुआ । 'जमियत्' ने इस्लामी संसारकी प्रत्येक संस्थाको पत्र भेज कर जागरित किया, जिससे उसने विरोध और निंदाका बवंडर खडा कर दिया। ,

स. १९३० में मुसलमानोंमें फिर एक बार असंतोष तथा गैर–मुस्लिमोंके बारेमें द्वेष पैदा करनेका मौका जमियत्को मिल गया। फ्रान्सीसी सरकारने, मोरोक्कोके सुलतानकी सम्मतिसे, एक नया कानून उस वर्ष जारी किया। इसके अनुसार वैधानिक हैसियतसे अरब और बर्बर एक दुसरेसे पूर्णतया अलग, स्वतंत्र ठहराये गये। बर्बर जातिको यह कानून पूरी तरह पसंद था। असलमें यह कानून बर्बर जनताके इच्छानुसार तथा सम्मतिसे बनाया गया था, और जारी भी किया गया था। बर्बर जनतामें आत्माभिमान अच्छी मात्रामें जागृत था और आज तो बहुतही तीव्र हो गया है। बर्बर जनता अरबोंमें घुलमिल जानेको–अपने हाथों अपना गला घोंटनेको—तनिकभी सिद्ध नहीं। बर्बरोंकी अपनी अलग भाषा है, जिसमें अच्छा जीवित साहित्य प्रकट होता है। बर्बरोंकी अपनी स्वतंत्र परंपरा–इस्लामसे अलग–है और उसे बढाये रखने तथा उसे बढानेके लिए जनता कटिबद्ध है। फ्रेंच उत्तरी अफ्रीकामें बर्बरही बहुसंख्यक हैं, जो अरबोंकी सुलतानशाहीके विरुद्ध कई बार बलवा कर चुके हैं। इस स्वातंत्र्य—लालसाको कुचल कर फिर एक बार प्रतिगामित्वका निचोड होनेवाले अरबी टिड्डीदलका प्रभुत्व प्रस्थापित करनेका षड्यंत्र काहिरामें बैठ ' जमियत् ' करती रहती है । एतिहासिक कालमें, धोखा और विश्वासघातके बलपर अरबोंने बर्बर जनतापर इस्लामका प्रतिगामी कंधावर चढाया गया और इस्लामी झण्डा फहराया गया। राष्ट्रके प्राकृतिक विकासको रोकनेवाला यह आवरण, यह बाहरी वेष अत्यंत झीना तथा बनावटी था। इस झीने पराये आरणके अंदर बर्बर राष्ट्रकी आत्मा स्वतंत्रतासे पुष्ट हो रही थी और उसमें वृद्धि भी हो रही थी। इसीके प्राकृतिक परिणामस्वरूप कानूनके क्षेत्रमें इस्लामका विदेशी चोगा फेंक दिया गया है।

अरब तथा उनके पिट्ठू अन्य मुसलमानोंका दाँव है, कि बर्बर राष्ट्रको आवश्यक स्वातंत्र्य ' इस्लाम खतरेमें ' के नारे गूँजा कर प्राप्त न होने दिया जायगा।

बर्बर राष्ट्र तथा मोरोक्कोके सुलतानकी अनुमति ही से फ्रेंच सरकारने जब घोषित किया, कि बर्बर तथा अरबों पर लागू होनेवाले कानून अलग अलग होंगे तथा बर्बरोंके लिये अलग कानून जारी होगा, तब 'जमियत्' ने सभाएँ कर, समाचारपत्रों द्वारा तथा विशेष पत्रकोंके रूपमें विरोधका बवंडर खडा करने की चेष्टा की। 'इस्लाम खतरेमें' का विवेचन करनेवाला एक पत्रक मुस्लीम जनता तथा मुस्लीम–सत्ताधीशोंके नाम प्रकट हुआ। यह पत्रक मक्का मदीनाके उलमोंओं, अल् अजहारके प्रमुख शेखों, विद्यादान करनेवाली अन्य अन्य मुस्लिम संस्थाओं, ट्यूनिस की प्रसिद्ध मसजिद 'जवतुनाह,' फेजकी इस्लामी संसारमें विख्यात कारबियाँ 'मसजिद, लखनऊकी ' नव्दा ' देवबंदका 'मुस्लिम विद्यालय,' सीरियाकी संस्था 'नाह दात् अल् उलेमा,' जेरूशलेम तथा बैरूतकी मुस्लिम संस्थाएँ, काबुलकी शरारती' उलेमा संस्था,' चीनमें इस्लाम–प्रसारार्थ प्रस्थापित 'चीन–इस्लाम–प्रसारक-संस्था' तथा संसारके सभी महत्त्वपूर्ण समाचारपत्रोंके पास पहुँचाया गया। शिष्टमंडलभी गये थे। फ्रेंच सरकारने इस्लामी शिष्टमण्डलसे मिलनेसे इनकार कर दिया जिससे अरबी क्रोधकी मात्रा और बढ गयी, और बहिष्कारकी आँधी लायी गयी। निंदाकी दाव सुलग उठी; सारा मुस्लिम संसार जागरित होकर इस्लाम और संगठित होने लगा।

इराकमें तो जमियत्की शाखाएँ तथा केन्द्र बिखरे पडे हैं। बसरा तथा बगदादमें सबसे बडे तथा कर्मठ केन्द्र हैं। वहाँसे छोटेमोटे इस्लामी संगठनको बढावा देनेवाले पत्रक, मुसलमानोंके घर घर पहुँचाये गये। अनपढोंको पत्रक पढ सुनाने तथा समझा देनेका काम स्वयंसेवकोंने किया। हरएककी अनुमति भी प्राप्त की; साथ साथ जमियतके सदस्य बढानेको भी वे न चूके। इस्लामी संगठनमें इससे बडा जोरा पैदा हुआ। केन्द्रों द्वारा प्रसिद्ध होनेवाले पत्रकमें 'इस्लामी संगठन' की बात भिन्न भिन्न मार्गों तथा उदाहरणोंसे जँचानेका प्रयत्न किया गया था।

' शराब पीना इस्लाममें हराम है; उसीसे पतन होता है। मुसलमानोंका नैतिक तथा शारीरिक पतन बहुत जलद यह शराब कर दिखाती है; स्वच्छंदता तथा स्वैराचारकी जड यह शराबही है। अनैतिक बरतावका कारण यही शराब है; इसलिए उसका त्याग करना ही चाहिये। जुआभी उसीके समान घातक तथा बुरी लत है। इस्लामको जुआ पसंद नहीं। जुएमें पैसा गवाँना खराब है, सो उसका त्याग करो, पैसा मत खोओ। **इस्लामके आखरी समरके लिए उसे सुरक्षित रखो। कहवा पीते हुए**

*

गप्पें लगाना तो इस्लामकी शक्तिका अपव्यय है। इस्लामको पहलेका वैभव प्राप्त करा देना है न ? तो फिर इस्लामी-संगठनके नारे को गूँजा कर काममें लग जाओ।'

'विदेशी चीज खरीदना इस्लामको पसंद नहीं; सो, स्वदेशी का पालन करो और स्वधर्मसे प्रेम करो। **तुम्हारे प्रिय इस्लामकी रक्षा तुम्हारे बिना कौन करेगा ? इस्लाम के सपूतो ! तुम जानते हो न कि इस्लामी संगठनमें जीवन खपानेवाली, 'जामियत् अश् शुब्बन अल् मुस्लिमीन' की शाखा यहाँ पर है ?** इस शाखासे तुम्हें हर तरहकी सहायता निश्चित रूपसे मिलेगी। हर सप्ताह शाखा कार्यालयमें भिन्न भिन्न विषयोंपर इस्लामी नेता, संपादक तथा अध्यवसायी लोगोंके भाषण हुआ करते हैं। इस्लाम जाग उठा है; संघठनके कार्यमें डटा हुआ है। नौजवान मुसलमान चांद-तारांकित झण्डेके नीचे सदा शिक्षा पा रहे हैं। क्या, तुम्हारा नाम उसमें शामिल है ?

"जहाँ इस्लामकी शिक्षा न मिलती हो वैसी पाठशालामें मत जाओ। ईसाइयोंकी चलायी पाठशालाओंसे दूर रहो। मिशनरियों की चलायी पाठशालाओंसे दूर रहो। जगह जगह इस्लामी-पाठशालाएं बन चुकी हैं; उनमें अपना नाम दर्ज कराओ। यदि ऐसी पाठचाला न हो, तो पासकी मसजिदमें जाओ; जहाँ तुम्हारी शिक्षाका पूरा प्रबंध होगा, अपने बच्चेको इस्लामका सुयोग्य सेवक बनाना हर मुस्लिम पिताका सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य है; इस में आनाकानी हो जाय तो अल्लाह तुमसे जवाब तलब करेगा! चोरी तथा विश्वासघात ये दो क्रूर राक्षस हैं; इनसे दूर रहो। युरोपीय ढंगसे शिक्षा देनेवाली पाठशाला तथा विद्यालयमें अपने बच्चोंको न भेजो। **हर मुस्लिमका पहला कर्तव्य है, कि बच्चे के मनमें इस्लामकी श्रद्धा पूरी तरह बसानेकी पराकाष्ठा करे। "मुस्लिम युवतियो, तुम पर बहुत बडा दायित्व आपडा है। तुममें होनेवाली चतुरताका उपयोग ठीक तरह करो। भडकीली वेशभूषा, उत्तान श्रृंगार ये पतनकी सीढियाँ हैं। जागरीत इस्लाम तुम्हारी सहायता चाहता है।"**

उपर्युक्त तीन उद्धरण नमूनेके तौरपर दिये हुए हैं। इस तरह के लेखवाले कई पत्रक तथा पुस्तिकाएँ, बसरा, बगदादके जमियत्-केन्द्रके समान सेलवान्, लिफता, खान यूनूस, अलक् सांद्रिया, सोहाग, कफर; अश्-शेख आदि नौजवान-मुस्लिम-संघ के केन्द्रों द्वारा वितरित होती रहती हैं। साथ साथ नौजवानोंको **इस्लामी झण्डेके नीचे इकट्ठा कर' शिक्षा द्वारा सब तरहसे सिद्ध कर आगामी प्रचंड जिहादके लिए होशियार और सावधान रहनेकी सूचना तथा चेतावनी दी जाती है।**

'जमियत्' के मिस्र तथा मिस्रके बाहर होनेवाले सभी केंद्र तथा शाखाएं पूरी तरह स्वतंत्र है। आत्मीयता, कट्टर इस्लाम प्रेम, एवं भ्रातृभावके प्राकृतिक बंधनों सेही ये सभी केन्द्रीय कार्यालयसे संबद्ध हैं। इन सबोंमें आत्यंतिक सहयोग तथा भ्रातृभाव पाया जाता है। 'मुस्लिम सब एक हैं' की दृढ भावना, इस्लामके पुनरुज्जीवनके लिए सर्वस्व न्योछावर करनेकी सिद्धता तथा अव्वल दर्जेका अनुशासन-ये तीन बातें जमियतके काहिरा-केन्द्रमें आनेवाले सदस्यों, तथा अन्य शाखाओं और केन्द्रोंके सदस्यों, जमियत्के हितेच्छुओं तथा सहायकों की रगरगमें भिदी हुई है, जो कट्टरताके रूपमें प्रत्यक्ष दीख पडती हैं।

जमियत्की सब शाखाओं तथा केन्द्रोंके संयोजक मण्डलोंकी बैठकें बारबार होती हैं। ये बैठकें भिन्न भिन्न स्थानोंमें बुलायी जानेका अलिखित नियमपर निश्चित रूपसे अमल किया जाता है। इन संयुक्त बैठकों द्वारा उनउन स्थानोंकी मुस्लीम जनताको जमियत् की ओर आकर्षित किया जाता है। इन बैठकोंके आलावा, भिन्न-भिन्न मुस्लीम देशोंके नामी नेताओंको काहिरामें बुलाकर उनके भाषण करवानेका कार्य तो जमियत्का काहिरा केन्द्र करताही हैं; उन नेताओंका लाभ अन्य केन्द्रोंको भी प्राप्त करानेके लिये उनको वहाँ घुमायाभी जाता है। भिन्न भिन्न स्थानोंको देखने, स्वास्थ्य ठीक करनेके बहाने मुस्लीम देशके नेतागण काहिरा जाते हैं। अनायास पधारे हुए मुस्लीम नेताओंके ज्ञान तथा अनुभवोंसे लाभ उठानेको जमियत्के कार्यकर्ता प्रायः नहीं चूकते। जमियत्का काहिरा-केन्द्र इन अनाहूत तथा निमंत्रित मेहमानोंका प्रबंध अपने प्रमुख अभ्यागत—गृहमें करता हैं तथा चर्चाएं तथा प्रकट भाषण करवाता हैं। कभी कभी मुसलमानोंके इतिहास-प्रसिद्ध स्थानोंको देखनेके लिए इन मेहमानोंको इराक, फिलिस्तीन तथा सिरियामें ले जाया जाता हैं। 'हज' के बहाने भिन्नभिन्न स्थानोंके कट्टर मुसलमान प्रतिवर्ष मक्कामें इकट्ठा होते हैं ही। इनसे चुने हुए लोगोंको जमियत्के केन्द्र तथा शाखाकी जगहोंमें बुलाकर उनके भाषण करवाये जाते हैं, जिससे इस्लाम, इस्लामके भ्रातृ-

भाव तथा एकेको बढावा देने तथा विचारोंका आदान–प्रदान करने का जतन किया जाता है ।

इस चर्चामें इस्लामका पुनरुज्जीवनही एकमात्र विषय होता है, फिरभी मुसलमानोंको जिहादके सपने तो आते रहते हैं और सो बात नहीं कि इनपर विचार तथा योजनाओंपर चर्चा नहीं होती । विचारोंके आदान प्रदानके साथ साथ मुस्लीमसंसारकी भाषा अरबीका प्रचार तथा प्रसार किया जाता है । मुस्लिम संसारकी भाषा अरबीही है । 'जमियत' का सभी कारोबार अरबीहीसे चलता है । उसी तरह मक्का जानेवाला हर हाजी अरबी जानता ही है । इससे अरबी भाषा मुसलमानोंकी साधारण भाषा बनी है । सब देशोंके मुस्लीम नेता अरबीहीमें अपने विचार प्रकट करनेका प्रयत्न करते हैं, जिससे अरबीका महत्त्व और ही बढ गया है । बडे बडे कवि, ग्रंथकार, राजानीतिके विशेषज्ञ जमियत के सदस्य हैं और वे सभी अरबीके एकनिष्ठ भक्त हैं । मिस्रका सर्व श्रेष्ठ राष्ट्रीय कवि 'अहमद शौकी' जमियतका कर्मठ सदस्य है । इसे 'कवियोंका अमीर' की उपाधि मिली है । यह श्रेष्ठकवि, अल् अजहारके कट्टर इस्लामी विद्यापीठके प्राध्यापक और जमियत की कार्यकारिणीके सदस्य सभी लगनसे एक ही कार्य करते हैं और वह है, सबको तन्मय करनेवाला **इस्लामी संगठन तथा उसका प्रचार, प्रसार ।**

'जमियत' एक पत्रिकाका संपादन भी करती है । इसके द्वारा संगठन और प्रचार–प्रसारका कार्य किया जाता है । कुरानकी स्पष्टता, इस्लामी खलीफा तथा वीरोंकी जीवनियाँ तथा कार्य ये विषय इस पत्रिकामें होते हैं । जमियतकी कार्यकारिणीके विद्वान् सदस्य डॉ. दरदीरीके मार्मिक, विद्वत्तापूर्ण तथा विचार–प्रवर्तक लेखोंसे यह पत्रिका भरी रहती है । इस लेखकका एक विचार-- प्रवर्तक लेख है, 'मुस्लिम संस्कृति तथा नीतिका आधार कुरान' । सुधार, व्यक्ति तथा समाजके हित की ही पृष्ठ-भूमि है, कुरानकी और वही इस्लामी सभ्यताकी जड है । कुरान विचार स्वातंत्र्यको मानता है, जिसके आधारपर ही इस्लामके पुनरुज्जीवनका कार्य खडा है, आदि बातोंकी चर्चा डॉ. दरदिरीने बडी गंभीरताके साथ की है ।

अपने तर्कोंकी पुष्टि करते हुए डॉक्टर साहबने कुरानसे काफी उद्धरण दिये हैं । जमियतकी पत्रिकाके बहुतेरे पृष्ठ डॉ. दरदिरीके लेखोंसे अंकित रहते हैं । 'हमारी बीमारी और उसका इलाज' नामक जोरदार लखमें डॉ. दरदिरीने इस्लाममें घर कर बैठी सुख-लोलुपता तथा कामुकताकी बडी निर्दयतासे कटु आलोचना की है । लेखके अंतमें जमियत्के सदस्योंको चेतावनी दी है, कि वे इनके विरोधमें आंदोलन करें । पाठकोंको डॉक्टर साहबने यह आदेश दिया है– 'अल्लाह ही इस्लामियोंका सब कुछ है और इसीसे मुस्लिमका पहला और आखिरी कर्तव्य है, कि वह अल्लाहकी आज्ञा-ओंपर पूरी तरह अमल करे । अल्लाहने जिन बातोंकी निंदा की है उनकी ओर झाँकना भी न चाहिये । अल्लाहकी आज्ञाओंका, अत्यंत कट्टरता तथा निष्ठाके साथ, सभी मुस्लिम जनता पालन करेगी तो बातकी बातमें इस्लाम अपने पहलेके वैभवसे पूर्ण होगा ।"

यूरोपीय शिक्षा–विभूषित व्यक्तिका यह कट्टर इस्लाम-अभिमान मुसलमानोंके गर्वकी बात है । हिंदूधर्मकी मौके बेमौके खिल्ली उडानेवालोंको चाहिये कि यह बात वे हृदयांकित कर ले । स्वधर्मद्वेष, या स्वधर्म और स्वराष्ट्र तथा अपनी सभ्यताकी हेठी करना या खिल्ली उडाना न राष्ट्रभक्ति है, न प्रगतिशीलता । हिंदू लोग जितनी जल्द इस तत्त्वेको जानेंगे उतनी जल्द उनकी मुक्ति पास आती जायगी । अपनी सभ्यता तथा धर्मकी निंदाकी तहमें पराभवी मनोवृत्ति और निर्लज्ज पर–हित–दक्षताकी जोडी रहती है, इस तत्त्वको हिंदू जल्द समझ जायँ तो निःसन्देह उनका मंगल होगा ।

'धर्मही सबसे श्रेष्ठ' नामक लेख जो डॉ. दरदिरीने लिखा है बहुत प्रेरक तथा पठनीय है । अलावा इसके, जमियत्की पत्रिकामें 'कर्तव्य पालनका प्रत्यक्ष उदाहरण अबूबकर' 'न्याय तथा प्रजातंत्रका प्रतीक उमर' आदि इस्लाममें श्रद्धा बढानेवाले लेखोंकी भरमार होती हैं । आधुनिक महापुरुषोंकी जीवनियाँभी कभी कभी निकलती हैं । यह पत्रिका मुस्लीम संसारमें बहुत बडी संख्यामें प्रसारित होती है । इस कार्यको बढावा देनेमें अल् वाहदाह अल् अराबियाह' [अरबी-भाषी-प्रसंघ (कॉन फेडरेशन)] नामक नयी संस्थाने तत्परतासे हाथ बढाया है । 'अरबी भाषा, कुरान, मुसलमान–मात्र एक हैं' इन तीन बातोंकी निष्ठापर समूचा इस्लामी संसार मंडराता है । 'जमियत् अशशुब्बन अल् मुस्लिमीन्' के सदस्य, विस्फोटक रुझानके प्रतिनिधिभूत मुस्लीम–जगत्का संचालन, नियमन तथा मार्गदर्शन बडी धूर्ततासे तथा इस्लामी पुनरुज्जीवनके ध्येयपर अटल दृष्टि रख करही कार्य करते हैं । आगामी बीस वर्ष इस्लामके पुनरुज्जीवन तथा साम्राज्यस्थापनाकी दृष्टिसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं । भारतीय मुस्लिमोंके आंदोलन तथा संघर्षकी आन्धी भी इन्हीं वर्षोंमें बडे वेगसे झपटने लगेगी । भविष्यके गर्भमें होनेवाली इस

क्रांतिके लिए इस्लामी संसारने सिद्धता की है और अत्यंत सतर्कतासे मौकेकी ताकमें इस्लामी नेतागण घात लगाये बैठा है । इग्लैंड-रूसमें होनेवाले आगामी युद्धके समय इस्लामको मौका मिलनेकी अधिक सम्भावना है । माना जाता है, कि अरब लीगके पीछे ' ऑगप्यू ' के सर्वसमर्थ हाथ कारस्तानी कर रहे होंगे ।

ईसाइयों और इस्लामियोंमें कीना

मिशनरियोंके प्रचार का जाल अफ्रिकामें कई स्थानोंमें फैला हुआ है । ये ही मिशनरी हर जगह इस्लाम-प्रचारके मार्गमें रोडे अटकाते हैं। मुस्लिम-संसारमें भी ईसाई धर्मप्रसारका धडल्लेसे हो रहा है । इस ईसाईकरणके विरोधमें जमियतके प्रचारकोंने प्रकट रूपसे युद्ध ही जारी किया है। इसी कामके लिए कुछ समाचारपत्र निकाले जाते हैं । जहाँ भी इसाइयोंका गढ हो इस्लामका लडाका प्रचारक वहाँ ताल ठोंक कर खडा हुआ अवश्य पाया जायगा । और यह धर्मान्ध इस्लामी प्रचारक मिशनरियोंके विरोधमें तनतोड चेष्टा करता है । ईसाईमिशनरी तथा इस्लामी-प्रचारक-दलमें जो ताल ठोंक कर संघर्ष हो रहा है उसका रूप, आज कमसे कम, इस्लाम को विजयकी ओर ले जानेवाला दीख पडता है । इस्लाम अफ्रीकासे ईसाअी धर्म को उखाड फेंकने पर डटा हुआ है, जहाँ दक्षिण अफ्रीकामें इस्लामको जमने न देने तथा उत्तरी अफ्रीकामें इस्लामको क्षीण बनानेका दृढ निश्चय कर ईसाई मिशनरी काममें दत्त चित हैं । इस पारस्परिक स्पर्धामें ससेडके कान काटनेवाले युद्धके बीज संचित हैं, वरंच उस युद्धकी सिद्धता आज कई प्रकारसे हो भी रही है ।

सन १९३०में जमियतके भिन्न भिन्न शाखाओंके कार्यकारी सदस्योंकी एक विशेष बैठक काहिरामें बुलायी गयी थी । इस प्रातिनिधिक बैठकमें जो निश्चय हुए उनके अनुसार ही आज कल इस्लामी संघठन, प्रचार एवं प्रसारका कार्य जारी होनेसे इस बैठक का ब्योरेवार विचार करेंगे; विना उसके जमियतके कार्य तथा फैलावकी पूरी कल्पना हम कर न सकेंगे।

काहिराकी इस महत्त्वपूर्ण बैठकके विचारार्थ ये विषय थे- (१) इस्लामका संगठन, प्रचार तथा प्रसार किस तरह हो; (२) इस्लामी देशोंमें पारस्परिक दृढ भातृभाव पैदा किया जाय; (३) सभी इस्लामी देशोंमें इस्लामके आदेशोंके अनुसार शिक्षा दिया जाय और आवश्यक सुविधाएं पैदाकी जायँ; (४) मिशनरियोंके आक्रमण तथा बढते हुए कुफ्रको रोकनेका विचार उपर्युक्त सभी उद्देश्योंको कार्यान्वित करने तथा निश्चित योजनाएं बनानेके लिए यह विशेष बैठक थी, जो पूरी तरह सफल हुई ।

इस्लामी संगठन आदि तथा इस्लामी देशोंमें भ्रातृभाव पैदा करनेके लिए उस बैठकमें निश्चय हुआ, कि हर जगह जमियतके केन्द्र तथा शाखाएं खोली जायँ; जहाँ अन्य इस्लामी संगठन संस्थाके केन्द्र या शाखाएं हों उन्हें पूरा सहयोग देकर, उनसे किसी तरहका संघर्ष पैदा न कर इस्लामी जनताका संगठन इस्लामके पुनरुज्जीवनके लिये करना; भिन्न भिन्न देशोंसे प्रातिनिधिक बैठकें बुलाकर तद्द्वारा इस्लामका संगठन करना । इन निश्चयोंके अनुसार आजकल काम जारी है ।

इस प्रचारके साथ साथ एक समिति इस लिये नियुक्त हुई है, कि हर मुस्लिम प्रदेश तथा बिना मुस्लिम देशके मुसलमान जनताका सांगोपांग निरीक्षण कर उन स्थानोंकी मुस्लीम जनता की उन्नति संवर्धन तथा सुरक्षाके लिये अचूक योजनाएं बना कर उन्हें कार्यान्वित करे । इस समितिने सब ओर घूमकर निरीक्षण कर आवश्यक जानकारी प्राप्त की और अपना विवरण केन्द्रीय कार्यालयके सामने रखा । इस जाँच पडतालके अनुसार हर जगहकी मुस्लीम जनताका संवर्धन, सामाजिक तथा आर्थिक संवर्धन के लिये भिन्न भिन्न योजनाएं तथा रूपरेखाएं बनायी गयी और तुरन्त हर केन्द्रके द्वारा कार्यान्वित करनेका प्रारंभ हो गया । इन योजनाओंपर चलकर होनेवाले प्रचार-प्रसारके परिणाम भारतमें तथा अन्य देशोंमें दिखायी पड रहे हैं । भारतमें होनेवाला अरबी का प्रचार, फिलिस्तीनके अरबोंका नया आंदोलन तथा इस्लामका बढानेवाला प्रसार उपर्युक्त बातोंका प्रत्यक्ष सूचक प्रमाण है ।

सन १९३० की काहिराकी विशेष बैठकमें इस्लामी संगठनके लिए ' दैनिकरूप तथा अन्य पत्रिकाएं प्रकाशित करना' तय हुआ था, उसके अनुसार भिन्नभिन्न पत्र, जो इस्लामी-संगठन--कार्यही के लिए थे, जोरोंसे प्रचार करने लगे। भारतमें डॉन, स्टार ऑफ इंडिया ये अंग्रेजी पत्र, हमदम, तन्वीर, तंजीब आदि उर्दू पत्र चालू हुए। सिरिया तथा फिलिस्तीनमें भी कई पत्र शुरू हुए । जमियत्के पत्र तो इन सब में अगुआ थे। भारतीय कट्टर मुसल्मानोंमें, विशेषतया उलेमा और मौलवियोंमें, इनका बहुत प्रचार है । खाकसारोंका रुझान भी अरबी पत्रोंकी ओर ही रहा है ।

हाँ; और एक महत्त्वपूर्ण काम उस निरीक्षण-समितिने किया है । इस्लामी संसारमें तथा अन्यत्र इस्लामी संगठन-प्रचार--प्रसार का कार्य करनेवाली भिन्नभिन्न संस्थाओंकी एक पूरी तालिका

बनाना, वह काम था। हर संस्थाका नाम, स्थान, सदस्य--संख्या आय--व्यय, तथा कार्य-पद्धतिकी ब्योरेवार जानकारी उस तालिकामें दी गयी है। इस्लामी विश्वकोश भी प्रकट हो चुका हैं।

जमियत्का दावा है, इस्लामका अधिराज्य नष्ट होनेके समयसे इस्लामी जनताको जो शिक्षा आजतक दी गयी है वह पूरी तरह इस्लाम–विरोधी ही थी और है। उसे बदल देनेके लिए जमियत् अधिक दृढ निश्चयसे प्रयत्नशील थी और है। जहाँ भी जमियत का केन्द्र या शाखा, संवद्ध संस्था या हितकारी संस्थाका केन्द्र या शाखा थी वहाँ इस्लामकी कट्टर शिक्षा देनेवाली शिक्षा--संस्था स्थापित की गयी हैं।

मिशनरियों की चलायी पाठशालाओंपर संपूर्ण बहिष्कार करनेका आंदोलन जमियतवालोंने बडे आग्रहके साथ चलाया है। साथ साथ हर मिशनरी पाठशालाकी प्रतिस्पर्धी पाठशाला और विद्यालय स्थापित हो चुके हैं; इन विद्यालयोंके साथ इस्लाम–बालवीर दलोंका संगठन भी किया गया है। स्वतंत्र तथा अर्धस्वतंत्र मुस्लिम देशोंमें इन्हीं बालबीरदलोंके आवरणमें छोटे बडे बच्चों को सैनिक शिक्षा दी गयी है। जिसकी लाठी उसकी भैंस यह सिद्धान्त मुसलमानोंको पूर्णतया जँच जानेसे सैनिकीकरणका अनुकरण सर्वत्र हुआ, इसमें क्या आश्चर्य? मिस्र, फिलिस्तीन, सिरिया, इराक, अरबस्तान आदि इस्लामी अर्ध–स्वतंत्र तथा स्वतंत्र देशों-में भिन्न भिन्न बहानोंसे शक्तिभर सैनिकी शिक्षा युवकोंको दी गयी। सिरिया, लेबनॉनमें आजकल जो घटनाएं हो रही हैं, तथा फिलिस्तीनमें जो हो रहा है एवं जो होना चाहता है, उसकी जडमें इन स्वयंसेवक संस्थाओंका हाथ बहुत गहरा है। इलामी स्वयंसैनिक संस्थाओं, बालवीरदलों, पाठशालाओं तथा विद्यालयेंमें जो प्रचार होता है, जो बौद्धिक वर्ग चलाये जाते हैं उनमें मुख्य विषय यही होता है–'इस्लाम–संस्थापक मुहंमद की जीवनी, परंपरा, उसकी सीख तथा अनुशासन।'

संपूर्ण स्वतंत्र तथा अर्ध स्वतंत्र इस्लामी देश तो इस्लामी संगठन तथा प्रचार प्रसारके ज्वलन्त केन्द्र ही हैं। जमियतको सभी देशोंसे बडी यात्रामें पुष्टि प्राप्त है। संसारके इस्लामी देशों-से जमियतने यों प्रार्थनाकी है– 'इस्लामधर्म तथा इस्लामका इतिहास पाठयक्रममें होने चाहिये; विशेषतः इस्लामकी धार्मिक शिक्षा प्रमुख रूपसें दी जानी चाहिये। इस्लाम तथा उसका इतिहास मुसलमानोंकी शिक्षा का मूल आधारे माना जाय। विद्यालय, विद्यापीठ अेवं पाठशालाओंमें अधार्मिकता (कुफ्र) तथा धार्मिक **उदारताको तनिक भी स्थान न देना चाहिये।** जो भी अधार्मिक तथा नास्तिक हो उसे विद्यालयों आदिके आसपास भी फटकने न दिया जाय, अधार्मिकताको रोकने के लिए, इस्लामी विद्वान प्रचारकों द्वारा मुस्लिम देशोंमें प्रचार, प्रसार, कराया जाय। दूसरें, वेश्याव्यवसाय, मद्यपान, जुआ कानूनसे बंद करवाये जायँ। स्त्री–शिक्षाके बारेमें भी कडी नजर रखना आवश्यक प्रतीत हुआ है।

"**आजकल स्त्रियोंमें–शिक्षित महिलाओंमें लटक–मटक, नोंक झोंक तथा सौंदर्यका उत्तान भडकीला प्रदर्शन करनेकी वृत्ति बडे जोरोंसे बढ रही है; जिसे रोकना अत्यंत आवश्यक है। इस्लामी धार्मिक शिक्षा यह काम बहुत अच्छी अच्छी तरह कर सकता है। इसलिये इस्लाम की शिक्षा भी अवश्यक दी जाय। कॉफी गृह, उपाहार गृह आराम गाह तथा गरमीके मौसमी आरामगृह आदि स्थानोंमें जानेसे युवतियों विद्यार्थिनियों तथा विद्यार्थियों को रोकना चाहिये। इस रोकथाम के साथ ही इस्लामी धर्म, नीतिकी शिक्षा अत्यंत आत्मीयतासे दी जाय जिससे उनका मन पूरा इस्लामी बन जावे।**

" इस्लामका आग्रहसे पृष्ठपोषण करनेवाले साहित्यको राजा-श्रय मिलना चाहिये; शासकोंको चाहिये कि वे इस्लामी कवियें तथा लेखकों का गौरव करें।

साहित्यके नये नये तरीकोंको आत्मसात् कर उनके द्वारा इस्लामके महत्त्व तथा इस्लामके बीज-मंत्रोंका प्रकटीकरण तथा स्पष्टीकरण किया जाय। कहानियँ, कवितायें, नाटक, उपन्यास एवं निबंध आदिमें एकही विषय आत्मीयताकी लगन तथा रसिकतासे रखा जाय और वह विषय होगा इस्लाम। इस्लामकी छाप बाल-हृदयोंपर अमिट अंकित करने के लिये पाठ्यक्रम इसके अनुकूल पुस्तकेंही रखी जायँ।"

यह न माना जाय, कि मुस्लीमदेशोंसे केवल उपर्युक्त लम्बी चौडी प्रार्थनाकर जमियत् संतुष्ट हो गयी। उसने वैसा साहित्य बनानेके लिए एक समिति बनायी, जिसके विशेषज्ञोंने पुस्तकें बनायीं। कुरानका एक अधिकृत संस्करण बनाकर छपबाया,

इस्लामी वीरोंके चरित्र लिखे तथा इस्लामी विश्वकोषकी नींव डाली। ये सभी काम आजभी बहुत जोरोंसे बढ रहे हैं।

मिस्रके शिक्षा विभागकी नकेल जमियत्के हाथमें है। वास्तवमें शिक्षाका नियंत्रण करनेका अधिकार अल् अजहार--कट्टर मुस्लीम विद्यापीठको है। इस्लामके विषयमें यह विद्यापीठ बडा कट्टर हैं। इन बातोंको ध्यानमें रखनेसे मालूम होगा मिस्र तथा एशियाके पश्चिमी हिस्सेके मुसलमानी देशोंमें इस्लामकी शिक्षाका क्या रूप होगा।

जमियत्के आदेशपर चलनेवाली शिक्षा–संस्थाएं पश्चिमी एशियामें इधर उधर बिखरी पडी हैं, जिनमें 'नेबूलस' की 'मदरसा अन–नजाह' तथा 'जमियत् थका फाह अल् अराबिया' (अरब–शिक्षा–सभा) यह बगदादवाली संस्था सब प्रकारसे श्रेष्ठ तथा प्रमुख हैं।

अन–इस्लामियोंको मुसलमान बनाने और मिशनरियोंके प्रचार, शिक्षा आदिसे मुसलमानोंकी रक्षा कर उन्हें इस्लामके कट्टर सेवक बनाने तथा इस्लामी संगठन बलवान् और चिरजीवी करनेके लिए जमियत्ने कई उपायोंका अवलंब किया है। इस्लामके प्रचार तथा फैलावके हेतु जमित्ने पहले एक मण्डली बनायी, जो भाषणों, लेखों, प्रवचनों कुरानके वर्गों तथा नमाज द्वारा सर्वसाधारण मुसलमानोंमें आस्तिक्यभावना पैदा करनेका कार्य बडी जागरिततासे करती रहती है। भिन्नभिन्न स्थानोंमें, विशेषतया विद्यार्थि–विद्यार्थिनियोंमें चर्चा, बातचीत, बहस तथा सामूहिक प्रार्थना–उपासना द्वारा युवकोंके मनपर इस्लामको प्रतिष्ठित करानेमें यह मण्डली कुछभी उठा नहीं रखती। इसकी कई उपशाखाएँ तथा छोटी समितियाँ इस लिए बनी हैं, उनके द्वारा नास्तिकता, अधार्मिकता तथा अर्थवादका खण्डन किया जाय।

इस्लामके अच्छे प्रचारक पैदा करनेके लिये इस मण्डलीने काहिरा, ट्यूनिस, बगदाद, जेरूशलेम, और मक्का और मदीनेमें भी स्वतंत्र विद्यालय चलाये हैं। इस्लामियों तथा अन—इस्लामियोंमें प्रचार कैसे किया जाय, ईसाई मिशनरी अपने धर्मका प्रचार किस ढंगसे करते हैं, अनाडी तथा शिक्षित जनताको मसीहाका संदेश तथा ईसाई धर्मके सिद्धान्त कैसे जँचा देते हैं; अन्य धर्मोंकी अपेक्षा, अपने धर्ममें विशेषता एवं अधिकता कौनसी हैं, और उसीको समाजको कैसे जँचा दिजा जाय आदि बातोंकी सब प्रचारकी तथा पूरी तरह शिक्षा उपर्युक्त विद्यालयोंमें अत्यंत लगन तथा आत्मीयतसे दिया जाता है। इस तरह प्रचार–शास्त्र–प्रवीण ये इस्लामी प्रचारक ईसाई मिशनरियोंके केन्द्रोंमें जाकर वहाँ बहस करते हैं, यहाँतक कि कुरानके आदेशके अनुसार बलका भी उपयोग कर इस्लामके ऊँटके बच्चेको आगे बढाते जाते हैं। ये कट्टर इस्लामी प्रचारक कैसे प्रचार करते हैं इसकी बनागी देखिये—

"अल्लाहने मानवके मंगलके हेतु बहुत कुछ किया है। इसी मंगलभावसे उसने पहले कुछ धर्मोंको पैदा किया। किन्तु इससे न मानवका कल्याण हुआ, न खुदातालाको संतोष। मानवका उद्धार तो दूर उसका पतनही वेगसे होने लगा। मानवकी इस दुर्दशाको देख परवरदिगारने अपना एक पैगंबर पृथ्वीपर भेज दिया, जिसको एक धर्म–ग्रंथ भी दिया। वह पैगंबर है हजरत मोहम्मद और वह ग्रंथ है कुरान। पैगंबर तथा कुरानने मानवका उद्धार किया; उसे देख अल्लाहको बडा संतोष हुआ। तब उसके बाद किसी और धर्मकी पैदाइश न हुई, न कोई नया धर्मग्रंथ इस पृथ्वीवर उतरा। इस्लाम तथा उसका कार्य खुदाको मंजूर है; इसीसे उसने धर्म नया सिखलानेवाले पैगंबर या नये धर्मग्रंथको पैदा नहीं किया। इस्लाम परमात्माकी इच्छासे तथा पेरणासे पैंदा हुआ है। इस लिए इस्लामको कबूल करना तथा उसका स्वीकार करना तो खुदाकी इच्छा और आज्ञाको माननाही है। अल्लाहकी आज्ञा न माननेवाला मानव काफिर हैं, उससे लडकर इस्लामका प्रचार करना चाहिये। काफिरसे लडना प्रभुकी सेवा है। मुस्लिमोंको इस कर्तव्यका पालन करनाही चाहिये, उसीतरह अन-इस्लामियोंको अल्लाहकी आखिरी आज्ञापर चलनाही चाहिये। अल्लाहकी इच्छा न मनानेवाला, इस्लासको न माननेवाला, ईश्वरद्रोही, अधार्मिक, पापी, काफिर है।"

मिशनरियोंके धर्म–प्रसारको रोकनेके लिए; जमियतने और एक प्रयत्न किया। विद्वान् मौलवियों तथा उलेमाओंके द्वारा भिन्न भिन्न इस्लामी शासकोंमें जान पहचान बढायी। फिर उनके पास यह माँग पेश की– इस्लामी देशोंमें होनेवाले विचार–स्वातंत्र्य तथा शिक्षा–स्वातंत्र्यको सबके लिए खुला न रखा जाय; क्यों कि, इस्लामको इससे कष्ट पहुँचता है। इस लिए धर्मके बारेमें विचार-स्वातंत्र्यपर कडे नियंत्रण रखने चाहिये। इन नियंत्रणोंके न होनेसे विधर्मी लोग तथा प्रचारक इस्लामी प्रदेशोंमें भी अपने लेखों भाषणों द्वारा इस्लामको हीन तथा प्रतिक्रियावादी ठहराने का जतन करते हैं। **यह बात दुर्लक्षित करने योग्य नहीं, बल्कि क्षमाके योग्यभी नहीं। इस्लामकी** अमर्यादा करनेवालों**को कडा दण्ड मिलना अत्यंत आवश्यक है।"**

भारतमें सत्ता न होते हुए भी इस्लामकी योग्य आलोचना करनेवालोंको दण्ड देनेका काम गुण्डे धार्मिक प्रेरणासे करते हुए पाये जाते हैं । अन्य धर्मोंपर अनुदार हमले करनेकी छूट इस्लामियोंको होनेका ताम्रपट मानो, अल्लाहने प्रदान किया है। किन्तु इस्लामेतरोंको इस्लामकी योग्य आलोचना करने का भी अधिकार न हो, यह मुस्लीमोंकी आंतरिक इच्छा है। और इसकी पर्वाह न करते हुए यदि कोई सत्यकी प्रकाश-किरण इस्लामपर डालेही तो उसे मार डालनेके लिए गुण्डेका छूरा या पिस्तौल सदा सिद्ध रहता है। स्वामी श्रद्धानंदजीके जैसे महात्मा इस गुण्डशाहीका शिकार हो चुके हैं, और खूनी गुण्डोंका गौरव 'राष्ट्रीयताके नाम पर इस्लामियोंने किया हैं। भूल जानेकी आदी हिन्दु जनताके ध्यानमें ये बातें शायद न होंगी । अस्तु ।

इस्लामीप्रचार तथा प्रसारके कार्यमें जमियतका हर तरहसे हाथ बँटानेवाली दूसरी संस्था है ' अल् अजहार ' नामक कट्टर मुस्लीम विद्यापीठ । उलेमाओंपर इस संस्थाका बडा प्रभाव है, जिसके बल पर अल् अजहारने स्थान स्थानके उलेमाओंको संगठित कर उनकी एक केन्द्रीय संस्था बनायी और उसके द्वारा इस्लामी प्रचारका काम धडल्लेसे शुरू किया। आजकल मौलवी तथा उलेमा बडे जोशके साथ इस्लामी प्रचार करते हुए दिखायी देते हैं ।

स. १९३०की बैठकमें नियामक समितिने जमियतकी प्रतिज्ञाका सर्वसम्मतिसे स्वीकार किया। वह जाज्वल्य तथा इस्लामकी भाक्तिसे भरपूर जमियत अशशुबब्बनकी प्रतिज्ञा यों है-

" I bind myself by a covenant and engagement with God to exert myself to the best of my powers in order—

(1) To revive the guidanee of Islam in its doctrines, morals, commandments, prohibitions and language, to oppose the flood of irreligion and libertinism which threaten this guidance;

(2) To be active as warrior fighting for the revival of the glory of Islm by restoring its religious law and its supreme chiefdom;

(3) To do my utmost to strengthen the ties of brothet-hood, amongst all Moslems and to put an end to hostility and dissension between the Islamic parties and groups;

(4) To exert myself to strengthen the Islamic Nations by the knowledge of whatsoever raises their scientific, economic and social level, and promotes the Moslems' adherence to the teachings and virtues of Islam;

(5) To work for the realization of the aims of the Y. M. M. A., the enlargement of its sphere of action, the expansion of the number of its regular members and the strengthening of my acquaintances amongst the Y. M. M. A. in the moral qualities which it is the object of the Association to propagate.

I bind myself by a covenant and engagement with God to do this to the best of my powers without sparing in this any abilities, And I call God to witness what I say. "

अल् अजहार और इस्लामी-संगठन

इस्लामकी घुट्टीमें पडी चिडचिडी कट्टरताको बढानेका कार्य, इस्लामकी मानी हुई विशिष्ट शिक्षा-प्रणालीके द्वारा, अत्यंत निग्रासे किया जाता है । मात्र कुरान ही को प्रमाण मानकर इस्लामी जनताकी नसनसमें भिदी हुआी अमानुष कट्टरताको फुलाकर, चेताकर, जिहादकी दावको भडकानेकी पूर्वसिद्धता करनेका काम इस्लामी शिक्षा-संस्था करती हैं। जिहाद तथा इस्लामका पुनरुज्जीवन-इन दो बिंदुओंके इर्दगिर्द ही सारा मुस्लिम संसार अपने सारे बलको जमा कर रहा हुआ पाया जाता है । जिहाद और इस्लामी पुनरुज्जीवन की दृढ कल्पना कुरानके पाये पर जमानेका कार्य, उसके लिए आवश्यक संगठन खडा करना, उस संगठनके लिए आवश्यक निग्रावंत कार्य-कर्ताओंको तैयार करना तथा पर्याप्त मात्रामें उनकी पूर्तता करना आदि कार्य जिन शिक्षा-संस्थाओंने अतीतमें किया और आज कर रही हैं-जैसा कि, लखनऊ का 'नब्दातुल उल्प,' अलीगढका मुहामेडन अंग्रेजी ओरिऐंटल कॉलेज तथा 'अलीगढ मुस्लिम-विद्यापीठ' कर रहे हैं-

उनकी सिरमौर तथा गुरुस्थानमें रहने योग्य संस्था है 'अल् अजहार'। कायरोंमें प्रस्थापित इस कट्टरतम शिक्षा-संस्थाने निष्ठावंत तथा अत्यंत धर्मान्ध इस्लामी स्नातक पैदा करनेका कार्य लगातार नौ सदियोंतक किया है और आज भी वही कार्य जोरोंसे चालू है।

इस्लामके सिद्धान्तके अनुसार ज्ञानका उद्गमस्थान निष्ठा (इमान) माना है; बुद्धिका स्थान दूसरा है। इस्लाम का शिक्षा-क्रम इसी सिद्धान्तपर रचा है। इस्लामी पाठ्यक्रममें प्रथम स्थान उन बातोंको दिया जाता है जो अल्लाहके मुखद्वारा एक मानवको याने मुसलमानको प्राप्त हैं। उदा०– कुरान। मुसलमान की श्रद्धा है कि कुरान अल्लाहके शब्द हैं। ये शब्द फरिश्ते द्वारा मुहम्मदको मालूम हो गये और उससे सब अनुयायियोंको। कुरान अल्लाहकी देन है; सो इस्लामको अल्लाहका ऋणी रहना चाहिये। कुरानकी निर्मितिकी इस्लामी आख्यायिका इस प्रकार होनेसे इस्लामी शिक्षा-क्रममें कुरान ही को सर्वप्रथम स्थान दिया गया है। मुसलमान मानते हैं, तथा कुरानका दावा है, कि कुरान यह एकमात्र ग्रंथ है, जिसकी पैदाइश प्रत्यक्ष अल्लाहसे हुई है।

उपर्युक्त मतको हर मुसलमान सत्य मानता है; उसकी पूरी श्रद्धा होती है, जिससे कुरानके अध्ययनको सबसे ऊँचा याने प्रथम स्थान प्राप्त है। 'अल अजहारके' कट्टरतम इस्लामी विद्यापीठका उद्देश्य तथा ध्येय कुरानकी शिक्षा देनाही है, 'कुरानका पठन तथा उसके अर्थका स्पष्टीकरण' ही इस्लामी शिक्षाकी जड है। उसपर ही सब इस्लामी शिक्षा खडी है। कुराण अरबीमें होनेसे, अरबीको महत्त्व दिया जाता है। भाषा सीखनेका उद्देश यह नहीं कि भाषा अच्छी तरह जानना या पारंगत होना। केवल कुरान पढ सकनेसे भाषा-ज्ञान पर्याप्त हो जाता है।

पदार्थ-विज्ञान आदि प्रयोगसिद्ध शास्त्रोंको इस्लामी शिक्षा नीतिमें कोई स्थान नहीं होता। 'अल् अजहार' जैसे इस्लामी प्राचीन विद्यापीठमें कुरान और कुरानहीका पठन-पाठन होता है। हाँ, गणित, छंद आदि विषय पढाये जाते हैं।

कायरोंमें एक बडी मसजिदमें यह ख्यातनाम पुराना 'अल् अजहार' विद्यापीठ है। मिस्रके सिंहासनपर विराजमान होनेवाले खलीफोंने इस विद्यापीठका निर्माण किया हैं; मिस्र और उत्तर अफ्रीका जीतनेका कार्य दमास्कसके उम्मियाद खलीफोंके कार्यकालमें शुरू हुआ। इनके बाद फतिमी खलीफोंने अपना प्रभुत्व किसी तरह मिस्रपर जमाया। इन्हीं फतिमी खलीफोंके कार्यकालमें यह कट्टर विद्यापीठ पैदा हुआ। इस 'अल् अजहार' तथा वहाँ होनेवाली प्रचंड मसजिदकी नींव दसवीं सदीमें डाली गयी है। विद्यापीठकी इमारतमें लगे हुए मसालेका काफी हिस्सा लूटका माल है। वह प्रचंड मसजिद जिन प्रचंड स्तंभोंपर कई सदियोंसे खडी है, वे सभी विशाल खंभे लुटारू अरब टोलियाँ उत्तर अफ्रीकाके प्राचीन धर्ममंदिरोंको उध्वस्त कर उडा लायी हैं !! इस प्रकार लूटखसोटके मसाले तथा सामग्रीसे बने हुए इस इस्लामी कट्टर विद्यापीठमें जो विद्यादानका कार्य होता है, वह इस्लामी परंपराके अनुकूल ही है।

इस्लाम–प्रेमियोंने तथा एकनिष्ठ सेवकोंने लूटसे प्राप्त जो तोहफें इस विद्यापीठको प्रदान की हैं उन्हींपर इसका योगक्षेम चलता था। आजकल इसका खर्च धनी मुसलमानोंसे प्राप्त दानसे पूरा होता है। मिस्री सरकारसे यह विद्यापीठ एक पाई भी नहीं लेता। पैसेकी गुलामी न होनेसे यह विद्यापीठ मिस्री सरकारको अपने व्यवहारमें तनिक भी हस्तक्षेप नहीं करने देता। पूरी स्वतंत्रता से इस्लामकी परपंराकी रक्षा करते हुए कुरानके अनुसार विद्यापीठ अपना काम करता जाता है।

प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तिका एक खास नमूना है यह विद्यापीठ। दस सदियों पहले इस विद्यापीठका जो रूप था, वह आज भी ठीक वैसा ही है। इमारत की मरम्मतके बिना उसमें किसी तरह का फेर नहीं हुआ। दसवी तथा ग्यारहवी सदीमें इस्लामियोंमें उमडनेवाली असहिष्णुता आज भी उसी रूपमें बनी है। कुरान और हादिस की आलोचनाको निःपक्षताती बुद्धिसे ही की हुई क्यों न हो, या जिसमें नया आविष्कार करनेकी तेजस्विता भी क्यों न हो, अल् अजहार के प्रतिक्रियावादी प्राध्यापक कभी सहन नहीं कर सकते। वे पूरी तरह मानते हैं कि, कुरान पर टीकाटिप्पणी लिखनेका किसीको अधिकार नहीं है। उनका दावा है, कुरानके स्पष्टीकरणके लिए आवश्यक टीका एकबार हो चूकी है; उसमें नया कुछभी जोडना अनावश्यक होनेसे नयी टीकाटिप्पणियोंका प्रश्न ही नहीं उठता। अर्थात् स्वतंत्र प्रतिपादन या विचार को अल् अजहार का वायुमण्डल मूलतः ही प्रतिकूल है। और फिर भी कोई वैसी चेष्टा करे, कुरान और इस्लामी परंपरासे प्राप्त कल्पनाओंपर कोई कठोर आलोचना करे, तो उसे ठीक करनेका कार्य यह विद्यापीठ अत्यंत तत्परता तथा इस्लामकी असहिष्णुता से करता रहता है।

" अली अब्दर राजिक " यह विद्वान अल् अजहारका उल्मा था। उसके पाण्डित्यके कारण 'अलक्सांद्रिया' और 'अलगिजाह' के धार्मिक न्यायालयोंमें न्यायाध्यक्षके पदपर उसकी नियुक्ति हुई

थी। इस उल्माने अपना पद निःस्पृहता तथा न्यायदानमें आवश्यक निःपक्षपातित्वसे निबाहा। यूरोपीय भाषाओंको वह अच्छी तरह जानता था और आधुनिक विद्याओंका व्यासंग तो प्रशंसनीय था। यह विद्वान् और परिणतप्रज्ञ व्यक्ति ar Rabitah ash—sharqiyah (पौर्वात्य संघ) नामक विख्यात मासिक-पत्रिकाका संचालन करता था, जिसका उद्देश्य था 'पूरबका ऐक्य। इस व्यक्तिने बहुत परिश्रम उठाकर 'अल् इस्लाम वा उसूल–अल हुकूम' (इस्लाम तथा उसके शासन सिद्धान्त) नामक सुंदर ग्रंथ लिखकर प्रकाशित किया, जिसकी प्रशंसा आधुनिक विद्याके आचार्योंने तथा यूरोपीय विचारकोंने मुक्तमतसे की। किन्तु इधर अल् अजहारके प्राध्यापकोंके क्रोधका ठिकाना न रहा और उन्होंने बडे शेखकी सहायतासे अपने अधिकारोंका उपयोग कर अली अब्दुल राजिककी उपाधियाँ रद करवायीं और उसे न्यायासनसे हटा दिया। (मिस्रकी पाठशालाओंपर अल् अजहार का शासन चलता है, जिसका अधिकार उसे विधानके अनुसार प्राप्त है) अली राजिक लिखित ग्रंथके जिन वाक्योंसे यह सब बवंडर खडा किया गया, वे यों थे—

Islam, not be a theocracay. Muhammad had not in view the institution of a Caliphate such as depicted in the conception of the Ulema; he was the Prophet, but when he acted as a political leader, he did not act as the Prophet, Religion directs only individual conduct of men. The State stands by itself. Nowadays, Moslem must compete, with other nations for social and political science, they must give up the ancient constitution of the Caliphate, and take as the basis of their State and Government the modern achievements of the human mind and the most solid experiences of the nations as to the best foundations of Goverenment. (Whither Islam ? page 142, by H. A. R. Gibb)

नये खलीफाके नेतृत्वमें फिर एक बार इस्लामी साम्राज्य खडा करनेके सपने सदासे देखनेवाले अल् अजहारके मुल्ला, मौलवी, उलेमा एवं शेख आदि लोगोंके हृदयपर चोट लगी हो, तो क्या आश्चर्य? इन लोगोंने 'अली राजिक' को नास्तिक ठहराया और अपनी शक्तिभर सताया। अल् अजहारसे उसे बहिष्कृत किया गया और उसके पदसे भी उसे हटवाया!!

इस तरहके कट्टर विद्यापीठके हाथमें इस्लामी शिक्षाकी बागडोर होनेसे इस्लामी विद्यार्थीको क्या शिक्षा नसीब होगी, इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है। इस कट्टर तथा कुरान–निष्ठ विद्यापीठसे प्रतिवर्ष कई स्नातक बाहर निकलते हैं, जो इस्लामके संगठन, प्रचार एवं प्रसारके कार्यमें लग जाते हैं। इन विद्यार्थियोंके लगातार परिश्रमसे ही मुस्लिम संसार हडबडाकर जागरित हो बडी सतर्कतासे इस्लामके पुनरुज्जीवन में दत्तचित्त है।

'अल अजहार' में शिक्षा प्राप्त करनेके लिए विद्यार्थीको कुछ भी शुल्क नहीं देना पडता। उनके निवास तथा भोजनका प्रबंधभी पूरी तरह विद्यापीठसे हो जाता है। विद्यापीठका सारा खर्च दानकी निधिसे चलता है। गरीब, अमीर के साथ एकसा बरताव तथा सुविधाएं होती हो, सो बात नहीं है। इस्लाममें समता होनेकी शेखी बारबार बघारी जाती है, उसका लेश भी 'अल् अजहार' में नहीं मिलता। प्रसिद्ध फ्रान्सीसी लेखक पिअरे लोतीने स्वयं जाकर अल् अजहारका निरीक्षण करनेके बाद निम्नलिखित सम्मति प्रकट की है। श्री. लोती महोदयके शब्दोंको हिंदुजनताने ध्यानमें रखना चाहिये।—

" There is necessarily inequality in the treatment doled out to different students. Thus the young men of a given country may be almost rich, possessing a room and a good bed, while those of neighbour country must sleep on the ground and have barely enough to keep body and soul together." (Egypt, by Pierre Loti, page 70)

विद्यापीठके कुलगुरुको 'शेख' कहते हैं। शेख तथा उसके सहयोगी उल्मा इस्लामकी खास शिक्षाप्रणालीसे पढे विद्वान् होते हैं। इन प्राध्यापकोंको आधुनिक ज्ञानसे परिचय आवश्यक नहीं माना जाता। आधुनिक प्रयोगजन्य तथा बुद्धिवादी शास्त्रोंसे 'अल् अजहार' का संबंध अहि-नकुलवत् दीख पडता है। इस पुराने तथा धर्मान्धतामें अग्रगण्य विद्यापीठकी पढाईमें सबसे अधिक महत्त्व 'कुरान–पठन' को दिया जाता है। कुरानके हर शब्दका उच्चारण, परंपरा-प्राप्त ढंगसे कैसे किया जाय, इसीपर बहुत जोर दिया जाता है। कुरान-पठनमें जब विद्यार्थी अच्छी तरह प्रगति करे, तभी छंदोंका ज्ञान उसे दिया

जाता है और उसके बाद कुरानका अर्थ समझानेका प्रारंभ होता है।

अर्थकी स्पष्टता करनेके पहले तथा करनेके समय इस्लामकी दृष्टिसे अति महत्त्वपूर्ण बातको विद्यार्थीके मनपर प्रतिबिंबित किया जाता है कि, 'कुरान अल्लाहका शब्द है। अल्लाहकी बानी पैगंबरके द्वारा इस्लामियोंको नसीब हुई है। यह बानी मानवी नहीं तथा मानवी बुद्धिकी कक्षाके बाहर है। उसपर टीका-टिप्पणी कर अर्थ स्पष्ट करनेके योग्य व्यक्ति आज कोई नहीं है। जो टीकाएँ होनेवाली थीं, पहले हो चुकी हैं और उन टीकाकारों-उस्तादों-का शब्द आखरी शब्द है और निर्णायक भी माना गया है।'

इस्लामियोंके बारेमें एक बात हिंदुओंको ध्यानमें रखना चाहिये कि, मुसलमानी समाज पूर्णतया धार्मिक है। धर्मको छोड उसे अपनी कोई स्वतंत्र हस्ती नहीं है। मुसलमानोंका कानून, व्यवस्था, राजनीति, प्रतिदिनका व्यक्तिगत व्यवहार तथा आचार सबका नियमन कुरानही करता है। कुरानकी पुष्टि तथा स्पष्टीकरणके लिये 'हदीस' तथा 'सुन्ना' (मोहम्मदकी परंपरा) का प्रमाण माना जाता है। हदीस तथा सुन्ना कुरानके विरुद्ध कभी गयेही नहीं या स्वतंत्र मत-प्रदर्शन भूलसे भी किया नहीं। अल्लाह आज्ञा देनेवाला, प्रेषित या पैगंबर मध्यस्तः जिसके द्वारा अल्लाहकी आज्ञा मुसलमानोंको बतायी गयी है। अर्थात् स्वयं अल्लाहही इस्लामियोंका एकमेव विधानदाता (लेजिस्लेटर) होनेसे मानवकी स्वतंत्र हस्तीही नहीं रहती। कुरान अल्लाहकी बानी होनेसे उसके अनुसार चलना हर मुसलमानका प्रथम और आखरी श्रेष्ठ कर्तव्य है। कुरानकी शिक्षाही सबसे उत्तम शिक्षा है, यह इस्लामियोंकी दृढ श्रद्धा है। आधुनिक पाश्चात्य-विद्या-विभूषित मुसलमान भी इससे वंचित नहीं हैं। शिक्षित मुसलमानोंपर आधुनिकताका अत्यंत विरल आवरणमात्र होता है, जिसे उतार फेंकनेको वे सर्वदा सिद्ध रहते हैं बल्कि उतावलेसे रहते हैं। श्री. प्रिअरे लोतीकी सम्मति ठीक सत्य तथा वास्तवतापूर्ण है। वे कहते हैं—

"Their modernity is only on surface; in their inmost souls, Islam remains intact." (Egypt, Prirre Loti page 66)

ऐसा उदाहरण कहीं भूलसे भी नहीं पाया जाता कि, किसी मुसलमान व्यक्तिने इस्लामधर्मके लिये यंत्रणा या अत्यंत कष्ट सहे हों। मोहम्मदको छोड अन्य किसीको कुछ कष्ट नहीं भुगतना पडा। मोहम्मदको मक्का छोड मदीना भागना पडा इसका कारण भी इस्लामका प्रचार कतई नहीं। मोहम्मद जिस कुरेशी जमातका था और जो मक्कामें बसी हुई थी उसने आसपासके प्रदेशपर अधिकार जमाया था। यात्रिय (मदीनाका पुराना नाम) के बाशिन्दोंसे उक्त जमातका सदासे अस्थिवैर था। मदीनावाले मक्काके कुरेशियोंको चोर, डाकू, घातक आदि चुने हुए विशेषणोंसे सम्मानित करते थे।

इन दो नगरोंका वैर बहुत पुराना तथा दृढमूल था। नेगस अब्राहामने मक्कापर जो आक्रमण किया था, उसका डट कर मुकाबला कुरेशियोंने वीरताके साथ किया था। अबदुल मोतालेबके नेतृत्वमें इकट्ठे हुए अरबोंने नेगस अब्राहामकी धज्जियाँ उडाई थीं। इस लडाईमें मोहम्मद भी था, किन्तु वहाँके कचवावधको देखकर वह रणभूमिसे भाग खडा हुआ और बकरियोंको चराता रहा। अरबोंके विचारमें रणभूमिसे भागना अत्यंत घृणास्पद तथा अधर्म्य था। इसी कारण कुरेशी मोहम्मदसे घृणा करते तथा निर्दयतासे उसकी खिल्ली उडाते। इन बातोंका असर मोहम्मदपर होकर उसने मदीनावालोंसे मिलकर एक षड्यंत्र रचा। कुरेशियोंको इसका पता लगतेही वे आग बबूला हो उठें। किन्तु उस समय अबूतालेब जीवित था, जिसने अपने प्रभावसे शान्ति कर दी। कुछ समयके बाद अबूतालेबकी मौत हुई, मोहम्मदका षड्यंत्र फिर जारी हुआ और इसीसे मोहम्मदको मक्केसे मदीना भाग जाना पडा। मदीना पहुँचनेपर उसने वहाँके लोगोंको यों वचन दिया था—

"I will live and die with you; your blood is my blood; your ruin shall be mine. I am from this movement your friend & the enemy of your foes." (Islam and the Psychology of Musalmans, by Andre Servier, page 53)

मोहम्मदके हिजरतके इस इतिहासको ध्यानमें रखनेसे पता चलेगा, कि मोहम्मद क्यों भागा, और मदीने क्यों गया? इस्लामके उपदेशसे इसका तनिक भी संबंध नहीं है। मोहम्मद की मृत्युके बाद कुरेशियोंने स्वजनद्रोहके लिये पूरा प्रतिशोध भी लिया। मोआवियाके साथियों तथा यजीदने मोहम्मदकी कब्रका भी लिहाज न किया। उस मकबरेमें घोडे बांधनेसे भी वे बाज न आये।

हिंदुजनता इन सभी बातोंसे, इस्लामके अंतरंगसे जानकार नहीं है। इस बारेमें बहुत अज्ञान है। हिंदुओंको इस्लामके बारेमें जो जानकारी प्राप्त होती है, वह प्रायः स्वार्थी लोगों द्वारा मिलती है। इन धूर्तोंने विशेष हेतुसे ऊटपटांग जानकारी हिंदुजनताको दी है। इन्ही लोगोंने सदासे आग तथा विध्वंसका व्रत लिये हुए इस्लामको परागतिशील तथा असहिष्णु बना रखा है। प्रगतिसे इस्लामका तनिक भी संबंध नहीं। हाँ, प्रगतिकी ज्योतिको बुझा देने तथा उसे मटियामेट करनेका कार्य करनेमें इस्लामको सफलता मिली है। इस्लामका सांगोपांग तथा गहरा अध्ययन करनेवाले आँद्रे सरव्हीरने स्पष्ट कहा है—

" Islam was not a torch, as has been claimed, but an extinguisher. Conceived in a barbarous brain for the use of a barbarous people, it was and aemains incapable of adapting itself to civilization. Whenever it has dominated, it has broken the impulse towards progress and checked the evolution of society. " (ibid, page 53–54)

सच बात यह होनेसे जागतिक प्रगतिका साथ देना इस्लामकी कक्षामें नहीं था, न सम्भव भी। गतिशून्यता उसकी प्रकृति, प्रतिगामित्व उसका शरीर ! आजका इस्लामी संसार इसका जीताजागता प्रमाण है। गतिशून्यता तथा प्रतिगामित्वका भरण-पोषण इस्लामकी विशेष शिक्षा-प्रणाली करती रहती है। विश्वविख्यात फ्रेंच लेखक आँद्रे सरव्हीरने इस्लामी शिक्षा-प्रणाली तथा उसके परिणामोंका पूरी तरह अध्ययन करनेके बादही निम्नलिखित सम्मति दी है। सरव्हीरके शब्द ये हैं—

" The deadening influence of Islam is well demonstrated by the way in which a Musalman comforts himself at different ages of his life. In his early childhood, when religion has not yet impregnated his brain, he shows a very lively intelligence and a remarkebly open mind accessible to ideas of every kind; but in proportion as he grows up and as through the system of education, Islam lays hold of him and envelops him, his brain seems to shut up his judgement to become atroplued his intlligence to be striken by paralysis and irremidable degeneration. (Islam & Psychology of Musalmans, by Andre Servier, page 191.)

पहले यह मान्यता हम बता चुके हैं, कि कुरानके अर्थके स्पष्टीकरणमें अंतिम शब्द लिखा जा चुका है। कुरानके टीका-ग्रंथ या मुसलमानोंके स्मृतिग्रंथ केवल चार हैं। इस्लामके सभी धार्मिक-यहाँतक, कि हर आचार तथा व्यवहार-आचार -विचारोंका स्पष्टीकरण करनेवाले टीकाग्रंथोंमेंसे जिसका अध्ययन कोई करना चाहे तो उसे, उसी ग्रंथका अध्ययन किये हुये विशिष्ट मौलवीके पास जाना पडता है, जहाँ उसे वह ग्रंथ पढाया जाता है। इन चार टीकाग्रंथोंके अध्ययनके साथ साथ और एक बातकी ओर खास ध्यान दिया जाता है, एक ग्रंथका दूसरे ग्रंथसे कभी संबंध नहीं आने दिया जाता। निश्चयसे संदर्भके लिये भी अन्य टीकाग्रंथोंका उल्लेखतक नहीं किया जाता। आगे चलकर सांसारिक व्यवहारमें भी उसी कट्टरपनसे काम लिया जाता है। जो व्यक्ति जिस इस्लामी स्मृतिका अनुयायी हो या जिसे वह मानता हो उस स्मृतिके मतानुसार उस व्यक्तिके व्यवहारका नियमन होता है तथा न्याय-निर्णय होता है। इस नियमका पालन बडे तपाकसे किये जानेके कारण, इस्लामी समाजमें अत्यंत असहिष्णु, चिडचिडी तथा घृणास्पद कट्टरताको अपने आप बढावा मिलता है। और यही कार्य " अल् अजहार ' विद्यापीठ कई सदियोंसे करता आया है।

कुरानके अलावा अल् अजहारमें अन्य विषय ये पढाये जाते हैं— १. ज्यूरिस प्रूडन्स (विधान तथा कानूनका शास्त्र) २. कॅलिग्राफी (लेखन-कला), ३. छंदशास्त्र, ४. गणित, ५. अरबी भाषा। बस !! शिक्षाक्रम तीनसे छः वर्षोंमें पूरा किया जाता है। एक उल्मा १० से २० विद्यार्थियोंको पढाता है। शिक्षाकी समाप्तिपर विद्यार्थि उपाधि प्राप्त करता है। अल् अजहारसे शिक्षित स्नातक अपने अपने स्थानोंमें जाकर इस्लामी उपदेशकका काम शुरू करते हैं। विशेष बुद्धिमान् तथा अध्ययनशील विद्यार्थीको विद्यापीठहीमें स्थान दिया जाता है। साहसी और कट्टर विद्यार्थीको विद्यापीठ अपनी ओरसे भिन्न भिन्न देशोंमें इस्लामके प्रचारार्थ भेजता है। भारत, इंडोनेशिया, चीन, जापान तथा फिलिपाइन द्वीपावलीमें अल् अजहारके विद्यार्थी अड्डा जमाये बैठे हैं। इस्लामी संगठन प्रचारके साथ साथ जिहादकी पूर्व सिद्धताका काम ये साहसी विद्यार्थी बडी लगनसे करते रहते हैं। चीनको पूर्णतया इस्लामी बना डालनेका बीडाही मानो अल् अजहारने उठाया है। इस विद्यापीठके मौलवी तथा विद्यार्थी अच्छी संख्यामें चीनमें जाते दिखायी पडते हैं। ' इस्लाम इन दि वर्ल्ड ' नामक सुप्रसिद्ध

ग्रंथके लेखक डॉ. झाकी अलीकी निम्नलिखित पंक्तियाँ बडे गर्वसे तथा इस्लामी श्रद्धासे लिखी गयी है:–

" Muslims in China and Manchuco are already in relationship with Egypt, which through Al-Azhar university takes an active part in their religious instruction. Several Egyption professors were sent by Al-Azhar to paking for instsuction at the Muslim School there. The Arabic language is very popular in the Far East. " (Islam in the World by Dr. Zaki Ali, page 354–5)

चीनकी सभी इस्लामी पाठशालाओंके मुख्याध्यापक तथा अरबीके शिक्षक अल् अजहारके स्नातकही हैं । पेकिंगमें होनेवाली ३६ मसजिदोंमें अरबी तथा कुरानकी पढाई तथा इस्लामी संगठनका कार्य अल् अजहारके स्नातकही करते हैं । पेकिंग तथा अन्य चीनी नगरोंकी मसजिदोंसे इस्लामियोंको जगानेवाले ये इस्लामके निष्ठावंत सेवक हज्ज (मक्का-यात्रा) तथा जिहाद-इस्लाम-प्रसारार्थ युद्धकी सिद्धता करनेका महत्त्वपूर्ण कार्य कुरानके आदेशानुसार डटकर करते रहते हैं । इन्हीं स्नातकोंने मलाया, सुमात्रा, जावा, कोचीन, चीन, फिलिपाइन द्वीपों तथा जापानके विस्तीर्ण प्रदेशोंमें अरबीका प्रचार बहुत किया है, जिससे पूरबी प्रदेशोंमें मुसलमानोंकी साधारण भाषा ' अरबी ' ही बनी है ।

इस्लामियोंने देशद्रोह किया

इस्लामके इस प्रचारमें जापानसे बडी सहायता पहुँची है । चीनके इस्लामियोंने जापानके आक्रमणको पूरी सहायता पहुँचाई । फिलिपाइनमें भी मोरो लोग जापानको चाहते हैं । मांचुरियामें तो स्थानीय इस्लामियोंने खुफियागरी कर जापानी आक्रमणमें बडी मूल्यवान् सहायता दी थी। यह सहायता न मिलती तो जापान मांचुरियाको इतना सहजमें न निगल पाता। चीन तथा मांचुरियामें इस्लामी देशद्रोहके कारण चीनी देशभक्त तथा कम्यूनिस्ट चिढ गये थे, जिसके कारण देशद्रोह तथा झगडेके केन्द्र बनी पाँच हजार मसजिदोंको नष्टभ्रष्ट कर डाला गया और चीनी पाकिस्तानकी कमर तोडनेका बडा भारी यत्न किया गया।

विदेशी मुसलमानी विद्यार्थियोंको अल् अजहारमें विशेष सुविधाएं दी जाती हैं । आज अल् अजहारमें चीनी मुसलमान विद्यार्थियोंकी संख्या १२५ से १५० तक है। कुछ जापानी मुसलमान विद्यार्थी भी वहाँ शिक्षा पाते हैं । मक्काकी यात्राको हजारों लोगोंको भेजनेवाला इंडोनेशिया प्रतिवर्ष अनेक विद्यार्थी अल् अजहारमें भेजता है । इस विद्यापीठमें पढनेवाले १० हजार विद्यार्थियोंमें बहुसंख्या अफरीकावालोंहीकी होती है । काफी नीग्रो मुसलमान श्रद्धासे इस्लामकी शिक्षा पाते हैं। चीनमें बसे हुए अल् अजहारके स्नातकोंने, स्थानीय मुल्लामौलवियोंकी सहायतासे, चीन, जापान, मांचुरिया, फिलिपाइन तथा इंडोनेशियामें जगह जगह ' इस्लामी संघ ' की स्थापना की है । इसके द्वारा कुरान तथा इस्लामी पुनरुज्जीवनका संदेश सब दूर पहुँचाया जाता है और इस्लामी जनताको जिहादके लिए सिद्ध किया जाता है ।

भारतीय राजनैतिक क्षेत्रमें स. १९१२ से अल् अजहारका एक कूटनीतिनिपुण स्नातक घुस पडा है। स. १९१२ में जब योरपके स्वातंत्र्याकांक्षी राष्ट्रोंने अन्याय जुल्म तथा प्रतिगामित्वका प्रतीक होनेवाले इस्लामी साम्राज्यको उखाड डाला, तब उस प्रतिगामी साम्राज्यको, भारतका नमक खाकर ऊपरसे उसे दारुल-हरब (शत्रुभूमि) माननेवाले यहांके इस्लामियोंकी सक्रिय सहायता देनेके एकमात्र उद्देशसे यह धूर्त अरब स्नातक भारतमें घुस पडा । स. १९१२ से आजतक ' वन्दे मातरम् ' की इस भूमिमें, गीताकी भूमिमें भारतके विनाशके जो षड्यंत्र रचे गये उनमें, इस जन्मजात अरबने, जी जानसे हाथ बँटाया । स. १९२७ में इस व्यक्तिने एक विचित्र भाषण दिया था, जो उसके भारत विरोधी इस्लामी अन्तःकरणपर विदारक प्रकाश डालनेवाला होनेसे यहां ज्यों का त्यों दिया जाता है । भारतके विभाजनकी करतूतें राष्ट्रीयताकी आडमें करनेवाले मक्केवालेके शब्द यों हैं:—

" That by the Lucknow-Pact they had sold away their interests. The Delhi proposals of March last opened the door for the first time to the recognition of the real rights of Musalmans in India. The separate electorates granted by the Pact of 1919 only ensure Muslim representation; but what was vital for the existance of the Community was the recognition of its numerical strength. Delhi opened the way to the creation of such a state

of affairs as would guarantee to them in the future of India, a proper share. Their existing small majority in Bengal and the Punjab was only a census figure, but the Delhi proposals gave them for the first time, five provinces of which no less than three–Sindh, the Frontier Province and Baluchistan–contained a real overwhelming Muslim majority. If the Muslims did not recognise this great step they were not fit to live. There could now be nine Hindu provinces against five Muslim provinces and whatever treatment Hindus accorded in nine provinces, Muslim would accord the same treatment to Hindus in the five provinces. Was not this a great gain ? Was not a new weapon gained for the assertion of Muslim rights ? " (Thoughts on Pakistan by Dr. B. R. Ambedkar. page 105)

उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण विचार जोशके साथ प्रकट करनेवाला यह अरब, भारतमें अपनेको राष्ट्रीय भलेही कहलाता हो; उसमें राष्ट्रीयताका अभावही झलकता है। इस्लामका उत्कट प्रेम तथा लगन उसके रोम-रोममें भिदी हुई नजर आती है । इस्लामकी राजधानी तथा पुण्यभूमिमें पैदा हुआ यह मुसलमान अल् अजहारका कट्टर उपाधिधारी भारतको 'दीनिया' बनानेकी चेष्टा दिनरात करता रहता है । काँग्रेसके अध्यक्षस्थानसे इस्लाम-की अखंड परंपरा--अग्निकाण्ड, लूटखसोट, तथा हत्याकाण्ड-को न भूलनेवाला बल्कि उसपर गर्व करनेवाला यह अरब, भारतके टुकडे करनेकी करतूतें राष्ट्रीयताके आवरणमें करने-वाला यह धूर्त व्यक्ति हिंदुराष्ट्रको सदाके लिये दासताके गढेमें दबा देनेके लिये अपनी ओरसे तनतोड चेष्टा कर रहा है। और किसी भी विदेशीपर विश्वास करनेका पागलपन करनेवाली हिंदु जनता स्वयंही अपनी उत्तरक्रियाकी आवश्यक सिद्धता कर रही है ! ।

इस्लामके पुनरुत्थान, संगठन, प्रचार–प्रसारकी दृष्टिसे अत्यंत अनुकूल होनेवाली परिस्थितिसे लाभ उठानेके लिये यदि अल् अजहार विद्यापीठ तथा उसके कट्टर स्नातक कमर कसकर सिद्ध न हो जायँ तभी अचरज होगा !

इस्लामी संसारका संगठन तथा जिहादकी सब तरहसे पूरी सिद्धता करनेके लिये चुने हुये स्नातक संसारभरमें फैला देने-वाला अल् अजहार विद्यापीठ भारतमें अपना जाल दृढ बुन-ता न होगा तथा परसुखसेवक हिंदू उसमें न फँसते होंगे ऐसा कहनेयोग्य प्रमाण आज, कमसे कम, अच्छी तरह प्राप्त नहीं है।

योरपके इस्लामीकरणका षड्यंत्र

मंदिरकी मसजिद

हजरत मोहम्मद पैगंबरको 'ओहोद-पहाड' की सुप्रसिद्ध लडाईमें मक्केवाले शूर सेनापति अबू सोफियाँके नेतृत्वमें इकट्ठे हुये कुरेशी सैनिकोंने खूब पीटा। हाँ, इस लडाईके बाद कुरे-शियोंको विजयश्रीने जयमाला नहीं पहनायी। उलटे, मोहम्मदने कुरेशी जमातके अस्थिवैरी यात्रिय (मदीना) वालोंकी सहायतासे मक्कापर आक्रमण किया। कुरेशियोंकी उस राजधानीको, अरब-स्तानके उस व्यापारिक केन्द्रको तथा यात्राके स्थानको हथिया लिया और वहाँ इस्लामकी स्थापना की । मक्का हाथ आनेपर यात्रिबकी सेनाने मोहम्मदके आदेशानुसार सुप्रसिद्ध काबाके मंदिरकी तीनसौसे अधिक मूर्तियोंको तोडफोड दिया गया और काबाके मंदिरकी मसजिद बनायी गयी !! जो कुरेशी जमात मोहम्मदको विरोध करती थी, जिसने उसे मक्केसे निकाल बाहर कर दिया था, वह शूर कुरेशी जमात उसीके चरणोंमें नतमस्तक हो गयी !! इस महत्कार्यके बाद मोहम्मद पैगंबर बहुत दिनोंतक जीवित न रह पाया। उसकी मृत्युके बाद अरबोंमें झगडे शुरू हुये और उसके फल-स्वरूप अरबोंके झुण्ड बाहर जाने लगे; कुरेशियोंके बहुतेरे नेता भी अरबस्तान छोड इन्हीं दिनों अन्य देशोंमें जा बसे।

पैगंबरके विरोधक अबू सोफियाँके पराक्रमी तथा चालबाज पुत्र मोआवियाने दमिश्कमें अपना राज खडा किया। मोहम्मद-के दामाद अलीका सफाया करनेके बाद मोआवियाने दमिश्कमें

अपनी नयी खिलाफतही खडी की, जो 'उम्मियाद खिलाफत' के नामसे प्रसिद्ध है। इन्हीं खलीफोंको कार्यकालमें भूखे अरबोंके टिड्डी दलने अफ्रीकापर आक्रमण कर वह संपन्न प्रदेश उजाडना शुरू किया। कॉप्ट लोगोंने, अन्य देशद्रोहियोंकी अनमोल सहायतासे अल्पावधिमेंही सेनापति ओकबा बिन नाफा नामक अघोरघंटने अफ्रीकाकी सस्यशामला भूमिका रेगिस्तान बना डाला और यह समूचा अरबी टिड्डीदल बातकी बातमें अतलांतिक महासागरके किनारे जा पहुँचा। इस भयंकर आक्रमणमें जो अग्निकाण्ड, लूटखसोट तथा हत्याएं हुई उसकी जोड संसारके इतिहासमें कहीं न मिलेगी। क्रूरकर्मा 'ओकबा बिन नाफा' की इच्छा संसारभरको जला डालनेकी थी, किन्तु अनुल्लंघनीय महासागरके कारण उसकी गति रुक गयी और अल्लाह अल्लाह करते हुए उसे अफ्रीकाके अतलांतिक किनारेसे लौटना पडा! नाफाके बाद भी अग्निकाण्ड तथा विध्वंसका ताँता बाँधनेका काम सेनापति हसन तथा सेनापति 'मुसा बिन नोशीर' ने किया। इन दोनोंने उत्तरी अफ्रीका हडप ली।

उत्तरी अफ्रीका पचा जानेके बाद स्पॅनिश बिभीषण कौंट ज्युलिअसके राष्ट्रद्रोहके बलपर यह टिड्डीदल स्पेनपर झपटा और अल्पावधिमें स्पेनमें अग्निकाण्ड, हत्याकाण्ड तथा धर्मभ्रष्टताकी धूम मच गई। किन्तु हाँ, स्पेनकी उत्तरमें इस अरबी टिड्डीदलकी दाल न गली। देशद्रोहियोंकी सहायतापर हर समय विजयी होनेवाले, देशके देश नष्टभ्रष्ट करते हुए बेरोकटोक सर्वत्र विध्वंसनकी धूम मचानेवाले इस्लामको फरान्समें एक भी देशद्रोहीने सहायता न दी। उलटे, पोआतीरके निर्णायक संग्राममें अग्निदाह और विध्वंसन, विश्वासघात और खूनअत्याचार एवं बलात्कारकी अटूट परंपरा पीछे छोडनेवाले, प्रगति तथा मानवताके विरोधक इस्लामकी हड्डियाँ नरम की गईं!! इस प्रचंड पराभवके बाद ईसाई स्पेनने इस्लाम तथा अरबी घातक साम्राज्यके विरुद्ध हथियार सँवारा और उसे स्पेनकी भूमिसे भगा दिया!!

योरपमें पराभव

इधर कुन्स्तुन्तुनियाके पास भी इस्लामकी सिट्टी बंद हो गई। इन दो पराभवोंसे इस्लामी आक्रमणकी रीढही टूट गई और योरपसे यह बला टली। इसके बाद योरपवाले ईसाई राष्ट्रोंनेही इस्लामी साम्राज्यपर आक्रमण कर उसके किये अत्याचारोंका पूरी तरह प्रतिशोध लिया। इस्लामको भगा देने-वास्तवमें मिटा देनेके लिए, योरप तथा आशियामायनरसे भगाकर अरबस्तानके वीरान रेगिस्तानमें ठूँस देनेमें रूसने नेतृत्व कर अत्यधिक प्रयत्न किये।

कॉकेशसमें बसनेवाले मुस्लिमोंसे $\frac{3}{4}$ से अधिकोंका सफाया रूसने किया और रूसी सेना आद्रिआनोपल जीत कर वहीं जम गयी। इस रूसी चढाईका लक्ष्य कुन्स्तुन्तुनिया था; किन्तु ऐन मौकेपर बनियोंके राष्ट्रने हस्तक्षेप किया, विध्वंसक इस्लामको बचाया, बढाया, तगडा बनाया। फिर भी अंग्रेजी सहायता मिलनेपर भी इस्लामी प्रतिगामी साम्राज्यकी धज्जियाँ उडीं। इस पराभवने इस्लामको बेचैन कर दिया। उसके अखरनेसे धर्मान्धताके लिये प्रसिद्ध मुस्लिम-संसार जागरित हुआ और उसी जागृतिके परिणामस्वरूप इस्लामी संगठनका आंदोलन चल पडा। अब पुष्ट बना इस्लामी संगठन-प्रचार-प्रसारका आंदोलन आज उत्तरी अफ्रीकामें पराकाष्ठाको पहुँच गया है।

" Africa is being progressively envaded by Mohammedanism, the religion which renders souls most sterile to the seed of the Gospel. It is advancing from the North, which is almost wholly subject to its domination. This process has been going on since the noble church of Augustine and Tertullion exchanged spiritual vitality for specious theology and casuistic philosophy. If christian missionary-enterprice does not see the urgent need of raising an effective barrier to stem the Mohammedan Torrent, which for centuries, has been flooding Africa, will dominate the entire continent. "

योरपमें इस्लाम--प्रचार

इस्लाम-प्रचारके इस धमाकेसे मिशनरियोंमें बडी सनसनी तथा घपला पैदा हो गया है; वे डटकर काममें दत्तचित्त हैं। आज अफ्रीकामें इस्लाम दृढ पायेपर खडा है। वहाँकी जनसंख्यासे आधेसे अधिक लोग इस्लामके अनुयायी तथा सेवक हैं। इस प्रचंड संगठित संख्याबलपर इस्लाम-प्रचारका चंचुप्रवेश छद्मवेशसे हो चुका है और योरपमें बसे इस्लामियोंकी सहायतासे योरोपियोंके इस्लामीकरणका प्रारंभ भी हो चुका है।

फ्रेंच अफरीकामें इस्लामका संगठन-प्रचार-प्रसार करनेवाली संस्थाओंके द्वारा फरान्सको इस्लामी बनानेका श्रीगणेशा हुआ है। योरपको इस्लामी बनानेका कार्य केवल फरान्सहीमें सीमित नहीं है। बाल्कन राष्ट्रोंमेंसे यह इस्लामी ऊँट योरपमें अपनी गर्दन घुसेड रहा है और उसके पृष्ठपोषणका कार्य मिस्रकी 'जमियतुश्शुब्बनुलमुस्लिमीं' यह अत्यंत कट्टर इस्लामी संस्था कर रही है। योरपके भिन्न भिन्न देशोंमें बिखरे पडे इस्लामियोंका दृढ संगठन करनेका कार्य जमियतने कबसे शुरू किया है और उसे अच्छा यश भी मिला है। योरपके कुछ प्रमुख नगरों तथा राजधानियोंमें मुल्ला और मसजिदें स्थापित हो चुकी हैं। योरपके छोटे बडे देशोंसे अल्बेनिया, युगोस्लाविया, बलगारिया, रुमानिया एवं यूनान, इन पांच देशोंमें कुल ३८ लाख मुसलमान हैं, जो बहुत अंशमें संगठित हो चुके हैं। इनमेंसे बडी संख्यामें युगोस्लावियाके मुसलमान हैं, जो सबके सब संगठित और अन्य मुस्लिमोंसे कट्टरतामें बढे हुये हैं।

उपर्युक्त पांच देशोंको छोड शेष योरपमें मुसलमानोंकी संख्या थोडी है। किन्तु ये अल्पसंख्य मुसलमान अत्यंत सावधानीसे इस्लामके संगठनादि कार्यको बढाते हैं। इनका आधा हिस्सा फरान्समें केन्द्रित हैं; मालूम होता है इनकी गिनती २॥ लाखसे अधिक होगी। उपर्युक्त पांच देशों तथा फरान्सको छोड शेष योरपमें कुल २ लाख मुसलमान बसे हुये पाए जाते हैं। ये लोग इंग्लैंड, जर्मनी, पोलंड, बेल्जियम, हॉलंड, हंगेरी, स्पेन एवं इटलीमें बिखरे पडे हैं। फिनलंडमें भी कहीं कहीं इस्लामीय मिलते हैं। फरान्सके ये इस्लामियोंकी बस्ती विशेषतः पॅरिसके उपनिवेशों तथा मार्सेलमें केन्द्रित है। अनुभवसे मालूम हुआ है, कि यह सारी मुस्लिम जनता इस्लामकी दृष्टिसे सुसंगठित तथा अरबोंके समान कट्टर, चिडचिडी तथा धर्मान्ध है। ये मुसलमान अफरीकाहीसे व्यवसायके लिये फरान्समें घुसे और फिर वहीं बस गये। फरान्सका नमक खाकर जीनेवाले ये सभी अफरीकी मुसलमान फरेंच व्यक्तिको काफिर और फरान्सको काफिरोंका देश कहते हैं।

क्योंकि, फरान्सीसी सतर्कता तथा बलके आगे इनकी एक नहीं चलती, ये पंचमस्तंभीय करतूतें करनेको सदासे उत्सुक लोग आज चुप बैठे हैं; वास्तवमें सुयोग्य अवसर की राह देखते हुये घात लगाये बैठे हैं। दारुल इस्लाम (इस्लामकी भूमि), दारुल अमन (इस्लाम-रक्षित भूमि) और दारुल हरब (शत्रुभूमि) इस कुरानकृत वर्गीकरणका पागलपन, भारतका नमक खाकर भारतीय कहलानेसे इनकार करनेवाले मुसलमानोंके समान, फरान्समें जीवन-यापन करनेवाले मुसलमानोंमें भी है। हर मुसलमान, वह चाहे जहाँ रहता हो, मक्काकी ओर नजर लगाये रहता है और उसका मन इस्लामी पुनरुज्जीवनके विषयमें मनके मोदक खाता रहता है। फरान्सनिवासी सभ्यता-भक्षक इस्लामके भगत उपर्युक्त सर्वसाधारण नियमके अपवाद नहीं हैं।

व्यवसाय या आजीविकाके लिये फरान्समें रहनेवाले इन मुसलमानोंका सर्वांगीण संगठन, नियमन, संचालन तथा मार्गदर्शन करनेका महत्त्वपूर्ण कार्य, फरेंच अफरीकामें जमकर बैठीं तथा इस्लामके संगठन-प्रचार-प्रसार आदि कार्योंमें, सुप्रसिद्ध 'अलाविया' और 'तिजानिया' ये दो प्रमुख इस्लामी संस्थाएँ करती रहती हैं। इन दोनों संस्थाओंने अपने संगठन-केंद्र तथा मसजिदें फरान्समें स्थापित की हैं और समूचे फरेंच राष्ट्रको-विशेषतया फरान्सकी दक्षिणमें बसी हुई संकरजन्य प्रजाको, जिसकी संख्या दिनोंदिन बढती जाती है-इस्लामके शिकंजेमें फँसानेका प्रयत्न भी जारी है।

उपर्युक्त दो इस्लामी संगठन-संस्थाओंमें अलाविया एक कट्टर तथा आक्रमणशील संस्था अहमद बिन अलीवाने स्थापित की है। यह धूर्त व्यक्ति फरेंच अफरीकाके 'मोस्तागानेम' इस सुप्रसिद्ध गाँवका रहनेवाला है। इस छोटे गाँवने अफरीकाके इस्लामियोंको अत्यंत कट्टर तथा इस्लामनिष्ठ नेता दिये हैं। यह सिद्दी अहमद बिन अलीवा परले दर्जेका धर्मान्ध होनेकी बात सुप्रसिद्ध थी। अपनी धर्मान्ध तथा कट्टर इस्लामी-अरबी कहनाही अच्छा होगा-विचारधाराका प्रचार करनेके लिये उसने एक समाचारपत्र भी शुरू किया था। इस गरम पत्रका नाम 'अल बलाघ' (संदेश) है, जो आज भी चालू है। काफिरोंके विरुद्ध जिहाद पुकारनेको भडकानेका काम 'अल बलाघ' प्रारंभके जोशसे कर रहा है। फरेंच काफिरोंका राज उलट देनेके लिये स. १९१४-१८ के योरोपीय-महासमरके समय इस अलाविया संस्थाने कई षड्यंत्र तथा अनेक प्रकारकी कुटिल करतूतें कीं। प्रसिद्ध जर्मन स्त्री खुफिया 'माताहारी' द्वारा अलाविया संस्थाको सब तरहके शस्त्रास्त्र पहुँचानेकी योजनाएँ बनायी गयी थीं, जिसके अनुसार कुछ शस्त्रसंभार एक जर्मन पनडुब्बीद्वारा फरेंच अफरीकामें पहुँचाया भी गया था। सुप्रसिद्ध

जर्मन खुफिया हिंटजेन अलावियाका प्रचारक बनकर फ्रेंच अफरीकामें एकबार घूम गया था। अंग्रेजों तथा फ्रेंचोंकी सजगतासे अफरीकामें जिहाद पुकार फरान्सीसी शासनको मटियामेट करनेके षड्यंत्र विफल हुए और फ्रेंच शासन और ही दृढ हो गया।

केमालपाशाका शौर्य

सन १९१४-१८ के युद्धके बाद ग्रीसके तुर्कोंपर किये आक्रमण तथा केमालपाशाके अद्वितीय वीरताके कारण समूचा इस्लामी संसार हडबडा कर जाग उठा और फिर एक बार इस्लामियोंके संगठनका कार्य नये उत्साहके साथ शुरू हुआ। सन १९२४ से ३२ तकके कालमें अलाविया-संगठन-संस्थाने अल्जेरिया तथा मोरोक्कोमें अपनी शाखाएँ तथा केन्द्र स्थापित कर इस्लामियोंका एक प्रबल संगठन खडा किया। साथ साथ इस संस्थाने अपने प्रचारकोंको योरपमें भेजनेका प्रारंभ भी किया था। समूचे अफ्रीका खण्डभरमें इस्लामका जोरदार प्रचार प्रसार करनेवाले इस्लामके प्रचारक इन्हीं दिनों फरान्समें घुस पडे। इस्लामी पुनरुज्जीवन तथा संगठनका यह जोरदार प्रचार कैसे और किस बहाने किया जाता है, इसका वर्णन सुप्रसिद्ध फ्रेंच लेखक लारिन्नने यों किया है—

" Travelling under a thousand disguises as merchants. preachers, students, doctors, workmen, beggars, fakirs, mountebank. pretended fools, rhapsodist?–these emissaries, are every–where, well received by the faithful and are officially protected against the suspicious investigations of the European colonial authorities. "

अलावियाके प्रचारकोंने फ्रान्समें जाकर इस्लाम-प्रचार-प्रसारकी दृष्टिसे आवश्यक पार्श्वभूमि निर्माण करनेका कार्य बडी कुशलतासे संपन्न किया। इस इस्लामसम्बन्धी प्राथमिक कार्यके सकुशलतया हो जानेसेही अलाविया संस्था पारीसके उपनगरमें तथा मार्सेलिसमें अपने केन्द्र स्थापित कर सकी। इन उभय स्थानोंमें मसजिदें भी निर्माण हो चुकी हैं। फ्रान्सीसी अफ्रीकाके सहस्रावधि मुसलमान पारीसके उपनगरोंमें रहा करते हैं। वह मानो मुसलमानोंका उपनिवेशही हो चुका है। उस उपनिवेशको (Kabyles) 'काबिली' नामसे पहचाना जाता है। अलावियाके प्रचारकोंने बडी निष्ठासे इस उपनिवेशका संगठन प्रारम्भ किया है। ये इस्लामके निष्ठावान् प्रचारक जिस लगन तथा उत्साहसे फ्रान्समें काम कर रहे हैं, यदि उसी लगनसे योरपभरमें बसे हुवे मुसलमान काम करने लग जायँ, तो कोई आश्चर्य नहीं है कि अत्यल्प कालमें योरपकी मुसलमानोंकी संख्या दसगुनी हो जाय। यह नहीं है कि, अलावियाके केन्द्र तथा प्रचारकोंके द्वारा केवल इस्लामियोंका संगठनही होता है। बतानेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि, जिन्हें शुरूसे इस्लामके प्रसारके लिये जिहादका संगठन तथा सिद्धताके पाठ पढाये जाते हैं, वे अलावियाके षड्यंत्र-कुशल प्रचारक सर्व उपलब्ध साधनोंका तथा सुसन्धियोंका समुचित लाभ उठाया करते हैं। सारे योरपपर इस्लामका हरा झंडा फहरानेकी तीव्रतर मनीषा आज कई वर्षोंसे इस्लामियोंके अन्तरमें घर कर बैठी है। भिन्न भिन्न आन्दोलनोंकी ओर ध्यानपूर्वक देखनेपर यह पता लग सकता है कि इस्लामकी विध्वंसक वृत्तिको जगाकर उसके द्वारा अपना अधिराज्य संसारभरमें स्थापित करनेके षड्यंत्र रचनेमें रूस मग्न है। जागृत मुसलमान प्रचारक अवश्य इस बातसे लाभ उठावेंगे। और उनके अग्रदूत बनेंगे अलावियाके प्रचारक।

फरान्समें इस्लामियोंका संगठन करनेवाली दूसरी प्रमुख संगठन संस्थाका नाम है " तिजानिया "। मोरोक्को तथा डाकार विभागमें बडी धूमसे इस्लामका प्रचार करनेवाली इस संस्थाकी आर्थिक दशा बडी अच्छी है। मोरोक्को, अल्जीरिया आदि स्थानोंके सबके सब सधन मुसलमान व्यापारी इस संस्थाके सदस्य तथा आश्रयदाता हैं। विपुल द्रव्यबलके कारण यह संस्था अपने कार्यके लिये कार्यकुशल तथा चतुर कार्यकर्ताओंको नियुक्त कर सकी है। Gennevilliers में इस संस्थाका सर्व साधनोंसे सुसम्पन्न तथा सुसज्जित केन्द्र है। वहाँ एक बहुत बडी मसजिद बांधी जा चुकी है, जिसमें प्रति शुक्रवारको तिजानियाके सदस्य तथा आश्रयदाता एकत्रित हुवा करते हैं। नमाजके पश्चात् इस्लाम संगठन-प्रचार-प्रसारके कार्यके तथा प्रयत्नोंके विषयमें चिकित्सापूर्वक चर्चा की जाती है, तथा कृत कार्यका सिंहावलोकन भी किया जाता है। तदनंतर प्रचारक, कार्यकर्तागण, सहायक, सदस्य आदिको नवीन कार्यके विषयमें सूचनाएँ देनेके पश्चात् ही सभा विसर्जन होने पाती है।

उपरिवर्णित दोनों इस्लाम-संगठन संस्थाओंने अपने निष्ठावान प्रचारकोंका जाल इस्लाम-प्रसारके लिये योरपभरमें फैला दिया है। पारीसके उपनगरोंमें ये प्रचारक वहाँकी मुसलमान बस्तीमें अहोरात्र अपनी वाणी तथा आचरणके द्वारा इस्लामी जनताको जागृत, संगठित तथा उत्तेजित किया करते हैं। उपरिवर्णित दोनों संस्थाएँ छोटी छोटी पुस्तिकाओं तथा हस्तपत्रकोंके द्वारा फरान्सीसी जनतामें इस्लाम-विषयक ज्ञानका प्रसार करवाती हैं। 'इस्लाम तथा समता' "इस्लाम तथा बन्धुत्व," आदि विषयोंका परामर्ष जिनमें लिया गया है, ऐसीं पुस्तकें भी वितरित की जाती हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, ये सर्व प्रयत्न फरान्समें पुनरपि इस्लामकी स्थापना करनेके एकमात्र उद्देशसेही किये जा रहे हैं। प्रो० लुई मासिनोँ सुस्पष्ट शब्दोंमें अपना मत प्रकट करते हुवे कहते हैं कि–

"However in Algeria, Muslem feeling is dominated by a very curious sentiment. It is not merely a hope of enlisting French-sympathies, but an ambition to conquer a place, not only for themselves as individuals, but for Islam within the mind and soul of metropolitan France." (Whither Islam, page 86)

फरान्स तथा पश्चिमी योरपके देशोंकी अपेक्षा पूर्वी योरपमें, विशेषतया बाल्कन प्रायद्वीपमें, इस्लामी संगठन-प्रचार-प्रसारका यह आंदोलन बडी लगन तथा उत्साहके साथ चलाया जाता है। बाल्कन प्रायद्वीपमें लम्बे अर्सेतक इस्लामका प्रतिगामी साम्राज्य-यंत्र ईसाइयोंको मटिया-मेट करनेकी दृष्टिहीसे पीस रहा था। सभी बाल्कन राष्ट्रोंको हडप जानेका वह एक भयंकर प्रयत्न था, जो कुछ कुछ सफल भी हो चला था। किन्तु रूसने इस्लामके विरुद्ध तलवार सँवारी और इस्लामी साम्राज्य तथा खलीफाकी सेनाको तितरबितर कर दिया, जिससे इस्लामका दाँव न चला। हाँ, बाल्कन राष्ट्र इस्लामी प्राणघातक चंगुलसे मुक्त हुये; किन्तु वहाँ गडा हुआ इस्लामका पाया उखाडा न गया। धर्मभ्रष्ट स्थानीय लोगही इस्लामका आधार था, आज भी बाल्कनमें पहलेके समान यह आधार दृढ बना हुआ है। वहाँके मुसलमानोंकी बहुत बडी संख्या इस्लामी पुनरुज्जीवनके लिये संगठन कर रही है। बाल्कन देशोंमें इस संगठनके कार्यको बल देकर, मुसलमानोंके सभी प्रयत्नोंका ठीक नियमन तथा संचालन करनेवाली इस्लामी संस्थाका नाम है, 'गारजेट'।

इस्लामके संगठन, प्रचार, प्रसारका एकमेव महत्त्वपूर्ण कार्य करनेके लिये इस संस्थाकी नींव सन १९०३ में पडी। इस धनी संस्थाके केन्द्रोंका जाल बोस्निया तथा हरजेगोविना प्रांतोंके हर देहातमें फैल चुका है। इन्हीं दो प्रांतोंमें ही मुसलमानोंकी संख्या सबसे अधिक है। इन प्रांतोंमें संस्थाके केन्द्रों द्वारा मुसलमानोंको कट्टर इस्लामीपनकीही शिक्षा दी जाती है, जिससे सारी इस्लामी जनता धर्मान्ध बन चुकी है। यह धर्मान्ध जनता इस्लामके पुनरुज्जीवनके लिये संगठित हो रही है। 'फिरसे कुरानकी ओर' यह वहाबी नारा यहाँ भी जनप्रिय है। इस्लामी संगठनको बढानेके लिये 'गारजेट' की प्रेरणासे पत्र-पत्रिकायें भी शुरू हो चुकी हैं। मिस्र तथा फरेंच अफरीकामें प्रसिद्ध होनेवाले कट्टरता तथा धर्मान्धताको भडकानेवाले इस्लामी पत्रोंकी खपत बाल्कनमें और खास कर युगोस्लावियामें बढती हुई दीख पडती है।

बाल्कन प्रायद्वीपमें 'गारजेट' जैसी सुप्रसिद्ध संस्थाके अलावा और भी कुछ संस्थायें कार्य कर रही थीं। इन छोटी मोटी संस्थाओंमें आपसी मन-मुटाव बढा, जिससे इस्लामी संगठनके कार्यमें रुकावटें पैदा होने लगीं। इस स्थितिको नष्ट करनेके लिये गारजेटके नेताओंने बडे जोरदार यत्न किये और सन १९३० में सभी संस्थाओंको एक सूत्रमें तथा नियंत्रणमें पिरोकर इस्लामी संगठनादि कार्यमें नया जागरण पैदा किया। मक्काकी यात्रामें जानेवाले हाजियोंकी सुखसुविधाके लिये एक समिति बनायी गयी है। इसकी एक उपसमिति लोगोंमें मक्काकी यात्रामें जानेके लिये चाव पैदा करनेका काम सफलतापूर्वक चलाती है। इस समितिके प्रयत्नोंसे बाल्कनसे हज करनेको जानेवालोंकी संख्या बढने भी लगी है। अफरीकी इस्लामियोंसे अधिक संबंध तथा स्नेह बढे, आपसी संगठन तथा सहायसे दोनोंको लाभ हो, इस उद्देशसे बाल्कनके मुसलमानोंकी ओरसे एक भ्रातृमण्डल काहिना तथा फरेंच अफ्रीकाको भेजा गया है।

प्रथम बाल्कन युद्धके पहले सभी बालकन राष्ट्र इस्लामी अधिराज्यके अंतर्गतही थे। उस इस्लामी राजछत्र, उस खिलाफतको ईसाई लोगोंने रूसकी सहायतासे नष्टभ्रष्ट कर डाला, इस चिरपरिणामी घटनाको बाल्कन राष्ट्रोंकी मुस्लिम

*

जनता भूल नहीं गयी है। इस्लामी राजको फिरसे कायम करना, फिरसे खिलाफतको प्रस्थापित करनाही इस्लामी पुनरुज्जीवन तथा संगठनादि आंदोलनका एकमात्र उद्देश है। सुयोग्य अवसर मिलते ही बाल्कनकी मुस्लिम जनता फिर एक बार मुस्लिम अधिराज्य कायम करनेके लिये सक्रिय तथा सशस्त्र चेष्टा करनेमें कभी न चुकेगी। जिहादके बहाने, महादीके नेतृत्वमें जो प्रचण्ड उत्थान होनेवाला है- और जिसकी सिद्धता मुस्लिम संसार कर रहा है- उसके सुयोग्य अवसरकी ताकमें वहाँके कट्टर मुस्लिम नेता बैठे हैं।

सन १९४५ में योरपनिवासी मुसलमानोंकी एक परिषद् हुई थी। इस योरोपीय इस्लामी कॉंग्रेसमें योरोपकी भिन्न भिन्न संगठन-संस्थाओं, मण्डलों, समितियोंके कुल ७५ प्रतिनिधि पधारे थे। इस परिषद्के बारेमें डॉ. झाकीअली, जिनिवा-निवासी निष्ठावंत इस्लामके उपासक इन शब्दोंमें अपनी सम्मति देते हैं—

" Several facts point to a bright future for Islam in Europe; almost all principle capitals of Europe have their Muslim societies and clubs. "

लंडन, पॅरिस, बर्लिनमें मसजिदें बनही चुकी हैं, जहाँ वार्सा, बूडापेस्ट तथा विएन्नामें नयी मसजिदें बनानेका कार्य शुरू हो चुका है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं, कि ये सारी चेष्टायें योरपीय लोगोंको इस्लामकी दीक्षा देनेके लिये की जा रही हैं; जिनका असर भी दीख पडने लगा है। मुसलमान बने गौरवर्णीयोंकी संख्या दिनोदिन बढती जा रही है। स्वयं इंग्लैंडमें ३० सहस्र हैं और इस संख्यामें धीरे धीरे वृद्धि भी हो रही है। इंग्लैंडको मुसलमानोंपर बहुत प्रेम हो आया है। डूबते हुये इस्लामको इंग्लैंडनेही बचाया है। आज भी इंग्लैंड अरब लीगके बहाने प्रतिगामी इस्लामको सहला रहा है। सन १९१४-१८ के महासमरके समय अरबस्तानका निरीक्षण करनेवाला विख्यात अंग्रेज गुप्तचर 'सेंट जॉन फिल्बी' आज अरबस्तानमें अड्डा जमाये बैठा है। वह मुसलमान बन गया है। सुलतान इब्न सौदका वह एक प्रमुख सलाहकार है और इंग्लैंड अमरीकाकी बडी बडी कंपनियोंका अढतिया भी। यह धूर्त व्यक्ति अरबोंकी नसको पूरी तरह जानता है।

पोलंडमें कुल १२ सहस्र मुसलमान संगठित हैं। उनका ग्रॅन्ड मुफ्ती डॉ. शिंकिविच है। समूचे मुस्लिम संसारको देख-आया हुआ यह व्यक्ति पोलंडमें इस्लामी संगठन-प्रचारका कार्य बडी चतुरताके साथ करता है। वार्सामें उसने अपना एक केन्द्र खोला है। मिस्रकी 'जमियतुश्शुब्बनुल मुस्लिमीन्' संस्थामें डॉ. शिंकिविच् अनेक दिन रहा था। वार्सामें बननेवाली मसजिदके लिए मिस्र, फिलिस्तीन तथा फरेंच अफरीकाके मुसलमानोंने चंदा दिया है। प्रचार कार्यके लिए भी पोलंडको मुस्लिम-संसारसे आवश्यक धनकी सहायता मिलती रहती है। इस बाहरी सहायता तथा स्तालीनकी सहानुकंपाके कारण पोलंडमें इस्लामको बढावा मिल रहा है; रूसने एन्. के. डब्ल्यु. डी. तथा सिक्युरिटी सर्विसद्वारा पोलिश लोगोंका जो भयानक संहार किया, उस 'महान्' कार्यमें पोलंडके इस्लामियोंने अपनी शक्तिभर हाथ बँटाया है।

पोलंडके मुस्लिमोंकी करतूतें देखकर हंगेरी और फिनलैंड-में रहनेवाले मुस्लिमोंमें जोश आया और वे भी इस्लामी संगठनका कार्य करनेकी चेष्टा करने लगे हैं। इन दो देशोंमें लगभग ८ सहस्र मुसलमान संगठित होनेका प्रयत्न करनेको कटिबद्ध हुए हैं। बेल्जियमके पांच सहस्र मुसलमान, हॉलंड ऑस्ट्रिया तथा जर्मनीके सात सहस्र इस्लामीय तथा इटली-स्पेनके आठ सहस्र मुसलमान इस्लामी संगठन-प्रचार-प्रसार कार्यमें बडे उमंगके साथ लगे हुए हैं।

योरपमें होनेवाले इस्लामीकरणकी चेष्टाओंका रूप आज बहुत छोटा है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं। हाँ, बरगदका बीज भी तो बहुत छोटा होता है, किन्तु उसीसे समय बीते एक महान् वृक्ष पैदा होता है। कौन कह सकता है, कि आजके इस्लामी-प्रचारसे भविष्यत्में इस्लामका महान् वृक्ष नहीं खडा होगा? इस्लामीकी इस पनपनाहटका साधार भय ईसाई मिशनरी महसूस कर चुके हैं और उन्होंने योरपीय ईसाइयोंको इसके खतरेकी सूचना भी दे दी है। इस्लामके योरोपमें चलाये हुए इस्लाम-प्रचारके उद्योगोंको संसारभरमें फैले मुसलमानोंसे प्राप्त सहानुभूति तथा सहायताको ध्यानमें रख कर, तथा इस्लामी-संगठन-संस्थाओं द्वारा पनपनेवाले प्रचार तथा प्रसार, एवं उनका चीमडपन तथा निष्ठाका बिलकुल पाससे निरीक्षण तथा परीक्षण करनेके बाद विख्यात लेखक O' Houdas ने यों लिखा है:–

" The religion of Mohammad has converted the Black-Continent, and it is not without some astonishment to point out the existance in England, and in America of small white communities which at Liverpool, Manchester and New-York, have adopted Islamic doctrines and made efforts to propagate them. This invasion of Europe, hardly visible to-day, is sure to grow. " (By O' Houdas, La grande Encyclopaedie.)

तार्तार-रक्तका उत्तराधिकारी रूस योरपको हडप जाना चाहता है। आगामी तृतीय विश्वयुद्धमें यह काम पूरा होगा ऐसा माननेयोग्य लच्छन दीख पडते हैं, और ठीक इसी मौके पर जिहादकी घोषणा तथा उत्थान होनेकी सम्भावना है। इस जिहादके बहाने इस्लामके फिर एकबार ऊधम मचानेके लच्छन दीख पडते हैं। इस्लामी देशोंकी राजनीतिके पाँव उस मार्गपर पड भी चुके हैं।

Regd. No. B. 1463

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवळेकर, भारत-मुद्रणालय, औंध.



